

जेनाचार्योंए रचेदा ग्रंथो वांचवाशी तथा अध्ययन करवाशी जेनदर्शनना अपूर्व इननो वोध थायरे. उत्तम प्रकारनो वोध प्राप्त कराववा सारु ते महान उपकारी महात्मार्ह ए अतीशय परिश्रम लझने ग्रंथोनी रचना करेकीरे. ते ग्रंथो जनसमुदायनी प्रसिद्धिमां श्राविरे, त्वारेज तेवा उपकारी पुरुषोनी कृतिर्हनी साफद्यता थायरे.

आ जागमां प्रथम अमे प्रसिद्ध करेदा श्रीप्रकरण रत्नाकर जाग पेहेदा मध्येना ग्रण ग्रंथो गापवामां श्रावेकारे. तेमां प्रथम श्रीदेवचंडजी माहाराजनो रचेद्यो श्रीनवचकसार ग्रंथरे. आग्रंथमां सप्तनय तथा सप्तज्ञंगोनुं स्वरूप एतुं उत्तम प्रकारे रचेद्युर्हे, के जेने यथास्थित रीते अध्ययन करतां जेनदर्शननुं सूक्ष्म स्वरूप सारीरीते समझी अकायरे. तेशिवाय पट् पदार्थनुं पण संकेपयी स्वरूप दर्शायद्युर्हे.

बीजो ग्रंथ श्रीआनन्दघनजी माहाराज कृत चोरीशीनोरे: अने ते वालाववोध सहितरे. अव्यात्मज्ञानना शिखर उपर विराजमान श्रवेदा श्रीआनन्दघनजी माहाराज अने तेमनी चोरीसी जगप्रसिद्धरे. तेमना अध्यात्म ज्ञानविषये श्रवेविशेष लखवानी कांडपण आवश्यकता नशी. वदी साक्षर पुरुषो ज्यारे तेमनी चोरीसी वांचेरे तथा अध्ययन करेरे, त्वारे तरत तेमना अंतःकरणमां अध्यात्म ज्ञाननो विवास प्रगट थायरे. चोरीसी उपरनो वालाववोध प्राचीन गुजराती जापामां लखावेलो होवाशी, तेने आधुनिक गुजराती जापामां सुधाराची अमे आग्रंथमां रापेलोरे. कारणके तेप्रमाणे करवानी सूचना अमने अनेक अन्यासीठ तरफशी श्रवेदीहती. ते सूचना अमने वास्तविक लागवाशी उपकारनो हेतुजाणी तेम करेलरे अने तेप्रमाणे करतां वालाववोध कर्त्ताए वतावेलो आग्रय लेझमात्र पण दूरकरवामां श्रावेलो नशी. जेशी आचोरीसीना अन्यासीठने हृवे ज्ञाननो उत्तमप्रकारे लाज अवानो संन्नवरे.

त्रीजो ग्रंथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायजी रचित श्रीद्वय गुणपर्यायनो रासरे. आ रासनो ग्रंथ उपाध्यायजी माहाराजे गुजराती जापामां रचेलोरे अने तेनी पद्यरचना उपर वालाववोध पण ते उपकारी महात्माएज करेलोरे. आग्रंथनो विषय अतिगहनरे, सामान्य बुद्धिवालार्ह आ ग्रंथनुं सहज अध्ययन करीशके, तेवो आग्रंथ नशी. आग्रंथने गुजराती जापामां रचवानो ग्रंथकर्त्तानो हेतु चमत्कार उपजावे तेवोरे. परंतु दंतकथा रूप होवाशी ते श्रवे दर्शायद्यो नशी. गुजराती पद्यरचना अने तेना उपरनो स्वकृत वालाववोध रत्नां सामान्य वाचक वर्गने थोव न यद्य शके तेनुं

कारण ग्रथनो विषय अतिशय करिन अर्थात् ऊब्य, गुण अने पर्यायना अतिमङ्गल
ज्ञानस्थी जरपूर हे

आ ज्ञागमा उपर दर्शाव्या प्रमाणेना जे ग्रणे ग्रथो प्रसिद्ध करवामा आवेक्षारे,
तेनु यथार्थ ज्ञान मेलववामा मात्र वाचीजयु ते पुरलु नथी अध्ययननी यास जरूर
हे अने तेपण सारीरीते जेरुए आ ग्रथोनु अध्ययन करेयु होय तेना सादार पुरुषोनी
पासे अध्ययन करवानी जरूररे ज्यासुधी तेवीरीते अध्ययन करवामा न आवे त्या
सुधी ग्रथना विषयने, मात्र वाचनार उत्तमप्रकारे पामीशक्ती नथी मात्र वाचनारी
ग्रथना विषयनु उपर चोटीयु ज्ञान यायरे, परतु अन्यास करवामा आवे त्यारेज
ते ज्ञाननु पाचन यायरे अने ज्यारे निरतर अन्यास करवानी पद्धति थङ्गाय,
त्यारेज आवा ग्रथोना अध्ययनस्थी जैनदर्शननी शेळी समझी शकायरे

अग्रेजी केसवणी दीघेका अने देनारा आपणा जैनवधुठे वारवार एडी दक्षिको
करेठे के, जैनदर्शनमा उत्तरवा सारू अर्थात् जैनदर्शननु ज्ञान सेहेखाईयी मदीशके
एवीरीतनी अध्ययन करवानीहास पद्धति नथी आवी तेमनी दक्षिको अमूर आ-
पेक्षाए वास्तविक लागे तेवीरे, परतु एवीदक्षिको करी धर्मना ज्ञान पारवष निष्क्रुत
प्रयास नहि देता मात्र नहि अन्यास करवाना वाहाना वाळी दक्षिको फरवी ते
वास्तविक नथी तेमना अनुज्ञवमा आवेदुज हृशे के अग्रेजी जापानो, तेमज वीजा
अनेक विषयोसवधी, अन्यास करवामा अध्यापकोनी केटली आवश्यकतारे मा-
स्तरोनी मददशिवाय तेठेपण जापासवधी तथा विषयो सवधीवोध प्राप्त करी श-
क्यानस्थी एवीरीते ज्यारे सासारिक सामान्य झानसारू पण मास्तरोनी मदद देवी
पढेठे, त्यारे धर्मनु उत्तम ज्ञान मेलववासारू अध्यापकोनी मदद शिवाय ते झान के-
वीरीते मदीशके ते सेहेज समजाइ शकाय तेमरे तेथी आत्मकल्याणना अर्थी आ-
त्मार्थी ए उत्तम गुरुठनी पर्युपासना करी आवा अपूर्व ग्रथोनो अन्यास करवानी
जरूररे किं बहुना ?

अनुक्रमणिका.

॥ त्रीजोग्रंथदेवचंडजीकृत नयचक्रसार तेनीअनुक्रमणिका ॥

| | |
|--|-----|
| चार अनुयोग तथा गुणराणाश्री जीवनज्ञेद अने साधारण वेराग्य उपदेश | १६४ |
| तथा नयनी सामान्य विचक्षा अने भिसांसादिक दर्शनोनो विचार | १६५ |
| झव्यनां, गुणनां, अने पर्यायनां लक्षण नयनिकेपादिके सहित तेना अंतर्घू | १६६ |
| त अन्यदर्शनीश्रोनी उन्मार्गता इत्यादिक | |
| पंचास्तिकायनुं स्वरूप तथा एकेक झव्यनां जिन्न जिन्न लक्षण इत्यादि | १६७ |
| पंचास्तिकायनो सामान्य विशेषपर्धर्म | १६८ |
| अस्तिस्वज्ञावनुं लक्षण अने नास्तिस्वज्ञावनुं लक्षण | १६९ |
| अर्पित अनर्पितपणे एक धर्मे सप्तज्ञंगी देखाढी रे | १७० |
| अत्यंत विस्तारसहितस्वरूपपणे सप्तज्ञंगी दर्शावी रे | १७१ |
| गुणनी सप्तज्ञंगीश्रो देखाळी रे | १७२ |
| नित्यानित्यस्वज्ञावमां अने अस्ति नास्ति स्वज्ञावमां उत्पादव्ययनो एकज्ञेद, त्रीजो | |
| ज्ञेद, त्रीजोज्ञेद, चोयोज्ञेद, पांचमोज्ञेद, राष्ट्रोज्ञेद, सातमोज्ञेद इत्यादिः | १७३ |
| एक स्वज्ञाव अनेक स्वज्ञाव ११५, ज्ञेद स्वज्ञाव अज्ञेद स्वज्ञाव ११६, जन्य | |
| स्वज्ञाव अज्ञव्यस्वज्ञाव ११७, वक्तव्य स्वज्ञाव अवक्तव्य स्वज्ञाव ११८, | |
| परम स्वज्ञाव ११९, इत्यादिकनां स्वरूप जुदा जुदा पारिग्राफथी जाणवां | १७४ |
| नयज्ञान करवानो अधिकार | १७५ |
| प्रमाणना स्वरूपसाथे ज्ञान स्वरूपनी ओखखाण, आयुंजीकरण इत्यादि | १७६ |
| ॥ चोयोग्रंथ आनंदघनजीकृत चोवीसी, तेनावालावोधसाथे अनुक्रमणिका ॥ | |
| रूपनजिन स्तवनमां शुद्धचेतना पोतानी श्रद्धा सखीने श्री रूपनदेव परमा | |
| त्मासाथे प्रीतिनो विलास दर्शावे रे एम सुचव्युं रे | १७७ |
| अज्ञितजिननी स्तुतिमां यूथब्रह्मसूरगनी परे परमात्माना मार्गने जोवानी युक्ति | |
| श्रो अनेक विचारे सहित कर्त्तये दर्शावी रे | १७८ |
| संज्ञवजिनना स्तवनमां सेवनानां स्वरूपस्यान अनेक प्रकारनां वताव्यां रे | १७९ |
| अन्निनंदन जिननास्तवनमां ब्रजुना दर्शननी श्रति ऊर्जनता वतावी रे | १८० |
| सुमतिनाथना पदपंकजमां आत्माने स्यापन करवानी रीत देखाळी रे | १८१ |
| पद्मप्रज्ञ परमेश्वर साथे आत्मानो अंतरायटालवानी कवीश्वरे पृष्ठा करीरे | १८२ |
| श्रीसुपार्श्व परमेश्वरने अनेक नामयुक्त जे जाणे तेने श्री सुपार्श्वनाथ परमेश्वर | १८३ |

| | |
|--|-----|
| परमानन्दनु अवतरण करे इत्यादि उपमाये स्तुतिकरी रे | २५१ |
| चक्रप्रज्ञजिनना मुखरूप चक्रमाने दीगविना सूक्ष्म निगोदादिक अनेक स्थान | २५४ |
| को निरर्थक गया, इत्यादिक रीतो दर्शावी स्तुति करी रे | २५४ |
| सुबुद्धि जिनेश्वरना स्तवनमा प्रज्ञनी पूजाकरवानो विधि अनेकरीते वतानो रे | २५७ |
| श्रीतत्वनाथना स्तवनमा विचित्र प्रकारनी त्रिजग्नीओ देखाढी रे | २६० |
| श्रीश्रेयास जिनना स्तवनमा चार प्रकारना अध्यात्मनु स्वरूप दर्शाव्यु रे | २६३ |
| श्रीवासुपुज्य जिनना स्तवनमा आत्मानु साकार निराकारपण वर्णव्यु रे | २६५ |
| श्रीविमल जिननी स्तुतिमा प्रज्ञने चक्रये जोवावी वारितार्थ सिद्धि कही रे | २६७ |
| श्रीअनन्त परमेश्वरनी स्तवनामा ए परमेश्वरना चारित्र सेवनानी छुप्फरता | |
| अनेक हेतुयुक्तिये सापेक्ष निरपेक्षवचनोनावर्णन सहित वतावी रे | २७० |
| श्रीधर्मजिनेश्वरने हर्षसहित गावानारगमा जग न पमगा सवधी स्तुति करीरे | २७३ |
| श्रीशाति जिनेश्वरनी स्तुतिमा शात रसना स्वरूपनु घण्ठं रमणिक वर्णन कम्मुते | २७६ |
| श्रीकुम्हुनाथना स्तवनमा कोइप्रकारे मनवधातु नथी तेनीयुक्तिकहीरे | २७८ |
| श्रीअरनाथ परमात्मानो उक्षट धर्म शीरीते जाएयोजाय तेनु समाधान रे | २८१ |
| श्रीमहिनाथ प्रज्ञ कर्मादिक शत्रुने निवारी श्रेष्ठ शोजाकारीथयातेनीयुक्तिकरीरे | २८४ |
| श्रीमुनि सुव्रतस्वामिनास्तवनमा आत्मतत्त्व शी रीते जाएयो जाय, तेसवधीनी | २८७ |
| विनतिरे, जेमा सक्षेपे पद्मदर्शननु स्वरूप दर्शाव्युरे | २९१ |
| श्रीनमिनाथना स्तवनमा पद्मदर्शन जेरेते ए परमेश्वरनाज अगठेएम वताव्युरे | २९५ |
| श्रीनेमनाथना स्तवनमा अनेक युक्तिये करी राजेमतीजीनी विनति दर्शावीरे | ३०० |
| श्रीपार्वत्नाथजीनी स्तुति झानविमलसूरिकृतरे | ३०७ |
| श्रीमहावीर स्वामीनीस्तुति झानविमलसूरिकृतरे एमाकायकवीर्यनु वर्णनरे | ३०८ |
| श्रीपार्वत्जिनस्तुति झानसारजीकृत एमा प्रज्ञनारूपनु प्रतिज्ञासदर्शाव्युरे | ३११ |
| श्रीमहावीर जिनस्तुति झानसारजीकृत स्वरूप चितवनकरवा आश्रीरे | ३१२ |
| ॥ पाचमो ग्रथ ऊव्यगुणपर्यायनोरासतेनी अनुकमणिका ॥ | |
| मगखाचरण तथा ऊव्यमानुयोगना भहिमानु वर्णन ऊव्य गुणपर्यायनो चेद, | |
| स्वरूप तथा ऊव्यमा उर्ध्वता सामान्य शक्ति, अने तिर्यक् सामान्य शक्ति | |
| समुचित शक्ति अने उंध शक्त्यादिकनो गुप्तासो | ३१६ |
| ऊव्यमा एकाते चेद माननाराने अनेद पक्ष अनुसरी द्रूषण दीधुरे | ३१५ |
| चेदानेदनो पिरोध आशक्तीने टाव्योरे तथा सप्तज्ञगीनु स्थापन दर्शाव्युरे | ३१८ |
| —ग गुणपर्यायनो नयप्रमाणे पिचार एमाऊव्यार्थिक नयनादशनेद देखाव्यारे | ३२४ |

पर्वायार्थिकनयना त्र जेदनो गुवासो नथानेगमादिनातेनयना जेद वसाल्यादे
 नयनेसमीपे दिगम्बर प्रक्रियाचे त्रणउपनयनुं स्वरूप देवगाड्युंते, तेमां उच्चे
 उच्चोपचारादिक नवविधेपचार कव्याते
 अथात्स जापाचे निश्चय अनेव्यवदागनयनुं स्वरूप युद्धायुक्त प्रसुग अनेव्य
 जेदे दिगंबर प्रक्रियाचे अर्पिणालर्पिनयना न्वनन महिन देवगाड्युंते
 एकपदार्थ उत्पाद व्यय भुवशुक्तव्यते, वार्द्धप्रतिवार्द्धाना न्वादर्ष्ये अनेव्यदाने
 स्त्री शुक्तिवरी घोडादिकोना न्वटन नहिन देवगाड्युंते
 लमुवय उच्चना जेद संष्टेपर्वी देवगाड्याते, एमां दांश्क नम्यस्त्रुं रसायन याहायुंते
 अन्यार प्रकारना सामान्य स्वनाव महिन गुणना जेद देवगाड्याते
 दग्धप्रकारना विशेष स्वनावना नेवनहिन गुणना प्रदाव दग्धाते
 सामान्य विशेष महिन एकवीत स्वनावनुं अधिगम नयेकरीदग्धाते
 पर्वायना अनेक रीते जेद देवगाड्याते, तेमां दिगम्बर प्रक्रियानुं न्वनन लाने
 नांवरतुं न्वटन ते
 समाप्ति सहित उपोऽधान

देवचंद्रजीकृत नयचक्कसार
 || श्रीपरमयुरुच्योनमः ॥
 अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्कसारनुवालावोधतिरख्यते

|| मंगलाचरण ॥

प्रणम्यपरमब्रह्मभूषानंदरसास्पदं ॥ वीरसिधार्थराजेऽनन्दनंदो
 कनंदनं ॥१॥ नत्यासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वयं ॥ स्वगुरुन्
 दीपचंद्राख्यपाठकानश्चुतपाठकान् ॥ नयचक्कस्यशब्दार्थकथनं
 लोकन्नाषया ॥ कियतेवालवोधार्थं सम्यद्मार्गविगुद्ये ॥ ३ ॥

प्रशस्ति

श्रीजिनानामनेविषे १ ऊव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मक-
 णमननेजाण्डुं तेऽव्यानुयोगकद्यारे तेमां उद्भव अने नवतत्व तेनाणुएपर्यायि स्वनावपरि-
 ष्ट्वे एकआत्मानामेश्वस्तिकायद्व्युते तेआत्माअनन्तारे तेनामूलवेज्ञेद चे तेमां एकसि-
 द्धनिष्पन्न सर्वकमविरणदोपरहित संपूर्णकेवलड्डान केवलदर्शनादिगुणप्रगटरूप अखंक-
 रमल अद्यावाधानंदमयी लोकनेत्र्यतेविराजमान स्वरूपज्ञोगी तेसिद्धजीवकहिँये ते
 चेद्धतासवेश्वात्मानो मूलधर्मरते तेसिद्धतानीर्द्धाकरवाने सिद्धचंगवंतनो यथार्थसिद्ध-
 परिणमतां वांध्या जे झानावरणादिकर्म तेटालीने पोतानी संपूर्णसिद्धतानी रुचि कर-
 वी एहीजिहितशिक्षारे.

वदीवीजोन्नेद संसारीजीवोन्नोरे तेजेषे आत्मप्रदेशं स्वकर्त्तव्यपै कर्मपुञ्जवनेप्रह्या
 जेनेकर्मपुञ्जलनोलोदीज्ञावरे तेमिद्यात्व युणरायाश्रीमानीने श्रयोगीकेवली युणग-
 णाना चरमसमयपर्यत सर्वसंसारीजीवकहिँये तेनावलीवेज्ञेदरे एकथरयोगी वीजात-
 योगी तेसयोगीनावेज्ञेद एकसयोगीकेवली वीजासयोगीरद्वयस्य वद्यस्यनावेज्ञेद एक-
 असोही वीजासमोही समोहीनावेज्ञेद एकअयुविनमोही वीजाउविनमोही उद्दित-
 मोहीनावेज्ञेद एकसूक्ष्ममोही वीजावादरमोहीनावेज्ञेद एकश्रेणीवैत धीजा
 श्रेणीरहित श्रेणीरहितनावेज्ञेद एक संयमीविरति वीजायविरति अविरतीनावलीदे-
 देद एकतत्त्वकेति वीजामिद्यात्वी मिद्यात्विनावेज्ञेद एकश्रेणीवैत वीजाप्रत्ययिवेज्ञ-
 यंधिश्रेणीविनावेज्ञेद एकमव्य वीजायज्ञव्य तेमां अज्ञवज्ञीवांगु तो दखजएवोहांय ज्ञ

श्रुतयन्नामपणकरे तगा ऊव्यथीपंचमहापतआदरे पणथात्मधर्मनायथार्थ श्रस्तावि
ना पंहेसो शुणठापो किवारे मूके नही माटे ए जीबो तेसिद्धपद पामवाने योग्य नही
तेअन्यत्राचेयथनतेते

यीजान्त्र्य तेजेसिद्धपणनेयोग्यरे जेनेकारणयोगभिके पलटणपामे तेनव्यजीवे
थन्यथीथनतगुणारे तेमध्येकेऽकन्तव्यसामधीयोगपामी ग्रथिनेदकरीने समकितपामे
अनेकेत्तुसाप्तकन्त्र्यतो सामधीनेथनारे समकितपामेजनही उक्तचविशेषणवत्ता सा
मग्नीथनागत वगदाररातिथ्यप्वेशारे ॥ ज्ञापितेथणता जेसिद्धसुहंनपामति ॥ ३ ॥

एगुतेन्यजीवीमा योग्यताधर्म रठोरे तेमाटे ज्ञव्यकदिये जेजीवभिष्यात्वतजीने
शुद्धपयामं आरमधेन्यपररहो तेजमारोधर्म अनेजेथीते आत्मसत्तागतधर्मप्रगटे ते
गापनधर्मजेन्नन्ते एकगयणापुत्रणादि वदननमनादि पक्षिखेदणप्रमाङ्गादि जेटलीयो
गप्रैनिते गर्वेऽन्यथी साधनधर्मकदिये तेजापधर्म प्रगटकरणने जेकरे तेनेकारणरूप
रे ऊव्यगेवेगागतुशारण पारयासेदव इतिथागमपत्तनाद् ॥

गर्वेऽनेदरपांगादि पोनानाहयोपशमनामं प्रगट्याजे ज्ञानधीर्यादिगुण तेपुक्तानुया
षीपलादीशारीं शुद्धगुणीत्रीथीयरिदृत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायी करवा
ददपदाद्यागमग्राम अनतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेजापधर्म जाण्य-
यो एजामार्नीरात्मवानो चरयाते

ग्रिद्वापुतेन्यामातुशुद्धरूप विदानदधन तेमाध्यमानयी अनेपुक्तसुखनीथा
साये दिव भगव घन्योग्य अनुशान जेमरु ते ससारदेवेतुरे माटे साध्यसापेहपोस्या
घासपदाये गापनदरु एदिजमार्गारे अनेष्मागंनीजे प्रतितद्विते सम्यककहिये
तेगामदक्षमदिनेदवद्यारामिये तेप्रथिनेदनो व्रणकरणकरेतोजने तेव्रणकरणजीवकरे
तेद्येमद्यद्यद्यनमामे तेप्रलवणमा पंद्रेषुयथाप्रशृन्मरण यीतुथपूर्वकरण श्रीतुथनि
इमिहराद् एव्वरेमदे भहीत्तेज्जीवरे तेमा प्रयमया प्रवृत्तिमरणतेन्य तथाथन्य
दरहरे देवेऽहर्वै इथनतिशारकरे तेयथाप्राग्निमरणनु ग्रन्थपत्रविधेये

सर्वेष्मनी टन्हृष्टमितिना वापनार्नीजने मंडेवगणाओवेमाटे पथाप्रवृत्तिकरणप-
तेनही टक्कदिःप्रवृत्त्यर्द दर्जामहिनष्टग्रुद वयणापणमुपुव्यवद्वाण ॥ मवजहद्विमु
दिव हृष्टदेवशुद्धमितिनो ॥ २ ॥ माटेष्मनी टन्हृष्टमितिनो वापनार्जीव ते था
रम्मद्यद्यनोष्टद्यन्नेद्यनेत्तीजमानवमनी जपन्यमिति यंत्रितेवीरनोगुणयनत्तवे
द्व द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी
द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी
द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी द्येष्मनी

णंक्रयते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकासात् कर्मक्षणप्रवृत्तावध्य
वसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमिलर्थः

द्योपगमीचेतनावीर्यं जेसंसारनी असारताजाए संसार छुःखरूपकरीजाए तेथी
परिग्रहशरीरवीरुरे उद्गेगेउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोनाको-
कीनायोकका असंख्याताजे सत्तामांद्रता तेखपावे ने कांडकउणी एककोटाकोटीगखे
एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माश्चनंतिवारकरे पणग्रंथिभेदकरीशकेनही एकरण तेगिरिन-
दीनेविचें आव्युं पापाणते घंचनाघोटनारूप चासवेकरीने जेमसद्वेजे सुंहासो याय
अने कोइकआकारपकटे तेमजन्ममरणादिहुःखनेउद्गेगें अनाज्ञागयीज जववेरामे
जीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतं वैराग्येविचारेले जवब्रमणते छुःखठे
एसंयोगवियोगादि असारे पणकांडक झानानंदादितेसारठे एहवीगवेपणाकरनारो
जीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुरे जेजच्यनेतो पलटण यो-
ग्यतारे पण अन्नव्यजीवकेमकरे तेनुउत्तर जेतीर्थंकरन्नकिमांजे देवतानीमहिमा त.
थालोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांठायें देवत्वराज्यादिकासाजझायें इग्यार अंग
तथावाद्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्कनहोय जेपुण्याजिलापीरे तेनेगुणस्पर्श-
नयाय उकंचमहाजाप्ये ॥ अर्हदादिविज्ञतिमतिग्यवर्तीद्वयाधमादेवंविधसत्कारोदेव-
त्वराज्यादयःप्राप्यते इह्येवेसमुपद्धवुद्धेरनव्यस्यापिदेवनरेऽदादिपदेह्या निर्वाणश्रद्धा-
रहित कषानुदानं किञ्चिरंगीकृवेतोङ्गानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाज्जेपि सम्यत्कादि-
काजःश्रुतस्यनञ्चवत्येवेति ॥ एरीतंधारुं.

तथाअपूर्वकरण अनेशनिवृत्तिकरणो अधिकार जेमथागमसारमां लख्योरे तेज
प्रमाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपग्रहम अथवा द्योपशम अथवाक्षायक
सम्यक्कजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशे वर्तमाने सम्यक्कदर्शनगुणनो रोधक एहवोमिथ्या-
त्वमोह प्रकृतिनाविधिकोदयने टलवेकरीने जेसम्यक्कदर्शनगुणनी प्रवृत्तिश्चाय तेथीय-
यार्थपणे निर्दर्शरसहितजाणपणोप्रवृत्तेजीवनेइव्यानुयोगे तत्वझानप्रगटे तेथीजेआ-
त्मगुणप्रगटे तेथात्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्ते एहवीस्त्रुपूर्णानुयायी आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेह-
नेधर्मकरीसद्वे तेमाटेस्याद्यादपरिणामी पंचास्तिकायरे ते स्याद्यादरूपझान तेनयझा-
नेयाय माटेनयसहितझानकरबु तेनयझानश्रीकुर्लज्जरे अनेनयनीश्रनंततारे उकंच
जावद्यावयणपहा तावद्याचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेकनही ते कुनयकहियें
अने सर्वसापेक्षणेवत्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयरेतेनुंस्वरूपश्रद्धपमात्रलियेरैयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनरे जेकाराएएकद्वयमध्येयनंताधर्मरे तेएकसमये श्रुतोपयो-
गमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतझाननोउपयोग असंख्यातसमयेयाय अनेवस्तुमध्येतोअ-

नंतार्थम् एकसमये परिणमतापाभिये तेवारेंश्रुतज्ञान सत्यधार्यनहीं। तेमाटेनयेकरीजाले तथायथपिकेवलीनोउपयोग एकसमयीते तेमाटेजाणवामा नयनुकार्यकेवलीने पडेनहीं पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेकरीकहेबुपडेकारणकेमचन तोकमेवोलायठे अनेवस्तुधर्मश्चनताएकसमयकादेवे तेमाटेनयेकरीकहेवलीजिनज्ञगणीक्षमाश्रमणपूज्यकहेठे -

जीवादिङ्गव्यमाजेगुणठे तेश्चनतस्वज्ञावीठे गुणनीरति तेनुपरिणमन तेनीप्रवृत्ति तेमाजेसमयेकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकपरिणतिसहितठे तेथीकोइक रीते सर्वेनु जिज्ञानिक्षणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितहचिजीभने नयसहित ज्ञानकरबु जे एटसाधर्म सर्वेङ्गव्यमध्ये रहाठे माटे प्रथमतो श्रीयुस्तुपाथी इत्य गुण पर्याय उक्खावेठे एषीनिकाकही इवेमूलसूत्रनाथर्थनु व्यारयानकरेठे

श्रीवैर्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ कि

यतेतत्त्ववोधार्थं पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीकेऽगुणनीशोज्ञा अतिशयशोज्ञायेविराजमान एह्वाश्रीवैर्धमान अरि द्वृत शासननानायक तेप्रत्येकत्यत्पणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी शण योगसमावी गुणीनेश्चनुजायीचेतनानुकरबु तेनेनमबुकहिये तेपण स्वकेऽपोताने अनेपरजेशिष्यश्चथवाश्रोतादिकने अनुग्रहकेऽउपकारने सारु तत्वकेऽयथार्थवस्तुधर्मतेने धोधकेऽज्ञानवानेश्चर्थे पदार्थकेऽधर्मस्तिकायादिक उमूलङ्गव्य तेनो अनुगमकेऽसाचो परुपवो ते क्रियतेकेऽपकरियेठेये

जगतमामतातरीठ इत्यनेश्चनेकपणेकहेठे तिहानैयायिक सोलपदार्थकहेठे वेशो यिक सातपदार्थकहेठे वेदातिसारय एकपदार्थकहेठे मीमासक पाचपदार्थकहेठे पणतेसर्वभित्याठे तेणेपदार्थनु स्वरूपज्ञाणेयुनथी अनेश्रीश्रिरहत सर्वङ्गप्रत्यक्षज्ञानी ते एकजीवश्चनेपाचश्रजीप एरीतेठपदार्थकहेठे इहाकोइपुरे जेनवतत्वरूप नवपदार्थकद्यावे तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव वीजोश्रजीव एवेपदार्थतोमूलसरे अनेशेष साततत्वतो जी वश्रजीवनो साधकवाबक शुद्धशुद्ध परिणतिनीश्रवस्या जिन्हेउपखाववानेकल्याठे

श्लोक ॥ इत्याणाच्चगुणानाचपर्यायाणाचत्तद्वा ॥

निष्ठेपनयसयुक्ततत्वनेदैरलकृतम् ॥ तत्रतत्वनेदेप

र्यार्थव्यर्थव्यातस्यजीवादेवस्तुनोनाय स्वरूपतत्व

अर्थ ॥ इत्यनां गुणना तथा पर्यायना छक्षण जेउखसाण तेनिष्ठेपेकरी तथा नयेवरीयुक्ततत्वनानेदेस्तिर्थतकहुदु तत्रकेऽप्तिहाजिनागमनेविये तत्वजेवस्तुस्वरूप नेद ते नाज्ञानाज्ञानेदपर्याय तेमैरासाजेधर्म एटसाप्रकारे व्यारयाकेऽपर्यायनुकहेबु तेणेकरीने

महाज्ञाप्ये याद्वंतोङ्गेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचञ्चस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिश्चनंतात्-
तोप्यनंतयुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

तत्रज्ञव्यद्वाणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सतत्लक्षणंज्ञव्यं ए
तत्प्रज्ञव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेद्वयाद्वाणं ॥
गुणपर्यायवत्प्रज्ञव्यं एतत्पर्यायनयापेद्वया अर्थक्रियाका
रिज्ञव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेद्वया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुजलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कावथ्रेति

अर्थ ॥ हवेवदीज्ञव्यनुंमुख्यद्वाणकहेरे उत्पादकेऽ नवापर्यायनुंउपजबुं व्ययकेऽ
पूर्वपर्यायनुंविष्णसबुं अनेधुवकेऽ नित्यपणे एतीनपरिणमनपणे सर्वदाजेपरिणमे तेनेज्ञव्य
कहिये एटदेतेहिजगुणकारणकार्य वेधमेसमकालेपरिणमेरे कारण विना कार्यथायज
नही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजबुंनही जेउपादानकारण तेहिजकार्यथायरेते
कारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजबुं समकाले थायरे वक्ती कारणपणे समयेनवो-
नवोरे अनेकार्यपणोपण समयेसमयेनवोनवोरे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययरे
अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययरे अनेगुणपिंकपणे झव्याधारपणेधुवरे एवीपरिणतियें
परिणमे ते सतकेऽ उत्पादव्यजाणवो एटदेष्ट एतद्वाणते झव्यास्तिकनय तथापर्या-
यास्तिकनय एवेजेवादेइनेकह्योरे जे भ्रुवपणे ते झव्यास्तिकधर्मयद्योरे अनेउत्पादव्य-
य तेपर्यायास्तिकधर्मयद्योरे तेमाटेएलक्षणसंपूर्णरे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यरे.

तथावदीवीजुंवद्वाण तत्वार्थमांजकहुरे एकझव्यमां वद्वामांस्वकार्यगुणेवर्तमानतेगुण
अनेपर्यायते गुणनुंकारणन्ननुं झव्यनुंनिज्ञन्नन्न कार्यपणे परिणमे झव्यगुण एवेहुने
स्वाश्रयीपणेपरिणमन तेवरेजेमां तेज्ञव्यकहिये एटदेगुण तथापर्यायवंत तेज्ञव्यक-
हिये तेज्ञव्यएकनावेखनयायजनही एमसझव्यनुंद्वाणरे अनेजेघणापरमाणुना संधने
झव्यमान्योरे तेउपचारेजाणवो जेनीपरिणतिन्नकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही तेज्ञव्यपो-
तानीमूख जातत्यजेनही जेनेगुरुरुपुनुं पद्मगुण हानिश्चिररूपद्वाण चक्र एकरोफिरे
तेएक झव्य अनेजेनेजुदोफिरे तेज्ञनिज्ञन्नन्न एटदेधर्म अधर्मथाकाश ए एक एक
झव्यरे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकथ्राखंन्नझव्यरे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंता
रे तेजीविजिस्त्रमांवधेरे अनेसंसारीपणामांउत्त्रायायरे पण सर्वसंख्यामां घटता वथता
नयी तथापुजलपरमाण एकथ्राकाशग्रदेशग्रमाण एकझव्यरे तेवापरमाण सर्वजीवथी
तथा सर्वजीवनाप्रदेशयी पण अनंतगुणाझव्यरे स्कंधपणे अयवा दुटा परमाणुपणे

मनयश्च तेवीजोसमय एमजे अनतिश्रीतप्रवृत्तिश्च तेर्वर्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूप जा
एवी अनेष्टागमिकथासेते कार्यरूपेयोग्यतारूपजाण्वी श्रीतकालनो तथाअनागत
कालनो कोइडिगल्लोनथीश्रीनेपिमरूप पचास्तिकायनु वर्ततेजेपरणमनतेनुमान तेकालक
हिंये तेनेसमयनेदते ब्रीजोकालरूपनेदकहिंये ते जेपर्यायनिन्ननिन्नकार्यकरे तेकार्यनेदेन-
निन्नपणोरे तेमाटेचोथोनावयीनेदकहिंये हवेऽव्यनुखद्वाणकहेरे तेकालकाल अनेनाव
नाजेनेद तेसर्वनुएकरामिखिनेपिमपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेबु तेऽव्यकहिंये

तत्रैकस्मिन् ऽव्येष्टिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरू
पाअनंताच्चविज्ञागरूपपर्यायास्तेपासमुदायोगुणः ॥ निन्न
कार्यकरणेसामर्थ्यरूपानिन्नगुणस्यपर्याया एवंगुणाच्चव्य
नता प्रतिगुणप्रतिदेशंपर्यायाच्चविज्ञागरूपा अनतास्तु
व्या प्रायीइति तेचास्तिरूपा प्रतिवस्तुनिअनतास्ततोनत
गुणा सामर्थ्यपर्याया

अर्थ ॥ हवेगुणनुखद्वाणकहेरे तिहा शुणानामासउद्देश्य इतिवचनात् एकऽव्यनेविषे
स्वस्वकेऽपोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानु जेनेसामर्थ्यरे एवा अनतासुद्धा
जेनो अविज्ञागकेऽपीजोरेदनयाय एवाविज्ञागनो जेसमुदाय तेनेगुणकहिंये जेमएक
दोरको सो तातणानोकस्यो तेसोतातणा तोअविज्ञागपणे रतापर्यायरे तेदोरकाथीअनेक
कार्यथाय अनेकवस्तुवधाय अने अनेकनेष्टाधारथाय अनेकवेटणथाय तेनेसामर्थ्य
पर्यायकहिंये रतिरूपजेपर्याय तेतोपस्तुरूपरे अने सामर्थ्यपर्यायितो प्रवर्तनरूप कार्य
रूपरे तेरतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहिंये रतिपर्यायनाथविज्ञाग तेयोगस्थान स
मयस्थानमा कथोजरे अने निन्नकेऽपुदोकार्य करवानु जेमासामर्थ्यहोय एवाअर्थि
ज्ञागरूप आत्माप्रदेशे वर्तता पर्याय तेनिन्नकेऽपुदायुणना पर्यायजाण्वा जेम जेश्व-
विज्ञाग परिणामालवनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय तेवीर्यगुण एमज जाणवारु-
पसामर्थ्यरे जेमा एहवाजे अविज्ञागपर्यायरे तेनो समुदायतेज्ञानगुण तेवागुण एकऽ-
व्यनेविषेअनतारेतेएकगुणना प्रदेशो प्रदेशो पर्यायश्वविज्ञागरूप अनतारे अनेसर्वप्रदेशे
सरिखारे तथापचास्तिकायमध्ये एकश्वगुरुखधु पर्यायनोनेद तरतमरे तथापुज्जलपर
माणमध्ये कालनेदेन अथवाऽव्यनेदेवणांदिकनापर्यायनो तरतमयोग ते थोकाधणाप
षोरे तेपर्यायश्वस्तिरूपरे सदारतारे कोइपर्यायज्ञातरमा जातोनथी प्रदेशातरमा
पण जातो नथी तेरतिपर्यायवी सामर्थ्यपर्याय अनतगुणाजाण्वा तेकार्यरूपरे तथाच

महाज्ञाप्ये यावंतोङ्गेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिश्चनंतात्-
तोप्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

तत्रज्जब्यलक्षणं उत्पादव्ययध्वययुक्तं सततलक्षणंज्जब्यं ए
तत्त्वास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्तज्जब्यं एतत्पर्यायनयापेक्षाया अर्थक्रियाका
रिज्जब्यं एतत्त्वलक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षाया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुज्जलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीज्जब्यनुमुख्यलक्षणकहेरे उत्पादकेऽ नवापर्यायनुंजपजबुं व्ययकेऽ
पूर्वपर्यायनुंविषणसत्तुं अनेद्वुक्तेऽ नित्यपणो एतीनपरिणमनपणे सर्वदाजेपरिणमे तेनेज्जब्य
कहिये एटदेतेहिजगुणकारणकार्य वेधमेंसमकालेपरिणमेरे कारण विना कार्यथायज
नही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजबुनही जेउपादानकारण तेहिजकार्यथायरेते
कारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंजपजबुं समकालें थायरे वक्ती कारणपणो समयेनवो-
नवोरे अनेकार्यपणोपण समयेसमयेनवोनवोरे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययरे
अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययरे अनेगुणपिंकपणे झव्याधारपणेद्वुक्ते एवीपरिणितये
परिणमे ते सततकेऽ उत्तिवंतज्जब्यजाणवो एटदेए एकलक्षणते झव्यास्तिकनय तथापर्या-
यास्तिकनय एवेजेवालेइनेकख्योरे जे भुवपणो ते झव्यास्तिकधर्मग्रह्योरे अनेउत्पादव्य-
य तेपर्यायास्तिकधर्मग्रह्योरे तेमाटेलक्षणसंपूर्णरे एतत्वार्थकारकनुवाक्यरे.

तथावलीवीजुंखक्षण तत्वार्थमांजकहुंरे एकज्जब्यमां खक्षामांस्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण
अने पर्यायते गुणनुंकारणन्नून झव्यनुंचिन्नन्निन्न कार्यपणे परिणमे झव्यगुण एवेहुने
स्वाश्रयीपणेपरिणमन तेवंरेजेमां तेज्जब्यकहिये एटदेगुण तथापर्यायवंत तेज्जब्यक-
हिये तेज्जब्यएकनावेखंस्यायजनही एमूसज्जब्यनुखक्षणरे अनेजेघणपरमाणुना खंधने
झव्यमान्योरे तेउपचारेजाणवो जेनीपरिणतिग्रणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही तेज्जब्यपो-
तानीमूल जातत्यजेनही जेनेअगुरुखमुनुं पह्यगुण हानिश्चिरूपलक्षण चक्र एकरोफिरे
तेएक झव्य अनेजेने जूदोफिरे ते निन्नज्जब्यकहिये एटदेधर्म अधर्मथाकाश ए एक एक
झव्यरे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकथरखंज्जब्यरे एवा जीवसर्वेदोकमध्येयनंता
रे तेजीवसिरुमांवधेरे अनेसंसारीपणमांत्रवायरे पण सर्वसंख्यामां घटता वयता
नयी तथापुज्जलपरमाणु एकथाकाशप्रदेशप्रमाण एकज्जब्यरे तेवापरमाणु सर्वजीवथी
तथा सर्वजीवनाप्रदेशर्थी पण अनंतगुणाज्जब्यरे स्कंधपणे अथवा बुदा

गरे तथा घटीजाय पण परमाणुपुक्षपणे जेसरयारे तेमावधताघटता नवी ए निश्चयनयवी सक्षण कव्य

हृवेद्यवहारनयवीलक्षणकहेरे अर्थजे छव्यतेनीजे क्रियाकें प्रवृत्तितेनेकरे तेऽव्यक्तिहिंसेतेनीशुद्धक्रिया ते झानादिकगुणनीप्रवृत्ति जेमसक्षकङ्गेयजाणवामाटे झाननिजागनीप्रवृत्ति एमसर्वगुणनुजेकार्य जेमझानगुणनुकार्यविशेषधर्मनुजाणबु तथा दैनंगुणनुकार्य सक्षसामान्यस्वज्ञावनोवोध अने चारिगुणनुकार्य तेस्वरूपनुरमबुइ त्यादि अनेधर्मास्तिकायनुकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीप्रतयापुक्ष तेने चालगानेस द्वकारीयाय एमसर्वङ्गव्यनीसमजणजोऽखेवी एकक्षण सर्वङ्गव्यनाजेगुण वे तेसर्वनास्य यार्यानुयायीप्रवृत्तितेने अर्थक्रियाकहेरी हृवेतेठङ्गव्यरे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुनर्जास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल एठङ्गव्यजाणवा एथी वयारेपदार्थकोइनयी जे नेयायिकादिक सोलपदार्थकहेरे तेमृपारे कारणके तेप्रमाणने निजपदार्थकहेरे तेतोड्हानरे तेथात्माना प्रभेयनोगुणठे तेगुणीजेआत्मा तेमध्येरह्यो वे तेने निजपदार्थके मकहिंये वीजाप्रयोजन सिन्धातादिक तेसर्वजीपङ्गव्यनी प्रवृत्तिरे ते माटे निजपदार्थकहेरायनहरी

तथावेशेपिय १ छव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ प्रिशेप ६ समवाय ७ अन्नाव एसातपदार्थकहेरे पणतेनेकहिंये जेगुणतेतो छव्यमाजरह्यारे तो तेनेनिज्ञ पदार्थकरी कहेरु तेरेमध्यं अने कर्मतेऽव्यनुकार्यरे तथा सामान्य अने प्रिशेप एवेतोऽव्यमध्ये परिप्रमनरे यसी ममवायते भारणतारूपङ्गव्यनु प्रपत्तनरे अने अन्नापतो अवताने कहेराय से अवताने पदार्थकहेरुपटनुनयी तेमाटेवेशेपिकमतपणमृपारे तेमध्येऽव्यनव कहेरे १ षट्की २ आप ३ सेज ४ यायु ५ आकाश ६ काल ७ दिशि ८ आत्मा ९ मन एनवपदार्थकहेरे तेनेहत्तर जे षट्की आप तेज वायुपतोआत्मारे पणकर्मयोगे शरीर ज्ञेदे नामपद्धतारे अनेदिशितोआकाशमाज मिळीगयीरे तथा मन ते आत्मानेससारी-पणाना उपयोगप्रवर्तनानो छाररे तेनेनिज्ञङ्गव्यरेमकहिंये

वस्त्रिदातिमाग्य तेएङ्गायात्माव्यद्वेतपणे एकजङ्ग्यमानेरे तेनीपणन्नुखरे केमके जेशरीरे तेनोऽस्त्वीते अने पुनर्जङ्ग्यनामंधरे तेकेमणकयाय तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाशरे तेमर्यप्रसिद्धरे तेजूदोमान्यापिना वेमचाले तेमाटेथै छन्तरयो रसो नदी

द्वन्द्वोऽद्वद्वर्ण तेमन्यसनय नवाननापणे १ आकाश २ काल ३ जीर ४ पुनर्जङ्ग्य ए भारजङ्ग्यमानेरे तेनेपुवीये जेजीपुनर्जङ्ग्यनेत्रेमें वेमरेवेनानयी तेनोचवादिजापण मेत्रे माटेनेवा अपेहाशरणस्य २ धर्मान्विकाय ३ अधर्मास्तिकायणवेङ्गव्यपण मान

वाजोइये तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्ता एकपरमेश्वरनेमानेरे तेपण मृपारं जे निर्मलरागद्वेष्परहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्तकिमश्राय बटी कोष्टक इष्टा बलगान्मेरे तेष्टातो अधूरानेरे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्वरनी दीला कहे रे ते दीलातो अजाण अधूरो तथा जेनेपोतानो आनन्द पोतापासेनहोय तेकरे पणजे संपूर्ण चिदानन्दघन तेने दीला होयजनही धर्माधिर्मानिनांगंविनांगेनसुखंकृतः ॥ मुखंविनानकर्त्तव्यंतष्टास्तारः परेकयं ३ अनेमीमांसादिक पांचज्ञतकहेरे तेमांपण चारज्ञततो जीवपुञ्जलना संवंधेउपनारेअनेश्वाकाशतेलोकालोकनिवृद्धव्यरे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंमूल्यात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाज्ञा

वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतेवडव्यनवस्तुवृत्त्या ॥

एरीतेयसत्यपरुपणानुनिराकरणकरी आगमनीसांखे कार्यादिकनेयत्रुमाने ऊव्यठ ठरेरे भाटेतेहिजमानवा तेमां पांचज्ञव्य सप्रदेशीरे तेप्रदेशनापिंशुपणामाटे अस्तिकायपणो पांचज्ञव्यनेरे अने रठोकालज्ञव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी ति हांकालते मुख्यवृत्तियेऽज्ञव्यनथी उपचारथी ऊव्यकहेरायरे जेमवस्तुगते धर्मास्तिकायादिक ऊव्यरे तेमकालज्ञव्यनथी जोएकालने पिमूल्यप्रदेशमानियेतो एनो मानकिहांरे जोमनुप्यकेव्रमांकालज्ञव्यमानियेतो वाहिरनाहेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पादव्यय कोणकरेरे अनेजोचोदराजलोकमां व्यापीमानियेतो असंख्यातप्रदेश मानवा जीइये अनेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्यातामानियें तोलोकप्रदेश प्रमाण रेणुकथाय तेवारे असंख्याताकालज्ञव्यथाय तेतोअनंतज्ञव्यमान्योरे माटेएकाखने पंचास्तिकायना वर्तनारूपपर्यायने आरोपेऽज्ञव्यमानियें केमके अस्तिकायतानथी अनेसर्वमांवर्तनाकरे एपक्षसत्यरे जे आगमनेविषे राणांगसूत्रनाश्रालावामांरे किञ्चिद्देते अरुसमयेतिवृद्धिति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एट्टेकाल ते जीवतथाअर्जीवनो वर्तमानपर्यायरे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्तनानेकालकहोरे ते कालने अर्जीवज्ञव्यमांगणो तेनोश्वाकाशयेरे जेजीववर्तनार्थीअर्जीववर्तनाअनंतगुणीरे तेवहुलतामाटे कालने अर्जीवगवेष्योरे केमके कालनीवर्तना अर्जीवज्ञपर अनंतिरे अनेजीवज्ञपरतेश्वीश्रोसीरे माटे.

तथा विदेशावव्यकतान्यमध्ये नपश्यतिदेव्रकालावसोतयोरमूर्त्तत्वात् अववेश्वमृत्ति विषयत्वात् वर्तनारूपंतुकालंपश्यति ऊव्यपर्यायत्वात्स्वेति तथा वाचीसहजारीमध्ये तथा कालस्यवर्तनादिन्पत्वात् पर्यायत्वात् ऊव्योपकमःउपचारात् तथाजगवत्यांगे १३ तेरमाशतकमध्ये इष्टांपुञ्जलवर्तनानीश्रोपकालये कालनेल्पीगवेष्योरे.

तत्रगनिपरिणामतानां जीवपुञ्जलानां गत्युपपूर्णद्वेतुधर्मा

स्तिकायः सचासंख्यप्रदेशलोकप्रदेशपरिमाणः

श्र्वय ॥ हवेपचास्तिकायनु जिन्नजिन्नलक्षणकहेरे जेगतिपरिणामीपणेपरिणम्याजी
वतथापुञ्जस्तेनेगतिनाउरजानोहेतु तेघर्मास्तिकायझब्यकहियें तेघर्मास्तिकायअस-
र्याता प्रदेशपरिमाणेरे लोकमाद्यापिरे लोकमानठे लोकनायकप्रदेशोघर्मास्तिका
यनोएकएकप्रदेश तेश्वनतसवधीपणेरे एधर्मादिव्रणझब्य अचल अवस्थितअक्रिये

स्थितिपरिणामाना जीवपुञ्जलाना स्थित्युपट्टं नहेतु
अधर्मास्तिकाय सचासख्येयप्रदेशलोकपरिमाण

श्र्वय ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुञ्जल तेने स्थितिना उरजानोहेतु ते अ-
धर्मास्तिकाय झब्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसख्यप्रदेशीरे

सर्वझब्याणाचाधारन्जूतः अवगाहकस्वज्ञावाना जीवपुञ्ज
लाना अवगाहोपष्टन्जक आकाशास्तिकाय सचानंतप्रदे-
शः लोकलोकपरिमाणः यत्रजीवाद्योवर्ततेसलोक असं
ख्यप्रदेशप्रमाण तत परमलोक केवलाकाशप्रदेशव्यूह
रूप सचानंतप्रदेशप्रमाण

श्र्वय ॥ सर्वझब्यने आधारन्जूत अवगाहस्वज्ञावी जे जीवतथापुञ्जस्ते अवगाहना
नोउरजानोहेतु तेआकाशास्तिकाय झब्यकहिये तेनाप्रदेश अनतारे लोक तथा अ-
सोकरूपरे तेमाजेहेत्रेजीव तथा पुञ्जल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायरे ते हेत्रने
सोककहियेंथने केवल एकसोकमात्र आकाशजिहारे तेनेअसोककहियें एटले जेसोक
तेजीवादिझब्यसहित अने जीवादिकझब्य जिहानथी तेने असोककहियें ते असो-
कना प्रदेशथनतारे अवगाहकर्थमें सर्वझब्य एमासमायरे

कारणमेवतदन्य सूक्ष्मोनित्यअन्नवतिपरमाणु ॥ एकरसव
र्णगधोक्षिप्तर्ण वार्यदिंगीच ॥ पूरणगदनस्वज्ञाव पुञ्जला
स्तिकाय सचपरमाणुरूपः तेचलोके अनता एकरूपा
परमाणव अनता द्युणकाअप्यनता द्युणकाअप्यनन्ता
एवसंरन्याताणुकास्कधाअप्यनता असख्याताणुकस्क
वाअप्यनता एकरूपमिन्द्याकागप्रदेशे एवसर्वदोक्षेपि
इय एवचल्वारोस्तिकाया अचेतना

देवचंद्रजीकृत नयचकसार.

अर्थ ॥ हवेपुजलद्वयनुं स्त्रूपदविवियेरेये जेपूरणकेष्टराये वरणादिगुणेवधे गली-
जाय सरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमासंसज्जावरे लेपुजलास्तिकायकहिये तेसू-
दद्वयपरमाणुरूपरे तेपरमाणुरुद्वयकहेरे व्याणुकादिक जेटलास्कंधरे तेसर्वनुं अ-
त्यंतकेष्टमूलकारणपरमाणुरे एटलेसर्वस्कंधनुं परमाणुकारणरे पणएपरमाणुरुं कारण
कोशनथी कोइत्तुंनीपजाव्योधयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणययोनथी सूक्ष्मरे अनंतपर-
काशग्रदेशनी अवगाहनाहुद्व एकपरमाणुरे तोपयते एकआकाशप्रदेशमां अनेकपणे-
माणुसमावरे पणपरमाणुरुषे वीजुंद्वयकोइसमायनही माटे परमाणु द्वय सूक्ष्मरे
अने नित्य रे जेट्तुं परमाणुरुद्वयरे तेखंधादिक अनेकपणेपरिणमे एकरस होय एकवणहोय एडुं
कोइ विष्णुजायनही एडुंपरमाणुरुद्वयरे तेएकपरमाणुमाहेला गमे ते वेफरसहोय एडुं
एकगंधहोय अनेहुखोचिकणोटाढोउन्हो एहनासंबंधतुंकारण परमाणु
जेघटपटशरीरादिककार्यदेखायरे यहवायरे तेरुधीरेतो एहनासंबंधतुंकारण अरुधीरेतोतेनो
सूक्ष्मरे माटे इंडियज्ञाने यहेवातोनथी परंतुरुधीरे केमके अरुधीधीरुधीकार्ययायनही
तेमाटेज परमाणुरुधीरे तेधीएस्कंधपणरुधीयवारे अनेआकाशप्रदेश अरुधीरेतोतेनो
अनंतप्रदेशीस्कंधपणश्रुधीरे एमधारडुं तेपरमाणुना व्याणुकादिकस्कंध अनंतरे त.
याहुटापरमाणु तेपणश्रनंतारे तेवलीखंधमां मिलेरे तोवीजाखंधमाहेदी उटायायरे
एमखंधविवरीजाय ने परमाणुरुयाय तेनी वर्णण अठ्यावीसप्रकारनीरे तेअठ्यावीस
चेद्दक्षमपयमीधीजाएवा एमएकलापरमाणु तेपणश्रनंता तथावेमिलीनेखंधपान्नातेवा
धयाय तेपणश्रनंता एमजसंस्थाताणुकनाखंध पणश्रनंता तेमजश्रसंस्थात परमाणुमिलिखं-
जातीनाखंधतेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांगथवगाहे एमअसरव्याताप्रदेश
अवगाहेरे पणएकवर्णणानी अवगाहना अंगुखेथसंस्थातमें जागेअवगाहे वयतिथ-
वगाहेनही अनेथनंतिवर्णणामिले अंगुख हाथ गाऊ योजनादिकने माने अवगाहना
धाय एम ए १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुजलास्तिकाय
एचारेद्वयश्रेतनरे अजीवरे जाणपणारहितरे.

चेतनालद्वाणोजीवः चेतनाचडानदर्शनोपयोगी अनंतप
र्यायपरिणामिक कर्तृत्वनोक्तद्वादिवद्वाणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्वयनुस्त्रूपकहेरे चेतनाजे घोधगच्छिरे लक्षण १
जेपोतानीपरिणमन तथा परनीप ११

१ नेजाये तेजीव २

सामान्यस्वज्ञान अनेअनन्ताविशेषस्वज्ञावर्वते तेमासर्वज्ञव्यनाथनताविशेषर्भनु अवधोधक तेहानगुणकहिये तथासामान्यविशेष स्वज्ञाववतप्रस्तुनेविषे जे सामान्यस्वज्ञापनु अननोधक तेदर्शनगुणकहिये तेज्ञानदर्शनोपयोगी जे अनतपर्याय तेनोपरिणामी कर्ता जोक्तादिक अनतिशक्तिनुपात्र तेजीवजाएरो उक्तच नाणचदसणचेव, चरित्चतरोतहा ॥ वीरीयउपरंगोय, एवजीवस्सलरकृण ॥ १ ॥

चेतनासक्षण इनदर्शनचारित्रसुयवीर्यादिक अनतगुणनुपात्र स्वस्वरूपज्ञोगी तथाअनवशिष्टजे स्वावस्याप्रगटी तेनोनोक्ता अनतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति तेनो कर्ता जोक्ता परज्ञानोश्चकर्त्तश्चजोक्ता स्वकेवव्यापी अनतिथात्मसज्ञानो ग्राहक व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाएवो

पचास्तिनायानापरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिगव्यक्त्यत्तिव
र्तनारूपपर्याय काल अस्यचाप्रदेशिकत्वेनवप्रस्तिकायत्वा
ज्ञाव पचास्तिकायातर्नूतपर्यायरूपतेवास्य एतेपचास्तिका
याः तत्रधर्माधर्मोद्योरुप्रभाणासरयेयप्रदेशिकाँ दोकप्रभा
णप्रदेशएवएकजीव एतेजीवाअप्यनता आकाशेहि
अनतप्रदेशप्रभाण पुञ्जलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्र
देशप्रदेशत्तुताऽव्ययुक्तत्वात् अस्तिकाय कालस्य
उपचारेणजिन्नजव्यतात्तज्ञा साचव्यवहारनयोदयाच्चा
दित्यमनिपरिहितेनपरिमाण ऋषि समयदेवेएवएपव्यव
दारकाल समयावस्थादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ देवकास्त्रज्ञव्यनुक्तकहेवे जेपचान्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे गतिंगे तथा
पुञ्जलपरमेन नपुराणपणे व्यक्तेष्टगटवे वृत्तिरेष्टप्रश्ननितेनर्तनाकहिये तेमर्तनारूप
पर्यायतेनेकाशवदहिये पनेप्रदेशनयीतेमादे अन्तिकायपणोनशी एकाशते पचास्तिकायने
पिपेश्वनर्नुतपर्यायपरिणामनते जातेधर्मान्तिकायादिकनोपर्यायते एम तत्यार्थवृत्तिनेविषे
वस्तोते तिद्वप्तमान्तिकाय एकज्ञ्यते अमायातप्रदेशीते सोमाकाशानप्रदेशप्रभाणे ए
एमधर्मान्तिकायपण एकज्ञ्यते सोमप्रभाण अमम्यातप्रदेशीते अनेएकजीप्रज्ञव्यते
पण सोमप्रभाण अमम्यातप्रदेशीते पण स्वव्यवगाहना प्रभाणम्यापत्ते तेजीप्रज्ञव्यत्य
नताते अहृतमशानुना अमनज्ञव्यते सत्त्वचिदानदमयीते पणपरपरिणामीयते पुञ्जलप्राहक
उम्भजोगीपदे प्रतिममये नवासर्वशाम्ये समारीययाते तेहिज जेगारेस्मरूपप्राहक स्व-

रूपनोनीश्चाय तेवार्सवेक्षरहितयदी परमज्ञानमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सि-
खबुद्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अद्वेगी अनाकारी एकांतिक आत्मतिक निःप्रवासी
अविनाशी स्वरूपसुखनोनोगी शुद्ध सिद्धयाय तेमादेश्वरोचेतन एपरमावश्चनोग्य सर्व
जगतनाजीवनीएठ तेनोन्नोगववापणोतजी स्वज्ञावज्ञोगीपणानो रसीयोग्यी स्वस्वरूप
निरधार स्वरूपनासन स्वरूपरमणीश्वरी पोतानाश्रानंदनेप्रगटकरीने निर्मलयादुं.

तथायाकालद्वय तेलोकालोकमिति एकद्वयरे अनंतप्रदेशीरे अनेपुज्जलद्वयते
परमाणुपरे केमकेपरमाणुश्रनंतारेमादे अनंताद्वयरे इहांकोश्प्रेरेजे प्रदेशनासंवंध
विनापरमाणुद्वयने अस्तिकायकिमक्षयोरे तेनेउचर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीतिपण अ-
नंता परमाणुशीभिलवानालेकारण तेआद्वयतेणेतुकरे तैयोग्यतामादे अस्तिकाय क-
ह्योरे तथाकालद्वयने उपचारे ज्ञिन्नद्वयपणोकद्योरे तेव्यवहारनयनीयेक्षाये जे
मनुष्यकेव्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिङ्गानेएट्टेसमयावधिकादिरूप परिमाणे जेमान तेने
व्यवहारयीकालकहिये इति एकालमुख्यत्वित्यें तोसमयकेव्रमन्त्रे अने मनुष्य केव्र-
शीवाहेर जेजीवोरे तेनाथ्यायुप्यपणएज्जेव्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेक्षयारे तथासूर्यनोचारते
पण जीवपुज्जलनुंजप्रवर्तनरे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुज्जरे एट्टे एकालद्वयते
कालपणे निव्रपिष्पणे रेखोनही उपचारेंजरेखो एममानवो.

इहांकोश्कहेजे एकएकद्वयनेविषे अनेकयनेकपर्यायरे ते कोइपर्यायने द्वयपणो
नकहो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्वयनोथारोप शामाटेकहो तेनेउचर एवर्त्तना
परिणतितेसर्व पर्यायने सहकारीरे अनेसर्वद्वयनेरे तेथीमुख्यपर्यायरे मादे एने द्व-
यनोथारोपरे तेपणथनादिचालरे.

एतेपंचास्तिकायाः सामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वज्ञावद्याणं उच्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वज्ञावःतत्रएकंनित्यनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यनित्यानित्यनिरवयवसावयवः सक्रिय
तादेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषपरद्वितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ द्वेषपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीरे ते सामान्यनुलक्षण विशेष-
पावश्यकेंकद्योरे तिहांप्रथमशी स्वज्ञावनुलक्षणकहेरे जेद्वयनेविषेव्यपतोहोय तथा
गुणपर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपाभिषें तेनेसामान्यस्वज्ञावकहिये ते
सामान्यस्वज्ञावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव केऽजेन्ने

अविज्ञागरूप श्रवयवनहोय अने सर्वंगतकेऽसर्वमाद्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वज्ञावकहिये जीगदिङ्कव्यनेविषेषे एकपणोत्पिण्डपणेरे तेसर्वङ्कव्यनेविषेषे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपंथनेकरे पणतेसमुदायपिण्डपणमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतेजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वज्ञापकहिये तेसामान्यनावेनेदरे अस्तितादिकजेसर्वपदार्थनेविषेषे तेमहासामान्यकहिये एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतयाय पणप्रत्यक्षातो अविधिदर्शनकेवसदर्शनेजजणाय परोक्षनग्रहवाय तथा वृक्ष अत निव जबु प्रमुख व्यक्तिश्चनेकरे पणशृङ्खलपणो सर्वमारे एथगातरसामान्य तेच्छुदर्शने तथा अच्छुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अविधिदर्शन तथाकेवलदर्शने ग्रहगाय अने विशेषधर्मते इनानुगेजग्रहवाय ह्वे प्रिशेपनुकक्षण कहियेनेये कोइकधर्मेनित्य कोइकधर्मेअनित्य कोइकरीतेश्रवयवरसहित कोइकरीतेश्रवयवरहित अविज्ञागपर्यायं सावयत सामर्थ्यपर्याये निरयपत पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणातरमाद्यापत्तानथी तेमाटेदेशगत जेगुणहोय तेथाराङ्कव्यमा व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहिये तोएवाजेधर्म तेसर्वविशेषजाणया पदार्थनागुणनीप्रगृह्णि तेनाजेकारणतेविशेषपस्वज्ञाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण प्रिशेपपर्मजगणयो जेसामान्यते प्रिशेपपरहितनथी अनेजेप्रिशेपते सामान्यरहितनथी

तेमृतसामान्यस्वज्ञावा पद्म तेचामी १ अस्तित्व २ वस्तुत्व
 ३ उच्चत्व ४ प्रमेयत्व ५ सतत्व ६ अगुरुख्युत्व तत्र
 १ नित्यत्वादीना उत्तरसामान्याना परिणामिकत्वादीना
 प्रिशेपस्वज्ञावानामाधारसन्तवर्धमत्व अस्तित्व ३ गुणपर्यायाधारत्वपस्तुत्व ३ अव्यक्तियाकारित्वउच्चत्व अथवाउत्पादव्ययोर्मध्येउत्पादव्ययायाणाजनकत्वप्रसवस्वाविज्ञविलक्षणव्यवहीनृतपर्यायाणातिरोजाव्यज्ञापरमूरुपाया शक्तेराधारत्वं उच्चत्वं ४ स्वप्रव्यवसायिज्ञानप्रमाण ग्रमीयतेअनेनेतिप्रमाण तेनप्रमाणेनप्रमाणानुग्रहप्रमेय झानेनज्ञाय तेतद्योग्यतावप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्यप्रमुखयुक्तमत्व ६ पद्मगुणदानिवृद्धिस्वज्ञावा अगुरुख्युपर्यायान्तराधारत्वागुरुख्युत्वएते पदम्भज्ञावा सर्वउच्चेषुपणिगमति तेनसामान्यस्वज्ञावा

अर्थ ॥ तेमृतसामान्यना वर्तेदरे तेमवेउच्चयमाद्यापकपणेरे १ अस्तित्व २ वस्तुत्व ३ उच्चत्व ४ प्रमेयत्व ५ सन्तत्व ६ अगुरुख्युत्व एतमृतस्वज्ञावं ते सर्वउच्चव्यमध्ये

परिणामिकपणेपरिणमेते प्रथमेनेकोइनोनहायनवी नवकंण तिहाँ १ सर्वेऽव्यनेविधे उत्तरसामान्यन्वज्ञाव निलत्व अनिलत्वादिक तथाविशेषस्वज्ञाव तेपरिणामिकत्वादिक तेनोश्चाथारज्जन्वर्धमेते त्वर्भमेनेतीर्थकर्गदेवनामान्यस्वज्ञाव अनिलत्वन्वपकदेवे नथा २ गु-पपर्यायनो श्वायान्वत्पदार्थ तेनेवस्तुत्वकहिंये अने ३ अर्थेऽव्य तेनीजेकिया जेम धर्मस्तिकायनी चक्रणनहायकिया अथर्मान्विकायनी विस्तहायकिया श्वाकागड्डन्व-नी अवगाहन्वपकिया लीवनी उपयोगदक्षणकिया नथा पुनर्वनी मिखवाविखरवान्वप कियानो करवापणो एन्डवेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थकिया अनेतेश्वर्यकियानो श्वायारी धर्म तेनेश्रीसर्वेषादेवे झव्यत्वपणोकह्योरे.

बदीझव्यत्वपणानुवद्धाणांतरकह्योरे उत्पादपर्यायनीजे प्रसवशक्ति एटदे श्वाविज्ञाव-लक्षण जेश्वकितेनाव्ययीज्ञन्वपर्यायनो तिरोज्ञाववयां श्ववा अज्ञाववयवान्वप शक्तिनो जेअधारज्जन्वर्धमेतेनेऽव्यत्वकहिंये.

४ न्वकंण पोतेश्वात्मा अनेपरकंण पुक्षवादिकधर्मस्तिकायादिक अन्यज्ञव्यतेने च-श्वायपणेजाए तेज्ञानकहिंये वेज्ञानपांचनेदेवे तेज्ञानना उपयोगमांश्वावे एवीजेश्वकितेनेप्रभेयत्वपणोकहिंये तेप्रभेयपणोसर्वेऽव्यनुं मूखधर्मेते प्रभाणमांवसाव्योजेवस्तु तेने अर्थेयपणोकहिंये तेसर्वेऽव्यसर्वेगुणपर्यायप्रभेयते अनेश्वात्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रभाण पणो नथा प्रभेयपणो एवंधर्मेते पोतानोप्रभाणपणोते पोतेजकरेरे दर्जनगुणनोप्रभाण ज्ञानगुणकरेरे केमके दर्शनगुणते विशेषपते सावववरे जेसाववहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानश्रीजज्ञाय दर्शनगुणते सामान्यधर्मनो श्राद्धकरे तेपण प्र-भाणकद्वाय पणप्रभाणनान्नदक्षाते तिहाँ ज्ञानजग्न्यनुंते तेनुंकारणेऽर्जनोपयोग तेव्य-क्षपन्वतोनवी तेमांप्रभाणमध्ये गवेष्यो नथीतेप्रभाणना मूखवेजेदेवे एकप्रत्वक्ष अने वीजोपरोक्ष स्पष्टप्रत्वक्षं परोक्षमन्यत् इतिस्याद्वादरज्ञाकरवाक्यात.

५ उत्पादकंण उपज्ञाव व्यवकंण विषस्वो ब्रुवकंण निवपणो वस्तुनाएकगुणमां एकसमये एत्रणेपरिणमेते सदापरिणमेते एवोजेपरिणमते सत्पणोकहिंये अने ते सत्-पणानो ज्ञाव ते सत्वपणो कहिंये.

६ तथा रठो १ अनंतज्ञागद्वानि २ असंस्यातज्ञागद्वानि ३ संस्यातज्ञागद्वानि ४ सं-स्यातगुणद्वानि ५ असंस्यातगुणद्वानि ६ अनंतगुणद्वानि एवप्रकारनीहानि तथा १ अनंतज्ञागद्विद्धिश्वसंस्यातज्ञागद्विद्धिसंस्यातज्ञागद्विद्धिः संस्यातगुणद्विद्धिः ५ असंस्या-नगुणद्विद्धि ६ अनंतगुणद्विद्धि एवद्विद्धि एमठप्रकारनीहानि तथा रप्रकारनीहानि तेअगु-णस्युपर्यायनी सर्वेऽव्यनेसर्वेप्रदेशो परिणमेते तेकोऽक्षप्रदेशो कोऽसमये अनंतज्ञाग द्वानिपणेपरिणमे अनेकोऽक्षसमये कोऽक्षप्रदेशो अनंतज्ञागद्विद्धिपणे परिणमेते एवंवार

प्रकारे परिणमेरे ते अगुरुद्धधुपर्यायिनी परिणमनशक्ति तेअगुरुद्धधुत्व अगुरुस्त्वनोनाम जाण्वो तत्त्वार्थटीकानेविपेपाचमाश्रद्धायें अखोकाकाशनेव्यषिकारे कहोरे एमएव स्वज्ञाव सर्वेऽव्यनेविपे परिणमेरे एठएऽव्यनोमूलस्वज्ञापरे ऽव्यनोनिन्नपणे प्रदेश-नोनिन्नपणे तेअगुरुद्धधुनेनेदपणे यायरे तेमाटे एठमूलसामान्यस्वज्ञावरे एऽव्या स्तिकथर्मेरे अने एनुपरिणमनते पर्यायास्तिक धर्मेरे केटवाकनादीएमकहेरेजे पर्याय नोपिंगनेऽव्यरे पणऽव्यपणे निन्ननथी जेम धूरी इमा कागमो ३ ज्ञागली जहरी प्रमुख समुदायने गानोकहियें पण सर्वअव्यवधीनिन्न गानापणोकोइदेसातोनथी ते मज झानादिकगुणयी निन्नपणेकोऽ आत्मादेसातोनथी तेने कहिये जे झानादिकगुणेविपे रतिएकपिंगसमुदायता सदाश्वस्थितपणे अनेऽव्यधीभिलीनजाय तथास्व क्रियावंतपणे इत्यादिकसामान्यधर्मेरे रतिअस्तित्व अर्थक्रियाघटतेऽव्यपणे एकपिंगपणोतेपस्तुत इत्यादिकते सर्वेऽव्यपणेरे एटके ऽव्यास्तिक पर्यायास्तिक ए वे-दुमहीनेऽप्यपणेरे उक्तच समतोदवापज्ञापरहित्या नपञ्जवादवर्तित्वत्तिए पमूलसामान्यस्वज्ञावनात्मेद कहा

तत्रात्यस्तित्व उत्तरसामान्यस्वज्ञावगम्यं तेचोत्तरसामान्य
स्वज्ञावाद्यनताद्यपिवक्तव्येनव्योदश १ अस्तिस्वज्ञा
व २ नाम्तिम्बज्ञाव ३ नित्यस्वज्ञाव ४ अनित्यस्वज्ञा
व ५ एकस्वज्ञाव ६ अनेकस्वज्ञाव ७ जेदस्वज्ञाव
८ अनेदस्वज्ञाव ९ भव्यस्वज्ञावः १० अभव्यस्वज्ञाव
११ वक्तव्यस्वज्ञाव १२ अवक्तव्यस्वज्ञाव १३ परमस्व
ज्ञाप इत्येमस्तुपवन्नुसामान्यानतमय

अर्थ ॥ तयावसी अन्तित्व उत्तरसामान्यम्बनापकहेरे ते उत्तरसामान्यस्वज्ञानम सुमध्ये अनतारे परतोसामान्यम्बनाव अनेकातजयपताकादिप्रये वयाष्टारे तेमां धीपेशमात्र उत्तियेत्रेये तेनानामउपर्गनामूलपाठमा सुखनरे माटे त्रिग्यानयी तयाए ना व्याग्यानयी पणजपासे एतेर सामान्यम्बनामं पणिणमतिरस्तुहोय

स्वऽव्यादिचनुष्टपेनव्याप्यव्यापकादिस्वविति
स्विनानाम्बपरिणामान् पणिणामातगगमनहे
तु वन्नुन मञ्चपतापरिणति अन्तिम्बज्ञाव
अर्थ ४ तेमा २ प्रथम अस्तिस्वज्ञावनु उद्देशकहेरे स्वकेऽ पोतानाऽव्यादिभार

केवदीनाजासनमां समकालेष्टे तेश्रुतद्वानीनाजासनमां क्रमपुर्वकरे केमके जायासर्वक-
भेकहेवायरे तेशीश्रमस्त्यथाय तेनेजोस्यातपदेप्रविष्येजाणियें नोसत्यथाय माटेस्यातपूर्वक
ससन्नगीकद्वियें ऊव्यगुणपर्याय स्वज्ञावसर्वमध्येष्टे तेरीतेसदद्वृती तेटद्वांतेकरीकहेरे उ-
ष्टकेप०प्तोरे गावक कांठो कपाल तखो कुक्षिपेटो तुभ पोटोलो इत्यादिस्वपर्यायेकरी घ-
टरतोरे तेघटनेस्वपर्यायें त्रनापणे अर्पितकरियें तेवारेते कुन्जकुन्जधमें सनकेप०प्तोरे प-
एश्रुतादिकर्मनी रतिसापेद्वाराग्रवाने स्यातपूर्वकद्वेवो एटद्वे स्यातश्रस्तिघटः एप्र-
यमन्नगोजाएवो तथाजीवादिऊव्यनेविषेजीवनाद्वानादिगुण तेनेपर्यायें जीवऊव्यनेनि-
त्यादि स्वज्ञावेकरीने स्यातश्रस्तिजीवः एमसर्वऊव्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाथजीवनो
निल्यपणो सरिखोजासे पणतेणनोतेमानंही अनेतेनोएमानंही जोपणजीवसर्व एकजा-
तीऊव्यरे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणरे तेवीजाजीवमानंवायी माटेसर्वऊव्य स्वधमेंज
अस्तिरे अने परधमेंनास्तिरे एमस्यातश्रस्तिजीव एप्रयमन्नंगजाएवो.

तथापटादिगतेस्त्वक्त्राणादिजिः परपर्यायेसज्ञावेनार्पितः
ञ्चविगेपितः अकुंभोजवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर
सल्वविवदायामसनघटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ
सत् जीव इतिद्वितीयोन्नंगः

अर्थ ॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढांके लांघोपथराय इत्यादिपर्याय ते
घटनापर्यायनथी परपर्यायरे पटनेविषेरह्यारे घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिष्ठे तेशी एप-
र्यायनो असज्ञावरे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेपरपर्यायना
अरतापणानीविवक्षायें अरतोघटरे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो
जीवमध्येयसत् अरतापणो तेवीजीवपरपर्यायेनास्तिरे भाटे स्यात्नास्ति एवीजोजाएंगो
जाएवो केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन ऊव्यनेविषेरे.

तथासर्वोघटःस्वपरोज्यपर्यायैः सज्ञावासज्ञावाज्यांसत्वास
त्वाज्यामर्पितोयुगपद्गुमिष्टोऽवक्तव्योजवति स्वपरपर्या
यसत्वासत्वाज्यांएकैकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि
तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाज्यामे
कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्याद्वक्तव्योजीव इतितृतीयो
नंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुयद्वृणपरत्वात्

ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेनाप तेतोश्चित्पणेरे अनेपरङ्गव्यमां रह्याजेथेतनादिक जाप तेनीनास्तितारे एटलेतेपर्वमंजीवङ्गव्यमानथी भाटे परधर्मनी नास्तितारे पणतेना स्तिता तेङ्गव्यमध्ये अस्तिपणेरहीरे जेमधटनाधर्मधटमारे तेथीधटमा घटधर्मनोश्चित्पणेरे पणपटादिसर्वपरङ्गव्योनो नास्तित्वपणे ते घटनेविपेरहोरे तथाजीवमध्ये जीवज्ञानादिकगुण तेश्चित्पणेरे पणपुण्डिनावर्णादिक जीवमध्येनथी माटेवर्णादिक-नीनास्ति ते जीवमध्येरहिरे श्रीनगवतीसूत्रेकद्युरे हेगोतम अठित्व अठित्तेपरिणमयी नठित्य नठित्तेपरिणमयी तथाराणागसूत्रे १ सियथ्रत्यि २ सियनत्यि ३ सियथ्रत्यि-नत्यी ४ सियथ्रवत्त्र एचोनगीकहीरे अनेश्रीविशेषापापश्यकमध्येकद्युरेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणेजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अनेजेनजाणे श्वरवा श्वरथार्थपणेजाणे ते मिधाती उक्तच सदसदविशेषणारे जवहेऊजहहीउंपदनारे ॥ नाणफक्ताज्ञापारे मिधादिष्ठिसथग्राण ॥ १ ॥ एगाथानीटीकामध्ये स्याद्वादोपदक्षितवस्तुसाद्वादश्वसप्त-ज्ञगीपरिणाम एकेकभिन्नङ्गव्येषुणेपर्यायेचसप्तसप्तजगाजनवत्येव अत अनतपर्यायपरिणेतेमस्तुनिअनता सप्तजग्योजवंति इतिरत्नाकरावतारिकाया तेङ्गव्यनेविषे गुणनेविषे पर्यायनेविषे म्बर्ष्येंसातजगाहोय जेएसातजगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहियें

तथाहि स्वपर्याये परपर्यायेरुज्जयपर्याये सज्जावेनासज्जा
वेनोजयेनवार्पितोविगेपत कुञ्ज अकुञ्ज कुञ्जाकुञ्जोवा
अग्रकल्प्योनयरूपादिनेदोनवति सप्तजग्नीप्रतिपाद्यतेइत्य
र्थ उपुत्रीग्राकपोलकुञ्जिवुभादिजि स्वपर्याये सदूज्जावेना
पित विगेपत कुञ्जकुञ्जोनयते सन्धटइतिप्रथमजगोन
वति एवजीव स्वपर्याये ज्ञानादिजि अर्पित सन् जीव

अर्थ ॥ एसप्तजग्नी परनीथेहायेनथी तेङ्गव्यादिकमव्येजरे यथास्वधर्मेपरिणमबु एश्चित्पर्वं अनेपरङ्गनाधर्मेनपरिणमबु एनास्तिनुफलरे तेमाटेपसप्तजग्नी तेमस्तु-धर्मं तेविशेषापापश्यव्यक्त्यी सप्तजग्नीविमियंत्रेये एकप्रिमक्षितवस्तु स्वकेऽपोतानेपर्याये सप्तजग्नीवकेऽप्तनापणेरे अनेपरपर्यायेजे अन्यङ्गव्यनेपरिणमे तेनो असद्वावकेऽप्ततापणो परिणमेते तयाऽवृत्ता अथवाअवृत्तापर्याय तेनोवृत्तापणोरे कोऽकपणे अवृत्तापणोरे माटे वृत्ताअवृत्तापणोपप तेजस्वाखेते केमके गस्तुमध्ये अनेकधर्मं तेसर्वेकवस्तीने एषममये समवाऽवृत्तासेते तेपणवचनेजगातरेजकहीशके अनेवद्वस्यने श्रद्धामातोसर्वं पर्म नमज्ञासेमद्द्वेरे पण रघुस्यनोवपर्योग असद्वातसमयीते अनुकमेरे पूर्वापरसा-देहे तेथीमत्तमगतामनवे जेमस्तुमाममर्दाखेते समकेतिनी श्रद्धामा समकाखेते अने

केवलीनाज्ञासनमां समकादेरे तेश्व्रतज्ञानीनाज्ञासनमां क्रमपूर्वकरे केमके जापासर्वक-
मेकहेवायरे तेथीश्रसत्यथाय तेनेजोस्यातपदेपूर्णियेंजाणियें तौसत्यथाय माटेस्यातपूर्वक
ससञ्जगीकिह्यें ऊव्यगुणपर्याय स्वज्ञावर्सवमध्येरे तेरीतेसद्वृक्षी तेवृष्टांतेकरीकडेरे उ-
ठेकेऽहोर गावरु कांगो कपाल तदो कुक्षिपेटो बुझ पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घ-
टरतोरे तेघटनेस्वपर्यायें रतापणे अर्पितकरिह्यें तेवारेते कुंजकुंजधमें सन्केऽप्रतोरे प-
एश्चरतादिकर्थमनी वर्तिसापेक्षाखवाने स्यातपूर्वकहेवै एटदे स्यातश्रस्तिघटः एप्र-
थमज्ञंगोजाएवो तथाजीवादिऊव्यनेविषेजीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवकृव्यनेनि-
त्यादि स्वज्ञावेंकरीने स्यातश्रस्तिजीवः एमसर्वकृव्यनेकहेवै यद्यपि जीवतथाश्रजीवनो
निल्पणे स्त्रिखोज्ञासे पणेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजा-
तीऊव्यरे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणरे तेवीजाजीवमांनथी माटेसर्वकृव्य स्वधमेंज
श्रस्तिरे अने परधमेनास्तिरे एमस्यातश्रस्तिजीव एप्रथमज्ञंगजाएवो.

तथापटादिगतेस्त्वक्त्राणादिजिः परपर्यायैसज्ञावेनापितः
अविदेषितः अकुंभोजवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर
सत्वविवद्धायामसन्ध्यटः एवंजीवोपिमूर्त्तिवादिपर्यायैः अ
सत्जीव इतिद्वितीयोज्ञंगः

अर्थ ॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढांके लांबोपथराय इत्यादिपर्याय ते
घटनापर्यायनथी परपर्यायरे पटनेविषेरह्याने घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिरे तेथी एप-
र्यायनो असज्ञावरे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेपरपर्यायना
अरतापणानीविवद्धायें अरतोघटरे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो
जीवमध्येश्चसत् अरतापणे तेथीजीवपरपर्यायेनास्तिरे भाटे स्यातनास्ति एवीजोज्ञांगो
जाएवो केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन ऊव्यनेविषेरे.

तथासर्वोघटःस्वपरोन्नयपर्यायैः सज्ञावासज्ञावाज्ञ्यांसत्वास
ल्वाज्ञ्यामपितोयुगपद्धक्षुभिष्ठोऽवक्तव्योन्नवति स्वपरपर्या
यसत्वासत्वाज्ञ्यांएकेकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि
तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाज्ञ्यामे
कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्याद्वक्तव्योजीव इतितृतीयो
ज्ञंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सक्वंजीवादिकंवस्तुयद्दणपरत्वात्

ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेजाव तेतोअस्तिपणेरे अनेपरद्वयमां रक्षाजेथचेतनादिक जाव तेनीनास्तितारे एटदेवेतधर्मजीगद्वयमानथी माटे परधर्मनी नास्तितारे पणतेना-स्तिता तेद्वयमध्ये अस्तिपणेरहीरे जेमघटनाधर्मघटमारे तेथीघटमा घटधर्मनोअस्तितवपणेरे पणपटादिसर्वपरद्वयोनो नास्तितवपणे ते घटनेपियेरक्षोरे तथाजीगद्वये जीवज्ञानादिकगुण तेश्वस्तितवपणेरे पणपुन्नवनापर्णादिक जीगद्वयेनथी माटेवर्णादिक-नीनास्ति ते जीवमध्येरहीरे श्रीनगवतीसुत्रेकल्पुरे हेगोतम अष्टित्व अष्टित्वपरिणमयी नष्टित्व नष्टित्वपरिणमयी तथागाणागसूत्रे १ सियश्वत्वि २ सियनर्थि ३ सियश्वत्व-नत्वी ४ सियश्वत्वत्व एचोनगीकहीरे अनेश्रीविशेषापश्यकमध्येकल्पुरेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अनेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणोजाणे ते मि-थ्यात्वी उक्तच सदसदविशेषणाठ जबद्वेउजहहठीउंगलजाठ ॥ नाणफलाजागाठ मि-ष्टादिछिसअन्नाण ॥ १ ॥ एगाथानीटीकामध्ये स्याद्वादोपलक्षितवस्तुस्याद्वादश्वसत-जगीपरिणाम, एकैकसिन्दूद्वयेगुणेपर्यायिचसतसप्तजगाजवत्येव अत अनतपर्यायपरि-णतेवस्तुनिअनता सप्तजग्योजवति इतिरक्षाकरावतास्तिकाया तेद्वयनेपिये गुणनेविपे पर्यायनेविपे स्वरूपेसातजगाहोय जेएसातजगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहिये

तथाहि स्वपर्यायै परपर्यायैरुभ्यपर्यायै सज्जावेनासज्जा
वेनोजयेनवार्पितोविगेपत कुञ्ज अकुञ्ज कुञ्जकुञ्जोवा
अवक्तव्योजयरूपादिच्छेदोजवति सप्तजगीप्रतिपाद्यतेइत्य
र्थ उपश्रीवाकपोदकुञ्जिवुद्भादिजि स्वपर्यायै सदूजावेना
र्पित विगेपत कुञ्जकुञ्जोजयते सन्धघटइतिप्रथमजगोज
वति एवजीव स्वपर्यायै ज्ञानादिजि अर्पित सन्जीव

अर्थ ॥ एसप्तजगी परनीथपेक्षायेनथी तेद्वयादिकमध्येजरे यथास्वधर्मेपरिणमतु एश्वस्तिधर्मरे अनेपरद्वयनाधर्मेनपरिणमतु एनास्तितुफकरे तेमादेएसप्तजगी तेवस्तु-धर्मेरे तेविशेषावश्यकथी सप्तजगीकाखियेयेये एकविवक्षितवस्तु स्वकेऽपोतानेपर्यायैं सज्जावकेऽरतापणेरे अनेपरपर्यायेजे अन्यद्वयनेपरिणमे तेनो असद्वावकेऽथरतापणो परिणमेरे तथाजेरता अथवाअरतापर्याय तेनोरतापणेरे कोइकपणे अरतापणेरे माटे रताअरतापणोपण तेजकाळेरे केमके वस्तुमध्ये अनेकधर्मरे तेसर्वकेनलीने ए-कक्षसमये समकाळेजासेठे तेपणवचनेजगातरेजकहीशके अनेरद्वास्थने श्रद्धामातोसर्वधर्म समकाळेसहद्वेरे पण उद्धस्यनोलपयोग असरयातसमयीरे अनुकर्मेरे पूर्वापरसा-पेक्षारे तेथीसप्तजगेजासनवे जेपस्तुमासमकाळेरे समकेतिनी श्रद्धामा समकाळेरे अने

केवलीनाजासनमां समकालेरे तेशुतङ्गानीनाजासनमां क्रमपूर्वकरे केमके जायासर्वक-
मेंकहे वायरे तेथीश्रसत्यशाय तेनेलोस्यातुपदेपरुपियेंजाणियें नोसत्यशाय माटेस्यातुपूर्वक
ससज्जंगीकहियें इव्यगणपर्याय स्वज्ञावसर्वमध्येरे तेरीतेसद्वृद्धी तेहृष्टांतेकरीकहेरे उ-
ष्टकेऽदोर गायक कांगो कपाल तलो कुक्षिपेटो बुझ पोहोलो इत्यादित्वपर्यायिकरी घ-
टरतोरे तेवटनेस्वपर्यायें रानपणे अर्पितकरियें तेवारेंते कुन्जकुन्जधमें सन्केऽरतोरे प-
णश्रुतादिकर्थमनी रतिसापेद्वाराखवाने स्यातपूर्वकहेरो एटवे स्यातश्रस्तिवटः एप्र-
यमज्जंगोजाणवो तथाजीवादिइव्यनेविषेजीवनाङ्गानादिगुण तेनेपर्यायें जीवइव्यनेनि-
त्यादि स्वज्ञावेकरीने स्यातश्रस्तिजीवः एमसर्वइव्यनेकहेरो यद्यपि जीवतथाश्रजीवनो
नित्यपणो सरिखोज्ञासे पणतेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजा-
तीइव्यरे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणे तेवीजाजीवमांनंश्री माटेसर्वइव्य स्वधमेंज
श्रस्तिरे अने परधमेंनास्तिरे एमस्यातश्रस्तिजीव एप्रयमज्जंगजाणवो.

तथापटादिगत्तस्वक्त्राणादिज्जिः परपर्यायेसञ्चावेनार्पितः
अविशेषितः अकुन्जोन्नवति सर्वस्यापिवटस्यपरपर्यायेर
स्वविवद्यायामसन्ध्रटः एवंजीवोपिभूर्त्तिवादिपर्याये अ
सत्जीव इतिद्वितीयोन्नगः

अर्थे ॥ पटनेविषेरहात्वक्जे शरीरनीचामढीनेढांके लांबोपयराय इत्यादिपर्याय ते
घटनापर्यायनयी परपर्यायेरे पटनेविषेरहाते घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिरे तेथी एप-
र्यायनो असञ्चावरे तेमाटे एघटनापर्यायनयी एमसर्वपर्यायें घटनयी तेवारेपरपर्यायना
अरतापणानीविवक्षाये अरतोघटरे एमजीवण मूर्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो
जीवमध्ये असत् अरतापणो तेथीजीवपरपर्यायेनास्तिरे माटे स्यातनास्ति एवीजोन्नगो
जाणवो केमके परपर्यायनी नास्तिताकुं परिणमन इव्यनेविषेरे.

तथासर्वोघटःस्वपरोन्नयपर्याये: सञ्चावासञ्चावाज्यांसत्वास
त्वाज्यामर्पितोयुगपक्तुमिष्टोऽवक्तव्योन्नवति स्वपरपर्या
यसत्वासत्वाज्यांएकोक्नाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि
तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाज्यामे
कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतिरुतीयो
न्नगः एतेत्रयःसकलादेशः सकलंजीवादिकंवस्तुप्रदणपरत्वा

तत्र अस्ति ना स्ति जावा . सर्वे वक्तव्याएव न अवक्तव्य
 व्याकृति शंका निवारणाय स्यात् अस्ति अवक्तव्य
 इति पचमो जग स्यान्ना स्ति अवक्तव्य इति पष्टु

अर्थ ॥ द्वेष पाचमो तथा रठो जागो कहेरे तिहास्यात् अवक्तव्य एम कहे गायी इव्य
 ते मूलधर्म एकदो अवक्तव्य थयो ते सदे हनिवार वाने कहो जे स्यात् अस्ति अवक्तव्य व-
 स्तु मात्र न ता अस्ति धर्म ठे पण वचने अगो चररे अने अन ता धर्म वचन गो चर पण ठे ते ना
 सापेक्षता माटे स्यात् पद युक्त करीने एट देस्यात् अस्ति अवक्तव्य ए पाचमो नागो जाण वो
 एम जपाच मानी रीते स्यात् ना स्ति अवक्तव्य ए ठो जागो जाण वो

अवक्तव्य जावा स्यात् पदे गृहीता अव अस्ति जावा वक्तव्य
 स्तया अवक्तव्य तथा ना स्ति जावा वक्तव्य अवक्तव्य एक स्मिन्
 वस्तु निगुणे पर्याय एक समये परिणम माना इति झापनार्थ स्यात् अ
 स्ति ना स्ति अवक्तव्य इति सप्तमो जग अब्र वक्तव्य जावा स्ते स्या
 त पदे सगृहीता इति अस्ति लेन अस्ति धर्म ना स्ति लेन ना स्ति धर्म
 युग पञ्च यस्व जावत्वे नवकुम ग्रन्थ वत्वा अवक्तव्य स्यात् पदे च
 अस्त्वा दीना मेव नित्याय ने कात स ग्राहक

अर्थ ॥ द्वे सातमो जागो कहेरे इहा अस्ति जाव पणो वक्तव्य ठे ते मजना स्ति जाव प-
 ण वक्तव्य ठे अने अवक्तव्य पण ठे एस वर्ध र्म एक समय मा एक ग्रस्तु मध्ये तथा एक गुण मध्ये
 तथा एक पर्याय मध्ये समकालेप परिणम ठे ते जणाव वाभाटे अस्ति ना स्ति अवक्तव्य एस आत
 भो जागो इहा अस्ति लेन ना स्ति न थाय अने ना स्ति लेय अस्ति न थाय तथा वक्तव्य ठे अवक्तव्य
 न थाय अने अवक्तव्य ठे वक्तव्य न थाय ते जणाव गाने अथे स्यात् पद ग्रहो ठे इहा अस्ति प-
 णो जाव ठे ते अस्ति धर्म अने ना स्ति पणो जेजाव ठे ते ना स्ति पणो यहां ठे वेहु समकाले ठे ते माटे
 एक समय वक्तव्य के ० कहे वामा अशम्य ठे अस मर्थ ठे ते थी अवक्तव्य के ० अगो चर पणो ठे अ
 ने जे स्यात् पद ठे ते अस्ति धर्म ना स्ति धर्म अवक्तव्य धर्म नो नित्य पणो अनित्य पणो प्रमुख
 अने कात नो स ग्रह करे ठे जे अस्ति धर्म ठे ते नित्य पणे पण ठे तथा अनित्य पणे पण ठे एक पणे ठे
 अने करुणे ठे जे दपणे ठे अने दपणे ठे इत्यादिक ते अस्ति धर्म माथ अने कात तावे ते ने ग्रहे ठे
 के मके वस्तु नो एक गुण ते माथ अस्ति पणो ठे ना स्ति पणो ठे नित्य पणो ठे अनित्य पणो ठे जे द-
 पणो ठे अने दपणे ठे वक्तव्य पणो ठे अवक्तव्य पणो ठे जवय पणो ठे अन वय पणो ठे ए अने
 कात पणो ए हृज स्याद्वाद ठे ते नुस के तिक जामय ते स्यात् पद ठे एरी ते जाण वो

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीशस्तितारे परधर्मनीनास्तितारे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
नित्यरे अनेतेजगुणपणे नित्यरे न शाक्वयपिंकृष्टपणे एकठे अनेगुणपर्यायपणे अनेक ठे त-
याश्रात्माकारणपणे कार्यपणे समयसमयमांनवानवापणोजेपामेरे तेजवनधर्मरे तोप-
णश्रात्मानोमूलधर्मजेपवटतोनश्री तेजवनधर्मरे इत्यादिकथनेकधर्म परिणतियुक्तरे
एरीतेपट्टद्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान ज्ञासनथाय तेसम्बद्धान
सम्बद्धशेनरे एजीवनीशशुद्धना तेपरकर्ता परजोका परग्राहकता दालवानाउपा-
यनुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माश्रात्मापणे मूलधर्मरहे तेसिद्धपणे तेनीहचिज्ञय-
मपणोकरवो एहिजश्रेयरे.

स्यात् अस्ति स्यान्नास्ति स्यात् अवक्तव्यरूपाख्यः सकला
देशः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकल्यान् मूलतः अस्तिज्ञावाच्च
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तज्ञंगाः एवंनित्यत्व
सप्तज्ञंगी अनित्यत्वसप्तज्ञंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तज्ञंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति स्यात् अवक्तव्य एतत्त्वज्ञानां वस्तुनासंपूर्ण रूप-
नेयहे माटेसकलादेशीरे अने शेषपरखाजेचारज्ञानां तेविकलादेशीरे तेवस्तुनाएकदे-
शनेयहेमाटे. तथावलीशस्तिपणानेविषेजेशस्तिपणो तेनास्तिपणेनश्री अनेनास्तिप-
णोनास्तिपणेरे तेमांशस्तिपणोनश्री इहांकोद्धुरेरेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अस्तिपणे
कहोरो तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकहोरो तेनेउत्तर जेनास्तिपणोते अ-
स्तिरे रतापणेरे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनश्री माटेनाकहीरे रतिनीनाक-
हीनश्री तथाएमज नित्यपणानीसप्तज्ञंगी तथा अनित्यपणानीसप्तज्ञंगीतेमज सामान्य
धर्मसर्वनी चिन्नचिन्नसप्तज्ञंगी तथासर्वविशेषधर्मनीसप्तज्ञंगी तेमजगुणपर्यायसर्वनी जू-
दीजूदी सप्तज्ञंगी कहेवी तथथाकेष्टेकहीदेखाडेवे.

ज्ञानंज्ञानत्वेन अस्तिदर्शनादित्तिः स्वजातिधर्मः अचेत
नादित्तिः विजातिधर्मः नास्ति एवंपञ्चास्तिकाये प्रत्यस्ति
कायमनंतासप्तज्ञयोनवंति अस्तित्वाज्ञावेगुणाज्ञावात् प
दार्थेयून्यतापत्तिः नास्तित्वाज्ञावेकदाचित् परज्ञावत्वेन
परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगोसत्तास्फु

तत्रअस्तिनास्तिज्ञावाः सर्वेवक्तव्याएवनअवक्तव्या
व्याइतिशकानिवारणायस्यात् अस्तिअवक्तव्य
इतिपचमोज्ञग स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिपष्ट

अर्थ ॥ हवेपाचमोतथा रठोज्ञांगोकहेरे तिहास्यात् अवक्तव्य एमकहेराथी ऊव्य तेमूलधर्मेष्टकसो अवक्तव्ययो तेसदेहनिवारवाने कथोजे स्यात् अस्तिअवक्तव्य उ सुमान्नताश्चस्तिधर्मरे पणवचनेश्वरगोचररे अनेअनन्ताधर्मवचनगोचरपणरे तेना सापेक्षतामाटे स्यात् पदयुक्तकरीने एटलेस्यात् अस्तिअवक्तव्य एपाचमोज्ञांगोजाणवो एमजपाचमानीरीते स्यात् नास्तिअवक्तव्य एरठोज्ञागोजाणवो

अत्रवक्तव्यज्ञावाः स्यात् पदेगृहीता अत्रअस्तिज्ञावावक्तव्या
स्तथाअवक्तव्या तथानास्तिज्ञावावक्तव्याअवक्तव्या एकस्मिन्
वस्तुनिगुणेष्टपर्यायेष्टकसमयेष्टरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यात् अ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोज्ञग अत्र वक्तव्यज्ञावास्तेस्या
तपदेसगृहीताइतिअस्तिलेनव्यस्तिधर्मानास्तिलेननास्तिधर्मा
युगपञ्चन्यस्वज्ञावत्वेनवक्तुमग्रव्यत्वात् अवक्तव्य स्यात् पदेच
अस्त्यादीनामेवनित्यानित्याद्यनेकातसग्राहक

अर्थ ॥ हवे सातमोज्ञागोकहेरे इहाश्चस्तिज्ञावपणोवक्तव्यरे तेमजनास्तिज्ञावप-
एवक्तव्यरे अने अवक्तव्यपणरे एसर्वधर्मएकसमयमा एकपस्तुमध्ये तथाएकगुणमध्ये
तथाएकपर्यायमध्ये समकालेष्टरिणमेहे तेजणावधामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्य एसात
मोज्ञागो इहाश्चस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्य
नथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणावगानेअथं स्यात् पदग्रहोरे इहाश्चस्तिप-
णेजेज्ञावरे तेअस्तिधर्म अनेनास्तिपणेजेज्ञावरे तेनास्तिपणेयद्वारे वेहु समकालेरेतेमाटे
एकसमय वक्तव्यकेऽकहेरामाश्रशस्यरे असमर्थरे तेथीश्चक्तव्यकेऽथगोचरपणरे अ
नेजेस्यात् पदरे तेअस्तिधर्म नास्तिधर्म अपक्तव्यधर्मनोनित्यपणो अनित्यपणोप्रमुख
अनेकातनोसग्रहकरेरे जेथस्तिधर्मरे तेनित्यपणेष्टरे तथाअनित्यपणेष्टरे एकपणोरे
अनेकपणोरे जेदपणोरे अनेदपणोरे इत्यादिक तेअस्तिधर्ममाअनेकाततारे तेनेग्रहेरे
वेमके वस्तुनोपकगुण तेमाअस्तिपणोरे नास्तिपणोरे नित्यपणोरे अनित्यपणोरे जेद
पणोरे अनेदपणोरे वक्तव्यपणोरे अपक्तव्यपणोरे जव्यपणोरे अनव्यपणोरे एश्वने
कातपणो एहजस्याद्वादरे तेनुसकेतिकवामय तेस्यात् पदरे एरीतेजाणवो

आत्मदूष्यनेविषे स्वधर्मसीशस्तितारे परधर्मसीनास्तितारे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
निलिते अनेतेजगुणपणेनित्यरे नथादूष्यपिंपृष्ठपणेएकते अनेगुणपर्यायपणेअनेक रे त-
थाश्रात्माकारणपणे कार्यपणे समयसमयमांनवानवापणोजेपामेरे तेजवनधर्मरे तोप-
णश्रात्मानोमूलधर्मजेपवाट्टोनंश्री तेश्चवनधर्मरे इत्यादिकअनेकधर्मे परिणतियुक्तरे
एरीतेपद्मदूष्यनेजाणी निरधारीने देयोपादेयपणे अद्वान जासनथाय तेसम्यक्ङ्वान
सम्यक्ङ्वानरे एजीवनीश्रुद्धता तेपरकर्त्ता परज्ञोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-
चनुंसाधन तेसाधनकर्वे आत्माश्रात्मापणे मूलधर्महेवे तेसिद्धपणे तेनीरुचित्तय-
मपणोकर्वो एहिजग्रेयरे.

स्यात् अस्ति स्यान्नास्ति स्यात् अवकृच्छ्रवरुपाख्यः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिज्ञावाच्च
स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तज्ञागः एवंनित्यत्व
सप्तज्ञंगी अनित्यलवसप्तज्ञंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तज्ञंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति स्यात् अवकृच्छ्रव एवणज्ञांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
नेयहे भाटेसककादेशीरे अने श्रोपरद्धाजेचारजांगा तेविकदादेशीरे तेवस्तुनाएकदे-
शनेयहेमाटे. तथावदीशस्तिपणानेविषेजेशस्तिपणो तेनास्तिपणेनंश्री अनेनास्तिप-
णोनास्तिपणेरे तेमांशस्तिपणोनंश्री इहांकोइपुरेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अस्तिपणे
कहोगो तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकहोगो तेनेउत्तर जेनास्तिपणोतेश्र-
स्तिरे रतापणेरे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनंश्री भाटेनाकहीरे रतिनीनाक-
हीनंश्री तथाएमज निलपणानीसप्तज्ञंगी तथा अनित्यपणानीसप्तज्ञंगीतेमज सामान्य
धर्मसर्वनी जिन्नजिन्नसप्तज्ञंगी तथासर्वविशेषधर्मनीसप्तज्ञंगी तेमजगुणपर्यायसर्वनी जू-
दीजूदी सप्तज्ञंगी कहेवी तद्यथाक०तेकहीदेखाडेरे.

ज्ञानंज्ञानत्वेनअस्तिदर्शनादिभिः स्वजातिधर्मेः अचेत
नादिभिः विजातिधर्मेः नास्ति एवंपंचास्तिकायेप्रत्यस्ति
कायमनंतासप्तज्ञंग्योज्जवंति अस्तित्वाज्ञावेगुणाज्ञावात् प
द्यायेवृन्यतापत्तिः नास्तित्वाज्ञावेकदाचिन् परज्ञावत्वेन
परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगेसत्तास्फु

तत्रअस्तिनास्तिज्ञावा सर्वेवक्तव्याएवनअवक्तव्य
व्याइतिशकानिवारणायस्यात् अस्तिअवक्तव्य
इतिपचमोज्ञग स्याद्वास्तिअवक्तव्यइतिपष्ट

अर्थ ॥ हवेपाचमोतथा रहोज्ञागोकहेरे तिहांस्यात् अवक्तव्य एमकहेराथी ऊव्य
तेमूखधर्मेष्टकसो अवक्तव्यथयो तेसदेहनिवारवाने कहोजे स्यात् अस्तिअवक्तव्य व
स्तुमाथनताथस्तिधर्मरे पणवचनेग्रामोचररे अनेअनताधर्मवचनगोचरपणरे तेना
सापेक्षतामाटे स्यात् पदयुक्तकरीने एटलेस्यात् अस्तिअवक्तव्य एपाचमोज्ञागोजाणवो
एमजपाचमानीरीते स्यात् नास्तिअवक्तव्य एरहोज्ञागोजाणवो

अवक्तव्यज्ञावा स्यात् पदेगहीता अब्रअस्तिज्ञावावक्तव्य
स्तथाअवक्तव्या तथानास्तिज्ञावावक्तव्याअवक्तव्या एकस्मिन्
वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिङ्गापनार्थं स्यात् अ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोज्ञग अब्र वक्तव्याज्ञावास्तेस्या
त् पदेसगहीताइतिअस्तित्वेन अस्तिधर्मानास्तित्वेननास्तिधर्मा
युगपङ्गयस्वज्ञावलेनवक्तुमशक्यत्वात् अवक्तव्य स्यात् पदेच
अस्त्यादीनामेवनित्याद्यनेकानसंग्राहक

अर्थ ॥ हवे सातमोज्ञागोकहेरे इहाअस्तिज्ञावपणोवक्तव्यरे तेमजनास्तिज्ञावप-
णवक्तव्यरे अने अवक्तव्यपणरे एसर्वधर्मेष्टकसमयमा एकप्रस्तुमध्ये तथाएकगुणमध्ये
तथाएकपर्यायमध्ये समकालेष्टपरिणमरे तेजणाप्रवामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्य एसात्-
मोज्ञागो इहाअस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्य
नथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणावगानेअथं स्यात् पदग्रहोरे इहाअस्तिप
णेजेज्ञावरे तेअस्तिधर्मं अनेनास्तिपणेजेज्ञावरे तेनास्तिपणेग्रहारे वेहु समकालेरेतेमाटे
एकसमय वक्तव्यके० कहेरामाथशम्यरे असमर्थरे तेथीअवक्तव्यके० अग्रोचरपणरे अ
नेजेस्यात् पदरे तेअस्तिधर्मं नास्तिधर्मं अवक्तव्यधर्मनोनित्यपणो अनित्यपणोप्रमुख
अनेकात्मोसम्बद्धकरेरे जेथस्तिधर्मरे तेनित्यपणेपणरे तथाअनित्यपणेपणरे ए० कपणेरे
अनेकपणेरे जेदपणेरे अनेदपणेरे इत्यादिक तेअस्तिधर्ममाथनेकाततारे तेनेप्रहेरे
वेमके वस्तुनोणकगुण तेमाथस्तिपणोरे नास्तिपणोरे नित्यपणोरे अनित्यपणोरे जेद-
पणोरे अनेदपणोरे वक्तव्यपणोरे अवक्तव्यपणोरे जट्यपणोरे अनव्यपणोरे एथने
कातपणो पद्वजस्याद्वरे तेनुसकेतिकवाम्य तेस्यात् पदरे परीतेजाणवो

आत्मङ्गव्यनेविषे स्वधर्मनीशस्तितारे परधर्मनीनास्तितारे स्वगुणनोपरिणमवो अ-
निलरे अनेतेजगुणपणेनित्यरे नयाङ्गव्यपिंभपणेएकरे अनेगुणपर्यायपणेशनेक रे त-
थाश्रात्माकारणपणे कार्यपणे समयसमयमानवानवापणेजेपासेरे तेजवनधर्मरे तोप-
णश्रात्मानोमूलधर्मजेपकटतोनथी तेजवनधर्मरे इत्यादिकथनेकधर्म परिणतियुक्तरे
एरीतेपद्मव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपदेयपणे श्रद्धान जासनथाय तेसम्बद्धान
सम्यक्दर्शनरे एजीवनीशशुद्धता तेपरकर्त्ता परजोक्ता परथाहकता टाकवानाउपा-
यनुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माश्रात्मापणे मूलधर्मरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचित्य-
मपणोकरवो एहिजश्रेयरे.

**स्यात् अस्ति स्यान्नास्ति स्यात् अवक्तव्यरूपाख्यः सकला
देशाः संपूर्णवस्तुधर्मयाहकल्वात् मूलतः अस्तिभावाच्च
स्तिलेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तन्नंगाः एवंनित्यत्व
सप्तन्नंगी अनित्यत्वसप्तन्नंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष
धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तन्नंगी तद्यथा**

अर्थ ॥ स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति स्यात् अवक्तव्य एत्रणजांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-
नेप्रदे माटेसकलादेशीरे अने शेपरह्याजेचारजांगा तेविकलादेशीरे तेवस्तुनाएकदे-
शेनेप्रदेशार्थे तथावक्त्वीशस्तिपणानेविषेजेशस्तिपणो तेनास्तिपणेनथी अनेनास्तिप-
णोनास्तिपणेरे तेसांशस्तिपणोनथी इहांकोइपुरेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अस्तिपणे
कहोरो तोनास्तिपणामां शस्तिपणानीनाकिमकहोरो तेनेउत्तर जेनास्तिपणोतेश-
स्तिरे व्रतापणेरे अने अस्तिधर्मकांज्ञानास्तिपणामानथी माटेनाकहीरे व्रतिनीनाक-
हीनथी तथाएमज नित्यपणानीसप्तन्नंगी तथा अनित्यपणानीसप्तन्नंगीतेमज सामान्य
धर्मसर्वनी जिन्नजिन्नसप्तन्नंगी तथासर्वविशेषधर्मनीसप्तन्नंगी तेमजगुणपर्यायसर्वनी जू-
दीजूदी सप्तन्नंगी कहेवी तद्यथाकेष्ठेकहीदेखाडेरे.

**ज्ञानंज्ञानत्वेन अस्तिदर्शनादिनिः स्वजातिधर्मः अचेत
नादिनिः विजातिधर्मः नास्ति एवं पञ्चास्तिकायेप्रत्यस्ति
कायमनंतासप्तन्नंग्योन्नवंति अस्तित्वाभावेगुणाभावात् प
दार्थेऽन्यतापत्तिः नास्तित्वाभावेकदाचित् परन्नावत्वेन
परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः वर्यजक्योगेसत्तास्फु**

रति तथाच्चसत्तायाच्चपिम्फुरणात्पदार्थनामनियताप्र
तिपत्ति तत्वार्थेतज्ञावाच्ययनित्य ॥

अर्थ ॥ हृवेगुणनीसत्ताजगीकहीदेशार्केते जेमझानगुण झायकादिकगुणेअस्तित्वे अ-
नेदशनादिकस्तजातिएकद्वयव्यापिगुण तथास्तजातिनिन्नजीव्यापि झानादिकसर्वगुण
अनेश्चेतनादिक परद्वयव्यापि सर्वधर्मनीनास्तिते एमपचास्तिकायनेपिपे अस्ति
कायें अनतिसत्ताजगीतिपामे एससत्ताजगी स्याद्वादपरिणामंते तेसर्वद्वयादिकमावे

हृवे वस्तुमध्येअस्तिपणोनमानिये तोस्योदोपउपजेतेकहेरे जोपस्तुमांशस्तिपणो
नमानिये तोगुणपर्यायनोश्चत्तावाय अनेगुणनाश्चत्ताये पदार्थशून्यतापणो पामे

तथाजोवस्तुमध्ये नास्तिपणोनमानियेतो तेपस्तुकदाकाले परपस्तुपणे अथगा पर-
गुणपणे परिणमिजाय तेथीकोइवारे जीपतेश्चजीपणोपामे अनेश्चजीवतेजीपणोपामे
तोसर्वसकरतादोपउपजे तथा व्यजनकेऽप्रकटतानोहेरु तेनेयोगेंरतोधर्म तेफुरे पण
जेधर्मनीसत्तावतिनहोय तेफुरेनही जोनास्तिपणोनमानिये तोशसत्तापणोफुरे अनेजे
वारेश्चत्तास्फुरे तेवारेद्वयनो अनियामकेऽथनिश्चयपणोयश्चाय तेमादेसर्वज्ञाव
अस्तिनास्तिमयीते व्यजकतानोदृष्टातकहेरे जेमकोराकुकामासुगधतानीसत्तारे तोज
पाणीनेयोगेंवासनाप्रगटेरे जोवक्षादिकमातेधर्मनथी तोतेमाप्रगटतोपणनथी एमसर्व-
त्रजाणवो हृवेत्रीजोनित्यस्तजावकहेरे तेजेपस्तुनाजावतेनो अव्ययकेऽनहीटद्वावो ए-
टद्वेतेमनोतेमजरहेरो तेनावेजेदरेतेकहेरे

एकाच्चप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा
द्वयाणाऽर्थप्रचयतिर्यग्प्रचयत्वेनतदेवद्वयमितिध्वय
त्वेननित्यस्तजाव नवनवपर्यायपरिणमनादिनि उत्पत्ति
व्ययरूपोनित्यस्तजाव उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्य ॥

अर्थ ॥ एकश्चप्रच्युतिनित्यता वीजीपारपर्यनित्यता तिहा अप्रच्युतिनित्यतातेनेद-
हियें जेद्वयतेजर्वप्रचय तिर्यग्प्रचयनेपरिणमवे एद्वयतेहिज एभुवतारूपझानथा
यरे एटदेसदासर्वदा त्रणेकावेतेहिज पबुजेहानथायरे जेमूलस्तजावपलटेनही ते अ
प्रच्युतिनित्यताकहियें अनेएनित्यतामाजे ऊर्धप्रचयकहो तेउलखावेरे जेपहेक्षे समये
द्वयनीपरिणतिहती तेथीजेसमयेनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें सर्वपर्यायनी
पराहृतिश्च तोपणएद्वयतेनुतेज पबुजे झानथायते द्वयमाऊर्धप्रचयकहियें उपरके
समयेतेमाटेजर्वप्रचयकाहये

तथा अनंताजीव सरिखारे पण सर्वजिन्ननिन्नरे पण सर्वजीवजाणताए पण जीवएवो जीवत्वसत्तायेनुव्यजिन्नजीवसत्तारूपज्ञान थाय तेतिर्थक्प्रचयकहियें।

ऊर्ध्वप्रचय ते समयांतरे अनेकउत्पादव्ययनेपदटवे पण एजीवते तेजरे एवुङ्गान थाय एनित्यस्वज्ञावनोधर्मजाणवो एकारणशीकार्यउपनो तेनुङ्गानथाय तेनित्यस्वज्ञावनोधर्मजाणवो तथाएकारणशीकार्यउपनो वक्षीज्ञानथयुं तेकारणशीकीजेकारणेवीजुं कार्यथाय एमनवेनवेकार्यउपने पण जीवतेजरे एवुजेज्ञानथाय परंपरारूपसंततिचाकी जाय तेपारंपर्यनित्यताकहियें जेमप्रथम शरीरनेकारणेरागहतो तेहिज वस्त्रधननेकारणप्रतेरागथयो तेकारणनवारागनोनवापणोपणरागरहितश्रात्माकेवारे नहीं एपारंपर्य एटद्वे परंपरानित्यताकहियें वीजुंनामसंततिनित्यताजाणवी तेकारणयोगेनिमिन्नेनीपजे नवानवापर्यायनेपरिणमवे एटद्वे पूर्वपर्यायनेव्ययथवे तथाअनिनवपर्यायनेउपजवे अनित्यस्वज्ञावजाणवो एटदेउत्पत्तिकेण उपजवो व्ययकेण विषसवो एवोजेस्वज्ञाव ते अनित्यस्वज्ञाव जाणवो।

तत्रनित्यत्वंद्विविधं कूटस्यंप्रदेशादीनां परिणामित्वं ज्ञाना
दिगुणानां तत्रोत्पादव्ययावनेकप्रकारारौ तथापिकिंचिद्वित्ति
ख्यते विस्साप्रयोगजन्मेदातुद्विज्ञेदोसर्वज्ञाणांचलनस
द्वकारादिपदार्थकियाकारणंनवत्येव ॥

अर्थ ॥ तिहांवदीयंथांतरे नित्यपणोवेप्रकारेकहोठे एककूटस्यनित्यता वीजीपरिणामिनित्यतारे जीवनाथ्रसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाहेत्रावगाह पदटतोनश्रीते तथागुणनोथविज्ञाग तेसर्वकूटस्यनित्यताठे।

ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंरे केमकेगुणनोधर्मजएठे जेसमयेसमयेस्वकार्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय तेपरिणामिकपणेजहोय एनीतिजरे अने जोज्ञानगुणने कूटस्यनित्यतापणेमानियें तोपेहेसमयेजे ज्ञानेकरीजाण्हो तेहिज जाणपणो सदासर्वदारद्वे पणतेमतोनवी डेयतोनवनवीरीते परिणमतादेखायरे तो तेडेयनीनवनवी अवस्याज्ञानजाणेनहीं एटद्वेपद्वेसमयजेरीते ज्ञानपरिणमेरे तेरीते परिणमनजोबुंजोइयें अनेएरीते ज्ञानयथार्थययुं एसघटे नहीं तेमाटे डेयजे घटपटादिक तेजेमपदटेरे तेमज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थयाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयजाणवासाटे परिणामीजाणवो अनित्यज्ञायकतादकि भाटेनित्य एरीते नित्यानित्यस्वज्ञावी सर्वगुणवे सर्व ऊव्यनेविषेषोतानीकियानुंकारणयायजरे।

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यधर्मारितकाय उव्यस्यप्रतिप्रदेशस्थच
लनसहकारिगुणाविजागा. उपादानकारणंकारणस्यैवकार्यपरिण
मनात् तेनकारणत्वपर्यायव्यय कार्यत्वपरिणामस्योत्पाद गुण
त्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमर्थंकारणस्यापि उत्पादव्ययो कार्यस्याप्युत्पा
दव्ययावित्यनेकांतजयपताकायथे एवसर्वज्ञ्येषुसर्वेषागुणा
नास्वस्वकार्यकारणताङ्गेया इतिप्रथमव्याख्यान ॥

अर्थ ॥ तिहाजेमधर्मस्तिकायज्ञव्यनो चक्षणसहकारीष्णो तेमुरयकार्यरे अने अ-
धर्मस्तिकायज्ञव्यनो स्थिरसहायी तेमुरयकार्यरे वक्तीआकाशज्ञव्यनुश्ववगाह्नादान
तेमुरयकार्यरे जीवनोजाणवा देवतालूपउपयोगतेमुरयकार्यरे पुज्जसनोवर्णगधरसस्प
र्शपणो तेमुरयकार्यरे इत्यादिस्वकार्यनोयावुरे तेजिहायाहु तिहाज जननधर्मथयो
अने जिहाजननधर्म तेउत्पादव्ययो अनेउत्पादहोय तेव्ययसहितजहोय तेजननधर्म त-
त्वार्थग्रथमध्येकद्योरे हवेतेउत्पादव्ययवेप्रकारनारे एकप्रयोगर्थीयाय अनेजीजो पिथ-
साके० सहजेपरिणामीधर्माद्याय हवेज्ञहासहजनो उत्पादव्ययकहेरे तिहाधर्मस्तिकाय-
यादि उज्ञव्यने पोतापोताना चक्षणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थकियानोकरवो
आयज अनेचक्षणसहकारपणोतैकार्य धर्मस्तिकायज्ञव्यने प्रतिप्रदेशे रहो जे चक्षण-
सहकारीगुणाविजाग तेउत्पादानकारणरे तेहिजकार्यपणेपरिणमेरे एट्टेकारणपणा
नोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चक्षणसहकारीपणे ध्रुवरे एमज अधर्मस्तिकाय-
नेविषे शिरसहायगुणनु प्रवर्तनरे तथाआकाशस्तिकायनेविषेषण अग्रगाहनागुणनु
प्रवर्तन एमजरे वक्तीपुज्जसमां पूरणगतनादिकगुणनुप्रवर्तनरे तेमजजीवज्ञव्यमा झा-
नादिकगुणनुप्रवर्तनरे श्रव्यावक्ती अनेकातजयपताकायथनेविषेषपणकानुरे जेप्रति
समये गुणनेविषे कारणपणो नवोनयोउपजेरे एट्टेकारणपणानोपण उत्पादव्ययरे ते
मजप्रतिसमये कार्यपणोपण नवोनवो उपजेरे एट्टेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययरे ए
मसर्वज्ञ्यने विषे सर्वगुणनो कार्यपणो कारणपणो उपजे विषसेरे एम उत्पादव्ययनो
एक स्वरूप प्रथम ज्ञेद कहो

तथाचसर्वेषाऽव्याणापारिणामिकत्वं पूर्वपर्यायव्यय नवप
र्ययोत्पाद एवमप्युत्पादव्ययो ज्ञव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिहितीय

अर्थ ॥ सर्वेषमेरेतेपरिणामिकज्ञावेरे तिहापूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उ-
त्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेरे अनेज्ञ्यपणोध्रुवरे ए वीजो ज्ञेद.

प्रतिउभ्यं स्वकार्यकारणपरिणमनपराद्यत्तिगुणप्रदृच्छिरूपाप
रिणति: अनन्ताच्छ्रुतीता एकावर्तमाना अन्याश्रुतागतायो
ग्यतारूपाः तावर्तमानाच्छ्रुतीताच्छ्रुतं अनागतावर्तमानाभ
वंति शेषाश्रुतागताकार्ययोग्यतासन्नतां द्वयं इत्येवं रूपाद्वा
त्पादब्ययो गुणत्वेनश्रुतवत्वं इतितृतीयः अव्रकेचित्काला
पेक्षया परप्रत्ययत्वं वदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्या
यत्वेनैवागमेऽक्षत्वात् इत्यं परिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात् स
प्रत्यहं एवंतयाकालस्यभिन्नजब्यत्वेपिकालस्यकारणताच्छ्रु
तीतागतवर्तमानभवनं तु जीवादिभव्यस्येवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वेषां नेविष्ये स्वकेऽपोतानुकारणं परिणमनं पराद्युचिकेऽपलटणपणेषु-
एनीप्रदृच्छिरूपं परिणमनरे ते परिणतिअनन्ति अनन्तजातिनी अतीतकालेष्वद्वे अने
अनन्तिजातिनी एकवर्तमानकालेष्वे अनेवीजीश्रुतागतयोग्यतारूपणे अनन्तिरे ते वर्त-
मानपरिणतिरे अतीतयायरे एटद्वे तेपरिणतिमध्ये वर्तमानपणानोव्यय अने अतीत-
पणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेषु वृत्तवर्तमानपणानोउत्पाद अनेत्रितिपणेषु वृत्तवर्तमानयायरे तिहां
श्रुतागतपणानोव्यय वर्तमानपणानोउत्पाद अनेत्रितिपणेषु वृत्तवर्तमानयायरे तिहां
तेद्वृह्णते आसन्नकेऽपोतानोउत्पाद अनेवीजीकालानोव्यय अने नजीकनानोउत्पाद
तथाश्रुतीनमव्ये द्वृह्णतानोउत्पाद अनेवीजीकालानोव्यय एतीतेसर्वं ऊर्ध्वनेविष्येश्रुतीतव-
र्तमान नयाश्रुतागतपणे परिणतिरे तेपरिणमेजरे एकब्यनेविष्येस्वकालरूपं परिणमन
रे एउत्पादब्ययनोत्रीजोन्नेद जाणवो.

इहांकेटवाक्कालनीयपेदाद्वात्तेने परप्रत्ययपणोक्तद्वे तेज्ज्ञोटोत्रे कारणके कालङ-
व्यज्ञेवितपंचास्तिकायनोपर्यायरे अने परिणतितोऽव्ययोन्वर्धमर्मरे माटेकालतेवकाल-
रूपवस्तुनोपरिणामं तेनोन्नेद्वे अथवाकालतेनिन्नजब्यमानियें तोपणकालतेकारणपणे
रे अनेश्रुतीनमव्ययनागतवर्तमानन्वपरिणति तेतो जीवादिकङ्कव्यनोधमर्मरे ते माटेऽप्य उ-
त्पादब्ययपणस्वरूपजरे एत्रीजोन्नेद्वययो.

तथाच्चस्मिष्ठात्मनिकेवद्वान्नययद्यार्थद्वृह्णयकल्पात् य
याज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथायटपटादिन्दृपावापरिणामं
तित्येवद्वाने भासनात् यन्मिन्नसमयेवदस्यप्रतिज्ञा

स समयातेरघटभ्यसेरुपादादिप्रतिज्ञास तदाङ्गानेवद्या
प्रतिज्ञासध्यस कपादप्रतिज्ञासस्योत्पाद ङ्गानरूपत्वे
नध्यवत्वमितितथाधर्मास्तिकायेयस्मिन्समयेसंरथेयप-
रमाणुनाचलनसहकारिता अन्यसमयेव्रसरन्येयाना ए
वसरल्येयत्वसहकारिताव्यय असरयेयानंतं महका
रिताउत्पाद चलनसहकारित्वेन ध्यवत्वं एवमधर्मादि
प्यपिङ्गेय एवसर्वगुणप्रदत्तिषु इतिचतुर्थं ॥

अर्थ ॥ तथाकेऽ तेभजवदीसिद्धत्वानेविषे केवसज्जानगुणनीसपूर्णप्रगटतावे तेय
थार्यजेकाले जेहेयजेमधरिणमे तेकालेंतेमजाणे एहोइषेयनोङ्गापक तेकेवसज्जानदेवे
जेमधर्मादिङ्गव्य तथाघटपटादिहेयपदार्थं जेरीते परिणमे तेरीतेज केवसज्जानजाणे ते
जेसमयेघटज्जानहतु तेसमयातरे घटध्यसयेयकपादनुङ्गानयाय तेगारेघटप्रतिज्ञासनोच्च-
सकपादप्रतिज्ञासनोउत्पाद अनेङ्गाननोधुवपणो एमदर्शनादि सर्वगुणनोप्रवर्तनजाणेगे.

तथाधर्मास्तिकायनेविषे जेसमयेसरयात परमाणुनो चलनसहकारिषणो हतो फ-
रीसमयातरे असरयात परमाणुने चलनसहारी पणोकरे तेगारे सरयाता परमाणुच्छ-
नसहकारतानोव्यय अनेअसरयेयपरमाणुने चलनसहकारतानो उत्पाद अनेचलनस-
हकारीपणेधुवठे एमजाधर्मास्तिकायादिकनेविषे पण सर्वं गुणनीश्वृत्तियापठे एरी-
तैएकङ्गव्यनेविषेअनतागुणनीप्रथृत्तिरे इदाकोश्पुरशी जेधर्मास्तिकायमध्ये अनंताजीर-
तथाअनंता परमाणु ते चलणसहकारीयाय एटसोचलनसहकारीते तोथोज्ञाजीप अ-
नेयोडा परमाणुने चलणसहकारकरता वीजोगुणकयोश्चाप्रवरत्यो रहो एमकहे तेनेउचर-
के निरावरणजेङ्गव्यरे तेनोगुणश्चप्रवरत्यो रहेजनही अनेजीपुञ्जसजे आवी पहोता तेने
सहकारेसर्वं चलनसहकारीगुणना पर्यायते प्रवतेजरे केमकेअलोकाकाशमध्ये जोश्व-
गाहकजीवपुञ्जसनथी तोपण अवगाहकदान गुणतोप्रवतेजरे तेमधर्मास्तिकायादिकमा-
जीवपुञ्जसयोज्ञाने पोचवे पणगुणतोवधो प्रवतेजरे एमधारवो एरीतेगुण पर्यायिनो उ-
त्पादव्यय धुवरूपधर्मकहेरो एचोयुरूपकस्यु

तथासर्वेपदार्था अस्तिनास्तित्वेनपरिणामिन तत्रास्ति
ज्ञावानास्वधर्माणा परिणामिकत्वेनउत्पादव्ययोस्त नास्ति
ज्ञावानापरञ्च्यादीनापरावृत्ती नास्तिज्ञावानापरावृत्तित्वेना
प्युत्पादव्ययो धुवत्वच अस्तिनास्तिद्यो इतिपचम

अर्थ ॥ तथासर्वङ्गव्यमांश्चस्तितशानास्ति एवे स्वनावपरिणमिगद्वारे तिहांजेश्चस्ति-
स्वनावरे तेस्वद्वयादिकनोरे ते जेवारेहानगुण घटजाणतोहनो तेवारें घटज्ञाननीश्च-
स्तिताहती अनेतेजघटध्वंस थये कपालज्ञानययुं तेवारें घटज्ञाननीश्चस्तितानो व्यय
थयो अने कपालज्ञाननी अस्तितानोउत्पादव्ययो एरीतेश्चस्तितानोउत्पादव्ययरे तेज
सीतेनस्तितानोपणउत्पादव्ययजाणवो जेपद्वेदीघटनास्तिताहती तेपरेघटध्वंसंकपाल-
नास्तिताथयी एमपरङ्गव्यनेपलटवे नास्तितापवर्ते तेस्वगुणनेपरिणामिक कार्यनेपव-
टवेकरीनेश्चस्तितापवर्ते अनेजिहांपलटवापणो तिहांउत्पादव्ययथायज एमङ्गव्यमा-
सामान्यस्वनाव सर्वधर्मरे तेमां जेमसंज्ञवेतेम श्रीप्रज्ञनीश्राङ्गायें उपयोगदेइने उत्पा-
दव्ययपणोकरवो अने अस्तिनास्तिपणे भ्रुवरे एपांचमोश्चिकारकद्यो.

तथापुनः अगुरुख्युपर्यायाणां पद्मगुणहानिवृष्टिरूपाणां प्र
तिउत्पादः भ्रुवत्वंचागुरुख्युपर्यायाणां एवंसर्वज्ञवेपुज्ञे यं
तत्वार्थृत्तोचाकाशाधिकरेयत्राप्यवगाहकजीवपुज्ञदादिर्ना-
स्ति तत्राप्यगुरुख्युपर्यायवर्त्तनयावश्यत्वेचानित्यतान्त्युपेया
तेचञ्चन्येऽन्येचञ्चवंति अन्यथातत्रनवोत्पादव्ययोनापेद्धि
कावितिन्यूनं एवंसद्विद्वाणस्यात् इतिपष्ठः ॥

अर्थ ॥ तथाकेऽतेमज वक्तीसर्वङ्गव्यतथापर्याय ते अगुरुख्युधर्मं संयुक्तहोय ङ्गव्य-
नेप्रदेशे अगुरुख्युश्चनंतोरे तेश्चगुरुख्युसमयेसमये प्रदेशे तथापर्याये कोइकवारेवृद्धि
पामे कोइकवारेघटीजाय तेव्युधगुरुख्युरप्रकारेरे १ अनंतज्ञागद्वानि २ असंख्यातज्ञा-
गद्वानि ३ संख्यातज्ञागद्वानि ४ संख्यातगुणद्वानि ५ असंख्यातगुणद्वानि ६ अनंतगु-
णद्वानि एरप्रकारेहानि तथा १ अनंतज्ञागवृद्धि २ असंख्यातज्ञागवृद्धि ३ संख्यातज्ञा-
गवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एरप्रकारनीवृद्धि
तेसर्वङ्गव्यनासर्वप्रदेशे सर्वपर्यायमांशाय एकप्रदेशमां कोइकसमयेवयेरे कोइकसमये
घटेरे जेम परमाणुमांवर्णादिक वयेघटेरे तेमश्चगुरुख्युपणोपण वयेघटेरे हानिनोदययरे
तोवृद्धिनोउत्पादे अथवावृद्धिनोव्ययरे तोहानिनोउत्पादे पणश्चगुरुख्युभ्रुवनोभ्रुवरे
एमसर्वङ्गव्यनेविषेजाणवो तिहांउत्पार्थटीकामां आकाशङ्गव्यने अधिकारेक्ष्युरे तेक-
खियेरेर्ये जिहांश्रलोकाकाशमध्ये अवगाहकजीवपुज्ञदादिकङ्गव्यनयीतिहांपण अगु-
रुख्युपर्यायवंतपणो अवश्यरे तेश्चगुरुख्युनीश्रनित्यता अवश्यअंगीकारेरे अनेतेअगु-

खु तेपर्याये तथाप्रदेशे अन्यथन्यके ० पीजोवीजोयाये एट्टेपूर्वसमये अगुरुञ्जघुनो व्यय अनेवीजेसमये नगाअगुरुञ्जघुनो उत्पादे जोएरीतेनगोउत्पादव्यय गवेपियेनही तोथ्रोकाकाशनेविये सत्खक्षण न्यूनके ० उरोपके जेउत्पादव्ययधुनतासयुक्तेसत्क-हिये अनेजेझव्यहोयतेसत्पणासयुक्तजहोय माटेअगुरुञ्जघुनापरिणमन सर्वज्ञव्यमास-रंपर्यायमा सर्वप्रदेशमारे एश्चगुरुञ्जघुनो उत्पादव्ययकहो एवज्ञोथधिकारयो

तथाजगवतीटीकाया तथाच अस्तिपर्यायत सामर्थ्यरूपा
विशेषपर्यायास्तेचानतगुणास्तेप्रतिसमयनिमित्तज्ञेष्टेनपराहृ
त्तिरूपा तत्रपूर्वविशेषपर्यायाणानाश अन्निनवविशेषपर्या
याणासुत्पादपर्यायवल्येधुवत्व इत्यादिसर्वत्रक्षेय इतिसप्तम

अर्थ ॥ तेमजपद्धी अस्तिपर्यायथी विशेषपर्यायजे सामर्थ्यरूप तेथनंतगुणारे एन गगतीमूत्रमीटीकाभव्येकहोरे जेअस्तिपर्याय तेज्ञानादिकगुणाथपिज्ञागरूपपर्यायरे जेपर्यायपर्यायमांसंप्रहेयजाणगानु सामर्थ्ये तेपिशेषपर्यायरे तथामहाजाप्ये यावतीहेयास्ताघतोहानपर्यायाः एसामर्थ्यं पर्यायगवेष्यारे एसामर्थ्यपर्याय तेहेयनं निमित्तेते तेहेयतोअनेकरूपजेते नेथनेकपिण्डेशे तेजारेविशेषपर्यायपणपक्षटेते तेप्रतिसमये नि मित्तज्ञेदनी पराहृत्तिपक्षटवेत्री पूर्वपिशेषपर्यायनाशयाय तथाअन्निनवविशेषपर्यायनो उपजरोते अनेपर्यायनीश्वित्तानुग्रहे एमगुणपर्यायनोउत्पादव्ययधुनपणो ते सान मोते ए अस्तिनास्तिस्वताव वयाणा

नित्यताऽन्नावेनिरन्वयताकार्यस्यज्ञवति कारणाज्ञावताच
ज्ञति अनित्यतायाच्चन्नावेज्ञायकृतादिभक्तेरज्ञाव अर्थ
क्रियासंज्ञव तथामम्तम्बन्नावपर्यायाधारञ्जूतज्ञव्यदेगा
नास्यन्वदेवत्रज्ञेदरूपाणामेकल्पपिंडीरूपापरत्याग एकस्य
ज्ञाव देवत्रन्नावनानान्निन्नमार्यपरिणामानान्निन्नप्रज्ञाव
रूपोनस्यन्नाव एकल्पन्नावेमामान्याज्ञाव अनेकल्पन्नाव
वेविशेषधर्माज्ञाव स्यन्वामिल्वव्याप्यव्यापकृताप्यन्नाव

अर्थ ॥ एमन सर्वज्ञव्यमानित्यना तथाअनित्यतारे एनित्य अनित्यपणाविनाऽ-
दयक्षेद्दनयी जोऽज्ञव्यमानित्यनानहोयनो कार्यनोथन्वयरोनेहोय एट्टेआमुकरार्यते
अमुकज्ञये वग्गे एमक्षद्वाज्ञायनही माटेऽज्ञव्यमानित्यनामानजाशीज अमुकज्ञये
अमुकरायेक्षयो एमक्षद्वापयते माटे जोऽज्ञव्यनेनित्यपणेजमानियं तोगुणनुरार्यं तेऽ-

द्यनोकहेवाय अनेगुणतेऽव्यनकहेवाय अनेजोऽव्यनित्यहोय तोकारणपणानो अनाव
याय मादेऽव्यमां नित्यानामानवी अनेजोऽव्यमां अनित्यपणेनमानियेंतो जाणंग आ
देदेऽनें सर्वऽव्यना गुणरूपकार्यनो अनावयवझाय अर्थक्रियासंनवेनही एटदेकोऽक
अनित्यपणेहोय तोश्चर्यक्रियानेकरे केमकेकरवापणोकोऽकवीजापणो एटदेनवापणो
निपजाववो तेपूर्वपर्यायनो ध्वंसथवेवीयाय अनेतेएकनोध्वंस अनेकोऽकवीजा नवा-
नोनीपजवो तेऽव्यमां अनित्यपणोरे एटदेनित्यस्वज्ञाव तथा अनित्यस्वज्ञाव उक्खा-
व्या द्वेषएकस्वज्ञाव तथाश्रनेकस्वज्ञाव उक्खावेरे.

तथाकेऽप तेमज समस्तकेऽप सर्वजेस्वज्ञाव अस्तित्व प्रमेयत्व अगुरुद्घुआदिक सम-
स्तपर्याय गुणाविज्ञागादिक तेसर्वुंशाधारजुतक्षेत्र तेप्रदेशरे ते स्व केऽपोतानाजेक्षेत्र
तेसर्वजेदरूप जुदाजुदारे एटदेसंख्याताप्रदेश जिन्नरे पणतेएकपिंकृपणो क्रिवारेतज-
तानथी सर्वप्रदेशमां अंतरालक्षेत्रपणो कोऽवारेपामतोनवी जेश्वनंतास्वज्ञाव अनंतप-
र्याय तेअसंख्यातप्रदेशरूप तेनुंप्रमाणफिरुनवी एवोजेऽव्यनेविषे समुदायपिंकृपणो
रहेरे तेएकस्वज्ञावकहियें तेपंचास्तिकायमध्ये १ धर्मे २ अधर्मे ३ आकाश एत्रणङ्-
व्यएकेकरे अनेजीवऽव्यथयनंतारे तेयीपुज्जलपरमाणु अनंतगुणारे तेएकजीव अनेक
रूपनवनवाकरे पण अंतरप्रेनही तेमाटे ऽव्यमध्येएकस्वज्ञावरे.

क्षेत्रेयसंख्यातप्रदेश कालउत्पादव्ययरूप जावपर्याय गुणनाशविज्ञागते पोताना
जिन्नकार्य परिणामीरे तेसर्वनोजिन्नप्रवाहरे एटदेसर्वनो कार्यपणोजिन्नरे तेमाटेऽव्य-
ने सर्वस्वज्ञावपर्यायजेवें विचारतांऽव्यमां अनेकस्वज्ञावपणरे. जोवस्तुमां एकपणा-
नो अनावमानियें तोसामान्यपणोरहेनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामी आधारते कोण
याय अनेश्वाधारविनागुणादिआधेयते क्यांरहे तेमाटेऽव्यनो एकपणोरे. जोवस्तुमां
अनेकपणोनमानियें तो ऽव्यतेविशेषपरहितर्थझाय तेषीगुणनोअनेकपणो शीरीतेऽव्यनेवि-
षे पामियें माटे ऽव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणरे तथास्वस्वामिव्याप्य व्यापक-
ज्ञाव केमरेरे जेगुणपर्याय ते स्व केऽप धनश्वनेऽव्यतेतेनोस्वामीरे अथवा ऽव्यतेव्याप्य
अने गुणपर्यायते व्यापकरे एरीते ऽव्यमां एकस्वज्ञाव तथाश्रनेकस्वज्ञाव जाणवा.

स्वस्वकार्यजेदेन स्वज्ञावजेदेन अगुरुद्घुपर्यायजेदेनजेदस्व

ज्ञावः अवस्थानाधारतायजेदेन अनेदस्वज्ञावः जेदाज्ञावेसर्वगु

णपर्यायाणं संकरदोपः गुणगुणीद्वद्वद्वद्वणः कार्यकारणताना

शः अनेदाज्ञावेस्थानध्वंसः कस्येतेगुणाःकोवागुणीइत्याद्यज्ञावः

अर्थ ॥ स्वस्वकेऽपोताना कार्यनेत्रेकरी एटदेजीवऽव्यमां ज्ञानगुण तेजा-

एवानुकार्यकरे अनेदशेनगुण देखवानुकार्यकरे तथाचारित्रयुण थिरतारमणतारूप कार्यकरे तथापुज्ञस्तद्वय ते रूपणोंनिन्नकार्यकरे तथावर्णपणो गधपणो रसपणो अनेस्पर्शपणो सर्वकार्यनिन्नठे तथास्वज्ञावज्ञेदते अस्तिस्वज्ञापरतिरूपठे नित्यस्वज्ञाव अविनाशीपणोठे अनित्यपणोते पक्षटणरूपठे एकपणोतेपिंमरूपठे अनेकपणोते प्रदेशादिकरे इत्यादि स्वज्ञावज्ञेद तथाश्युरुस्थुपर्याय प्रदेशेण्युणाविज्ञामे जृदोजूदोठे कोईकोईनोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपरिणमनठे इत्यादि प्रकारे इत्यमानेदस्वज्ञावरे

तथा सर्वधर्मनो अवस्थानकेण रेहेबो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाकेण सरियापणोकेवारे निन्नपमतोनथी तेमाटेइत्यमानेदस्वज्ञावरे.

जोइत्ययुणपर्यायमानेदस्वज्ञावनहोयतो सर्वसकरएकपणोयाय तेवारे कार्यनो भेदकेमपके तेमाटे सर्वइत्ययुणपर्यायमानेदस्वज्ञावरे जीवतेचेतनास्वक्षणवत अजीवतेचेतनारहित एचेदरे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायप्रद्वयते चलणसहकारनेकरेरे पणवीजाश्चाजीवप्रद्वयतेषकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरमहायुणनेकरेरे आकाश-अवगाहदाननेकरेरे पुज्ञलरूपी आवरणस्कधादिकपरिणमनकरेरे एमसर्वइत्यपनेचेदरे तोजनिन्ननिन्नप्रद्वयकहेवायरे इहाकोइकहेशेके जीवथनतातेतोसरिखारे तोमर्वजीवनेएकइत्यशाश्वतेनकहो तेनेउत्तरजेहूपेया सोनारूप्यपणो अथवा धवलपणो तोलपणो सरिखारे पणवस्तुनापिंकपणो निन्नठे तेमाटे सोनेपण निन्ननिन्नकहियेंठेये तेमजीवनेपण निन्ननिन्नकहियें वक्षीउत्पादव्ययनोफिरबो सर्वमा तेजरीतनोठे पणपक्षटण ते एकरीतनोनथी तथाश्युरुस्थुनी हानिवृद्धिनो फिरबोपण सर्वइत्यमा पोतपोतानेठे तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुनिन्नठे एनेदस्वज्ञाव जाएबो

तन्मयतावस्थानाधारताथनेदेन अनेदस्वज्ञाव तथातन्मयता अवस्थानतानो अनेदरे अनेआधारतानोपण अनेदपणोठे तेअनेदस्वज्ञावरे

तथानेदनोजो अनापपणोमानियें एक्षेवस्तुमानेदपणो नमानियेतो सर्वयुण तथा पर्यायनो सकरवेण एकमेकपणो एदोपक्षागे तोणुणीकोण तथायुणकोण इत्यकोण एमयुणपर्यायने केइत्यव्यनो कथोपर्याय एमवेहेंचणथायायनही युण तथायुणी तथा जेउभयवायपर्याप्तक्षण तेनुचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मता एवेजुदापडेनही कार्यधर्म तथाकारणधर्मनो नाशयाय माटेवस्तुमा नेदस्वज्ञावमानवो

तथानोरस्तुमाथनेदपणोनमानियें तोस्थानध्यमयायठे जेस्थान कोण अनेतेस्थानकमा रहेतेकोणठे इत्यादिक्नोथनापर्यायठे एमप्रिचारता सर्वथाएकपणोमानता कोणयुणी अनेकोणयुण एमउक्षसाणनयाय परीतेनेदानेदस्वज्ञाववस्तुमा मानवा

परिणामिकत्वेऽत्तरोत्तरपर्यायपरिणामनरूपोऽन्नव्यस्वज्ञावः तथातत्वार्थवृत्तो इहतुजावेऽव्यञ्जनवनमितिगुणपर्यायाश्च ज्ञवनसमवस्थानमात्रकाएवउच्चितासीनोत्कुटकजागृतशयि तपुरुषवत्तदेवच वृत्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जायतेच स्तिविपरिणामतेवर्धते अपदीयते विनश्यतीति पिंडातिरिक्त वृत्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते सव्यापारैश्च ज्ञवनद्यत्तिः अस्तिइत्यनेननिव्यापारात्मसत्तारव्यायते ज्ञवनवृत्तिरूदासीनाऽप्रस्तिरावदस्यनिपातत्वात् विपरिणामतेइत्यनेन तिरोज्ञात्मरूपस्यानुविज्ञतथावृत्तिकस्यरूपांतरेणज्ञवनं य यादीर्दधिजावेनपरिणामते विकारांतरवृत्याज्ञवनवृत्तिष्ठते वृत्यंतरव्यक्तिहेतुज्ञाववृत्तिर्वाविपरिणामःवर्धतेइत्यनेनतुपचयरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्धतेभपचयवत्परिणामरूपेणज्ञवन वृत्तिर्व्यञ्जयते अपदीयते इत्यनेनतुतस्यैवपरिणामस्यापचयवृत्तिरारव्यायते उर्वलीज्ञवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूप ज्ञवनवृत्यंतरव्यक्तिरूच्यते विनश्यति इत्यनेनाविर्जूतज्ञवन वृत्तिस्तिरोज्ञवनसुच्यते यथाविनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमवस्थानात्मिकाज्ञवनवृत्तिस्तिरोज्ञानत्वज्ञावस्यैवजाता कपाला व्युत्तरज्ञवनवृत्यंतरक्रमाविविन्नरूपत्वादित्येवमादिज्ञिराकारेऽव्याएवज्ञवनद्याणान्यपदिश्यते त्रिकालमूलावस्थ्यायाऽपरित्यागरूपोऽन्नव्यस्वज्ञावः ज्ञव्यत्वाज्ञावविशेषगुणानामप्रवृत्तिः अन्नव्यत्वाज्ञावेऽव्यांतरापत्तिः

श्रर्थ ॥ हवे ज्ञव्यस्वज्ञाव तथाश्चन्नव्यस्वज्ञावहेते जीवथजीवादिक ऊव्यते तेष-
रिणामिते समयेसमये ज्ञवनवापरिणामैं परिणामेते तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशे थने उत्तरोत्तर नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे ऊव्यनीपरिणति तैनुमूखकारणते ज्ञव्यस्वज्ञाव कहियें तिहांतत्वार्थटीकामध्येकद्योरे इहांऊव्यानुयोगनेविषे ज्ञावर्धमनेविषे एट्वे गुणपर्यायनेविषे ऊव्य ते ज्ञव्यकै ज्ञवनययो एट्वेनदोनीपजबो तैज्ञवन इतिकै

एमवस्तुना गुणपर्यायजेरे तेजवनके० नवोथगारूप समवस्थानमात्रे एट्टेवे नवान् थावारूपरे तिहाद्यांतकहीरे जेपुरुप उत्थितके० ऊठो आसीनके० फरीतेहिजवेवे वेसबुतेपद्मासनकहियें अथवाठकम्बुतेआसनसद्वितसूबु जेमद्धत्यादिकपर्यायितेपुरुपय यरे तेम तेहजवृत्यतरके० पूर्वपर्यायिनोविनाश अनेउत्तरपर्यायिनो उपजबोते वृव्यतर हियें धृत्यतरव्यक्तिरूपणेउपदेशोरे तेजवनधर्मनीप्रदृतिकहीरे जायतेके० नवोऊपजे स्तिके० उत्तिपणेरहे विपरिणमतेके० वीजापणेपरिणमे वलीसामर्थ्यधर्मवधे अने आक्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिरुके० समुदायपणो तेथी अंतिरिक्तके वीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्यतरनी अवस्थाने प्रकाशथवे करीने जे जवनपणेयाय एट्टेरीजेजवनवृत्ति तेसव्यापाररे पणनिव्यापारनयी

अस्तिएवचने निव्यापार आत्मशक्तिरे तेकहियेंरैयें तेपण जपनवृत्तिथी उदासं नरे एट्टेजवनवृत्तिने अहणकरतीनयी अस्तिशब्दने निषातपणोरे विपरिणमतेएवच तिरोज्जूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमातझूपणो अनुष्ठित्तके० विष्टेदर्गई तथावृत्तिकस्यके तेरीतें वर्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपातरेथवो तेजवनकहियें तिहाद्यात जेम क्षीरते दूद दधिजावेपणमे विकारातरेथवो तेरीतेरहे एजवनधर्मकहियें जेझानादिपर्यायमा उन नतहेय जाणवानीशक्तिरे पणजेहेय लेरीतेपरिणमे तेरीतेझानगुणप्रवर्ते इङ्गानगुणप्रवर्चन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनरे एपणजवनधर्मरे वलीवृत्यतरवर्तनं अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेजवातरें वर्तनो तेविपरिणामकहियें तथावली वर्ज्जतेके वधेएवचने उपचयरूपणेप्रवर्ते जेमश्रकुरवधेरे तेमनर्णादिक पुञ्जबना गुणउपचयपणे वधे एजुपचयरूपजवननतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंरैयें

एमगुणने कायांतरपणे परिणमवे झव्यमा जवनधर्मरे अपक्षीयते एवचनेकरीने तुके० वली तेहिजपरिणामनो ऊणोथवो अथवाठकमोकहियें झुर्वलथतापुरुपनीपणे जेमपुरुपझुर्वलथाय तेमपर्यायनेघटवे झव्यप्रभाणादिक तथातेसमयें अगुरुखधुपर्यायघटवे तेझुर्वलथबु तेरूपजेजवनवृत्तिनेश्वतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिरे तथाविनश्यतिए एमकहेवाथी आमिर्ज्जूतके० प्रगटथयोजेजवनधर्मनुवर्तवो तेनो तिरोजावथयोकहियें जेमविपस्थोघट जेमृत्यिकनेविये तेचकादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रव्यवसें विनाशकहियें एमझव्यनेविये कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोजामें अन्यपणे कार्यकरणीते समवस्थानजेरहेबु तेसमयेतेजवनवृत्तिकहियें तथा तिरोजापणानेअजामें आबुजेकाखादा दिक उत्तरजवन तेपणेपर्त्तबु एपणजवनधर्मरे एमश्वनुक्तमेथविठ्ठ निरतररूपेष्ट्यादिकथनेकथाकारे झव्यतेजवनसक्षणकहियें एजव्यस्वज्ञाप जाणवो झव्यनेविये जे अस्तित्व पस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुखधुत्वादिक धर्मतेप्रणेकाखामा मूक्षथवस्थाने अपरि-

न्यागेके० तजनानन्धी तेहिजरुपपणोरहे एहवाजेटलाधर्मते अनन्दव्यन्वज्ञावजाणवो लेअ-
नेक उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोपखटायनही तेमज अ-
जीवनो अजीवपणो पखटायनही एसर्वश्रवनव्यन्वज्ञावजाणवो.

हवे एवेन्वज्ञाव जोङ्कव्यमानमानियें तोस्थोदोपयाय तेकहेरे जोङ्कव्यनेविषे जन्व-
पणोनमानियें तोङ्कव्यनाजेविशेपगुण गतिसद्वकार स्थितिमद्वकार अवगाहदान छाव-
कता वर्णादिजेपंचाम्तिकावना विशेपगुण तेनीप्रवृत्तिनवाय अनेप्रवृत्तिविना कार्यनो
करवोनवाय अनेकार्यनेआणकरवे झव्यपलटतोनन्धी तेमनोतेमजरहेरे एथनन्वन्वज्ञावं.

जोङ्कव्यनेविषे अनन्दव्यन्वज्ञावनद्वोय अनेएकलो चवनस्वज्ञावज्ञावं
तोनवानवापणोयवे तेझव्यपलटीने अन्यझव्यथयीजाय तेमादे झव्यत्व सत्य प्रमेयद्व-
दि धर्मेअनन्वपणोरे तेव्रीज झव्यपलटतोनन्धी तेमनोतेमजरहेरे एथनन्वन्वज्ञावं.

वचनगोचरायेधर्मस्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राद्
रा· संख्येया. तत्संनिपानाच्यसंख्येयाः तद्गोचराज्ञा
वाः ज्ञायश्रुतगम्या· अननंगुणः वक्तव्याज्ञावेश्रुताय
हणत्वापत्तिः अवक्तव्यज्ञावे अतीतानागतपर्यायाणां का
रणतायोग्यतान्हपाणामज्ञावः सर्वकार्याणां निराधारनाय
निश्च सर्वपांपदार्यानाये विशेपगुणाच्यवन स्थित्यवगाद
मद्वकारपूर्णगतन्वेतनादयस्तेपरभगुणाः शेयाः माड्ज
एण· माध्यरणामाधारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिं
परमन्वज्ञावः इत्यादयः सामान्यस्वज्ञावाः

अर्थ ॥ श्रात्मानो वीर्यनामागुण तेनाश्चविज्ञाग जेव्रीर्गम्भार्तु
वीर्यान्तरायनेक्षयोपगमें तथाक्षयथवाधी प्रगद्योजेवीर्यर्थल नेत्रद्वये
नेत्रद्वये वीर्यगणाजे तापावरगणानांपुज्जव तेऽवद्यपार्श्विश्वासे
ओताजनने छाननाहेतुरे एटद्वेजेमाजेगुणनहोय नेत्राणां द्वये
कहेरे तेमृष्यात्रे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणां द्वये
कारणमां तेषुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणां निश्च
वाजंवस्तुमांधर्मरे तेवेवक्तव्यथर्मकहिये अनेन्द्रियां द्वये
अनेकधर्मरे तेवचनमांग्यहवातानन्धी तेवामर्गुर्ल द्वये
क्तव्यधर्म अननंगुणाते वचनतोसंख्याताते पार्श्वद्वये

सर्वनो ह्यायपणोथाय उक्तच अजित्पत्पाजेजाग अणतज्ञागोयथणजित्पत्पाण अजित्पत्पाणतो ज्ञागसुएनिवद्धोअ ॥ ३ ॥ तत्रकेऽ तिहा अकरमस्यातारे तेथकरना स-
त्रिपात सयोगीज्ञाव असग्न्यातारे तेथद्वारसत्रिपातने ग्रहवाय एवाजे पदार्थादिकना
ज्ञाव तेथननगुणारे तेथीथपकब्यज्ञाव अनतगुणारे जेमतिडान श्रुतज्ञान अजित्पत्प
ज्ञावनो परोहप्रमाणेप्राद्वकरे अवधिज्ञान तेपुञ्जलनो प्रलक्षप्रमाणेजाणगरे पणएकप
रमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनही केटसाकपर्यायनेजाणे तेपण असग्न्यातसमयेजाणे अ-
नेकेप्रतिज्ञान एउड्व्यनासर्वपर्यायने एकसमयमा प्रत्यक्षजाणे माटेजोड्व्यमा वक्तव्य-
पणोनहोय तो श्रुतज्ञानेग्रहणायायनही अने जेयथाज्ञ्यासउपदेशादिक सर्वकामशायरे
तेतोएमनथीमाटेड्व्यमावकब्यपणोरे

अवकव्यातावेकेऽ अवकव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तुमाकारणतानी
परपरामारण्यारे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामारहारे तेसर्वनोथज्ञाव याय तेगारे
वस्तुमा वर्त्तमानपर्यायनी उत्पत्तिमियं तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानयायनही माटे अ
वक्तव्यस्वज्ञाव अग्न्यमाननो अनेपर्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइज्ञाय अनेड्व्यमा
एकसमयमा अनताकारणे तेथनताकारणना अनताकार्यधर्मर्थे अनेथनताकार्यना अ
नताकारणपरपरानु ज्ञानतेकेप्रतीनिरे अनेपर्तमानकाळे कारणधर्मतयाकार्यधर्मर्थी अ
नतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्तारे तेकोइना अविज्ञाननही पण अविज्ञानी जेझा
नादिकगुण तेमा अनता कारण धर्म अनताकार्य धर्म ऊपज्ञानी योग्यतारूपसत्ता
रे ते सर्व अपकव्यरूपरे

ह्येपरमस्वज्ञाननु स्वरूपकहेरे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनापिशेषगुण जे
धर्मास्तिकायनो चसनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाशा
स्तिकायनो अगगाहक तथापुञ्जस्वड्व्यनो पूरणगखन जीवड्व्यनो चेतनालक्षण एमवे
ड्व्यना पिशेषगुणरूप एमलक्षणरूप तथाड्व्यातरथी जिन्धपानग्रनु मूलकारण ते
परमप्रहृष्टगुणवहियें पप्रधानगुणने अनुयायी वीजाजे साधारणगुण ते गुण पदा
स्तिकायमा पामियें नेनानाम अविनाशीपणो अग्नकणो नित्यतगादिकधर्मे एपचास्ति
कायने सरिम्यारे तेमाटेसाधारणगुण तथापचामिन्नायमा कोडक अस्तिकायमापामि
यें कोइकमानपामियें तेगुणने साधारणयमापारणकहिये तेसर्वगुणनेपिये विशेषगुणने
अनुयायिप्रवर्तनने ते प्रवर्तननाकारण ड्व्यमा एकपरममन्तापणोरे तेपरमस्वज्ञाने
परिएमने ड्व्यनाम्यगुणमुग्यगुणने अनुगमेजप्रवत्ते तेपरममन्ताप सर्वड्व्यनेपिये
एन्ट्रेसे तेमामान्यन्ताप कहा वस्ती अनेकानजयपत्नाकामाकहारे

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व ज्ञोग्गृह्यत्व असर्वगतत्व प्रदे
शवत्वादिज्ञावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकु
र्वन्ज्ञापयत्वत्रानंतर्धर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः
प्रतिपदंप्रवचनत्वेनपुंसायथासंन्वमायोजनीयाः क्रियाव
त्वंपर्यग्योपयोगिताप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराः सं
तिज्ञूयांसः अनादिपरिणामिकाज्ञवंतिजीवस्वज्ञावाः धर्मा
दिनिस्तुसमानाइतिविशेषः

अथै ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो ज्ञोक्तापणो गुणवंतपणो असर्वव्या-
पिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वज्ञाववंतद्वय ऐ तेमज तत्वार्थ टीकामध्ये परि-
णामिकज्ञावनानेद वर्खाणतांक्ष्योरे पुनरपिश्रादिग्रह्यद्वना यहणकरतां एमज्ञाणेरे जे
वस्तुअनंतर्धर्मवत्तरे तेसर्वविस्तारीजकेनही तोपणद्वयद्वयनेविषे प्रवचननाजाणपुरुपें
जेमसंन्वेतेमधर्मजोम्बवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिगुण तेलोकालोकज्ञाणवाने
प्रतिसमयेप्रवत्तेत्रीज्ञानादिगुण तेकरणअन्ने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजा-
एवी तथादेशवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वेगुण तेव्रणपरिणतियें परिणामीरे
तेमाटेपंचास्तिकाय तेश्वर्यक्रियाकरे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वेपर्यायनो उपयोगी-
पणो एपणजीवस्वज्ञावरे नयाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्वज्ञावरे तिहांधर्मा-
धर्म अन्ने आकाश एवं अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अवस्थितपणेरे पुक्त-
नेचबणपणो सवासर्वदारे पुक्तपरमाणु तथा पुक्तस्कंध तेसंख्यातोकाल अथवाअसं-
ख्यातोकाल एकेक्षेव्रदेहपणरे अवश्यचवदथाय तथाजीवद्वयने सकम्मा संसारी-
पणे केत्रधी केत्रांतरगमन ज्ञवधी ज्ञवांतरगमनरूप चलतारे तेजीवने सम्यक्कृद्वयन
सम्यक्ज्ञान अन्ने सम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरज्ञावज्ञोगीपणो निवारवे आत्मसम्प
निराधारण स्वरूपज्ञासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वे स्वर्वमीकर्त्ती स्वर्वमीजोक्ता-
पणे सक्तपरज्ञावतज्जवे निरावरण नि.संग निरामय निर्द्धनिष्कलतंकः निर्मितवनीय अ-
नंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याधाध परमानंदमयी सिद्धात्मा सिद्ध-
क्षेव्रद्वया तेसादिअनंतकाल स्विररे क्षक्षप्रदेशस्विररे अनेसंसारीजीव तेनाथारप्र-
देश सवासर्वदास्त्रियरे तेश्वारप्रदेश निरावरणे नया आचारांगनीटीका दोषांगाचार्य-
कृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचदशविवेनापियोगेनात्मा अद्योप्र-
देशानुविहाय तसज्ञाजनोदक्तव्युर्वर्त्मानः सर्वेर्वात्मप्रदेशरात्मप्रदेशावष्टव्याकाशम्यं
कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदक्षीकं घटवध्नाति तत्प्रयोगकमेत्यन्यते.

एट्टेआरप्रदेशो कर्मसागतानन्धी इहांकोइषुरेजेआरप्रदेशनिरावरणरे तो लोकास्तोकेमजाणतानन्धी तिहाउत्तरजे आत्ममङ्गव्यनी जेगुणप्रगृति तेसर्वप्रदेशमिथे प्रवत्तेतोतेमां एश्वारप्रदेश अव्यपरे तेथीआरप्रदेशमा सर्वगुणनिरावरणरे पण कार्य करीजकतानन्धी जेमथ्यनिनुआत्मतंसूक्ष्मकणीयुद्दोय तेमा दावूक पाचक प्रकाशक गुण ठे पण अव्यपतामाटे दावूकादिकार्य करीशकतुनन्धी

बलीरोइषुरेजे एश्वारप्रदेश ते निरावरण केमरहीशम्या तेनुउत्तर जेचलप्रदेशहोय तेनेकर्मसागे पणश्चलप्रदेशने कर्मसागेनही एमजगवत्तीसूत्रेकत्तुरे जेथाइ वेथाइ चक्ष फदइ घटइ सेवधइ एपाठरे तेमाटे जेचलहोयतेवधाय अनेआरप्रदेश तो अचक्षरे तेथी एश्वारप्रदेशने वधनन्धी तथाकार्यान्व्यासें प्रदेशेजेका थाय तेथी प्रदेशनागुणपण तिहातेकार्यकरवाने प्रवत्तेरे तथाजेक्षव्यनो जेगुणजेप्रदेशहोय तेगुणतेप्रदेशमूळी अन्यक्षेंजायनही तथाजीवना आरप्रदेश सर्वथानिरावरणरे वीजा प्रदेशो अहरनो अनंतसोनाग चेतनासर्वदाउधानीरे एरीते सतिके० ठेवणाथनादिपरिणामिकजावते जवतिकेहोय अनादिपरिणामिकजावरेते जीपनाजावरे अने सप्रदेशादिक धर्मास्ति कायप्रमुखनेविषे समानरे एमजाणवो इत्यादिकशेपस्वजावरे

जिन्नजिन्नपर्यायप्रवर्तनस्वकार्यकरणसहकारभूता पर्यायानुगत परिणामविशेपस्वजावा तेचके १ परिणामिकना २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ जोकर्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्याव्या पकता ८ आधाराधेयता ९ जन्यजनकता १० अगुरुद्वयुता ११ विभूतकारणता १२ कारकता १३ प्रभूता १४ जाहुकता १५ अजाहुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गति स्वजावता १९ स्थितिस्वजावता २० अवगाहकस्वजावता २१ अखंकता २२ अचलता २३ असगता २४ अक्रियता २५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिका उक्तचसमतो आरोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तन्नवस्तुधर्म उपाधितानव नात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ द्वेविशेपस्वजावकहेरे जिन्नजिन्नजेपर्यायिरे तेनुकार्यकारणपणे जेप्रवर्तन तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वजाव तेविशेपस्वजावकहियें तेना अनेकजेदरे ते श्रीहरिजनक्षसूरित्त वार्तिकसमुच्चयप्रथमाकह्यारे ते कहेरे

१ मर्वदव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्तं ते जिन्नजिन्न परिणामे परिणामे नेसर्वपोतानागुण नेने कारणीकरे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीव-स्वनान्वेषां तिहांश्चात्माकर्त्तरि एटदेकर्त्तरिपणो जीवदव्यनेविपेत्रेश्रव्याकर्त्ताविकर्त्ताव इति उत्तराध्ययनवचनात् ३ डायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविपेत्रे ज्ञानखण्डजी-वरे तेमाटेगिन्द्रैकांडिएण्डतिआवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ४ याहूकगक्तिपणजीवनेरे यु-एस्तातितिक्रियानोकर्त्ता जीवरे ५ जोकाशक्तिपण जीवमांरे जोकुणइ सोनुंजड्य.क-र्त्ता सएवनोक्ता इतिवचनात् ६ रक्षणता ७ व्यापकता ८ आधाराधेयता ९ जन्यजन-कता तत्वार्थवृत्तिमध्येरे तथा अगुरुव्युता विजुता करणता कार्यता कारकता ए ग-क्तिनीव्यारया श्रीविशेषावश्यकेंरे जावुकता तथा अचानुकतागक्ति तेश्रीहरिजदसू-रिकृतजावुकनामे प्रकरणमध्येकद्विरे।

एमकेटदीकशक्तिजैननातर्कव्यंशोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांरे तथाऊ-ध्यप्रवचयगक्ति अनेतिर्यक्तप्रवचयशक्ति ठंडगक्ति समुचितगक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविपेत्रे तथाजेद्विगुणीआत्मामाने तेसर्वधर्मशक्तिरूपजमानेरे तेषेदानादिकलविध अव्यावाध सुखप्रमुख गक्तिमानीरे इहांव्याख्यांतरे जेगुणकरणेरे तेनेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्येरे जाणवोदेखवो तेकार्यरे केटदीकगक्तिजीवमांजरे अनेकेटदीक पंचास्तिकावमध्येरे त-थादेवसेनकृत नवचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्तजाव मूर्तस्तजाव तथापुज्जवपरमागुने चे-तनस्तजाव अमूर्तस्तजावकह्या तेथसतरे एतोआरोपणेकोश्ककहे तेकथनमात्रजाण-वो पणएवातरतीमांननथी जेधर्मआरोपे नशाउपचारेंगेवेयाय तेवस्तुनोधर्मननथी उपाधी-श्रीयायरे तेमाटेजेजपावि तेवस्तुनीसत्ताननथी एमधारखुं

धर्मास्तिकायेऽमूर्तीचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मा
स्तिकाये अमूर्तीचेतनाक्रियस्थितिसद्वकारादयोगुणाःआकाशा
स्तिकाये अमूर्तीचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुज्जवास्तिकाये
मूर्तीचेतनसक्रियपृष्ठंगदनादयोवर्णगंवरसस्पर्शादयोगुणाः जी
वास्तिकायेज्ञानदर्शनचात्रिवीर्या व्यावाधामूर्त्तागुस्तुद्युअनव
गाहादयोगुणाः एवंप्रतिडव्यंगुणानामनंतत्वंजयं ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायना गुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिसहाय इत्यादिश्रनंतगुणेरे अधर्मास्तिकायनागुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ स्थि-तिसहाय इत्यादिश्रनंतगुणेरे आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अ-

क्रिय ४ अवगाहनादिक अनतगुणरे पुज्जतास्तिकायनागुण चार रे १ रूपी २ अचेतन
३ सक्रिय ४ पूर्णगत्वा १ वर्ण २ गध ३ रस ४ स्पर्श इत्यादिकगुणअनतारे जीवास्ति
कायनेविषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५ अव्यावाध ६ अरूपी ७ अयुलसघु
८ अननगाहादिकअनतगुणरे एरीतें झब्बनेविषे अनतगुणजाणगा

पर्यार्था पोदा झब्बपर्यायाच्चसरब्येयप्रदेशसिद्धत्वादय १ झब्ब
व्यंजनपर्याया झब्बाणाविशेषगुणाश्रेतनादयश्चलएसहायादय
अ २ गुणपर्याया गुणा विज्ञानादयः ३ गुणव्यजनपर्यायाङ्गां
यकादय कार्यरूपा मतिङ्गानादय ज्ञानस्यचक्रुद्दर्शनादयो द
शर्नम्य द्वामामाद्वायादय चारित्रस्यावर्णांगधारसास्पर्शादियोमूर्ति
स्यइत्यादि ४ स्वज्ञावपर्यायाच्चगुरुलघुविकारा तेचकादशप्र
काग पटगुणादानिविद्वरूपा अवाग्मोचरा एतेपचपर्यायास
र्वंझब्बेषु विज्ञावपर्याया जीविनरनारकादय पुज्जलेद्याणुकतो
नंताणुकपर्यंतास्कवा

अथ ॥ द्येनयज्ञानभूतानो अधिकारकहेरे तिहाँझब्बास्तिकनयनामूलवेजेदरे १
द्युझझब्बास्तिक २ अगुरुझब्बास्तिकथनेदेवसेनहृतपकृतीमाझब्बास्तिकनादशजेदक-
ग्यारे तेतर्येष्वेजेदमध्येसमायरेतथातेसामान्यन्यज्ञानमाणरेतेमाटेइज्ञानयसाण्णा
द्येपर्याप्तना र ज्ञेद कहेरे तिहाँ प्रयम १ जेझब्बनेविषे एकत्रपणे रह्या जे जीवादिकना
अर्थात्यानाप्रदेश तथायामाशना अनताप्रदेश एझब्बपर्यायकहिये २ सिद्धत्वादिक अ-
र्थात्यादिक तथाझ्यनोन्यज्ञवेऽ प्रगटपणेजेमानेरे तेझब्बत्यजनपर्यायकहिये

झ्यनोविशेषगुण जेयन्यझ्यनमानयी तेनेविशेषगुणकहिये तेजीजनेचेतनादिक
अर्थो एमांमित्यामाचक्षणमद्वार तथा अधर्मामित्यामाविरसह्वार आकाशमा
अवगाहदान पुक्षभूमा पूर्णगत्वाण्य एमर्मेझ्यनीनिश्चताने प्रगटकरे ते तेमाटे
एपर्मेझ्यन्यनन पर्यायकहिये

३ एङ्गुणना अविज्ञाग अनतारे तेनोपिम्पणो तेगुणपर्यायकहिये ४ गुणत्यजनप-
र्यादिनेहाननो जाणगपणो तथाचारित्रनो शिरनापणो इत्यादिक अयगा ज्ञानगुणमाने
दानर हाननातेद जे मनिङ्गानादिक पाच तथादर्जनगुणना चक्रुद्दर्शनादिकतेद तथा
चारित्रगुणना हमादिकतेद पुक्षभूमीयुण तेनातेदवर्ण गध रस भवां मंरयानादिक
अर्थात्युणना अवग्ने अग्ने अग्ने अग्ने इत्यादिकचारजाणगा ते गुण व्यजनपर्याय

५ स्वज्ञावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वज्ञावज एवोरे तेश्रेष्ठुखबुपणे रे ठ प्रकारनीवृद्धि तथारप्रकारनी हानी एवीरीतें वारप्रकारें परिणमेरे इहांकोइप्रेरकनो योगनश्ची वस्तुनेमूलधर्मनोहेतुरे एनोस्वरूपपूरुं वचनगोचरनश्ची अनुज्ञवगम्यनश्ची केमकेश्रीगणांगसूत्रनी टीकामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातश्चंगठे तिहांप्रथम सूत्रश्चंग वीजुं निर्युक्तिश्चंग ३ ज्ञाप्यश्चंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वेनाश्रथर्थकहेतुरे ५ टीकाव्याख्यानिरंतर एपांचश्चंगतो ग्रंथरूपरे तथारठोअंगपरंपरारूपरे तथासातमुंअंगश्चनुज्ञव एसातेकारणे विनयसहि- तज्ञणतां सुएतांश्चकांसाचाश्रथं पामिने आत्मानुज्ञाननिर्मालयथाय श्रीज्ञगवतिसूत्रे गाया सुच्छोखबुपढमो वीउनियुक्तिमिसिउज्ञणीरे तश्योअनिरवसेसो एसविहिहोश्यणु- डैरे एपांच पर्यायकल्पा तेसर्वेऽङ्ग्यमध्येते.

६ विज्ञागपर्याय तेजीव तथापुज्जलमध्येजरे तेविज्ञावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पा- महुंते तथा पुज्जलनो द्व्युणुकञ्च्युणुकादिकसंधनो मिलवुंअनन्ताणुकपर्यंत अनन्तपुज्जल स्कंधरूप ते विज्ञागपर्याय कहिये.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिज्ञागन्यूनावगाहनाद्यः
सादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायाभवशरीराभ्यवसायाद्यः अ
 नादिसांतपर्यायाभव्यत्वाद्यः तथाचनिद्रेषाः सहजरूपावस्तुनः
पर्यायाः एवंचत्वारोवस्थ्युपज्ञायाइतिज्ञाप्यवचनात् नामयुक्तेप्रति
 वस्तुनिनिद्रेषपचतुष्टयंयुक्तमुडकंचानुयोगद्वारेजस्थयजंजाणिज्ञा
 निकेवंनिकवेनिरवसेसं जस्थयनोजाणिज्ञा चउक्तयंनिकवेतस्थ
 तत्रनामनिद्रेषपः स्थापनानिद्रेषपः उव्यनिद्रेषपः ज्ञावनिद्रेषपः त
 त्रनामनिद्रेषपोद्विधिः सहजः सांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्विधि
 धा सहजात्तारोपजाच उव्यनिद्रेषपोद्विधिः आगमतोनोआग
 मतश्च तत्रआगमत तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआगमतोऽगरीर
 ज्ञव्यशरीर तद्यतिरिक्तज्ञेदात्रिधाज्ञावनिद्रेषपोद्विधिः आगमतो
 नोआगमतश्चतद्ज्ञानोपयुक्तः तदगुणमयश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं
 तत्रनिद्रेषपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मज्ञेदाः

अर्थ ॥ पुज्जलनुभेस्त्रमुख तेथनादिनित्यपर्यायरेजीवनीसिज्ञावस्या सिज्ञावगाहना-
 दिकतेसादिनित्यपर्यायरे तथाज्ञावथनेशरीर तथाथध्यवसाय एवणप्रकारनायोगस्या-
 नजे वीर्यनाक्षयोपशमथीजपना तेमांकपायस्यान जेवेतनानोक्षयोपशम कपायनाउद-

यथीमिथा अनेसयमस्यानजे चारित्रिनो हयोपशमपरिणामी जेचेतनादिकगुण एसर्वे अध्यगसायस्यानक तेसादिसातपर्यायिरे तथासिद्धिगमनयोग्यताधर्म तेजव्यपणे एपर्यायि तेअनादिसातरे जेसिङ्कत्वपणे प्रगटे जव्यत्वपर्यायिनोपिनाशरे तेमाटे अनादिकालनो रे पणअथवासहितरे माटेअनादिसातपर्यायिरे एमपर्यायअनेकजाणवा

तथावस्तुमा सहजना जेचारनिहेपाठेतेपणवस्तुनाख्यपर्यायिरे तेश्रीविशेषावश्यकनी जाप्यमध्येकह्योरे चत्वारोवत्तुपङ्गाया एवचनरे तेमाटेख्यपर्यायिकह्यें वली श्रीथनुयो गद्धारसूखमाकह्योरे जिहाजेऽस्तुना जेटवानिहेपाजाणियें तिहा तेवस्तुना तेटवानि क्षेपाकरियें कदाचित् उपर्यायिनिहेपा जासनमानव्यावे तोपण १ नाम २ यापना ३ ऊव्य ४ जाग एचारनिहेपातो अवश्यकरवा तेमानामनिहेपानावेजेदरे

१ सहजनाम २ साकेतिकनाम तेकोइनोकर्खोनाम तथास्थापनानावेजेदरे १ सहज स्थापना तेवस्तुनीश्चवगाहनारूप २ आरोपस्थापना ते आरोपथी यवी माटेकुत्रिमकहि-यें आरोपजाकह्यें हवेऊव्यनिहेपानावेजेदरे तेकह्येरे ३ आगमथीऊव्यनिहेपो ते जे जेपुरुपना स्वरूपनाजाणपणे हमणातेऊपयोगेंनथी तेग्राममऊव्यनिहेपजेवस्तुतेगुणस-हितरे पणहमणातेपणेपरततानथी तेहनात्रणजेदरे १ इशारीरजेहनाहता पणमरण-पाम्या तेथीतेमुशरीर जेक्षपन्नदेवना शरीरनीजक्ति श्रीजवृद्धीपपन्नतीमारे २ जव्यश रीरते हमणातो गुणमयनथी पणगुणमययशे जेम अयमतामुनी एजव्यशरीरजाणवो ३ तद्रव्यातिरिक्त जेतेगुणेमत्तरे पणतेऊपयोगे हमणापरततानथी

जागनिहेपानावेजेद १ आगमथी जागनिहेपो तेआगमना अर्थनोजाण वलीतेऊ-पयोगेवत्तेरे २ नोआगमथी जागनिहेपो तेजेपणेझनत्तेरे तेजरूपरे एरीतेनिहेपाकहेवा

एचारनिहेपामा पेहेखात्रणनिहेपा तेकारणरूपरे अनेचोथोजावनिहेपो तेकार्यरूपरे तेजागनिहेपाने निष्जागता पेहेखात्रणनिहेपा प्रमाणरे नहींजाथप्रमाणरे पहेखात्रणनिहेपा ऊव्यनयरे एकजागनिहेपो तेजापक्षयरे जागनिहेपाने अणनिपजावता एकसीऊव्यनीप्रवृत्ति ते निष्फलते एमथी आचारागनीटीकामा सोकविजया अध्ययने कानुनेतेखरीयेत्तेये कउमेगुण फखगुण फखचक्रियाजरतितस्याश्रकियाया सम्यग्द-शेनझानचारित्र रहितायापेहिकासुभिमिकायंप्रवृत्ताया अनात्यतिकोनेकातिसोनवेत् फखगुणोप्य गुणोनवति सम्यदशेनझानचारित्रक्रिया यास्त्वेकातिकानागाधसुखा-स्वतिस्तिष्ठिगुणोवाप्यते एनदुरुच्छरति सम्यदशेनझानादिकैवक्रियासिद्धि फखगुणेनफ-सपत्यपरातुसासारिकसुमुखसान्यासपणफक्षायारोपानिष्पत्तेत्यर्थ

एट्सेरदप्रयी परिणमनविना जेक्रियाकरवीतेयकी ससारिकसुग्रथाय ते क्रियानि फ-

ख रे एपाठरे माटेजावनिकैपाना कारणविना पेहेलात्रऐनिक्षपा निःफलरे निकै-
पातो मूलगीवस्तुनापर्यायरे इव्यनोस्थधर्मजरे.

नयस्तुपदार्थज्ञानेज्ञानांशः तत्रानंतर्धर्मात्मकेवस्तुन्येकधर्मोच्चय
नंज्ञाननयः तथारलाकरेनीयतेयेनश्रुताख्यप्रमाणविषयीकृतस्या
र्थस्यांशस्तदितरांशोदासीन्यतः सप्रतिपत्तुरज्ञिप्रायविशेषोनयः
स्वाज्ञिप्रेतादंशादितरांशापलापीपुनर्नयाज्ञासः सव्याससमासा
न्यांद्विप्रकारः व्यासतोनेकविकल्पः समासतोद्विज्ञेदः इव्या
र्थिकः पर्यायार्थिकः तत्रइव्यार्थिकश्चतुर्था १ नैगम ५ संग्रह ३
व्यवहार ४ शजुसुत्रज्ञेदात् पर्यायार्थिकस्थिधा १ शब्द ७
समज्ञिरुद्ध ३ एवंभूतज्ञेदान्.

अर्थ ॥ जेनयरे तेपदार्थनाज्ञाननेविषेज्ञाननाग्रंशरे तिहांनयनुंखक्षणकहेरे अनंतध-
र्मात्मक जेवस्तु एटलेजीवादिक एक पदार्थमां अनंताधर्मरे तेनोजेएकधर्मगवेष्योतोपण
अन्यकेऽ वीजाश्रुताधर्म तेमांश्चारे तेनोउठेदनही अनेग्रहणपणनही एकधर्मनीमुख्य-
ताकरवी तेनयकहियें तेनयना व्यासकेऽ विस्तारथी अनेकज्ञेदरे अने समासकेऽ संक्षे-
पथीवेज्ञेदरे १ इव्यार्थिक ६ पर्यायार्थिक तेरलाकरावतारिकाग्रंथथी लखियैरैयें इवतिडो-
प्यति अछुइवत् तांस्तानपर्यायानितिइव्यंतदेवार्थः सोऽस्तियस्यविषयत्वेन सद्व्यार्थिकः

जेवर्तमानपर्यायनेइवेरे अनेआगामिककालेइवसे तथा अतीतकालेइवतोहृतो ते
इव्यकहियें तेजरेअर्थप्रयोजनविषयपणेजेने ते इव्यार्थिककहियें एटलेपर्यायतेजन्य
अने इव्यतेजनककह्योतथाइव्यतेधृत्यनेपर्यायते उत्पादविनाशरूपरे उक्तंच.

पर्येतिउत्पादविनाशोप्राप्नोतीतिपर्यायः सएवार्थः सश्चस्तियस्यासौपर्यायार्थिकः जे उ-
पजवाविणशवानो परिकेऽ नवानवापणे एतिकेऽ पामेतेजश्र्वप्रयोजन तेने पर्यायार्थि-
ककहीयें तेइव्यार्थिकपर्यायार्थिक एवेधर्मने इव्यतथापर्यायकहियें.

इहांकोइक्षुरेजे त्रीजोगुणार्थिककेमकहेतानथी तेवदीरलाकरावतारिकामध्ये कह्योरे
गुणस्यपर्यायेवांतर्नूतत्वात् तेनपर्यायार्थिकेनैवतत् संग्रहात्.

जेगुणतेपर्यायनेविषेअंतर्ज्ञतरे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंयह्योरे तेपर्याय वेज्ञेदेरे एक
सहजावि वीजोकमज्ञावि तेमांसहजावितेगुणरे तेपर्यायनेविषे�अंतर्ज्ञतरे तिहांइव्य-
पर्यायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एवेधर्मरे माटेसामान्यविशेष वेनयवत्ताकेमकहे-
तानथी एमकोइषुरेतेनेउत्तर.

जे ऊव्यपर्यायान्वा व्यतिरिक्तयो सामान्यविशेषप्रसिद्धे तथाहि द्विप्रकार सामान्यमुक्तमूर्च्छेतासामान्यं तिर्यक्सामान्यच तत्रोर्व्वसामान्यऊव्यमेव तिर्यक्सामा न्यतु प्रतिव्यक्तिसहशपरिणामलक्षणव्यजनपर्यायएव एपारथी ऊर्ध्वसामान्यते ऊव्य नोधर्मरे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मरे विशेषोपित्तेसाहृद्यविवर्तलक्षणपर्यायएवा तर्जवतिनैतान्यामधिकनयावकाश

विशेषपणेथनेकरीतें वर्तवानोलक्षणरे तेपर्यायनेविषे अतर्जवरे तेमाटे जिन्ननयनो अवकाशनशी एवेनयमध्येज अतर्जन्मिते तेमावली ऊव्यार्थिकना चारन्जेदरे १ नैगम २ स ह्य ३ ऊव्यपद्मार ४ ऊज्ज्वलत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणन्जेदरे १ शब्द २ समज्जिरुद्ध ३ एवन्जूत

विकल्पातरेश्जुसुत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनेगमस्त्रिप्रकार
आरोपागसक्तप्रजेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्यनिन्नग्रहणात्
चतुर्विध नएकेगमाचाशायविशेषायस्यसनेगम तत्रचतु प्रकार
आरोपः ऊव्यारोपगुणारोप कालारोपकारणाद्यारोपजेदात् तत्र
गुणेऊव्यारोप पचास्तिकायवर्तनागुणस्यकालस्यऊव्यकथन ए
तद्गुणेऊव्यारोप १ झानमेवात्मा अत्रज्ञेयेगुणारोप २ वर्त
मानकालेअतीतकालारोप अद्यदीपोत्सवेवीरनिर्वाणवर्तमानेअ-
नागतकालारोप अद्येवपद्मनाभे निर्वाण एवपद्मजेदा कारणेका
र्यारोप बाह्यक्रियायावर्धमत्वं धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं संकल्पो
द्विविध स्वपरिणामरूप कार्यात् रपरिणामश्च अग्रोपिद्विविध
जिन्नोनिन्नश्रेत्यादिगतज्ञेदोनेगम

अथ ॥ वसीप्रिकल्पातरे श्जुसुत्रते पर्यायार्थिकमा पणकहोते केमके एप्रिकल्परूप नयरे तेमाटे तेमानेगमनात्रणन्जेदरे १ आरोप २ अश ३ सकदप तथाविशेषावश्य-
कमा चोयोनेदपणरपचारपणेश्वरे नथीएकगमो अनिप्रायजेनो तेनेगमनयकहिये
एट्सेथनेवशाशयीते तेनेगमनयना चारन्जेदरे तेमाये आरोपना चारप्रकारे १ ऊ-
व्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणायारोप

१ तिद्वागुणादिकनेविषे ऊव्यपणेमानगो तेऊव्यारोपजेमवर्तनापरिणाम तेपचास्ति-
कायनो परिणमनधर्मरे तेने कालऊव्यकहियोसाव्यो एकालतेनिन्नपिंरूपऊव्यनयी
पणथारोपेऊव्यकहोते माटेऊव्यारोप अनेऊव्यनेविषे गुणनोथारोपकर्मो जेमझान-
गुपते पणहानीतेजथात्मा एमद्वानने थात्माकहो तेगुणनोथारोपकहो माटेगुणारोप

न ता जेमध्रीषीरनिर्णयश्यातेने तोषणोकालगयोंते पणआजडीवाकीनाडीवर्मंवीर्ग्नो
निर्णयते एमकहेतु एवर्जनमानमां अनीतनो आगेपरम्परो अथवा आजडीपद्धनानान्नप्रज्ञनो
निर्णयते एमकहेतु तेमर्जनमाननेविषे अनागनकालनोआरोपते एवीरीतं वक्तीअतीन-
नावेनेदरे तथापीजीतेअनागननावेनेदरे अनेपर्नमानना वेनेदक्षपरकाया तेमरे
भटी कालागेपना ब्रजेदजाणगा.

यदीकारणविषे कार्यनोआरोपकरयो तेमारणवारते ? उपादानकारण २ निमित्त-
कारण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमांगाङ्गव्यक्तिया ते सायसापेक्षवा-
साने भर्मनुनिमित्तकारणते तोषणानेपरम्परागणकहियें तेमज्जीनीर्थकर मोढनुंकार-
णते तेवी तेने तारणाण करो तेकारणनेविषे कर्त्तरिणानोआरोपकरयो एम आरोपता
अनेकप्रयारेंते तेकारणायारोप वक्तीमंकल्प नैगमनावेनेदरे ? न्यपरिणामरूपजेवीर्य
चेतनानो जेमवोनयो दयोषणमतेक्षयो वीजोकार्यान्तरे नवेनवेकाये नवोनयोउपयोग
आय ते एवेनेदथया तथाश्रंगनैगमनापणवेनेदरे १ निनांशतेजूदोश्रंशस्कंधादिकनो
धीजो अनिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाथविजाग इत्यादिक एसर्वेनेगम-
नयनानेदजाणवा एटखेनेगमनयकह्यो.

सामान्यवरनुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विधसामान्यसंग्रहोविशेष
पसंग्रहश्च मामान्यसंग्रहोद्विधिःमूलतउत्तरतथामूलतोस्तित्वा
दिन्नेदतः पद्विधिः उत्तरतोजातिसमुदायज्ञेदरूपःजातिः गवि
गोल्वं घटेघटत्वं वनरपतो वनस्पतिल्वं समुदयतोसद्वकारात्मकेव
नेसद्वकारवनं मनुप्यसमूहेमनुप्यदृश्यादिसमुदायरूपः अथ
वाङ्गव्यमितिसामान्यसंग्रहः जीवइतिविशेषसंग्रहः तथाविशेषाप
श्यके संग्रहणसंगिन्द्रिसंगिन्द्रितेवतेणज्ञेया तोसंग्रहोसंगिहि
यपिंमियत्यंवउजास्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोदु
नंसंग्रहः अथवासामान्यरूपतयासर्वगृहातीतिसंग्रहः अथवासर्वे
पिन्नेदाः सामान्यरूपतयासंग्रहंतेअनेनेतिसंग्रहः अथवासंग्रही
तंपिंमितंतदेवार्थोनिधेयंयस्यतत्संग्रहीतिपिंमितार्थंएवंभूतंवचो
यस्यसंग्रहरयेतिसंग्रहीतपिंमितं तत्किमुच्यतेइत्याह संग्रहीय
माग्रहीयं संपिंडियमेगजाइमाणीयं ॥ संग्रहीयमणुगमोवा वझे

गोपिमियन्नणियं ॥१॥ सामान्यान्निमुख्येनग्रहणंसगृहीतसग्रह
 उच्यते पिमितत्वेकजातिमानित मन्निधीयतेर्पिमितसग्रह अथ
 सर्वव्यक्तिप्वनुगतस्यसामान्यस्यप्रतिपादनमनुगमसग्रहोन्निधी
 यते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्मनिषेधात् ग्राह्यर्थसग्रहकारक व्य
 तिरेकसग्रहोन्नायतेयथाजीवोजीवक्षतिनिषेधे जीवसग्रह एवजा
 ताः अत १ संग्रह १ पिमितार्थं ३ अनुगम ४ व्यतिरेकज्ञेदात्र
 तुर्विधं अथवास्वसत्ताख्यमहासामान्यंसगृहाति इतरस्तुगोत्वा
 दिक्मवातरसामान्यपिमितार्थमन्निधीयते महासत्ताख्यं अवातर
 सत्ताख्यं एगनिच्छनिरवयवमकिय सवगचसामन्नं एतत्माहासा
 मान्यं गविगोत्वादिकमवातरसामान्यमितिसग्रह ॥

अर्थ ॥ हयेसग्रहनयकहेठे सामान्ये मूलसर्वज्ञव्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे
 रक्षाजेधर्मं तेनोजेसग्रहकरे तेसग्रहकहिये तेनावेनेदरे १ सामान्यसग्रह २ पिशेपस-
 ग्रह यदीसामान्यसग्रहना वेनेदरे ३ मूलसामान्यसग्रह ४ उच्चरसामान्यसग्रह यदी
 मूलसामान्यसग्रहना अस्तित्वादिकवज्ञेदरे तेषु वैकहारे तथाउच्चरसामान्यना वेनेदरे
 १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहाँगायनासमुदायमा गोत्वरूपजातिरे तथाघट-
 समुदायमांघटत्पणो अनेवनस्पतिनेपिये वनस्पतिपणो तेजातिसामान्यकह्यो अनेआ
 यानासमूद्देनेपिय अग्रगतकहे तथा मनुष्यना समूहमा मनुष्यग्रहणयाते तेसमुदायसा-
 मान्य पठ्चरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअथचक्षुदर्शनने ग्राहीकरे अनेमूलसामान्यतेअव-
 ग्रिदान् त्रयाकेनसदर्शनर्थी ग्रहवायरे अथवा १ सामान्यसग्रह २ पिशेपसग्रह तिहाँ र
 क्षुद्रजातिसमुद्देनेपिये इहासर्वनोग्रहणयोरे अनेजीनेजीपञ्च-
 ज्यहीनी वजीज्ञेदात्रो एपिशेपसग्रह एपिशेपसग्रहनो विस्तारघणोरे त
 धाविनेपावद्यदरे ३ पर्युषी सग्रहनयना चारजेदतेविमियेरेये मूलपारमा कहेदीगायानोअर्थरे
 समहारदेव ४ क्षेत्रो एकवचनमध्ये एकअथव्यवसाय उपयोगमा समकालेनग्रहेतु सा
 नान्यसग्रहनो सरग्रहनुभेदवेनेपिये अथवाजेयकीमवेनेद सामान्यपणे ग्रहिये तेने सग्रहक
 सर्वं सग्रहकरे वेष्यग्रहनगमते तेने केवल जेवचनर्थी समुदायअथग्रहवाय तेसग्रहवचनकहिय
 रेये द्यग्रहनयहीन विनिनेत्रे माटेज्ञव ५ २ पिमितसग्रह ३ अनुगमसग्रह ४ व्यतिरेकसग्रह
 चारजेदरे ६ सगृहीनसुक्षमात्मा एमदान्त ग्रहणयाय । अथवा प्लूरचन अथवा
 ७ सामान्यरहे वेचयनिन्ना ८ न शिष्यउपरस्तुनेमिन्ने ९

४ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाएगे पुगदे इत्यादिवस्तुश्रानंतिरे पणजातिएकमाटेग्रहवायरे तेवीजीजोपिंकितसंग्रहकहियें.

३ जेअनेकजीवरूप अनेकब्यक्तिरे तेसर्वमांपामियें जेस सत्रचित्तमयोआत्मा एटद्ये सर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणरे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइत्तरनो सर्वसंग्रहपणेङ्गानथायेजेमश्रजीवरेतेवारे जे जी-वनहीतेअजीवकहिये एटदेकोइकजीवरे एमव्यतिरेक वचनेरेख्यो तथाऊपयोगे जी-वनो ग्रहणथायरे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें.

अथवासंग्रहनयवेचेदेकहेवायरे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेपणसंग्रह-नोस्सरूपकहोरे सवतिज्ञणिएणज म्हासवद्वाणुप्पवत्तेग्रुद्धि तोसवंसत्तमत्तनंद्वीतदंतरं-किंचि ॥ १ ॥ यद्यस्मान् सदित्येवंज्ञाते सर्वत्रिज्ञुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिवृद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिनहितत किसपिवस्तुश्रस्तियत् सदित्युक्तेजगतिवृद्धोनप्रतिज्ञासते तस्मात्सर्व-सत्तामात्रं नपुनःश्रायांतरं ततश्च्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूप-त्वादेवसंग्रहस्त्रेति एटदेवपेज्जुवनमां एहचीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयनेग्रहणमांआव-तीनथी लेजेवस्तुरेतेसर्वं संग्रहनयमां ग्रहवाणीजरे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुनेदांतरेण विज्ञजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्यवहा-
रःसद्विविधः गुण्डोशुभूष्य गुण्डोद्विविधः वस्तुगतव्यवहारः धर्मा-
स्तिकायादित्यव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीवस्यदोकालोका-
दिङ्गानादिरूपः स्वसंपूर्णपरस्मात्मजावसाधनरूपो गुणसाधका-
वस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनगुणव्यवहारः अगुण्डोपिद्वि-
विधः सञ्ज्ञतासञ्ज्ञतनेदात् सञ्ज्ञतव्यवहारो झानादिगुणः परस्प-
रंजितः असञ्ज्ञतव्यवहारः कपायात्मादि मनुप्योहं देवोहं सो
पिद्विविधः संश्लेषिताशुभव्यवहारः शरीरंसमव्यवहारी असं-
श्लेषितासञ्ज्ञतव्यवहारः पुत्रकदत्रादि तोचउपचरितानुपचरि-
तव्यवहारनेदात् द्विविधो तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यव-
हारः एसतेणव्यवहार एवसामान्यव्यवहारपरोवजविसर्जते
एव्यवहार व्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसङ्गतिवाव्यवहारः वि-
शेषतोव्यवहीयते निराक्रियते सामान्यतेनेतिव्यवहारः दोकव्य
३०

वहारपरोवाविगेपतोयस्मात्तेनव्यवद्वार नव्यवद्वारास्वस्वधर्मप्रव
र्त्तिनेनश्तेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूपव्यवद्वारस्येवस्तुत्वत
मंतरेणतन्नावात् सद्विधि विज्ञजन १ प्रवृत्ति ५ ज्ञेदात् प्रवृ
त्तिव्यवद्वारस्त्रिविधि वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ५ खोकिकप्र
वृत्तिश्च ३ साधनप्रवृत्तिस्वेधा दोकोत्तर १ लोकिका ५ कुप्रावच
निक ३ ज्ञेदात् इतिव्यवद्वारनयश्चीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवद्वारनयनी व्याधयाकरे रेसग्रहनये ग्रहितजेवस्तु तेनेजेदातरें विज-
जनकेऽवेचयु तेव्यवद्वारनय जेमङ्गव्यप्तुसामान्यनामकल्यु तेमा वदीवेहेचणकरियें जे
ऊद्यनापेनेदरे १ जीपङ्गव्य २ अजीपङ्गव्य वद्वीतेमापणेहेचणकरियें जेजीजना वेजेद
१ सिङ्ग धीजाससारी एमपेहेचणकरवी तेसर्वव्यवद्वारनयनो स्वज्ञाप्तजाणवो अथवा
व्यवद्वरणकेऽप्रर्त्तन तेव्यवद्वारनय तेनापेनेदरे २ शुद्धव्यवद्वार २ अगुरुद्यव्यवद्वार
घसीगुरुद्यव्यवद्वारनापेनेदरे ३ सर्वङ्गव्यनी स्पूरपूरपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मास्तिकायनी
चतुषसहायता तथायधर्मास्तिकायनी यिरसहायता तथाजीवनीज्ञायकता इत्यादिकने
वस्तुगतशुद्ध व्यवद्वारकहियें ४ ऊद्यनोउत्सर्ग निपज्ञामाटे रक्षयी शुद्धता युण
स्थाने धेणीश्चारोदणग्र्य तेसाधनशुद्ध व्यवद्वारकहियें

पक्षीअगुरुद्यव्यवद्वारनावेनेदरे ५ सज्जून तेमाजेखेवे अपस्थाने अजेदें
रह्याजे झानादिगुण तेनेपरस्परजेदेंकहेवा ते सज्जूनव्यवद्वार

तथाजेमक्रोधीहु मानीन् अथवादेपताहु मनुष्यहु इत्यादिदेपतापणो तेहेतुपणेप-
रिणमताप्रथानेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेहदयरूपपरजाग्रे तेपणयथार्थझानविना जे
दझानशून्यजीवने एकमारीमानेरे तेयगुरुद्ध व्यवद्वारकहिये तेनापेनेदरे ६ सश्लेषित
अगुरुद्यव्यवद्वार ते जे शरीरमान दृश्यरीमि इत्यादिकसश्लेषितथसज्जूनव्यवद्वार २ अ-
संश्लेषितथशुद्धव्यवद्वार ते आपुत्रमारो धनादिरुमारा एमकहेतुधसश्लेषितथसज्जून
व्यवद्वार तेचरपचरित अनुपचरित एवेनेदजाणगा

तथागिशेषावड्यकमाहानायमास्युने जे व्यवद्वारनयना मूखयेनेदरे एकपहे-
चएस्पद्यवद्वार धीजोप्रशृतिग्यव्यवद्वार तेव्यव्यवृत्तिनाप्रणेनेदरे १ वस्तुप्रशृति २
साधनप्रवृत्ति ३ खोकिकप्रवृत्ति तेमापवीमाधनप्रवृत्तिनाप्रणेनेदरे १ जे अरिहत्
नीवाहायें शुद्धमाधनमांगे इद्वोरुममारपुन्नतोगथाशसादिदोपरहितजेरक्षयी
नीवरिष्ठति परनावत्यागमहित तेखोसोचरताधनप्रवृत्ति २ जेम्याहादविना मिथ्या
निनिवेशमदित साधनप्रवृत्तिरे दुप्रापचनिकमाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेखोकनास्यस्म-

देश कुलनीचादेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एवणप्रवृत्तिकहिये एव्यवहारनयनानेद
जाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोज्ञेदक्ष्यारे तेजैनशासनरहस्य
नाजाणजीवे तेप्रथमांधीधारवा एव्यवहारनयक्ष्यो.

उजंशज्जुसुअनाणे मुज्जुसुयमत्ससोयमुज्जुसुउ ॥ सुत्तयङ्गवाजमु
वस्यु तेणउज्जुसुतोत्ति ॥ १ ॥ उजंतिशज्जुश्रुतंसुज्ञानंवोधरूपं
ततश्चज्जुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमुज्जुश्रुतंवा अथवा झज्जुअवक्रं
वस्तुसूत्रयतीतिशज्जुसूत्रश्चति कथंपुनरेतदञ्च्युपगतस्य वस्तुनो
वक्रत्वमित्याद पञ्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नंजंचजस्सपत्तेयं तंशज्जुतदेव
तस्सत्य उवक्रमन्नंतिजमसंतं ॥ २ ॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्तमा
नकालीनं वस्तुयच्चयस्य प्रत्येकमात्मायत्तदेवतञ्चयस्वरूपं व
स्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदेवासौनयः झज्जुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्तमा
मानकालीनंवस्तुतस्यार्जसूत्रस्यास्तिअन्यत्रशेषातीतानागतंपर
कार्यच यद्यस्मात् असदविद्यमानं ततोअसत्वादेवतष्टकमित्र
त्यसावितिअतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पञ्चुपन्नगाही उजुसुनयवि
हीमुणेयद्वोति यतकालत्रयवर्तमानमर्तरेणवस्तुत्वं उक्तंचयतः
अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतदवर्तते इतिवर्तमानस्यैव
वस्तुत्वमितिअतीतस्यकारणता अनागतस्यकार्यता जन्यजनन
कज्ञावेनप्रवर्तते अतः झज्जुसूत्रवर्तमानग्राहकंतदवर्तमानं नामा
दिच्चतुः प्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हृवे झज्जुसूत्रनयकहैरे झज्जुकेऽ सरखरे श्रुतकेऽ वोधतेझज्जुसूत्रकहिये झज्जु-
गद्दे अवक्रएट्टलेसमोरे श्रुतजेने तेझज्जुसूत्रकहिये अथवाझज्जु अवक्रपणे वस्तुनेजाणे
कहै तेझज्जुसूत्रकहिये ते वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणिये तेकहैरे सांप्रतकेऽ वर्तमानपणे
उपनोजेवर्तमानकालेवस्तुतेझज्जुसूत्रकहिये अन्यजे अतीतअनागत तेझज्जुसूत्रनीयोपक्षा-
ये अरतोरेकेमके अतीततोविष्णसीगयोरे अनेअनागतआद्ययोनथी तेवारेयतीतअना-
गत एवेश्वस्तुरे अनेजेवर्तमानपर्यायेवंते तेवस्तुपणोरे लेष्वकालपश्चात्काल द्वर्याव-
स्तुकहैवीतेनैगमनयरे आरोपरूपरे तिहांकोश्पुरे जेसंसारीसकर्मजीवने सिद्धसमान
कहैरे तेतोअनागतकालें सिद्धयशो तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोगे तेनोठरर जे

घटकुन्नादिकमा जेसझानो वाच्यथर्थदेखाय तेजसझाकहे जेमासङ्घांतर अर्थने पिमुखरे तेनेसमन्निरुद्धनयकहियें जोएकसझामध्ये सर्वनामातरमानियें तोसर्वनोसकर याय तेवारेपर्यायिनो जेदपणोरहेनही अनेजेपर्यायातरहोय तेतोजेदपणोजहोय तेथीपर्यायातरनो जेदपणोजरखो तेमाटेकिंगदिजेदने सापेहापणे वस्तुनोजेदपणोजमानगे एस-मन्निरुद्धनयवलाई एनयमापण जेदझाननी मुर्यतारे

एवंजहसदथथो संतोज्ञुर्तदन्नहाज्ञुर्त ॥ तेणेवज्ञुञ्जनञ्ज सदथथ परोविगेशेण ॥ १ ॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेणगव्दा योव्यवस्थित तहस्तितयैवयोवर्तते घटादिकोर्थ सएवसन्नूतो विद्यमान तदन्नहाज्ञुर्तज्ञिवस्तुतदन्यथाशब्दार्थोऽस्तुवर्तते सतत्वतोघटाद्यर्थोपिनज्ञवति किञ्चूतोविद्यमान येनैवमन्यते तेन कारणेनगव्दार्थनयतत्पर अयहियोपिन्मस्तकारुदं जलादरणादिक्रि यानिमित्तघटमानमेव चेष्टामानमेव घटमन्यते नतुग्रहकोणादिव्य वस्थितविगेपतः गव्दार्थतत्परोयमिति वेजणमर्तेणरच वजणे एोज्ञयविगेशो इजहगम्सहचेठा वयातदातपितेणव ॥ १ ॥ व्यज्यते अयोनेनेतिव्यजनवाचकगव्दोघटादिस्तचेष्टावताएतक्षाच्येनार्थे नगिशिनष्टिसएवघटः गव्दोयश्चेष्टावतमर्थप्रतिपादयति नान्यइ त्येगंगव्दमर्थेनैनैयत्येव्यप्यस्यापयतीत्यर्थ तथार्थमप्युक्तस्थाण मन्निदितरूपेणव्यजनेनगिशेपयतिचेष्टापिसेवया घटगव्देनवा च्यत्वेनप्रसिद्धयोपिन्मस्तकारुदस्यजलादरणादिक्रियारूपानतु स्यानतरणक्रियात्मिका इत्येवमर्थं गव्देननैयत्येस्यापयतीत्यर्थ इत्येवमुन्नय गिशेपयतिगव्दार्थोनार्थं गव्देननैयत्येम्यापयतीत्यर्थं एतदेवाद्यदायोपिन्मस्तकारुदचेष्टावानर्थो घटगव्देनो च्यतेमप्युक्तहाणोर्थं मचतक्षाचमोघटगव्द अन्यदातुवस्त्वतर स्येतदेवान्नामाद्यगव्दत्वं घटवनेश्चावाचमत्वमित्येवमुन्नयगिशे पर एंज्ञननपश्चनि ॥

अर्थ ॥ द्वेष्टपनृननयनोमरूपकहित्रेयं परकेऽजेसघटचेष्टावाची इत्यादिकरूपे

शब्दनयनोश्चर्थकहोठे एरीतेजेघटादिकश्चर्थवर्ते ते एवंकेण एमज जेविद्यमानपणे शब्दनाश्चर्थने उलंघीनेवर्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोलेमांनपामिये ते वस्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण उरोहोयतो एवंन्नूतनयतेने तेपणो कहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमन्निरूढनयथी एवंन्नूतनयतेविशेषांतरठे.

एएवंन्नूतनयते खीनेमस्तकेचब्द्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मार्गेश्चावतापणानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूणे रहोजेघट तेनेघटकरीमानेनही केमकेते चेष्टाने अणकरतोरेतेमाटे. जेयकीश्चर्थने व्यंजीयेकेणप्रगटकरियें तेनेव्यंजनकहियें व्यंजनतेवाचकशब्दरे तेश्चर्थनेकहेतेक्रियावंतथको तेनेजतेवस्तुकहे धीजानेनकहे अनेतेहिजश्रयेकव्युं जेलक्षण तेकह्यानेरूपेविशेषयाय जेमचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धरे योपितकेणखीनेमायेपाणीलावतो तेघट तथास्यानकेरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवंन्नूतनयघटकहेनही एशब्देश्चर्थं तथाथ्येशब्दनेयापेरे एनुंएरहस्यरे जेखीनेमस्तकेचब्द्यो चेष्टावंतश्चर्थं तेघटशब्देवोलावे तेयीअन्यथा तेने तेपणेवोलावेनही जेम सामान्यकेवदी जे ज्ञानादिकगुणेसमानरे तेने समन्निरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंन्नूतनयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेवदीतेइंद्रादिकेंपूजतां युक्तहोयतेनेज अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरणतानेकहे एस्तरूपे एवंन्नूतनयजाणवो.

एसातेनयनान्नेद ते विशेषावद्यकने अनुसारेकह्या तेमान्नैगमनादसन्नेद संग्रहना ठन्नेद अथवावारकह्या व्यवहारनान्नेदश्चार अथवाचउदकह्या कृजूसूत्रनाचार अथवार कह्या शब्दनासातन्नेदकह्या समन्निरूढनावेन्नेद अनेएवंन्नूतनो एकनेदकह्यो एरीते सर्वेनान्नेदकह्या वदीनयचक्रमां नयनान्नेद सातसोकह्यारे तेपणजाणवा

एवमेवस्याद्वादरत्वाकरात् पुनर्दद्येन तुच्यते नीयतेयेनश्रुतास्य
प्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशस्तादितरांशौदासीन्यतः संप्रतिप
त्तुरन्निप्रायविशेषोनयः स्वान्निप्रेतादेशादपरांशापवापी पुनर्नयाज्ञा
सः ससमासतः द्विन्नेदः द्वयार्थिकः पर्यायास्तिकश्च आयोनैगम
संग्रह व्यवहारशुभ्रन्नेदाद्वतुर्धा केचित्शुभ्रसूत्रं पर्यार्थिकं व
दंति तेचचेतनांशल्वेनविकल्पस्यक्षुभ्रसूत्रेग्रहणात् श्रीवीरशासने
मुख्यतः परिणतिचक्रस्येवज्ञावधर्मत्वेनांगीकारात् तेपांशुभ्रसूत्रः
द्वयनये एवधर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनच्चारो
पसंकल्पांशादिज्ञावेनानेकगमयदणात्मकोनैगमः सत्चेतन्यमा

तमनीतिधर्मयो गुणपर्यायवत्तद्व्यमितिधर्मधर्मिणो क्षणमेको
सुखीविपयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणो सूहमनिगोदीजीवसिद्ध
समानसत्ताक अयोगी नोसंसारीतिच्छायाहीनैगम धर्मधर्मादी
नाभेकातिकपार्थक्याज्ञिसधिनैगमान्यास

अर्थ ॥ इवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्तरुपलखियेत्तेये नीयतेकेऽपमानीये जेथकीश्रुत
ज्ञान स्तरुपप्रमाणे विपयेकीधो जेपदार्थनोश्च तेयशश्च इतरकेऽवीजोजे शशतेयकी
उदासीपणोतेनेपनिवर्जवावादानोजेअनिग्रायविशेष तेनेयकहियेएटद्वे वस्तुनाश्च-
नेयप्रदेश्यनेअन्यथी उदासीनपणो तेनयकहिये एकश्चनेमुरयकरीने वीजा अशनेभवापे
तेनयाज्ञासकहिये तेनयनावेजेदरे एकद्व्यार्थिक वीजोपर्यायार्थिक तेमाद्व्यार्थिक-
ना १ नेगम २ सग्रह ३ व्ययहार ४ रुजुसूत्र एचारजेदरे केटलाक आचार्यते रुजुसूत्र-
ने विकटपर्ल्पमाटे जावनयगवेपेते तेरीते द्व्यार्थिकना त्रणजेदरे

द्वेनेगमनयनु स्तरुपकहेते जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मनि प्र-
धानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्माएवेतने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवेपतो ए-
टखेधर्मानी प्राधान्यता तेगरेपर्यायोनी प्रधानताथयी अनेजिद्वाधर्मानोप्रधानपणो
तिद्वाद्व्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मानो प्रधानगौणपणो एरीतेजेद्व-
द्व्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेपणारूप इनानोपयोग तेनेगमनयजाणवो तेनावो-
धने नेगमवोधकहिये तेनाउदाहरण कहेते

सत्केऽठतापणे चेतन्यकेऽजाणपणो एवेधर्मसद्ये एकधर्मपद्ममुरयपणेगणे अनेवी
जानेगौणपणे नगवेपे एरीते नेगमनयजाणवो इहाचेतन्यनामेजे व्यजन पर्यायतेने प्र-
धानपणेगणे बेमरेचेतन्यपणो तेविशेषयुणते अने सत्तनामाव्यजनपर्यायते तेसकस-
द्व्यसाधारणते तेमावेतने गौणपणेखेयवे एनेगमनोप्रयमजेदक्षो

तथावसीमनुपर्यायवत्तद्व्य एमनोस्तुते धर्मिनोनेगमते इहापर्यायित्तद्व्य एम-
स्तुते इहाउद्यनोमुग्यपणो बड़ीवस्तुनेपर्यायित्तद्वेतु ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्याय
नोमुग्यपणो इहाउनयगोचरपणामाटे एनेगमनोनीजोनेदक्षो

इएमेऽसुखीविपयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहाविपयासक्तजीगाय जेध-
मिना मुग्यनाना विजेपणाथी मुग्यवद्यन्धर्मनीप्रधानता तेविशेषयुणपणेकरीने धर्म
धर्मिने आवापने एत्रीजोनेगम जेवारेधर्म तथाधर्मिएवेने अपखेप्रदानकरे तेगरेम-
प्रदंपस्तुनोप्रदाययो तेवारेणदाननेप्रमाणस्त्वो तिद्वाउत्तरद्व्यपर्यायतेरेतुनेप्रधानपणे
अनुवरतो जेहानप्रमाणयाय इहावेपद्मनेविये एकनीगौणता वीजानीमुख्यताखेद्दने

झानयायरेतेमाटे नयकहियें तथावलीसूच्यनिगोदिजीव तेसमानसत्तावंतरे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकहेदुन नेत्रंशनेगम.

हवेनेगमाच्यासकहेरे बस्तुमाधर्मअनेकरे तेएकांतेमाने पणएकवीजाने सापेह-पणेनमाने एटदेएकधर्मनेमाने अनेवीजाधर्मनेमाने तेनेगमाच्यासकहियें एङ्गर्नेय जाणवो केमके अन्यनयनेगवेपेनही माटेजेमथात्मानेविषे सत्त्वतयाचेतन्य एधर्मज्ञ-न्नजिन्नरे तेमांचेतन्यपणेनमाने ते नेगमाच्यासकहियें एटदेनेगमनयकद्या.

यथात्मनिसत्त्वचेतन्येपरस्परंनिन्ने सामान्यमात्रयादीसत्ता परा
मर्शस्त्वपसंयहः सपरापरञ्चेदात् द्विविधः तत्रगुरुद्वय सन्मात्र
ग्राहकःपरसंयहः चेतनाखदणेजीवइत्यपरसंयहः सत्ताद्वतंस्वी
कुर्वाणः सकदविशेषानुनिराचक्षाणः संग्रहाभासः संयहस्येक
त्वेन एगेच्छायाच्याच्यत्वननिज्ञानात् सत्ताद्विनएवआत्मातनःसर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादि उच्याणामदर्शनात् उच्यत्वा
दिनावांतरसामान्यानिमन्यानस्तद्वेदेपुगजनिमीलिकामवलंब
मानःपरापरसंयहः धर्माधर्माकाशपुरुषजीवउच्याणामक्यं उच्यत्वा
दिनावांतरसामान्यानिमन्यानस्तद्वेदेपुगजनिमीलिकामवलंब
वानस्तदाभासः यथाउच्यमेवतत्वं तत्वपर्यायाणामग्रद्वणाद्विपर्यासद्विनिमंयहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेरे सामान्यमात्र समन्वयित्वादिकने
प्रहेवानोरेस्तजावजेनाते संक० पिनपणेविशेषपराशीनेवहे पणव्यक्तपणेनयहे स्तजाति-
नारीराजे इष्टश्वर्यतेने अविरोधेकरीने विशेषधर्माने एकलपणेजेप्रदणकरवो तेमंयह
नयकहियें एनावनाते तेनावेजेडठे ? परसंयह २ अपरसंयह तेमां अवेषविशेषोडा-
सीनंनजमानंयुरुद्वयं सन्मात्रमन्निमन्यमानःपरसंयहद्विति जेनमन्वयित्वेष्याप-
नानीजजनाकरतो एटदेविशेषपणेने अग्रवहतोथको युरुद्वय सत्त्वामात्रप्रत्यनेमाने
जेमद्वयपरसंयह विश्वएकन्तपणामाटे एमकद्यायी रतापणाना यदपणानु झानया-
यरे एटदेविशेषपदार्थनोएकपणेप्रदृपरे तेपरमंयहकहियें.

तथाजेसत्तानो थेंदूनन्वीजारे अने उच्यानंरनेनमाने समन्वयित्वेष्याने ना क-
हेतीथको जेप्रदृपकरे तेथेंदूनवादिवेदांत नथामान्यदर्शन एपरमन्यद्यानामठे केमंदृ
जेज्जेवधर्म रतादेखायरे नथाउच्यानंरपणां तेनेनमाने नाटे परसंयहद्यानातरुहियें अने
जेततो विशेषतद्विति सामान्यनेयहेड माटेसंयहनयहहियें.

ऊद्यत्वादिनयातरसामान्यानिमत्वात् तद्देष्टुगजनिमीविकापदभान अपरस्त्र
इ ऊद्यजे जीवश्चजीवादिक जेश्वातरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे प्रतिजीवनो
पित्रेष्टेद ऊद्य अज्ञव्यसम्यकमिथ्यात्वी नरनारकादिजेन्द्रे तेनेगजनिमीविकारेण
मास्ताइयेनगवेष्टो तेअपरस्त्रहकहियें अनेऊद्यने सामान्यपणेभाने पणस्त्रहयनी परि-
णामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरस्त्रहाजासकहियें एसप्रदृनयनुस्त्रूपकल्प

स्यद्दणेचगोचरीकृतानामर्थानाविधिपूर्वकमवहरण येनान्निसधि
नाकियतेसब्यवहार यथायत्सत्तद्व्यंपर्यायश्चेत्यादिय पुन
रपरमार्थिकंडव्यपर्यायप्रविज्ञागमान्निप्रैतिसब्यवहाराजास चा
र्वाकटर्णनमितिव्यवहारङ्गन्य

अर्थ ॥ द्वयेव्यवहारनयकहेते स्यदृनयेष्ट्याजे वस्तुनासत्तादिकधर्म तेनेजगुणेन्द्रे
वेहंचे निश्चन्निश्चगवेषे तथापदार्थनीयुणप्रवृत्ति तेनेजमुरयपणेगवेषे तेव्यवहारनयकहियें
जेमद्व्यरेतेनाजीयपुज्ञादिकपर्यायिना क्रमज्ञावी तथासहजावी एसीतेनेदरे तेमार्थ-
सीजीवप्रकारे १ सिद्धना २ ससारी तेमजपुज्ञानावेन्द्रे परमाणुतथासध इत्यादिक
कार्यनेंद्रे निश्चमाने तथाक्रमज्ञावीपर्यायपनावेन्द्रे एकक्रियारूप वीजोषक्रियारूप इम
वेहंचावजे सामर्थ्यादिकयुणेन्द्रपके तेसरी द्वयवहारनयजाणवो अनेजेपरमार्थप्रिना ऊद्य
पर्यायनोपिज्ञागकरे ते व्यवहाराजासजाणवो

जेष्टपनाकरीनेंद्रेवेचे तेचार्याकमतप्रमुख एव्यवहारनोङ्गन्यरे जेमचार्याकप्रमाण
पल्ले उतोजीयपणो खोकप्रत्यक्षमा दृष्टिगोचर नथी आपतो ते माटे जीव नथी एमक-
हे अनेजगत्मापचक्षुतादिकप्रस्तुनथी पमकद्वनाकरी शुलखोकनेकुमार्गप्रवर्त्तये ते
व्यवहारङ्गन्यपकहियें एन्यवहारनयनुस्त्रूपकल्प

जनुयर्तमानदण्ड्यायिपर्यायमाव्रप्रायान्यत सूत्रयतुञ्चनिप्राय जज्ञुसूत्र
झानोपयुक्त झानीदर्ढनोपयुक्त दर्ढनी कपायोपयुक्त रूपायीसमतोपयुक्त
मामापकीविर्तमानापदापीतदाजाम यथातयागतमतद्विति ॥

अर्थ ॥ द्वयेष्टुमूलनयकहेते इतुर्णेण मरक्षपणेश्वर्तीनयनागतने अणगवेष्टो
अनेवर्तमानसमयवर्तना जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रकेण गरेषे ते शु
चुमूलनयद्विये तेज्ञानेतुपयोगे र्तताने झानीमहे दर्ढनपयोगे र्तताने दर्ढनी
द्वद्वयपर्वत्वर्तनाजीवने कपायीकहे ममतानेउपयोगेवर्तनाजीवने सामायकपत
द्वद्वयाकोश्चुरेजे उरगवद्यामुजनतो शुचुमूल तथा शब्दनय पर्वेषकजयापत्रे तेनेत्र

चरकहेरे जेविशेपावश्यकमांकहुंरे कारणंयावत् शङ्खसूत्रः एटलेहाननेकारणपणे वर्ततो तेशङ्खसूत्रयहेरे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेशाय तेशव्यवकहियेएफेरे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहण न करे तेशङ्खसूत्राजासकहियें जेठताजावनेश्वरताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीबनेश्वरजीबकहे अजीबनेजीबकहे इत्यादिक ते गत केंद्र बोद्धनोमतरे जेठतोसदासर्वदावर्ततो जीवाडिडव्य तेनार्थयिने पखटवे सर्वयाऽव्यने विनासिकमाने तेनेशङ्खसूत्रनयाजासाजिप्रायजाणवो एशङ्खसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्रागज्ञावेनतिरोज्ञाविपर्यायग्राहकशब्दनयः कालादि
ज्ञेदेनव्यनेरर्थज्ञेदंप्रतिपाद्यमानः शब्दः जलाद्वरणादिक्रियासमर्थ
एवघटः नमृतिंमादौ तत्वार्थवृत्तोशब्दवशादर्थप्रतिपत्तिः तत्का
र्यधर्मेवर्तमानवस्तुतयामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंचर्यपरि
णां उव्यमिरतित्रिकालत्रिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिन्निः सम
न्वितमर्थमिरति तज्जेदेतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाज्ञासः

अर्थ ॥ इवेशव्यवनयकहेरे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे वीजाशब्दवाचकप-
र्यायने तिरोज्ञावें अणप्रगटवेपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण विंगत्रण
तेनेजेवे शब्दनोजेदपडे तेनेजेश्वर्थनेकहे अथवा जलाद्वरणादि समर्थनेघटकहे
तथाकुंजादिक चिन्हपर्यायजेटलारे तेटलानो शर्थवर्ततोनेदेखाय तोपण तेनाम
कहीबोद्धावे एम जेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोरे तेनेग्रहे पण माटीना पिंझने घट क-
हेनही तेशव्यवनयकहियें अनेजे संग्रह तथानेगमनयवालोकहे ते सत्तायोग्यता अंश-
नायाद्वकरे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशाथीश्वर्यप्रकृतिज्ञवो तेशव्यवेदोवावतोहोय जे
श्वर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी शर्थेप-
रिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेरे कालत्रिंगादिज्ञेवे शर्थनोजेदरे ते ज्ञेद तेम ते धर्मेवस्तु
माने तेशव्यवनयकहियें अनेतेश्वर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातो नथी तेनेते
वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दाजासकहिजे एटलेशव्यवनयकह्यो.

एकार्यावलंविपर्यायशब्देपुनिस्त्रिक्तिज्ञेदेनज्ञिन्नमर्थं समन्निरोहन्वस
मन्निरुद्धः इदनादिंजः शकनार्चकः पुरदारणात् पुरंदरः इत्यादि
पुययापर्यायध्वनिनामाजिधेयनानात्वमेवकहीकुर्वाणस्तदाज्ञासः
यथाइङ्कः शकः पुरंदर इत्यादिज्ञानिधेये

अर्थ ॥ हृवेसमन्निरुद्धनयकहेरे जेएकपदार्थनेश्विक्षबी जेटखासरिखानाम तेट-
खापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटखाहोय तेटखानिरुक्तिव्यत्तिजिन्नहोय तेअर्थनो
पणनेदहोय तेअर्थने झ कें सम्बन्धकारे आरोहतो एटखेएटखासर्वार्थसयुक्तजेहो
य तेसमन्निरुद्धनयकहिये जेमझादिधातु परमेश्वर्यनेश्वर्ये तेपरमएश्वर्यवतनेइक
हिये तथाशक्नकहेतानविनिविशक्तियुक्तने शक्कहिये पुर कें देत्यने दरे कें रिदारे
तेपुरदर अनेश्वचिजेइझाणी तेनोपतिस्यामी तेश्चीपतिकहिये एटखासर्वधर्म तेइकमा
वं तेमाटेजेदेवलोकनोधणीरे तेनेइकएवेनामें वोक्षावेरे वीजानामादिकइकने एनामेन
वोक्षावे जेटखापर्यायनामरे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वनेजिन्नजिन्नअर्थकहेरे पण एकार्थ
नजाणेते समनिरुद्धाजासकहिये एटखेसमन्निरुद्धनयकहो

एवन्निन्नगन्धवाच्यतत्वारवदानास्वप्रवृत्तिनिमित्तज्ञूतक्रियावि
गिष्ठमर्यवाच्यत्वेनान्नयुपग्रहन्नवेवंज्ञूत यथाइद्धनमनुभवन्निंज
गरुनारुक गन्धवाच्यतयाप्रत्यदस्तदाजास यथा विगिष्ठ
चेष्टाशून्य घटारयपस्तुन घटशब्दवाच्य घटशब्दजव्यवृ
त्तिज्ञूतार्थगून्यत्वात पटवादित्यादि

अर्थ ॥ द्येष्यनूतनयकहेरे शङ्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तज्ञूतजेक्रिया तेनिशिष्ठसयुक्त
जेअर्थ तेनेयायजेधर्म तेनेजेपदोचनोहोय एटखेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवज्ञूतनय
कहिये तथा एश्वर्यसहित तेइकरूप मिहासनेनेशोतेशक शचि कें इझाणीनेसा-
यंयंगो नेवारेश्चाचापितिरुद्दे एटखेजेशङ्दना जेटखापर्याय तेसर्वतेमापहोचतानामने ते
नामकहियोवाये अनेजेपर्यायपदोचनोदरेमहीतेपर्यायनीनाकहे जिहासुधीएकपर्याय
उल्लोर्तिहासुधी समनिरुद्धनयकहिय अनेसर्वतेमापर्यायनेपहोचे तेगारेएवज्ञूतनयक-
हिये जेपदार्थनोनामनेदनो नेदेगीनेपदार्थनीनियताकहे तेएवनूतनयानासकहिजे
नामनेनेतरमनुनिश्च जेमहायी धोक्काविरप्पनिश्चरे तेमनिन्नपणोमाने जेमथर्यनि
षपतामार्द घटयी पट निश्च वं तेमन्नपणायी पुरदरपणोनिश्चमाने तेष्यनूतनयनोड-
नियताएयो एटखेएवनूतनयकहो एगीतेमाननयनी व्याख्या कही

अत्र आद्यनपचत्तुप्रमनिग्रुद्धपदार्थप्रमुखपणाप्रवणान्वान् अर्थ
नयानामञ्चव्यन्वमामान्वन्व्यनयानया गन्धादयो निग्रुद्धनया ग
व्यादप्रवार्द्धमुरुपन्नादायाम्नेनन्वनेद्वागेणप्रचनमित्रनिग्रुद्धन
याम्नामन्मनानविंगाना समानवचनानागन्धाना इंउग्रपुरद

रादीनांवाच्यं ज्ञावार्थमेवाज्ञिन्नमन्युपेति नजातुचित्तज्ञिन्वचनं
वाशच्छंखीदाराः तथाच्चापोजलमितिसमन्निरुद्धवस्तुप्रत्यर्थश
वदनिवेशादिंडशक्रादीनांपर्यायशब्दलंनप्रतिजानीते अप्लंतज्ञि
न्नप्रटृतिनिमित्तल्वादृज्ञिन्नार्थत्वमेवानुमन्यते घटशक्रादिशब्दा
नामिवेति एवंभूतःपुनर्यथासञ्चाववस्तुवचनगोचरं आपृत्ती
तिचेष्टाविशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यःचित्रादेख्यतोपयोगपरिणत
श्रचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठनघटोनघटःतत्त्वद्वार्थरहितत्वात्
कूटशब्दवाच्यार्थवन्नपिञ्जुंजानः सवानोवाचित्रकाराज्ञिवाना
ज्ञिवेयश्रित्रज्ञानोपयोगपरिणतिशून्यत्वाज्ञोपादवदेवमनेद्भेदा
र्थवाचिनो नेकेकशब्दवाच्यार्थवलंविनश्चशब्दप्रधानार्थोपसर्ज
नार्तवद्वनयाइतितत्वार्थवृत्तो एतेषुनेगमः सामान्यविशेषोन्नय
ग्राहकः द्यवद्वारविशेषपयाहकः उच्यार्थवलंविश्वजुसून्नविशेषपया
हकएव एतेचत्वारः उच्यनयाः शब्दादृयः पर्यायार्थिकविशेषाव
दंवीज्ञावनयाश्चेति शब्दादृयोनाभस्थापनाउच्यनिवेषादृयस्तुत
याजानाति परस्परसापेक्षाः सम्यक्कृदर्शनिप्रतिनियंनेदानांशतं ते
नसप्तशतंनयानामितिश्रानयोगधारोक्त्वातङ्गेयं.

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनय जेरेतेश्रविशुद्धे शामादे के जे पदार्थ के० ऊ-
व्य तेनेसामान्यपणेकहेवाना अधिकारीरे एनयनुंकिहाँएकअर्थनय एपणनामरे तेअर्थ-
जद्देउच्यवेदुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयरे केमके शब्दनाअर्थनी एनेमुख्यता
ठेषेद्वेषानयते नेटपणेवचननेवांरेरे अनेशब्दादिकनयते लिगाडिके अनेद्वचने अनेद
कहे तथाज्ञिन्नवचनने ज्ञिन्नार्थकहीमाने अनेसमन्निरुद्धते ज्ञिन्नशब्दतेनेवस्तुपर्यायन
माने तथाएवंभूते ज्ञिन्नगोचरपर्यायने ज्ञिन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय तेनेवटकहे पण
मन्मूषेपछ्योघटकहेनही चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगवर्ततोहोय तेनेचित्रकार
कहेपणतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावाविग्रोहोय तेनेचित्रकारनकहे केमकेतेउप-
योगेरहितरे मादेएनयतेगद्द तथाअर्थनेथनेदपणोमानेठे अनेअर्थधीशूच्यशब्दते
प्रमाणनयी अनेशब्दप्रधान अर्थतेउच्यने गोणपणेवर्तता शब्दादिकत्रणनयरे एम त-
त्वार्थटीकामध्येकहोरे.

एसातनयनेविषेपे ऐहेखोनैगमनयते सामान्यविशेषयेहुनेमानेरे सग्रहनय ते सामान्यनेमानेरे व्यवहारनयविशेषयनेमानेरेश्वरने ऊब्यार्थाविकर्तीते तथाशुसूत्रतोपिशेषग्रा हकरे एचारतेऊब्यनयरे अनेपाठवा शब्दादिकत्रणनयते पर्याप्तार्थिक विशेषापवर्ती जावनयरे तथाशब्दादिकनयते नामस्यापनाऊब्य एपेहेदावणनिकेपाने अपस्तुमा नेते तिन्हसद्वनयाणश्ववन् एश्वनुयोगद्वारसूत्रत्रुवचनरे एसातेनयपरस्पर सापेक्षपाले ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोभित्यात्मी जाणवा तथागकेकानयना सोसोनेदथायरे एमसातेनयनामदी सातमोनेदथायरे एथधि कार श्रीश्वनुयोगद्वारसूत्रथीकहोरे

पूर्वपूर्वनय प्रचुरगोचर परास्तुपरिमितविषया सन्मात्रगोचरात् संग्राहात् नैगमोजावज्ञमित्याद्भूरिविषय वर्तमानविषया ज्ञजुसूत्राद्यवदारस्त्रिकालविषयत्वात् व्यहुविषयकालादिनेदेनन्ति श्रावोपदर्शनात् निनाद्जुसूत्रविपरीतत्वान्मदार्थ प्रतिपर्यायमश व्यवर्थेदमन्तीप्सित समन्तिरुढारव्यप्रभूतविषयः प्रतिक्रियां निन्वमर्थप्रतिजानात् एवज्ञूतात् समन्तिरुढ मदानगोचर नयवा क्यमपिस्वविषयेप्रवर्तमानंविधिप्रतिपेधाज्यासत्तनगीमनुव्रजति असग्राहीनेगम सत्ताग्राहीसंग्रह गुणप्रवृत्तिखोकप्रवृत्तिग्राही व्यवहार कारणपरिणामग्राहीशुसूत्र व्यक्तकार्यग्राहीशब्द पर्याप्ततरनिन्वकार्यग्राही समन्तिरुढ तत्परिणमनमुख्यकार्यग्राही एवंभूत इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचार जावतियावयवणप्पदा ॥ तावतियाचेवद्वृत्तिनयवाया ॥ इतिवचनात् उक्तोनयाधिकार

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वकेऽपूर्वखोजेनेगम नय तेनो विस्तारघणोजाणगो अनेतेथी ऊपरखोनयतेनो परिमितविषयरे एटके थोमोविषयरे केमेकेसत्तामात्रुग्राहकसग्रहनयरे वर्तिसचाने सग्रहनयप्रदे अनेनेगमते उत्ताजाय थथवा सकल्पणे अठता जाव सर्व नेयहे थथवासामान्यविशेष वेष्मनेप्रदे तेमाटेनैगमनोविषयघणोरे तथा सग्रहनयते सचागत सामान्यविशेष वेहुनेप्रदे अनेव्यवहारते सत्परिणमनेज ग्रहेरे माटेसप्त हनयथी व्यवहारनयनो विषययोनोरे अने व्यवहारनयथी सग्रहनय ते व्युतिपर्यीते

तथा क्षुसूत्रनय ते वर्तमानविदोपधर्मनो ग्राहकरे अनेव्यवहारश्री क्षुसूत्रनयते काल-विषयनोग्राहकरे तेमाटेव्यवहार वहुविषयीरे अने व्यवहारश्री क्षुसूत्रश्रव्यविषयीरे क्षुसूत्रनयते वर्तमानकालयहे अनेश्वदनयकालादि वचनलिंगश्री वेहेचताश्रयनेयहे अने क्षुसूत्रनयते वर्तमानलिंगने जिन्नप्राकृतोनयी तेमाटे क्षुसूत्रश्री श्वदनयश्रव्यविषयीरे क्षुसूत्रवहुविषयीरे अनेश्वदनय सर्वपर्यायिनो एकपर्यायनेयहतायहे अनेस-मन्निरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेयहे तेमाटे श्वदनयश्री समन्निरूढनय ते श्रव्यविषयीरे केमके समन्निरूढते पर्यायिनोसर्वकालगवेष्योरे अने एवं ज्ञूतनयते प्रति-समये क्रियाज्ञेदें जिन्नार्थपणो मानतोश्रव्यविषयीरे तेमाटे एवं ज्ञूतश्री समन्निरूढव-हुविषयीजाणवो अने एवं ज्ञूत श्रव्यविषयी जाणवो।

जेनयवचनरे तेपोत्तानानयने स्वरूपेऽस्तिरे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिरे ए-मसर्वनयनी विधिप्रतिपेदेंकरीने सप्तज्ञंगीजपजे पणनयनीजेसप्तज्ञंगी ते विकलादेशी जहोय अनेजेसकलादेशीसप्तज्ञंगी तेप्रमाणरेपणनयनीसप्तज्ञंगीनजपजे।

अकंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वज्ञावाहिनयसप्तज्ञंगीवस्त्वदंशमात्रप्ररूप-कत्वात् सकलादेशस्वज्ञावनुप्रमाणसप्तज्ञंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्रस्तुपकत्वात् एवचनरे एट-देयथायोग्यपणेनयनोश्रव्यिकार कद्यो।

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताच्छ्रात्मप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः
चेतन्यस्वरूपः परणामीकर्त्तासाक्षात् नोक्तास्वदेहपरिमाणः प्रतिदेवजिन्नत्वेनैवपंचकारणसामयीतः सम्यगदर्शनज्ञानचास्त्रि साधनात् साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्विधि धप्रत्यक्षपरोद्भजेदात् स्पष्टप्रत्यक्षपरोद्भमन्यत् अथवाच्छ्रात्मोपयोगताइजियज्ञाराप्रवर्तनेनयतज्ञानंतप्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायो देशप्रत्यक्षो केवलज्ञानंतु सकलप्रत्यक्षं मतिश्रुतेपरोद्देश तत्त्वतु विधं अनुमानोपमानागमार्यापत्तिज्ञेदात् विंगपरामशोनुमानं लिंगं चाविनाभूतवस्तुकुंनियतं ज्ञयथागिरिगुहिरादौव्योमावलं विधूमदेखांद्वाच्छ्रात्मानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवत्वात् य व्रधूमस्तत्राभिः यथामद्वानसं एवं पंचावयवशुर्घं अनुमानं य आर्यज्ञानकारणं सदृश्यावदं वनेनाज्ञानं यतज्ञानं उपमान

ज्ञानं यथागोस्तयागवय गोसाहृष्येनअहृष्टगवयाकारङ्गान
उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुष्यआस सहजलृष्टोवीतराग
सर्वज्ञाएव आसोकंवास्यआगम रागघेषाङ्गानभयादि दोपर
हिनत्वात् अर्द्धत् वास्यआगम तदनुयायिपूर्वापरविरुद्धमि
व्याख्यासंयमक्षपादज्ञातिरहितं स्याक्षादोपेतवाक्य अन्येषाशि
ष्टानामपिगम्यंचागम खिग्रहणाद्वैयज्ञानोपकारकंच्चर्थाप
तिप्रमाण यथापीनोदेषदत्तोदिवाननुके तदाच्छर्थाक्षात्रोनुके एव
इगादिप्रमाणपरिपाटीश्वरीतजीवाजीवस्वरूप सम्यक्ज्ञानीउच्यते

अथ ॥ एतेष्टमाणनु भूष्यकहैरे सर्वेनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथा सर्वेष-
मांगो जातंगपत्योउत्तेजां एहुजेज्ञानते ने प्रमाणकहिये जेप्रमाणतेमापवानुनामरे प्र
त जगत्तनामरंप्रमेयो मापरानुप्रमाण तेज्ञानरे अनेतेप्रमाणनो कर्त्ताश्वामातेप्रमाणता
रे तेष्टाप्यज्ञादिप्रमाणे सिद्ध के ७५हैरेयोउत्तेतन्यमूल्यपरिणामीउत्तीजनधर्मस्थी उ
त्ताइट्ययग्ने परिगमेवे तेमाटेपरिणामिकरेतथाकत्तोउत्तानोज्ञारे जेकर्त्ताहोय वे
ज्ञानोग्नाहोय ज्ञानापायिना सुप्रमाणी इत्तेज्ञानही तेचेतन्यसंसारीपोस्तदेहृषिरिमा-
दरे प्रतिहोत्रं प्रत्येत शरीरनिश्चपणामाटे निश्चजीत्रे तेजीपाचकारणनी सामग्री
पामीरे शर्याइत्तेन सम्यक्ज्ञान सम्यक्यारित्यनेसापवाची संपूर्णश्चिनारी निर्मस
ति इत्तुइट्यग्नाय अप्रयाम भूयुणनिरावरण भास्यंप्रगृहिति अहर अव्यापाधसुखमयी
एव्विगिद्वा ति इत्तमानीत्तेष्टमाणनमांगे.

स्त्राद्वैतीश्वामा परदान्देपरद्वय स्त्रायात्मायीनिश्च अनतापरजीवधर्मादिक ते
नायव्यमापी यवत्तेद्वैत्तेज्ञान तेनेष्टमाणस्त्रिये तेनाभूपतेदमेवे पक्षप्रत्यक्ष धीजो प
रोच निदृग्रहित्वानते प्रयहृत्त्रिये तेव्वीन्द्रते ४वीजोउत्तीयस्थिरानते परोदाकहिये
श्वरुद्वा आज्ञाना उपर्योगपी इक्षियनीप्रगृहितिपिना जेज्ञानते प्रत्यहृत्त्रिये तेना वे ते
इत्ते एहुदेवद्वयहृत्त्रियहृत्तीनोमर्थप्रयहृत्त नेमायथधिज्ञान तथामनपर्यवेक्षान ते देव ग्रत्य
त्ते देवत्तेव अवरिद्वान एहुपुक्षपरमाणुते ऊन्यतशाहेष्वे अने पास्त तथानाव्ये के
टुक्काक्षर्याइनेद्वैत तथामनद्वैतज्ञानी भननाइपीयने प्रयहृत्ताणे पण यीजाइयने न
नांगे माटिरेहुद्वानने देवाप्रयहृत्त्रिये कामणके देवायीरम्युनेज्ञाणे पण सर्वेषीनज्ञा
सिभाउ अने द्वैतज्ञान ते ज्ञीवत्यायीवस्त्रीनयाश्वर्यीमर्योराक्षोऽना श्रेष्ठा
हमा सर्वेषाने प्रारम्भरोज्ञारो माटि सर्वेष्यहृत्त्रिये

नयमतिहान अनेभुतज्ञान एवेश्रस्पष्टहानरे माटेपरोहरे तेपरोद्धप्रमाणना चार्जेदरे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमाणति-हांचिन्हेकरीने लेपदार्थनेउखबहु तेनेकिंगकहियें तेपरामर्थकेषसंजाकवाशी लेज्ञान याय तेनेअनुमानज्ञानकहियें किंगते लेविना तेवस्तुहोयजनही ते तेवस्तुनुकिंगजा-एवं तेकिंगनेदेखवाशी वस्तुनोनिर्धारकरवो तेअनुमानप्रमाणजाएवो.

लेमगिरिगुहिरेनेविषे आकाशावदंवी धूमनीरेपादेखीने अनुमानकरेजेएपवेत अ-ग्निसहिनते ए पद्ध नयासाध्यकद्यो जेपक्षतेपवर्त अनेसाध्यने अग्निवंतपणो साधवो ते हेतु जेधुम्रवंतपणामाटे एटेजिहांधुम्रहोय तिहांश्चिथ्रवद्धहोयज आकाशने पो-हाँचनी जेधुम्ररेपाने अग्निविनाहोयनही तिहांदसांतकहेरे.

जेममाहानसकेषरसोऽथाए तेग्सोडानेविषे धुम्रतयाथग्निनेजेवादीगा तेमाटेइहां आश्रमुकपवेतनेविषेधुम्ररे तातिहांनिश्चेत्रीअग्निरेज एहवीव्याक्षि निर्वारीनेज्ञानकरवो तेपंचावयवें शुद्धअनुमानप्रमाणकहियें तेअनुमानप्रमाण मतिहान तथा भुतज्ञाननुं कारणरे तेअनुमानेजे चार्थज्ञानयाय तेनेमानकेषप्रमाणकहियें अने जे अयार्थ-ज्ञान याय ते प्रमाण नही.

नयासरिखावदंवीपणे अजाणीवस्तुनो लेजाणपणोयाय लेम गो केष वदव तेम ग-वय केष गवो ए गो सरिखो गववयनुंज्ञानयश्चयुं तेउपमानप्रमाणकहियें.

यार्थज्ञावनो उपदेशकजेपुन्य तेआसकहियें तेउत्कृष्टआस वीतरागरागदेवपरहि-तसर्वज्ञकेवद्वानीते आसनोकहोजेवचन तेनेआगमकहियें जेराग देवतयाथज्ञान एटोपेश्वागोपात्रो अधिकोउत्रो वोखायरे तेआगमनही अने राग देव जय अज्ञान र-हितजे अरिहंत तेनुं वचन ते आगमप्रमाणजाएवो.

तयावलीते अरिहंतनावचनने अनुजायी पूर्वापरथविरोधि मिथ्यात्व असंयम क-पायथीरहित नेब्रांतिविनास्याद्वादेयेयुक्त तथा ले साधकते साधक वाधक ते वाधक हे-य ते हेय उपादेय ते उपादेय इत्यादिकवद्वेचणसहित जेहोय तेनोकहोते आगम प्र-माणजाएवो उक्तंच सुत्तंगणहररइयं तदेवपत्तयवुधरइयंच ॥ सुश्रकेवलीनारहियं अ-चिन्नदशपुविणारइयं ॥ ३ ॥ इत्यादिकसङ्घपयोगी नवजीरु जगतजीवोना उपकारी ए-वाश्रुतथाप्नायाधर जेभुतनेश्रुत्सारेकहे तेनोवचनपण प्रमाणमानबुं.

तथाकोश्क फखरूपकिंगकरीने लेअजाणापदार्थनो निर्धारकरियें तेअर्थापत्तिप्र-माणकहियें लेमदेवदत्तनो पीन केषपुष्टशरीररे पण ते देवदत्त दिवसनोजमतोनथीतेवा-रेंअर्थापत्तिवीजाणीयें जेरात्रेजमतोहद्दो माटेपुष्टशरीररे एमथर्थापत्तिप्रमाणजाएवो एप्रमाणतेजाते अनुमाननोअंशरे तेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमां प्रथमकह्योनथी.

इहांदर्शनातरी जे प्रमाणमानेरे पणतेसत्यनथी जेमठप्रकारनाइङ्गियसन्निकर्पयी ऊपनो जेझान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेरे अने परग्रह्यनेइङ्गियरहितमानेरेढानानदमयीमानेरे तेवारे इङ्गियरहितझानते अप्रमाणयायरे इत्यादिकथनेकयुक्तिरे तेमाटेप्रमाणनही तथाचार्वाकमतगाळा मात्र एकइङ्गियप्रत्यक्षनेज प्रमाणमानेरे एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पटाळीने सर्वनयनिक्षेप सप्तज्ञगी स्थापादयुक्त जेवस्तु जीव तथाअंजीवनो जे सम्यकझानीकहिये एडाननुस्वरूपकहुं

तत्वार्थशङ्खानसम्यग्दर्शन यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्तझाने
नसम्यग्ज्ञानस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रएतउत्तमत्रयीरु
पमोदमार्गसाधनात्साध्यसिद्धि इत्यनेनात्मन स्वीयस्वरूपस
म्यक्षानज्ञानप्रकर्षएवात्मलाभ ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणएवा
त्मा उद्धस्थानांचप्रथमदर्शनोपयोग केवलीनाप्रथमज्ञानोपयो
ग पश्चादर्शनोपयोगसहकारीकर्त्तव्यप्रयोगात् उपयोगसहका
रेणौवेगेषगुणाना प्रवृत्यन्युपगमात् इत्येवस्वतत्वज्ञानकरणे
स्वरूपोपादन तथास्वरूपरमणाध्यानेकत्वेनैवसिद्धि

अर्थ ॥ हवे श्रीबीतरागना आगमथी जाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेने हेयोपादेयपणे नि
र्धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहियें तिहातत्वार्थनेविषेकहोये के जे तत्वार्थशङ्खान सम्य-
क्दर्शन ऊकच उत्तराध्ययने जीवाजीवायवधो ॥ अपुन्नपावसगेतहा ॥ सवरो निळ
रामुखो ॥ सतिष्ठितिहियानन ॥ १ ॥ तिहियाणतुजाचाण सदज्ञावेजवएसण ॥ जा
वेणसहृतस्स ॥ समत्ततिवियाहिय ॥ २ ॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवु जे तत्वार्थ
जीवादिपदार्थनो अस्ताननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते धर्मनुभु
वरे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी परिक्षासहित
जेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानरे जेमाहेयोपयोग सकोच शकरणयुक्तीनथी पणउपादेयने
उपयोगे एहवीचिंतगणाथायजेहवे किवारेकरु एविनाकेमचाले एहवी जोयुक्तीनथीतो
तेसवेदनज्ञानरे तेथीसवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी

तथास्वरूपरमण परज्ञावादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें परलत्रयी-
रुप परिणामते मोक्षमार्गरे एमार्गनेसाधवाथी साध्य जे परमश्वव्यावाधपद तेनी सि
द्धनिष्पत्तियाय जेआत्मानोपोतामुरूप तेयथार्थज्ञानरे तथा चेतनासद्गण तेज जीव
पणोरे अने झाननोप्रकर्ष बहुसपणोते आत्मानेकाजरे झानतथादर्शननो उपयोगख

द्वाणश्चात्मारे तिहांठद्वास्यने प्रथमदर्शनोपयोग परेङ्गानोपयोगरे अनेकेवदीने प्रथम डानोपयोग परे दर्शनोपयोगरे जेसर्वे जीवनवोगुणपामेतेनो केवदीनेङ्गानोपयोग तेका-देँथाय तेमारे प्रथमडानोपयोगवत्ते.

अनेसहकारीजेकर्तृताशक्ति तेजेमहतोतेमजरे एकगुणनेसाध्यकरे अनेवीजागुणनो उपयोगसहकारेवत्तेरे सहकारतेङ्गानोपयोग विशेषधर्मनेजाए तेजाणतांविशेषते सा-मान्यनेआधारेवत्तेरे तेसहितजाएएटद्वे विशेषतेजेला सामान्यग्रहवाणा अनेसामा-न्यग्रहतां सामान्यतेविशेषता जनकहेता सहितजाएतेमारेसर्वङ्गसर्वदर्शीपणोजाण-वोएरीतेसतत्वनुग्ञानकरबु तेश्रीस्वर्धर्मनो उपादानकेप्रवेषपाण्याय परे स्वरूपनेपामवे स्वरूपमांरमणश्चाय तेरमणथकीध्याननी एकसतताध्याय एटद्वेनिश्चेङ्गान निश्चेचारित्र तथा निश्चेत्पपणो ध्याय जेयकी सिद्धिकेप्रमोक्ष निपले एसिद्धांत जाणवो.

तत्रप्रथमतः यंथिज्ञेदंकृत्वागुद्धश्चनङ्गानीक्षाद्गकपायोपश्च
मः स्वरूपेकत्वध्यानपरिणामेनदपकश्चेणीपरिपाटीकृतघातिकर्म
द्वयः अवातकेवलङ्गानदर्शनः योगनिरोधात् अयोगीज्ञाव
मापद्वः अधातिकर्मद्वयानंतरंसमयएवास्पर्शवज्ञत्याएकांतिका
त्यंतकानांवाधनिरूपाधिनिधिरूपं चस्त्रिनयाशाविनाशिसंपूर्णा
त्मगक्तिप्रागभाववद्वणांसुखमनुज्ञवन् सिद्ध्यति साद्यनंतंकादंति
एतेपरमात्माइति एततुकार्यं सर्वज्ञव्यानां

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिज्ञेवकरीने ऊङ्गलज्ञावान तथागुङ्गङ्गानीजेजीव ते प्रथमत्रण चोकमीनो द्वयोपगमकरीने पाम्योजेचारित्र तेध्यानेएकत्वधर्मीने क्षपकश्चेणीमांटी अ-
नुक्रमेधातिकर्म क्षयकरीने केवलदर्शनपामे परेएसयोगीगुणें जघन्यवी अन्तसुर्दूरी अ-
नेउद्धारो आउवरशउणापूर्वकोक्षीरहीने कोइककेवदीसमुद्धान करे कोइककेवदीम-
मुद्धायतनकरे पणश्चावर्जिकरण नवीकेवदीकरे ते श्चावर्जिकरणनुस्वरूपकहेरे छहां
आत्मप्रदेशे रह्याजेकर्मद्वय तेपेहेखाचवेरे परेउदीरणायायरे परेज्ञोगवीनिर्जिरेरे ति-
हांकेवदीने जिवारेतेरमेगुणगणे श्चावयुग्मे तिवारेश्चावर्जिकरणकरेरे नेश्चात्मप्रदे-
शगतकर्मद्वयने प्रतिसमये श्चात्मग्रहानगुणनिर्जिराकर्मवीरे तेट्रखादवने श्चात्मवीर्यंकरीने
सर्वचलायमानकरीमूके परवुंजेवीर्यंनुप्रवर्तन नेश्चावर्जिकरणकहियें एमकरनां त्रपकर्म-
दखवधतांरह्यातो समुद्धातकरे नहींका नकरे तेमारे श्चावर्जिकरण सर्वकेवदीकरे परे
तेरमागुणगणानेश्चंते योगनोरोधकरीने श्चयोगी श्चशरीरी श्चणाहारीश्चशरंप घनीङ्ग-

तथात्मप्रदेशीथको पांचयुश्चकरजेटखोकाद अयोगीयुणगापेरहिने शेषसत्तागत प्रकृतिविद्यमान तथाश्चविद्यमान स्तियुक्सकर्म सत्ताश्रीदपात्री सक्षमपुज्जलसगपणाथी रहितथयी तेहिजसमये आकाश प्रदेशनी वीजीत्रेणीने अषफरसतोयको खोकातेसिद्धठतकृत्य मपूर्णगुणप्राग्नावी पूर्णपरमात्मा परमानदी अनतकेप्रदानमयी अनत दर्शनमयी अरूपीसिद्धयाय उक्तच उत्तराध्ययने कहिपिदिद्यासिद्धा ॥ कहिसिद्धापयठिया ॥ कहिवोहिचश्ताण ॥ कथगतुणसिद्धाई अखोएपमिद्यसिद्धा सोयगम्भीपयठिया ॥ इहवोश्चश्ताण तथगतूण सिद्धाई ॥ इत्यादि तेसिद्ध एकातिक आत्मतिक अनाधाध निरुपाधि निरुपचरित अनायास अविनाशी सपूर्ण आत्मशक्तिप्रगटरूपसुखप्रते अनुज्ञवे अव्याधाधसुरुते प्रदेशोपदेशो अनतोरे उक्तच उद्वाऽसुने सिद्धस्तसुहोराशि ॥ सदद्वापमियजहवज्ञा ॥ सोणतपगोनङ्घयो ॥ सदागासेनमाऽज्ञा ॥ १ ॥ इतिवचनात् एरीतेपरमानदसुख जोगवतारहेरे सादिअनतकालपर्यंत परमात्मापरेहरे तोषहिजकार्य सर्वज्ञव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताच्यासरे तेशुतथन्यासकरवा माटे एडव्यामुयोग नेयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेयुर्लीपरपरायी हुपाम्यो ते युर्वादिकनी परपरानेसजारुद्धुं

काव्य

गडेश्रीकोटिकार्ल्येविशेदखरतरेज्ञानपात्रामहात सूरिश्रीजैनच
जा गुरुतरगणन्त्रृत्तिप्यमुख्याविनीता ॥ श्रीमत्पुण्यात्प्र
धाना सुमतिजदनिधिपात्रका साधुरगा ॥ तत्रिप्या पाठकेज्ञा
श्रुतरसरसिकाराजसारामुनीज्ञा ॥ २ ॥

तच्चरणाद्युजसेवादीना श्रीज्ञानधर्मधरा ॥ तत्त्विष्प्यपात्रकोत्तम दीपचज्ञा श्रुतरसज्ञा
॥ ३ ॥ नयचक्षेशमेतत्तेषाशित्येणदेवचक्षेण ॥ स्वपरावदोधनार्थ छृतसदन्यासवृ-
ध्यर्थ ॥ ४ ॥ शोधयतुसुधिय रुपापरा शुद्धतत्त्वरसिकाश्वपरतु ॥ साधनेनकृतसिद्धि-
सत्सुखा परममगलज्ञावमनुते ॥ ५ ॥ इतिश्रीनियचक्रविवरणसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मवोधविणुजविकने ॥ नहोयेतत्वप्रतीत ॥ तत्वाद्यनज्ञानविष ॥ नटक्षेजवभ्र
मज्जीत ॥ ६ ॥ तत्वतेआत्मस्वरूपते ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परज्ञावानुगचेतना ॥ कर्मगे-
हरेषह ॥ ७ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ जजनिजज्ञावविशुद्ध ॥ आत्मज्ञावदीएकता
परमानदप्रसिद्ध ॥ ८ ॥ स्थाद्यादयुणपरिणमन ॥ रमतासमतासग ॥ साधेशुद्धनदत्ता ॥

निर्विकल्परसरंग ॥ ४ ॥ मोहसाधनतण्मूलते ॥ सत्यकूर्दर्शनज्ञान ॥ वस्तुधर्मश्रव-
वोधविणु ॥ हुसखंनणसमान ॥ ५ ॥ आत्मवोधविणुजेकिया ॥ तेतो वालकचाल ॥
तत्वार्थनीवृत्तिमें ॥ देजोवचनसंचाल ॥ ६ ॥ रत्नयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीवा ॥
लोकविजयश्रद्धयनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इङ्गिविषयआसंसना ॥ करताजेमु-
निकिंग ॥ खूतातेज्जवर्पंकमें ॥ जाखेश्चाचारंग ॥ ८ ॥ इमजाणीनाणीगुणी ॥ नकरेपुज्ज-
लश्चास ॥ चुञ्चात्मगुणमरमे ॥ तेपामेत्तिद्विविकास ॥ ९ ॥ सत्यज्ञानविणुदेशन ॥ न-
होयेसम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिन जाण ॥ १० ॥ स्यादवाद-
वादीगुरु ॥ तसुरसरसियाशीस ॥ योगमिवेतोनीपजे ॥ पूरणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ व-
काश्रोतायोगधी ॥ श्रुतश्रुतुन्नवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखदीन
॥ १२ ॥ इमजाणी जासनरुची ॥ करजोश्रुतश्रुत्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ वैद्वेसो-
कीद्विविकास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रहुरुजने ॥ सुपसायेलघ्वास ॥ देवचंद्रजबीहितनणी ॥
कीधोयंयप्रकाश ॥ १४ ॥ सुणसेजणसेजेजविक ॥ एहयंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाश्र-
च्यासतां ॥ खहेते तत्वतरंग ॥ १५ ॥ छादशसारनयचकरे ॥ मघ्वादिकृतवृद्ध ॥ सत्तशति-
नयवाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अव्यपमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ मु-
खयूलनयज्ञेदनो ॥ जाप्योश्रुत्यविचार ॥ १७ ॥ खरतरसुनिपतिगठपति ॥ श्रीजिन-
चंद्रसूरिस ॥ तासशीसपारकप्रवर ॥ पुन्य प्रधानमुनीस ॥ १८ ॥ तसुविनयीपारक-
प्रवर ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगुणरलनिधि ॥ राजसारउवज्ञाय ॥ १९ ॥ पा-
रकज्ञानधर्मगुणी ॥ पारकश्रीदीपचंद्र ॥ ताससीसदेवचंद्रकृत ॥ जणतांपरमानंद ॥ २० ॥
इति श्रीपंक्ति देवचंद्रजीकृत नवचक्षार

वालावयोधसहित. संपूर्णः ॥

रजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेरीते अर्थात् तेवी प्रकृतिगालो यह तन्मय थाय
त्यारे ते राजी थाय ॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे लखख अलखतणीरे ॥ लख पूरे मनआशा॥

दोपरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोपविलास ॥ श्लपन्न०॥४॥

अर्थ ॥ वली कोइ जगत्कर्ता ईश्वरवादी एम कहेरे के अलखके०परमेश्वरनी लीला
लखखके०जाणीशकाय तेवी नथी ते परमेश्वरे पोतानी शक्तियी लीलानी परमकारणचूत
माया रची तेनुज नाम सर्वजगत्नु चटनविचटनरूप लीलानु लखबु, समजबु तेज पर-
मेश्वर जगतना जीवोनी लाखोगमे आशा पूरेरे हे श्रद्धा। आबु कथन न्याययुक्त न-
थी, कारणके रागादिदोप सहित होय ते अलख कहेराय नहीं अने परमेश्वरने अलख
कही ते लीला करेरे एम कहेरु ते वाजवी नथी, कारणके लीला ते मात्र दोपनो विलास
के०पतरग ठे, तेथी रागद्वयविना लीलानो विलास न होय ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नेरे पूजन फल कहुरे ॥ पूजा अखंमित एह ॥

कपट रहित यह आतम अरपणारे ॥ आनंदधन पदरेह ॥ श्लपन्न० ॥६॥

अर्थ ॥ तेथी हे श्रद्धा ! तप, सयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला ठे, वा, तप
सयमादिक विनापण तु लाखोना मननी आशानो पूरणहार ठो एवा सुशामतना व-
चनो ते परमेश्वरनु पूजन नथी, परतु चित्तनी प्रसन्नता के० आद्वादपण तेज पूज-
ननी सफलता ठे अखरु तछुल, भूप, दीप, नैवेद्य, केशर, वरास, पुष्प निगेरे सर्व
सामग्री सपूर्ण होय रतापि चित्तनी प्रसन्नता के० गुजनजावनो अजाव होय तो ते अ-
खरु पूजा नहीं शुज जाव तेज अखड पूजा ठे माटे हे सखि ! जे प्राणी आनन्दधन
पद के० मुक्तिपद पामवानी अनिलापा रागतो होय ते मारा श्लपन जर्तारसाये क-
पटरहित के० ध्विहारत्मपणानो ल्याग करी अतरात्मवत यह स्थिर स्वजावे परमात्म
स्वरूपने पोताना आत्मासा चिंतवे ए प्रमाणे जे प्राणी श्लपन परमात्माने आत्मानु
अर्पण करे ते आनन्द के० ज्ञानानदनु पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के० रेवा अर्थात् मे-
साप प्राप्त करे ते सिद्ध थाय ॥ ५ ॥ इति श्लपन्नजिनस्तवन

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारु मन मोहुरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए देशी ॥

पथमो निहालुरे वीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥

जे तें जित्यारे तेणे हु जीतियोरे ॥ पुरुप किस्यु मुजनाम ॥ पथ० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आनन्दधन सुमतिने कहेरे हे सुमति ! वीजा अजितनाथनो पथ के० मार्ग-

प्रवर्त्तना ते हुं यृथ्रष्ट मृगनी जेम जोउनुं. अर्थात् जे मार्गे प्रवर्त्तता अजिनजिन निर्वा-
णपद पान्धा ते मार्गनी गोध कर्नुं. ते अजिननाथ. चाद्यजीवो विना वीजा प्राणी
मात्रथी प्राप्त न अड्डाके तेबा अनन्तज्ञानदर्शनादि गुणोना धामत्रे. ते अजिननाथ चग-
वनने आनंदघन कहेत्रे के हे प्रलु ! राग. द्वेष. मोहृ प्रसुख जे जन्मुठने तमे जीत्या,
ते रागदेषादिके मने लीती लीयोरे तेत्री हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुप केम कहे-
वाय ? धर्मविना धर्मी केम अई शके, ! जेम तमे पुरुपत्वधर्मं रागादिने जीत्या तेम हुं
जीत्यो होत तो हुं पण पुरुप कहेवात ॥ ३ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ जूळ्यो सयख संसार ॥

जेणे नयणे करी मारग जोईएरे ॥ नयणे ते दीद्य विचार ॥ पंथ०॥४॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! चर्मनयण केऽवाहाविएकरी तमारो मार्ग, आत्मस्वरूप रूप,
वीतराग परिणतिये परिणामेखो. परमात्मधर्मं धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार जू-
लमां जमेठे अर्थात् वौध. नेयायिक. सांख्य, वैशेषिक, वैदांती प्रसुख एकांतवादी, म-
तमसत्त्वी सर्वे तमारा मार्गथी दूर जन्म्या करेठे. हे जगवन्त ! जे नेत्रथी, शुद्ध स्वाद्-
वाद परमामृतमय जेनदर्शन आत्मस्वरूप साकात्कार करवाने असाधारण कारणरूप
तमारो मार्ग देखी शकिये, तेतो दीद्य केऽङ्गानरूप चक्षुज विचारकेऽजाणवी अ-
र्थात् अजिननाथ प्रलुनो मार्ग ज्ञान चक्षुषीज जोवाय ॥ ४ ॥

पुरुप परंपर अनुज्ञव जोवतारे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥

वस्तु विचारे जां आगमं करीरे ॥ चरण धरण नही राय ॥ पंथ० ॥५॥

अर्थ ॥ हे सुभति ! पुरुपोनी परंपरा केऽप्रेणी- अहिं सुवर्मास्त्रामि, प्रज्ञवस्त्रामि
इत्यादि संवंधे कथन नथी परंतु गठोना ज्ञेद करनारा, मतमसत्त्वी. परज्ञवनी वी-
कथी नही झरनारा एवा गद्य स्थापी परंपरा स्थापनारा पुरुपोने अनुज्ञव केऽविचार
करी जोतां अंयोअंयं पुलाय ए दृष्टांत साकात् संज्ञवेठ. जेमके सुयगदांग सूत्रना प्र-
थम श्रुतस्कंधना वीजा अध्ययनमां कह्युं त्रे के ‘ अंधोअंध पहुंनित्ता पुरमङ्गा न ग-
द्यइ ’ आंधदो आंधदाने यामांतरे पहौचानी शके नही तेम अहिं पण ज्ञान नेत्र
अने पुरुप परंपरा जेथी मार्ग पासी शकाय ते वे कारणो विद्यमान नथी अने आगम
जे सिद्धांत तेनाथी वस्तु केऽपत्तविचारणा करीए रीए नो जे रीते अजिननाथ प्र-
वर्त्त्या, ते मार्गमां संपूर्णं प्रवर्त्त्युं तो दूर रह्युं, परंतु चरण केऽपग मुक्तुं अर्थात् पग मात्र
प्रवर्त्त्युं ते पण करिन त्रे. ॥ ५ ॥

रजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेवीरे अर्थात् तेवी प्रकृतिगाढ़ो यह तन्मय याय त्वारेते राजी थाय ॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे अखखतणीरे ॥ अख पूरे मनआगा ॥
दोपरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोपविलास ॥ अपन्न० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वक्ती कोइ जगत्कर्ता ईश्वरजादी एम कहेरे के अखगके परमेश्वरनी लीला लखरके ज्ञाणीशकाय तेवी नथी ते परमेश्वरे पोतानी शक्तियी लीलानी परमकारणजूत माया रची तेनुज नाम सर्वजगत्नु चटनविचटनरूप लीलानुसरयु, समजबु तेज पर-मेश्वर जगतना जीवोनी लाखोगमे आशा पूरेरे हे श्रद्धा। आबु कथन न्याययुक्त न-थी, कारणके रागादिदोष सहित होय ते अखख कहेवाय नहीं श्रेष्ठे परमेश्वरने अखर कही ते लीला करेरे एम कहेबु ते वाजवी नथी, कारणके लीला ते मात्र दोपनो विलास के पतरग रे, तेथी रागदेवपविना लीलानो विलास न होय ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नेरे पूजन फल कहुरे ॥ पूजा अखमित एह ॥

कपट रहित यह आतम अरपणारे ॥ आनदधन पदरेह ॥ अपन्न० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी हे श्रद्धा । तप, सयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला रे, वा, तप सयमादिक विनापण तु लाखोना मननी आशानो पूरणहार रो एवा सुशामतना व चनो ते परमेश्वरनु पूजन नथी, परतु चित्तनी प्रसन्नता के आव्वादपणु तेज पूजननी सफलता रे अखरु तछुल, धूप, दीप, नैवेद्य, केशर, वरास, पुष्प विगरे सर्वे सामग्री सपूर्ण होय रतापि चित्तनी प्रसन्नता के पञ्चनजावनो अनाव होय तो ते अखर पूजा नहीं शुन जाव तेज अखंड पूजा रे माटे हे सखि। जे प्राणी आनदधन पद के मुक्तिपद पामवानी अनिलापा राखतो होय ते मारा क्षपन जर्तारसाये क-पटरहित के पवित्रात्मपणानो त्वाग करी अतरात्मवत यह स्तिर स्वजावे परमात्म स्वरूपने पोताना आत्मामा चिंतवे ए प्रमाणे जे प्राणी क्षपन परमात्माने आत्मानु अर्पण करे ते आनद के पञ्चानानदनु पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के रेखा अर्थात् मे-खाप प्राप्त करे ते सिद्ध याय ॥ ५ ॥ इति क्षपनजिनस्तवन

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारु मन मोल्लुरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए देशी ॥

पथमो निहालुरे वीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥

जे तें जित्यारे तेणे हु जीतियोरे ॥ पुरुष किस्युं मुजनाम ॥ पथ० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनदधन सुमतिने कहेरे हे सुमति! वीजा अजितनाथनो पथ के मार्ग-

प्रवर्त्तना ते हुं यूथब्रह्म मृगनी जेम जोड़ुंतुं. अर्थात् जे मार्गं प्रवर्त्तता अजितजिन निर्वाणपट पास्या ते मार्गनी ओध कर्न्तुं. ते अजितनाथ, जट्यजीवो विना वीजा प्राणी मात्रथी प्राप्त न थड़त्रके तेवा अनंतज्ञानदर्शनादि गुणोना धासरे. ते अजितनाथ जगवंतने आनंदघन कहेठे के. हे प्रचु ! राग, द्वय. मोह प्रमुख जे अनुरुने तमे जीत्या, ते रागद्वयादिके मने जीती दीधोरे, ते त्री हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुष केम कहेवाय ? धर्मविना धर्मी केम थई अके, ! जेम तमे पुरुषत्वधर्मे रागादिने जीत्या तेम हुं जीत्यो होत तो हुं पण पुरुष कहेवात ॥ ३ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ भूल्यो सयद संसार ॥

जेणे नयणे करी मारग जोईएरे ॥ नयणे ते दीद्य विचार ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! चर्मनयण केऽप्याहाद्यादिएकरी तमारो मार्ग, आत्मस्तरूप रूप, वीतराग परिणित्ये परिणामेवो, परमात्मधर्मे धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार छूलमां जमेरे अर्थात् वौध. नैयायिक, सांख्य, वैजेयिक, वैदांती प्रमुख एकांतवादी, मतममत्त्वी सर्वे तमारा मार्गनी धूर जम्या करेरे. हे जगवंत ! जे नेत्रवी, शुद्ध स्याद्वाद परमामृतमय जेनदर्शन, आत्मस्तरूप साकाश्कार करवाने असाधारण कारणरूप तमारो मार्ग देखी जकिये, तेतो दीद्य केऽप्यानरूप चक्षुज विचारकेऽप्याणवी अर्थात् अजितनाथ प्रचुनो मार्ग ज्ञान चक्षुशीज जोवाय ॥ ४ ॥

पुरुष परंपर अनुज्ञव जोवतारे ॥ अंधोऽधंधपुलाय ॥

वस्तु विचारेरे जाँ आगमे करेरि ॥ चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुभति ! पुरुषोनी परंपरा केऽथ्रेणी— अहिं सुधर्मस्त्वामि, प्रजनवस्त्रामि इत्यादि संवंधे कथन नथी, परतु गठोना ज्ञेद करनारा, मतममत्त्वी, परज्ञवनी वीकथी नही झरनारा एवा गठ स्यापी परंपरा स्यापनारा पुरुषोने अनुज्ञव केऽविचार करी जोतां अंधोअंधं पुलाय ए दृष्टांत साकात् संज्ञवेरे. जेमके सुयगरुंग सूत्रना प्रथम युतस्कंधना वीजा अध्ययनमां कल्पुं त्रे के “अंधोअंधं पहिनित्ता पुरमङ्गा न ग-ठइ” अंधदो अंधदाने आमांतरे पहोचानी जांक नही, तेम अहिं पण डान नेत्र अने पुरुष परंपरा जेथी मार्ग पार्मी शकाय ते वे कारणो विद्यमान नथी अने आगम जे सिद्धांत तेनाथी वस्तु केऽप्तत्वविचारणा करीए रीए लो जे रीते अजितनाथ प्रवर्त्त्या, ते मार्गमां संपूर्णं प्रवर्त्ततु नो दूर रहुं, परंतु चरण केऽपग मुक्तुं अर्थात् पग मात्र प्रवर्त्ततुं ते पण करिन वे. ॥ ५ ॥

रजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेरीधे अर्थात् तेरी प्रहृतिवालो यह तन्मय आय
स्तारे ते राजी थाय ॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे लखख अखरताणीरे ॥ लख पूरे मनचाशा ॥
दोपरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोपविलास ॥ झपञ्च ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली कोइ जगत्कर्ता इंश्वरवादी एम कहेरे के अखरयके परमेश्वरनी लीला
लखखके प्रजाणी शकाय तेवी नथी ते परमेश्वरे पोतानी शक्तियी लीलानी परमकारण चूत
माया रची तेनुज नाम सर्वजगत्नु चटनपिचटनरूप लीलानुसरयु, समजबु तेज पर-
मेश्वर जगतना जीगोनी लाखोगमे आशा पूरेरे हे अङ्गा। आतु कथन न्याययुक्त न-
थी, कारणके रागादिवोप सहित होय ते अखर कहे वाय नही अने परमेश्वरने अखर
कही ते लीला करेरे एम कहे बु ते वाजवी नथी, कारणके लीला ते मात्र दोपनो विलास
के प्रतरग ठे, तेथी रागदेवपविना लीलानो विलास न होय ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नरे पूजन फल कहुरे ॥ पूजा अखंकित एह ॥

कपट रहित यह आतम अरपणारे ॥ आनदधन पदरेह ॥ झपञ्च ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी हे अङ्गा । तप, सयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला छे, वा, तप
सयमादिक विनापण तु लायोना मननी आशानो पूरणहार ठे एगा सुशामतना व-
चनो ते परमेश्वरनु पूजन नथी, परतु चित्तनी प्रसन्नता के प्राद्वादपण तेज पूज-
ननी सफलता रे अखर तछुल, धूप, दीप, नैवेद्य, केशर, वरास, पुष्प गिरेरे सर्व
सामग्री सपूर्ण होय वतापि चित्तनी प्रसन्नता के गुजनामनो अज्ञाव होय तो ते अ-
खर पूजा नही शुन जाव तेज अखरद पूजा ठे माटे हे सखि । जे प्राणी आनदधन
पद के मुक्तिपद पामवानी अनिलापा रायतो होय ते मारा क्षपन चर्त्तरसाये क-
पटरहित के वहिरात्मपणानो स्याग करी अतरात्मवत यह स्थिर स्वज्ञावे परमात्म
स्वरूपने पोताना आत्मामा चिंतवे ए प्रमाणे जे प्राणी क्षपन परमात्माने आत्मानु
अर्पण करे ते आनद के ज्ञानानदनु पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के प्रेरणा अर्थात् मे
लाप प्राप्त करे ते सिद्ध थाय ॥ ५ ॥ इति क्षपनजिनस्तवन

॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारु मन मोहुरे श्रीविमलाचक्षरे ॥ ए देशी ॥

पथको निहादुरे वीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥

जे तें जित्यारे तेणे हु जीतियोरे ॥ पुरुप किस्युं सुजनाम ॥ पथ ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनदधन सुमतिने कहेरे हे सुमति! वीजा अजितनाथनो पथ के मार्ग-

प्रवर्त्तना ते हुं यूथब्रष्ट मृगनी जेम जोउंदुं, अर्थात् जे मार्गे प्रवर्त्तता अजितजिन निर्वा-
णपट पाम्या ते मार्गनी जोध कसंदुं ते अजितनाथ, जड्यजीवो विना वीजा प्राणी
मात्रशी प्राप्त न थद्दशके तेवा अनंतज्ञानदर्शनादि गुणोना धासरे. ते अजितनाथ जग-
वंतने आनंदधन कहेठे के, हे प्रज्ञ ! राग, छेष, मोह प्रमुख जे शब्दउने तमे जीत्या,
ते रागद्वेषादिके मने जीती लीठोरे, ते वी हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुष केम कहे-
वाय ? धर्मविना धर्मी केम अई शके, ! जेम तमे पुरुषत्वधर्मे रागादिने जीत्या तेम हुं
जीत्यो होत तो हुं पण पुरुष कहेवात ॥ २ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥

जेणे नयणे करी मारग जोईएरे ॥ नयणे ते दीव्य विचार ॥ पंथ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! चर्मनयण केऽवाह्यद्विषेकरी तमारो मार्ग, आत्मस्वरूप रूप,
वीतराग परिणतिये परिणामेलो, परमात्मधर्मे धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार चू-
खमां चमेरे अर्थात् बौध, नैयायिक, सांख्य, वैत्तेविक, वेदांती प्रमुख एकांतवादी, म-
तमस्त्वी सर्व तमारा मार्गशी झूर जम्या करेरे. हे जगवंत ! जे नेत्रशी, शुद्ध स्याद्-
वाद परमामृतसय जेनदर्शन, आत्मस्वरूप साक्षात्कार करवाने असाधारण कारणरूप
तमारो मार्ग देखी शकिये, तेतो दीव्य केऽज्ञानरूप चक्षुज विचारकेऽजाणवी अ-
र्थात् अजितनाथ प्रज्ञुनो मार्ग ज्ञान चक्षुथीज जोवाय ॥ ३ ॥

पुरुष परंपर अनुज्ञव जोवतारे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥

वस्तु विचारेरे जौ आगमे करीरे ॥ चरण धरण नही चाय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! पुरुषोनी परंपरा केऽश्रेणी— अहिं सुधर्मान्वामि, प्रजनव्यामि
इत्यादि संवंधे कथन नशी. परंतु गछोना ज्ञेव करनारा, मतमस्त्वी, परज्ञवनी वी-
कधी नही करनारा एवा गद्य स्थापी परंपरा स्यापनारा पुरुषोने अनुज्ञव केऽविचार
करी जोतां अंधोअंध पुलाय ए दृष्टांत साक्षात् संज्ञवेरे. जेमके सुयगदांग मूर्त्रना प्र-
थम शुतस्कंधना वीजा अध्ययनमां कर्त्तुं ते के “ अंधोअंध पद्मिन्ता पुरमङ्गा न ग-
द्य ” आंधसां आंधसाने यामांतरे पढोचामी शके नही तेम अद्विं पण डान नंग्र
अने पुरुष परंपरा जेवी मार्ग पामी शकाय ते वे कारणो विद्यमान नशी अने आगम
जे सिङ्गांत तेनाथी वस्तु केऽतत्वविचारणा करीए त्रीण तो जे रीते अजितनाथ प्र-
वर्त्त्या, ते मार्गमां संपुर्ण प्रवर्त्तन्दुं तो दूर गर्लुं, परंतु चरण रंगेन मुक्तु अपर्तन पण मात्र
प्रवर्त्तन्दुं ते पण करिन रे. ॥ ३ ॥

तर्कविचारेरे वाढ परपरारे ॥ पार न पहांचे कोय ॥ अन्नि
मते वस्तु वस्तुगतें कहेरे ॥ ते विरलाजगजोय ॥ पथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वही हे सुमति ! तर्कथी मार्गने विचार तु तो एक तर्करूप कथन तेना उ पर धीजु कथन, एम कथन परपरा एटके वादपरपरा चाली आवेरे तेप्रभाषे विचारता मारो जन्म विति जाय तोपण पार पासी शकु नहीं हुतो शु परंलु महातर्क-वादी धीजो कोइपण पार पामे नहीं, माटे हे सुमति ! अन्निमते केंपामायोग्य जे वस्तुकेंपदार्थ ते जैनमार्गी सिद्धात, तेने पिये गत केंजेम रे, तेमज कहे, परतु एक अक्षर पण हिनाधिक न कहे, तेग प्राणी जगतमा ग्रिसाज तु जोयकेंद्रेसीश श्री-यशोविजय उपाध्यायजी कहेरे के “ शुद्ध जापकनी धक्खिहारी ” ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेरे दीव्य नयन तणोरे ॥ विरह पठ्यो निरधार ॥

तरतमजोगेरे तरतम वासनारे ॥ वासित वोध आधार ॥ पथ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे जेथी वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो विचार करीशकु एवा ज्ञानरूप नेत्रनु तो रागादिकथी निरधार केंनिश्वयपूर्वक विरह केंअतर पञ्चु, अर्थात् मारु आत्म-ज्ञानरूप नेत्र फूटी गयु वही धीजीरीते वस्तुकेंतत्त्वविचारे विचारीएतो दीव्यन-यनकेंकेवलज्ञानीविना शुद्धमार्ग पासी शकीए नहीं थने केवलज्ञानीनो निश्वयथी विरह पठ्यो, माटे हे सुमति ! शुद्ध कथन करनार केवलज्ञानी प्रमुख मार्ग पासवाना कारणनो तो अनाव ययो अर्थात् नि सदेह योग प्राप्त नहीं यवाथी मार्ग पासीए केंपीरीते ? तेथी ज्ञाननी तरतमतानो योग प्राप्त यवाथी वासना केंपद्धात पण तरतम यह परलु सदेह रहित न थइ, तो एवी श्रद्धाए वासितकेंपुगधित वोध ज्ञा नमो मारे आधार रे ॥ ५ ॥

कालविधि लही पथ निहावशुरे ॥ ए आश्या अविलंब ॥

ते जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे ॥ आनदघनमतच्छ ॥ पथ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व वात विचारी सुमति सहित आनदघन विसरो यझने विनति करेरे हे प्रजु ! परिपाक काल पासीने अर्थात् चरमावर्त्तन जवस्थितिनो परिपाक एवी कालरूप लविधि पासीने पथ केंतमारो मार्ग निहावशु केंजोइशु आ कालमां तमारो मार्ग द्वाथ आवगानो कोइ उपाय नथी तेथी हे परमेश्वर ! कालविधिरूप आशाकेंमननी तेवी स्थिरता तेने अविलवकेंग्रहण करीने ए जनकेंआ पचम कालना पुरुप जीवेकेंजीरता रहेरे अर्थात् निराधार रता कालक्षेप करेरे एवी पचम कालवासी जीगोनी द्यवस्था हे प्रजु ! तमे जाणजो केंध्यातमा सेजो हे प्रजु ! तमे

केवा गो ? आनन्दके झानानन्द तेना धन के समूह अर्थात् केवल ज्ञान आपनार जे शुद्ध स्वाद्वाद् भत तेना अंव के आग्रहृक गो. ॥ ६ ॥ इति अजितजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री संज्ञवजिनस्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ रातमी रसीने क्यांची आवीयारे ॥ ए देशी ॥

संज्ञवदेव ते दूर सेवो सेवेरे ॥ लही प्रभु सेवन न्नेद ॥ सेवन
कारण पेहेली ज्ञूमिकारे ॥ अन्नय अद्वेष अखेद ॥ संज्ञवण ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इवे सुमतिवंत यवाची निजस्वरूपानुयायी पुष्टाकंवन परम कारणरूप त्रीजा संज्ञव परमेश्वरनुं सेवन तेज परमेश्वर पासे मागतां, पोते तेमज सर्वने उपदेश आपतां विनति करतो कहेठे. हे जब्य प्राणीयो ! संज्ञवनाथ प्रभुने धूरकेऽप्रथम सेवो; कारणके आत्मानुं अनंतकालयी आवरण पामेलुं आत्मस्वरूप, तेनो ज्ञास, प्र-
थम ए परमात्मानी सेवा कर्याविना थायज नहीं तेमज थशे पण नहीं अर्थात् जे जे जब्य प्राणीयोए पोताना आत्मस्वरूपने ज्ञूतकालमां उलखलुं ठें, वर्तमानमां उलखेठे अने जविष्यमां उलखश्चो ते सर्वे प्रथमथी प्रभुना स्वरूपनुं सेवन करवानुं फल ठें. अहीं अजकुक्षगत केशरी सिंहनुं दृष्टांत विचारतुं, वक्षी जेस सुवर्णं अने माटी साणमां अनादि मिश्र ठे तेम आत्मा संसारमां अनादिथी कर्म साथे मिश्र ठे. ते आत्मा प्र-
थम संज्ञवदेवयी पोतानुं एकत्व जाणी, जक स्वज्ञावयी पोतानुं स्वरूप जिन्न जाणी, पोते जकथी जिन्न थाय, तेथी अनादि कालयी ज्ञूलेला आत्माने स्वरूपनी प्राप्तिनुं असाधारण कारण धूरथीज संज्ञवतुं नथी, माटे हे सुमति ! शुद्ध आत्म प्रवर्तिये परमेश्वरने स्वरूपे सेवननुं रहस्य पामीने, प्रभुसेवनना कारणनी प्रथम ज्ञूमिका के ए पायो ल-
क्षमां लेवो; तेज सेवनारूप कार्यनाना कारक ठे. तेना त्रण प्रकार ठे. १ अन्नयपणु २ अद्वेषपणु ३ अखेदपणु. मज्जुतपायाविना जेस धांधकाम टकी शके नहीं तेम आ त्रण गुणविना प्रभुसेवनरूप मकान स्थिर थइ शके नहीं ॥ १ ॥

न्नयचंचलता होजे परणामनी ॥ द्वेष अरोचक ज्ञाव ॥ खेद

प्रवर्तिहो करतां थाकीयेरे ॥ दोष अवोध दखाव ॥ संज्ञवण ॥ २ ॥

अर्थ ॥ प्रथम अन्नयनु लक्षण कहेठे. संज्ञवजिननुं चितवन करतां ते चितवनथी परिणाम चकायमान यइ अन्य चितवनमां भन प्रवर्त्ते, इत्यादि परिणामनी चंचलता, अस्थिरपणुं ते जय, ते सर्वे पलटावी एकाग्र स्वरूपनुं चितवन ते अन्नय
पणुं लक्षण कहेठे. संज्ञवदेवनुं सेवन, स्तवन, स्वरूप चितवन
जे अरोचक ज्ञाव ते द्वेष अने ते ऐन प्रमुख चित्तमां रक्षा

ववे

अखेदनु लक्षण कहेरे संनयप्रज्ञना स्वरूप चित्पन प्रमुख प्रवृत्तिमा प्रवर्तता थकां अद्यप कालमा मन याकी जाय, कटाक्षी जाय अने तेथी प्रवृत्तिमा रही शके नहीं ते खेद अने तेज सेवनादि कार्यमार्थी निरुते नहीं ते अखेद, तेथी है सुमति । जेने संज्ञवदेवनी सेवनामा अन्य, अद्यप अने अखेद रे तेने स्वरूपानुयायी बोधनु जाण-पणु रे अने जेउने तेसा जय, द्वेष अने खेद रे तेउने अग्रोध केंस्वरूपनु अजाण पणु अने दोपनु सखाव केंप्रवर्त्तनु रहे ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहो चरम करण तथारे ॥ ज्ञवपरिणति परिपाक ॥

दोष टखे वली दृष्टी खुले जलीरे ॥ प्रापति प्रवचन वाक ॥ सञ्जव० ॥३॥

अर्थ ॥ ते दोष दूर करवाना जे कारणो श्रीसंज्ञवनाथ परमात्माएं सिद्धात्मा कदा रे, तेमा पेहेछु कारण तो जीवने ससारमा परित्रमण करता अनती उत्सर्पिणि अवसर्पिणि यहू, तेमा ठेह्ही उत्सर्पिणि अवसर्पिणि ससार भ्रमण करवानी रहे ते चरमावर्त्तन अने वीजुं कारण अपूर्व करणादि व्रण करणमध्येनु ठेलु करण ते चरम करण तथा केंतेमज बीजु कारण जबकेंससारनी गति आगति तेनु जे परिणमतु तेनो परिपाक अर्थात् गत्यागतिनो आजाव ते ज्ञवपरिणति परिपाक नामनु कारण रे तेथी है सुमति । आ व्रणे कारण मक्षताज जीवने जय, द्वेष अने खेदरूप दोष दूर याय अने आत्मा अन्याई, अद्यपी अने अखेदी यताज जलीकेंस्वरूपानुयायी इनरूप दृष्टि केंचक्षु तेनी खुले केंठउधडे ते झान दृष्टि युखवायी प्रवचन वाक केंसिद्धा तना ससनयाश्रित वाम्यनी शका रहित प्राप्ति याय ॥ ३ ॥

परिचय पातिक घातिक साधुशुरे ॥ अकुशल अपचय चेत ॥

यथ अध्यात्म श्रवण मनन करीरे ॥ परिगीतन नय हेता॥सञ्जव० ॥४॥

अर्थ ॥ ज्यारे प्रवचनामृतनी प्राप्ति थई त्यारे मिथ्यादर्गनीउथी प्रथम परिचय हहो ते दूर यथो अने आथवना रोधनार, सवरना शोधनार, प्राणातिपातादिकना हृषनार, मोक्षमार्गना साधनार साधुओनो परिचयकें आसेमनरूप सवध याय, अने तेथी आत्मस्वरूप पामवाने विघ्नकारक जे अग्नुरुद्ध श्रद्धा तदूप अकुशलपणानो अपचय कें नाश करनार चेत कें चित्त याय अर्थात् आत्मस्वरूपानुयायी चित्त याय तेवु चित्त यवायी समतिरक्त, तत्वार्थ, अध्यात्म कवचपूम, अध्यात्मसार प्रमुख य अध्यात्मिक यथोनु श्रवण अने मनन याय नेगमादि साते नयना जिन्न जिन्न हेतुए निन्न निन्न कथन होय अने निन्न हेतुने आजावे निन्न कथननो आजाव होय, परतु अहिंतो श्रीसंज्ञवनाथ प्रज्ञना स्वरूपथी पोताना आत्मस्वरूपने परि कें

समस्त प्रकारे शीक्षण केण स्वज्ञावाथी मेदवबुं रे तेथी ते नयनो हेतुपार पडे ॥ ४ ॥
कारण जोगेहो कारज निपज्जेरे ॥ एमां कोइन वाद् ॥ पण

कारणविण कारज साधियेरे ॥ ते निजमतउनमाद् ॥ संज्ञव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ परमात्माना स्वरूपसाथे पोताना आत्मस्वरूपने मेदवबुं तद्भूपकारणने सं-
योगे पोताना स्वरूपनी सिद्धिरूप कार्यथाय, तेमां कांइ विवाद नशी; परंतु श्रीसंज्ञदे-
वना स्वरूपनी सेवाना कारणविना आत्मस्वरूपनी सिद्धतारूप कार्यनी वांग राखवी ते
पोतानी मतिनी उन्मत्तता रे, हरयाहीपणुं रे अथवा वहिरात्मपणारूप कुमतिनो उ-
न्माद केणचित्त वित्तमतारे ॥ ५ ॥

मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे ॥ सेवन अगम अनूप ॥

देजो कदाचित्त सेवक याचनारे ॥ आनंदघन रसरूप ॥ संज्ञव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ संज्ञदेवनी सेवनारूप कारणने सज्जावे आत्मस्वरूपरूप कार्यनुं निःसंदेह
सज्जावीपणुंजरे, पण ते सेवन घणुं झुप्कर रे. मात्र मुग्ध केणसेवनना असमंजसं जद्ग
खोक ते सेवनने सुगम जाणीने आदरेरे. परंतु अंतरात्माविना ते सेवननुं स्वरूप वीजा
कोइने गम्य नशी. ए सेवन तो परमोक्तुष्ट निस्पमरे. आ जवे तो पामबुं डुर्खजरे, माटे सं-
ज्ञदेवने विनति कर्लंतुं के कदाचित् केणचरभावर्त्तनादि कारणोने मेदापे कोइचवेतमा-
रो सेवक जे हुं पामर तेनी याचनाके० सेवनारूप प्रार्थनाने देजो केणसफल करजो. हे प्रज्ञ
तमे आनंदकेण इनानानंद तेना घन केणसमूह एटदेवे केवलज्ञान केवल दर्शनेकरी झव्यना
अनंत गुणादिने जाणवाथी उपन्यो जे आनंद तद्भूप रस रे रूप केणस्वरूप ते जेनुं ए-
वारो ॥ ६ ॥ इति श्री संज्ञविजिनस्तवन.

॥ अथ श्री अन्निनंदन जिनस्तवन ॥

॥ राग धनाश्री सिंधुरे ॥ आजनीहेजोरे दीसे नाहिको ॥ ए देवी ॥

अन्निनंदनजिन द्रशाण तरसियें ॥ द्रशाण झर्वन देव ॥ मत

मतज्जेदेरे जो जइ पूर्वीये ॥ सहु यापे अहमेव ॥ अन्नि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अन्निनंदन प्रज्ञनुं दर्शन एटदेवे जेनदर्शन तरसियेकेणकोइ रीते भवे एवी
चाहना करीए ठीए, परंतु हेप्रज्ञ! तमारुं दर्शन अतिझुर्खजन केणछु.खे पामीशकाय तेबुं
रे ज्ञूतकालमां कोइ वखत पाम्या नशी अने आ जन्ममां पामवानी व्यवस्था आ प्रमाणे
रे. जेम कोइ अजाण पुरुष मार्गनी माहितीमाटे वीजानेपुरे, तेरीते जुदाजुदा मतवा-
खारे तेमने पुरीए के शुद्ध आत्मस्वरूपनुं जासन करावे तेबुं स्वरूपानुयायी दर्शन कयुं?
त्यारे तेते मतना धारक सर्वे अहमेव केणनिश्चयपूर्वक अमे प्रवृत्ति करीए ठीए तेज शु-

ज्ञदर्शन रे परंतु अमारा दर्शनथी स्वरूपनी प्राप्ति यती नथी एम कोड कहे नही ॥१॥

सामान्ये करी दरगण दोहेलूं ॥ निरणय सकलविशेष ॥ मदमे
धेयेरे अंधोकेम करे ॥ रविशश्चिरूप विशेष ॥ अन्नि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर ! सामान्यप्रकारे मतमतातरना जेदे अर्थात् एकात्मादी उने पूरता तमारु जैनदर्शन पासबु छुर्खन्त रे वक्ती निरणयकेऽपरमतात्मिकपणे स्वरूपा नुयायी, अनताकेवलझानीए कथन करेलु, तदाकारन्तूते समस्त नयानुयायी, एम विशेषपणे तमारु दर्शन प्रत्यक्षपणे कहेबु ते पण कठिन रे वक्ती ते मतमतातरीउने पूरता तमारु दर्शन नज पामीए, ते उपर दृष्टात कहेठे जेम कोइजन्माध प्राणी रे, तेणे वक्ती मध्यपान कर्युं, ते प्राणी जेम सूर्यचङ्गना स्वरूपने विशेषपणे जाणी शके नही तेम जे मिथ्यादर्शने करी अध रे, वक्ती मतमत्वरूप मदिरापानथी घेरायोरे, ते सूर्यचङ्गरूप जैनदर्शनना स्वरूपने विशेषपणे केवी रीते जाणी शके अर्थात् नज जाणी शके ॥

हेतु विवादेहो चित्तधरि जोश्ये ॥ अति डुरगमनयवाद ॥ आगम
वादेहो गुरुगम को नही ॥ ए सबलो विषयाद ॥ अन्नि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वक्ती हे परमेश्वर ! जे साधवा योग्य कार्यनी प्राप्ति करावे एवाहेतु केऽकारणोनो विवाद केऽविस्तारपणे कथन तेने मनमा विचारी जोइए ठीए अर्थात् झान दृष्टिए विचारीए ठीएतो तमारा दर्शनमा नयोनु वाद केऽकथन एबु रे के जे वस्तुने एक नये स्थापीये तेनेज वीजी नये उत्थायी शकाय रे, माटे तमारा दर्शनमा नयवा दनी छुर्गमता रे वक्ती तमारा सिद्धातना वाद केऽकथनथी तो सहेजे तमारु दर्शन पामी शकीए, परतु तमारा सिद्धातोना कथननु गुरुगम कोइ नथी अर्थात् जे युर्ह थी सिद्धातोनी समज पने एवा युरु कोइ नथी अथवा युरुने आधीन रही समज्या होयएवा परपरागामी कोइ युरु आकालमा देसाता नथी, माटे मतमतातरोना जेदथी, हेतु विवादोथी तेमज नयवादोथी अने आगमवादथी तमारा दर्शननी प्राप्ति नथी एज सबखो केऽप्रति वस्तवान, मनमा विषयाद केऽप्तद्वेग रे ॥ ३ ॥

घाति डुगर आमा अतिधाण ॥ तुज दरिश्यण जगनाथ ॥

धीराई करी मारग सचरू ॥ सेंगु कोइ न साथ ॥ अन्नि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जगनाथ ! ब्रण जगतना स्वामी तमारु दर्शन पामवाने अतरायना करनार पर्यंत उपमारूप धातकारक पूर्णोक्त जे कारणे रे तेनाथी पण वीजाघणा हजु रे, माटे केटखा कहु तोपण धीराई करी केऽप्तमारा दर्शन पामवाने अतराय करनारा एवा कारणोने नही गणता हवानुयोगे जैनदर्शनना भागमा सचरू केऽप्रवर्तन करु

हुं परंतु शुद्ध स्याद्वाद मार्गिनो प्रवर्णावावाकां तेने नेंगु कहीए तेबो कोइ डाता
पुरुष तमारो मार्ग देव्याननार नाथे नथी के जेना नहायथी मार्गं प्रवर्णी गर्कीए ॥४॥

दृगण दृगण रटतो जो फरुं ॥ तो रागार्गोऽ नमान ॥ जेहने
पिपासादो अमृत पाननी ॥ केम जांजे विपान ॥ अन्नि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे अन्निनंदन प्रनु ! तमाग दर्शननी पुर्वोक्त कारबोथी अप्राप्ति जाणीने,
मात्र दर्शनीठ परत्वे दर्शन दर्शन एम हे उपगारीठ ! शुद्ध आत्मस्वरूपामुगार्थी, प-
रमपदप्राप्तक एवु दर्शन मने वनावो एम रटनो कें योखतो घरो जो केंपोझरीते
फरुं केंपरिअमण कर्म अर्थात् जन्मीठ मुखां सर्व दर्शनना अव्यहोने पुरुनो पुरुतो
नटक्या कर्म तेथी कांड नमान दर्शन प्राप्त थाय नहीं, उखटुं जेनदर्शननी शोध
करतो देव्याने नर्व दर्शनीठ एम कहेके आनो मनुष्याकारे जंगलनुं रोज रे,
अर्थात् मर्यं जिरोमणि रे, वली नर्व दर्शनीठर्थी तमारा दर्शननी शोध कर-
तां थकां कोइ भद्रावंचकी नयनो पष्ट अदृष्ट करी एवी वान संजखावे के तमारा
दर्शननी प्राप्ति थवी तो दूर रही पण उखटा मनमां शंकाना गोटा उत्पन्न करावीडे
तेथी श्रद्धा भ्रष्ट थइ अन्यमन प्रवर्तन करी तमारा दर्शननी निंदा करता लागी जड़;
मार्गे हुं जेने तमारा दर्शनरूप अमृतपाननी पिपासा केंतृपा रे, तेने अमृतपान तो
मसे नहीं पण तेथी उखटु भ्रष्ट श्रद्धार्थी मिथ्यात्म प्रवर्तनरूप जेर अन्यमतियोने
पुरुवाथी मारी श्रद्धामां दाख थाय, तेथी ते विष केंपेरनुं पान मारी अमृतपान-
रूप पिपासाने केम दूर करी थके ? ॥ ५ ॥

तरस न आवेदो मरण जीवनतणो ॥ सीजे जो दृश्यण काज ॥

दृग्णिण दूर्खन्म सुखन्म कृपाथकी ॥ आनंदघन महाराज ॥ अन्नि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ मार्गे हे परमेश्वर ! तमान जेनदर्शनरूप कार्य जो कोइ रीते सिद्ध थाय
तो मरण जीवनो तरस केंप्यास न रहे अर्थात् ते श्राणी जन्मजरामरणादिकना
छु-खथी रहित थइ मुक्ति पामे; परंतु तमान दर्शन पामतु छुर्खन रे. मात्र तमारी कृ-
पाथी सुखन्म रे तेथी हे आनंदघन केंडानानंदनो अत्यंत चराव तेना महाराज ते आनं-
दघन महाराज, तमारी कृपाथी जेनदर्शन पामीए ॥६॥ इति अन्निनंदन जिनस्तवन.

॥ अथ श्री मुमति जिनस्तवन ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

मुमति चरण कज आत्म अरपणो ॥ दरपण जेम अविकार ॥ गी ॥
मतितरपण वहु सम्मत जाणियें ॥ परिसरपण मुविचार ॥ ७ ॥ ते० १॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ जगवंतमा चरणकमलमा मारा आत्मानु अरणण के० स्यापन करु निश्रमणे परमात्म स्वरूपनु चिंतवन ते आत्मार्पण कहीए ते परमेश्वर उ पाधिजनित विकारथी रहित रे जेम आरीमामां जेबु स्वरूप होय तेबुज जासे पण विपरीत न जासे, तेवीरीते परमात्मा पण निर्दिकारी यथातथ्य कानितवत, केवलडान स्वरूपी होगाथी तेमा आत्मार्पण करवाथी यथार्थ स्वरूप जासे माटे हे सुमतिवत प्राणी। वहु के०धणा मतने सम्मत यह नालता आत्मार्पणनु स्वरूपतो मतितरण्ण यह जाय के०बुद्धि तृप्त थाय तेट्ले सुधी जाणी लेबु पठी परिके०समस्तपणे अन्य-मतिर्तमा जे आत्मार्पण तेथी सरणण के०निवंत्बु तेज सुविचार के०उत्तम विचार रे॥३॥

त्रिविध सकल तनुधरणत आत्मा ॥ वहिरात्म धुरिषेद ॥ सु० ॥

बीजो अतर आत्म तिसरो ॥ परमात्म अविष्टेद ॥ सु० ॥ सुमतिं ॥ ३॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे आत्मार्पण सवधी योग्यता वताढ्या पठी आत्माना ज्ञेद कहेरे, समस्त शरीरधारीउना शरीरने विमे रहेका आत्माना ब्रण प्रकार रे १ वहिरात्मा २ अतरात्मा ३ परमात्मा अहि कोइ पुरेके सिङ्ग अनता रे माटे तेना अनता ज्ञेद केम न कहा ? उत्तर-जे अनता सिङ्गनु स्वरूप एक रे तेथी परमात्मा साथे अविष्टेद के० अन्नेद शब्द सुक्यो रे अहीं पेहेलो, बीजो, ब्रीजो आत्मा ए प्रमाणे तो जथन्य, मध्यम, उत्कृष्ट ब्रण प्रकारना आत्मा थाय, परतु सत्तानिन्नथी कोइ पुरे तो तेना अनता ज्ञेद थाय ॥ २ ॥

आत्म बुद्धे कायादिके० ग्रह्यो ॥ वहिरात्म अधरूप ॥ सु० ॥ काया

टिक्कनोहो सारवीधर रह्यो ॥ अतरआत्म रूप ॥ सु० ॥ सुमतिं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे व्रणे आत्मानु स्वरूप कहेरे मलीन बुद्धिये करी शरीरादिकयी अह-बुद्धिपूर्वक ग्रह्यो के०धायेखो अर्थात् शरीरने सुखे सुखी अने शरीरने छु खे छु खी, आदिशब्दे माया, ममता, मिथ्यात्मादिके ग्रह्यो, ते परिणतिये परिणम्यो इत्यादि स-क्षित जे आत्मा तेने वहिरात्मा कहीए ते आत्मा पापरूप व्यापारवनठे, अने जे आ त्मा कार्यादि के०शरीर प्रसुखथगोपाग, जूमि धन कचनादिनोशाही, कायादिकनो निर्ममत्वी आत्मस्वरूपनो झाता, आत्माने वशमेघारे स्यापन करनार इत्यादि स-क्षणे खक्षित ते अंतरात्मा कहीए ॥ ३ ॥

डानानदेहो पूरण पावनो ॥ वरजित सकल ऊपाधि ॥ सु० ॥

अतिंदियगुणगण मणिआगरु ॥ एमपरमात्मसाध ॥ सु० ॥ सुमतिं ॥ ४ ॥

न करणे हो अंतर तुज पड्योरे ॥ गुण करणे करी जंगा॥ ग्रंथ
तते करी पंक्षितजने कद्योरे ॥ अंतरजंग सुअंग ॥ पद्म ० ॥ ५ ॥

। ॥ तेथी पंडित पुरुपे आनंदघनने कहुं के सिद्धांतमां त्रण कारण कहां तेमां
एथी आत्मा कर्म साथे जोकाय तेने यूंजनकरण कहीए. ते यूंजन करणने
; आनंदघन ! तारे परमेश्वर साथे अंतर पक्षी गयुं रे. तेथी ज्ञान करणे आ-
प जाणीने गुणपणे आचरणा अर्थात् कार्य कारण जावनो अन्नेद उपचार रे,
ज्ञानदर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञानदर्शन एवा अन्निन्न जावे करी है आ-
न ! पद्मप्रक्षु साथेना तारा अंतरनुं बुटबुं रे. बली पंक्षितोने आनंदघने पुरुं
न्थन तमारी पोतानी बुद्धिए कहोरो ? पंक्षितोए उत्तर आप्यो के, है आनंदघन ! जैन
अंतना न्यायथी अमे आ वचन कहीए ठीए, स्लेटाए कहेता नथी, भाटे है आनं-
। ! परमेश्वरथी तमारुं अंतर जांगवानो रहस्य स्वरूपे एज उत्तम उपाय रे. ॥५॥
तुझसुख अंतर अंतर जाजसेरे ॥ वाजसे मंगलतूर ॥ जीव

सरोवर अतिशय वाधसेरे ॥ आनंदघन रसपूर ॥ पद्म ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी है पद्मप्रक्षु ! ज्यारे हुं गुण करणे प्रवत्तिश त्यारे तमारुं अने मारुं जे
आता ध्येयरूप अंतर रे ते दूर थशे, अर्थात् जेवनुं अन्नाविषणुं थशे, अने त्यारेज स्व-
र प्राप्तिना हर्पना उत्कर्षनुं महाघोष करनारुं अनादि ध्वनिरूप मांगलिक वाजिन्न
गशे. ए रीते आत्मा परमात्म स्वरूप पामे थके आनंदघन केठकेवल ज्ञान केवल
शनथी अनंताङ्गीय स्वरूपने अवलोकन करवाथी परम आवृद्धादरूप रस उपजशे
रने तेना संपूर्ण जरावथी अत्यंत शुष्क एवुं जीवरूप सरोवर अनंत ज्ञानरूप जलथी
ङ्कि पामशे ॥ ६ ॥ इति प्रपञ्चजिन स्तवन.

॥ अथ श्री सुपार्वजिन स्तवन ॥

॥ र. रंग ॥ मद्वाहार ॥ लक्षनानी देवी ॥

य, ते आप कहो हे प्रजु ! तमारा अने मारा अतरनु कारण, ज्ञानावरणादि कर्मनो विपाक के० परणमतु, तेना कारण मिथ्यात्व, अविरती, कपाय, योग, तेना वधने जो-इने कोइ महाबुद्धिवत् ज्ञानीए तमाराथी अतर पड़ु ते कहु के, जे रते जे होय ते अन्वय अने जे अठते जे न होय ते व्यतिरेक अर्थात् कर्मवधना कारणने अज्ञाव अतरनो पण अज्ञाव थाय ॥ १ ॥

पर्यं रिं अणुजाग प्रदेशथीरे ॥ मूल ऊतर बहुभेद ॥ धाति

अधाति हो वधूदय ऊदिरणारे ॥ सत्ताकरम विरेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इवे अतर पदवाना कारण विस्तारथी बुद्धिवत् पुरुप कहे ठे १ प्रकृतिवध २ स्थितिवध ३ अनुज्ञाग ते रसवध ४ प्रदेश ते दक्षनो सचय, एम चार प्रकारे कर्म वध ठे कर्मनी मूलप्रकृति आठ ठे उत्तर प्रकृति एकसो अचावन ठे मूलमा चार आत्मगुणना धात करनारा कर्म ठे अने बीजा चार आत्मगुणना अधातक ठे वक्ती कर्मना वध, उदय, ऊदिरणा, सत्ता इत्यादि विरेद के० नेद ठे इत्यादि शब्दयी ध्रुववधी अध्रुववधी, ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी, ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता, तेमज ज्ञव विपाकि, द्वेत्र विपाकि, जीवविपाकि, पुज्जलविपाकि तेमज देशधाति, सर्वधाति, परा वर्तमान, पुण्यप्रकृति, पापप्रकृति इत्यादि सर्व कर्मना विरेद ठे ॥ २ ॥

कनकोपखवत पयनि पुरुस्तणीरे ॥ जोमी अनादि स्वज्ञाव ॥

अन्य सजोगी जिहा लगे आत्मारे ॥ ससारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एरीते कर्मनी पयनि के० प्रकृति ते पुरुस के० जीग्नी साये अनादि काखथी मखेली ठे सयोग सवध ठे जेम सुवर्ण तथा माटीने साणमा अनादि सवध स्वज्ञाविक ठे, तेम पुरुप प्रकृतिनो अनादि सवध स्वज्ञाविक ज ठे माटे ज्यासुधी आत्मा पुज्जलादिक साये सयोगी ठे त्यासुधी आ आत्मा ससारी कहेवाय ठे ॥ ३ ॥

कारणजोगे हो वधे वधनेरे ॥ कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव

सवर नाम अनुकर्मेरे ॥ देयऊपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आत्मा मिथ्यात्व, अविरति, कपाय अने योग, आ कारणोने लीघे कर्मनो वध करेरे अने सम्यकत्व, प्रिरति, अकपाय अने अयोग, आ कारणोने लीघे कर्मथी डुटे ठे एम अनुकर्मे कर्मवधना कारणोने मैखववा ते आश्रम अने कर्म आपता अटके एया कारणो मैखववा ते सवर तेमा आश्रव ते देय के० भारवा योग्य ठे अने सवर ते उपादेय के० आदरवा योग्य ठे ए प्रमाणे सिद्धात्मा सनजाय ठे ॥ ४ ॥

यूंजन करणे हो अंतर तुज पड्योरे ॥ गुण करणे करी जंगा। अंय
ऊकते करी पंमितजने कह्योरे ॥ अंतरजंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेशी पंडित पुरुषे आनंदघनने कव्युं के सिद्धांतमां त्रण कारण कहां तेमां
जे कारणथी आत्मा कर्म साथे जोकाय तेने यूंजनकरण कहीए ते यूंजन करणने
योगे हे आनंदघन । तारे परमेश्वर साथे अंतर पर्मी गयुं रे. तेशी ज्ञान करणे आ-
त्मस्वरूप जाणीने गुणपणे आचरणा अर्थात् कार्य कारण जावनो अनेद उपचार रे,
तेशी ज्ञानदर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञानदर्शन एवा अनिन्द्र जावे करी हे आ-
नंदघन ! पद्मप्रज्ञ साथेना तारा अंतरानुं ब्रुटबुं रे. वली पंमितोने आनंदघने पुक्युं के,
आ कथन तमारी पोतानी बुद्धिए कहोरो ? पंमिनोए उत्तर आप्यो के, हे आनंदघन ! जेन
सिद्धांतना न्यायथी अमे शा वचन कहीए ठीए, खेडाए कहेता नथी, माटे हे आनं-
दघन ! परमेश्वरथी तमारुं अंतर जांगवानो रहस्य स्वरूपे एज उत्तम उपाय रे. ॥५॥

तुजमुज अंतर अंतर जाजसेरे ॥ वाजसे मंगलतूर ॥ जीव

सरोवर अतिशय वाघसेरे ॥ आनंदघन रसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेशी हे पद्मप्रज्ञ । ज्यारे हुं गुण करणे प्रवर्त्तिश त्यारे तमारुं अने मारुं जे
ध्याता ध्येयरूप अंतर रे ते दूर अश्वे, अर्थात् जेदनुं अनाविपाणुं अश्वे, अने त्यारेज स्व-
रूप प्राप्तिना हर्षना उत्कर्पनुं मद्हायोप करनारुं अनादि ध्वनिरूप मांगलिक वाजिंत्र
वागश्वे. ए रीते आत्मा परमात्म स्वरूप पासे थके आनंदघन केणकेवल ज्ञान केवल
दर्शनथी अनंताङ्गेय स्वरूपने अवदोकन करवाथी परम आद्वादरूप रस उपजश्वे
अने तेना संपूर्ण चरावथी अत्यंत शुष्क एवुं जीवरूप सरोवर अनंत ज्ञानरूप जलथी
बृद्धि पासश्वे ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रज्ञजिन स्नवन.

॥ अथ श्री सुपार्वजिन स्तवन ॥

॥ रागसारंग ॥ भद्रहार ॥ खखनानी देशी ॥

श्रीसुपास जिनवंदियें ॥ सुख संपत्तिने हेतु ॥ खखना ॥

शांत सुधारस जखनिधि ॥ भव सागरमां सेन् ॥ खखना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन कुमतिवंत प्राणीउने आत्म साधनना उपाय क-
थनपूर्वक श्रीसुपार्व परमेश्वरनी स्नवना करनो कहे रे. हे जब्यो ! श्रीसुपार्व प्रज्ञने
द्वादशावर्त्तवंदने वांडो. ते अव्यावाध सुख प्राप्तिरूप मोक्षनी संपत्तिना हेतुरूप ए
चंदन रे. खखना जब्द वाक्य अकंकारे रे. वली ते सुपार्वजिन केवा रे ? आत्म स्व-

रूपना अनुज्ञवथी रागद्वेष्टने अनावे उत्पन्न धयो जे शांतरस तङ्गुप अमृत रसना स-
मुख रे वली ससार समुद्रनो पार उत्तरताने सेतु केण्ठाज समान रे ॥ १ ॥

सात महाजय टालतो ॥ सप्तम जिनपद देव ॥ ललना ॥

सावधान मनसा करी ॥ धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली सुपार्श्वनाथ केवा रे ? वज्र समान इद्धोक परखोकादि सात जय
आथवा काम, क्रोध, लोज, मद, राग, द्वेष, भिद्यात्म आ सात जयना नाग करनार
रे एवा सुपार्श्वजिन केण्ठामान्य केवलीमा वर प्रधान, स्पस्परूप कान्तिपत परमे-
श्वरने अहो वहिरात्मार्ड तमे सावधान यह एकाग्र तदाकार मन प्रगृहि करी व-
हिरात्मपण तजी अतरात्मवत थड जिनेश्वरना चरणकमखनी सेवा त्रणेकाख त-
जत ध्याने करो ॥ २ ॥

त्रिवशकर जगदीश्वरु ॥ चिदानन्द जगवान ॥ ललना ॥

जिन अरिहा तीर्थकरु ॥ ज्योतिसरूप असमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आनदधननु एवु कथन साजलीने, शिव, शकर, अखय, योगी, निरजन,
निरचि रुषीकेश इत्यादी अन्य सर्वना उपासको आनदधनने पूर्वता साम्या, हे आ-
नदधन ! अमारा सर्वना देवोना सेवनने उत्त्यापी एक सुपार्श्वनाथनु सेवन स्यापन
करो तो तेनु शु कारण ? शु उपरना सर्व अज्ञिधाननी सज्जा तेनामा रे ? आनद-
धन कहे रे के, हा शिव केण्ठर्म उपद्धव निवारक, शकर केण्ठुरना कर्ता, जगदी-
श्वर केण्ठगतना परमेश्वर, चिदानन्द केण्ठामानदी, जगवान केण्ठमहा वैराग्यवत,
ऐश्वर्यवतजिन केण्ठ राग द्वेषना जीतनार, अरिहा केण्ठ इद्धादि सर्वनी इद्ध्य तथा जाव
पूजा योग्य तथा कर्मरूप शत्रुने हणनार, तीर्थकरु केण्ठगणधर प्रमुख साधु, साध्वी,
श्रावक, ब्राह्मिकारूप चतुर्विध सघना स्यापन करनार एम सर्व सज्जा सुपार्श्वजगवतमा
रे तेनी तुखना करी शके एवु ज्योतिसरूप पण अन्यमा नयी ॥ ३ ॥

अदख निरजन वहलू ॥ सकलजतु विश्राम ॥ ललना ॥ अन्य

दान दाता सदा ॥ पूरण आत्मराम ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली ते ग्रनु अदख केण्ठहिरात्मार्थी जाणी शकाय नही तेवा रे वली
निरजन केण्ठ कर्मरूप लेपरहित रे, वहलू केण्ठ सर्व प्राणीना हित करनार रे वली
त्रस थापर सर्वजीव जन अटरीमा जमता थका कर्मजनित प्रचन्द तापथी तपेखाने
अर्थात् जन्म जरा मरण आधि व्याधि अने उपायिथी छु ली थेखार्डने विश्राम
केण्ठशाताना धाम रे, वली मरणथी वचावनार तेयी निरतर अन्यदानना दातार

ठे, अर्थात् जन्म मरणना टालणहार ठे. वली ज्ञानादिगुणे जरपूर होवाथी आत्म-
राम केष आत्म स्वरूपमां रमण करनार पण तेज ठे. ॥४॥

वीतराग मद् कल्पना ॥ रति अरति जय सोग ॥ लबना ॥ निष्ठा
तंजा झरंदङ्गा ॥ रहित अवाधित योग ॥ लबना ॥ श्रीसुष्ठ ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली राग द्वेष रहित ठे तेथी वीतराग ठे. वलीमद केष अनिमान, क-
ल्पना केष संकल्प विकल्प, रति केषरागनो उत्कर्ष, अरति केष द्वेषनो उत्कर्ष, जय,
सोगकेषशोक कल्पांत, निष्ठा, तंजा केषआलस, पूर्वोक्त सर्व दूषणोथी रहित ठे. वली
मनोयोग, वचनयोग अने काययोगनुं वाधकपणुं, तेनाथी पण प्रज्ञ अवाधित ठे. ॥५॥

परम पुरुष परमात्मा ॥ परमेश्वर परधान ॥ लबना ॥ परम
पदारथ परमेष्ठी ॥ परमदेव परमान ॥ लबना ॥ श्रीसुष्ठ ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतने विषे जेटखा पुरुष ठे तेमां उत्कृष्ट पुरुषत्व धर्मयुक्त पुरुष एज ठे
तथा परम उत्कृष्ट आत्मा पण एज ठे, वली परमेश्वर केष सर्व मनुष्य शिरोमणि,
त्रण जगतना नायक ठे, तेमज त्रण जगतमां सर्वोत्कृष्ट वस्तु पण तेज ठे, अथवा
परमपद केष मुक्तिपद तेना रहस्य ठे, तथा परमश्छट केष परमोत्कृष्ट वांछित पदार्थ
पण तेज ठे, अर्थात् जय आत्माउने परम वांछनीक पण एज ठे. वली सर्वोत्कृष्ट
देव पण एज ठे है अन्य देवनी सेवा करनारा प्राणीर्ति, सर्व देवोमां परम देव-
पणे सेवना योग्य आ सुपार्श्वनाथ प्रज्ञुने परमान केष अवधारो. ॥ ६ ॥

विधि विरंचि विश्वंजरू ॥ झृषीकेश जगनाथ ॥ लबना ॥ अघ
हर अधमोचन धणी ॥ मुक्ति परमपद साथ ॥ लबना ॥ श्रीसुष्ठ ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रज्ञुनी सेवा करनार शुचवंध करे अने तेनुं नहीं सेवन करनार अशुन्ज वंध
करे अने जे जीवो वंध करे तेहुं जोगवे ते स्वरूपे विधाता पण एज ठे. वली संसारी
जीवो अने परमात्मा सत्ताए एकज ठे, परंतु श्रेष्ठ स्वरूपनो कर्ता होवाथी विरंचि
केष ब्रह्मा पण तेज ठे वली संसारी जीवोने परम आधाररूप होवाथी विश्वंजर पण
तेज ठे. वली झृषीर्ति तेनुं ध्यान करता होवाथी झृषीर्तना स्वामी पण एज ठे. वली
जगतना जीवोने शुद्ध स्वरूपना पोपण करनार होवाथी जगतना नाथ पण तेज ठे.
वली पापना करनारा तथा अनेक कालना पापी प्राणीर्तने मुक्त करावनारा पण तेज
ठे, तेवीजरीते जगतना स्वामी पण तेज ठे. वली मुक्ति जे परमपद तेना सार्थवाह्
ठे, अर्थात् आगेवान दोरनार ठे. ॥ ७ ॥

एम अनेक अजिज्ञा धेरे ॥ अनुज्ञव गम्य विचार ॥ लखना ॥

जे जाए तेहने करे ॥ आनंदघन अवतार ॥ लखना ॥ श्रीसु० ॥७॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे अनेक केष घणि अजिज्ञा केष शक्तिरुने धारण करनारा थे, अर्थात् अमर, अजर, अक्षर, अकल, अनादि स्वरूपि, विजयी, अतिक्रिय प्रश्नात्मा, शक्ति, स्वयंजु, सर्व, अज, अच्युत, अविरुद्ध इत्यादि अनेक नामोना धारण करनारा थे तेथी हे जब्य प्राणीउ। तेनी सेवा करो ते प्रज्ञुना सेवनमा सर्वतु सेवन अतर्जूत थे तसी अनेक नामोना अर्थ विचारना रहस्यनु चिंतवन अर्थात् दरेक नामना व्युत्पत्ति सहित अर्थतु विवेचन अत करणमा करु ते अनुज्ञव गम्य कहेवाय ए प्रमाणे नामोनो विचार, हेतु सहित चिंतवन करवानी जे रीत जाए ते प्राणीने श्री सुपार्खनाथ परमेश्वर आनंदघन अवतार करे केष परमानदपणे अपतरण करे ॥७॥

॥ अथश्री चक्रप्रभजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ गोडी ॥ कुमरी रोवे आकद करे, मने कोइ मुकावे ॥ ए देशी ॥

देसण्डेरे सर्सी मुने देखण्डे ॥ चंद्रप्रभ मुखचंद ॥ स० ॥ उप

शमरसनो रुद ॥ स० ॥ गतकलिमल झुखदद ॥ स० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शुद्ध चेतन्य धर्मयुक्त शुद्ध चेतना परमेश्वरना मुख प्रसुप अगोपागने विषे व्यापि रही थे ते, परमेश्वरनु मुखार्थिद देयरा देती नवी, तेने अनादि कालथी दर्म उपाधि युक्त आनंदघननो आत्मा मुमतिवत थइ परमेश्वरना मुखनु दर्शन परवा इत्या करतो कहे थे हे समी ! चक्रप्रभ परमात्माना मुखरूप चक्रने मने जो-यादे, कारणके ते प्रज्ञुना मुखतु अग्सोकन तु तो निरतर कर्या करे थे अने म पूर्ण जे जे स्थानवे ते मुगापखोकन कयुं नवी तेनु वर्णन हवे पर्वी करीश मादे विनति थर्न तु बे, ते मुखरूप चक्र जोगादे ते मुखरूप चक्र केनो थे ? राग छेपना अनापथी उषशमरस केष शातरसनो रुद केष उमतो क्रिमकथ थे उक्षी जेने चारे निकापना देवोना इज्जो तथा मनुष्यना इज्ज जे चक्रर्ती प्रमुख भेनता होगाथी ते सेवनाराउना क्रिमत्र बेष्पाप तथा छु गोनाडद रेष्मसुदाय गन केष्नाश पाम्या थे मादे हे मग्नि ! मारा पाप अने छु गमसुदाय द्रू याय ॥ २ ॥

मुद्मनिगोद न देखियो ॥ म० ॥ वाढर अतिहि पिशेप ॥ स० ॥

पुटपि आउ न खेम्बीयो ॥ म० ॥ तरु वाउ न खेत ॥ म० ॥ ३॥

अर्थ ॥ हे सुमी ! अन्यवद्वार रागी मूल्य निगोदमा चक्रप्रज्ञुना मुखतु दर्शन

यथुं नहीं, कारण के सूक्ष्म निगोदे रूपनो असंज्ञव, रूपना असंज्ञवत्री चक्रुनो असं-
ज्ञव, तेव्री देववानो असंज्ञव, मादे हे तत्त्व ! अहिं मने जोवादे. वस्त्री वादर नि-
गोदमां तो अत्यन्त विशेषपणे मुख दीरुं नवी, कारण के, जो के सूक्ष्म निगोदमां
प्रक्षुपुख दीरुं नवी तो पण सिद्धकेव्रमां सूक्ष्म निगोदे रे अने सिद्ध परमात्मा-
उनी नजीक सूक्ष्म निगोदना जीवो रे अने वादर जीवोनो नजीक वाम नवी तेव्री
वादरमां तो अति विशेषपणे प्रक्षुपुख दीरुं नवी. वस्त्री पृथ्वीकाय, अप्कायमां पण
चक्रु दर्शनने अज्ञावे न खल्यो केऽ जोवामां आव्युं नवी अने जाणवामां पण
आव्युं नवी. वस्त्री तेभकाय तथा वारुकायमां पण खेशमात्र दीरुं नवी, कारणके
मनुष्यना ज्ञवमां प्रक्षुपुं दर्शन करी मरण पामीने जो आवे तो अपर्याप्त अवस्थाये
पूर्वज्ञवनुं खेश पण पामे. पण मनुष्य ए वे निकायमां तो मरण पामी आवेज
नहीं तेव्री ते वे कायमां पण दीरुं नवी. ॥ २ ॥

वनमपति अतिघण दिवा ॥ स० ॥ दीरो नहीं देदार ॥ स० ॥

विनि चरिर्दी जखदीदा ॥ म० ॥ ननिमन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥

अथ ॥ हे तत्त्व ! मारो जीव वनस्पति कायमां पण घणो काख रह्यो, तेव्री न्यां
पण चक्रु इंडिने अतावे प्रक्षुपुनु दर्शन अर्युं नहीं, हे तत्त्व ! हवे तुं एम क-
हींग के एनो तें एंडेंडीनांज स्थानको बनाव्यां, तो कहुं तुं के वेंडी अने तेंडीने पण
चक्रु नवी अने चरिर्दीने जे चक्रु रे ते पण जखदीदा केऽ पार्हीनी की॒क जेम
निष्कृत रे. नेम ते चक्रु पण दर्शन कार्यसिद्ध करवा मादे निष्कृत रे, जेम पार्हीमां
कीटी॒ पार्हीय पण रहे नहीं तेम आंव उनां दर्शन न धाय तेव्री ते आंव प्राम थड
पण निरर्थक रे. वस्त्री संहीणपानी पण केऽ पांचे गतिमां पण प्रक्षुपुख दीरुं नवी
एम हे शुद्ध चेतना नन्नि ! तुं धार केऽ अवधारजे मानजे. ॥ ३ ॥

मुरनिरि निरय निवासमां ॥ न० ॥ ननुज अनामज माया ॥ स० ॥

अपज्ञाना प्रनिज्ञानमां ॥ न० ॥ चतुर न चटीउ दाय ॥ न० ॥ ४ ॥

अथ ॥ वस्त्री विषयाग्रक देवाथी देवगनिमां अने विवेदना विकल्पपार्थी
तिर्यक्तगनिमां पण प्रक्षुपुख दीरुं नवी. वस्त्री नर्कगनिमां निवासदनां अल्पन छु-रहनी
वेदनाथी नंजारहुं पण अर्युं नहीं तो देवहुं तो क्यांदीज धार. वस्त्री धमादर्मना
ज्ञानना अज्ञावदाता अनाय मनुष्यना न्याय केऽनेमां टुक्कद दवार्थी नेमज अप-
ज्ञाना केऽअपर्याप्ता मनुष्यनी प्रनिला केऽप्रतिनिरि ते दाय धमादर्म विवेद विच्छु
दोवाथी ते व्यानहमां प्रक्षुपुख दीरुं नवी. इन्द्रादि पृदोक्त न्यू नामनां चतुर केऽ म-

हानिषुण एवो परमेश्वर मारे हाय न आव्यो, अर्थात् दर्शननी प्राप्ति न यह, परतु हवे दर्शननी योगनाइ मखी ते तेथी हे सखि ! मने प्रज्ञमुख जोवा आप ॥ ४ ॥

एम अनेक यद्य जाणिये ॥ स० ॥ द्रिश्यण विणु जिणेटेव ॥ स० ॥

आगमथी मत जाणिये ॥ स० ॥ कीजे निरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त तेमज अन्य स्थलो जेवा के कामी, क्रोधी, खोनी, मोही, रागी इत्यादि चोरासीबक्ष जीवायोनि फरसता अनेक स्थलो श्री जिनेश्वर जगवतना मु-
मनु दर्शन कर्यापिना निरर्थक यथा, तेथी हे सखि ! प्रज्ञना मुखनु दर्शन करवा दे
मखी मुमतिपत आनदधन शुद्धचेतनाने कहेते के गया जवतो निरर्थक गया, परतु
आ मनुष्य नगमा पण शीरीते सेवा करू ? त्यारे शुद्धचेतना उत्तर आपे ते के, हे
आनदधन ! मिळातना वचनथी पूजानु मत केंस्वरूप जाणीए सिळातमा, हिथाण
मुद्दाण निम्नेसाण अर्थात् हितने माटे, सुगमेसाटे, ति थेयसने माटे परमात्मानी से-
गा हे एम जाणीने अनय, अद्वेष, अरोदपणे निर्मल जागाकितपूजा करवानी आज्ञारे

निरमल माधु जगति खदी ॥ स० ॥ योग अवचक होय ॥ स० ॥

रिंश्या अपचरु तिमही ॥ स० ॥ फळ अवचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ यडी तिर्मल केंशुद्ध, मुक्ति मार्गना साधनारा साधुर्भनी जक्कि केंजा
शपित यात्सद्गणु प्राप्त यथु तेना सद्गामथी आत्माना ज्ञानादिक गुणो रगाय
नर्दी पणा मात्रनन फायाना अपचय योगनी प्रशृति यह, अने तेम थगाथी किं-
पातु मर्व प्रपर्नन अथपरु केंयगात्रूप थाय अने तेम थाय त्यारे मनोयोग
अथपरपणे प्रपर्ने, तेथी सदी कें निश्चयथी आत्मस्वरूप अपत्रेद फळ पण अप
चर जोप केंहे मगि ! तु देव ॥ ६ ॥

प्रेरक अपमर जिनमर ॥ म० ॥ मोहनीय दाय जाय ॥ म० ॥

कामिन पृगण मुग्नमर ॥ म० ॥ आनद्वयन प्रनु पाय ॥ म० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे समये अपमर फळ स्वरूपनी प्राप्ति थाय तेममये प्रेरक कें प्रेरणाना
दारक, सोनाता स्वरूपथी अन्यना स्वरूपने ठुवयामनार एवा चड्प्रन परमेश्वर प्रा-
यनंह ते अने आमा प्रपर्नंह ते एम हे मगि ! स्वरूप तदामरणे आत्मा प्रपर्त्या
यक्षे अचिनतीय आमगक्षिर्यी नोहनीय कर्मनो दाय दरे माटे केवळ ज्ञान केवळ
इर्हानो जे रामानद तेनो धन केंस्वमूदृ, तेज ते स्वरूप उतुण्णाने चड्प्रन स्थामी
केता पाय कें चरातु ते राजिन कें निन स्वरूपनिवापी प्राणीर्भना मनोवाचिन
पूरदारे हे मगि ! माहात्मु मुरनर कें स्वरूपूद ते ॥ ७ ॥ इनि चड्प्रतमनयन

॥ अथश्री सुवृद्धि जिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

सुवृद्धि जिणेसर पाय नमिने ॥ शुभकरणी एम कीजेरे ॥

अतिघणो ऊलट अंग धरीने ॥ प्रहृ उठी पूजीजेरे ॥ सुवृ० ॥१॥

अर्थ ॥ हवे श्रानंदघन सुवृद्धि जिनना पूजनना जेदपूर्वक स्तवनने करतो थको, चत्वय प्राणीउने यथातथ्य पुजननुं फल उपदेशे दे. अहो नव्यो ! तमे सुवृद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमिने हवे पठि वर्णवीश तेवी शुभ करणी करो अर्थात् स्वरूप अनुयायी कर्तव्य आचरो, वा, देवगतिदायक शुभ करणी शुरु करो. ते शुभ करणी आ प्रमाणे दे. जेम संसारी जीवने विवाह प्रमुख कारणो श्रिति हर्षना स्थानक दे, वा, अपुत्रीयाने पुत्रोत्पत्ति जेम हर्षनुं स्थानक दे, तेम शुभगतिना इद्वनाराने प्रज्ञपूजन हर्षनुं स्थानक दे. माटे अत्यंत उद्वास अंगमां धारण करीने, जन्ममां ते दिवसने धन्य भानतां अहो नव्यो ! तमे हर्षोत्कर्प सहित प्रज्ञातमां उठीने अन्य सर्व संसारी कामो कर्या पहेलां सुवृद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमस्कार करी, पूजनरूप शुभ करणी करो ॥ १ ॥

ऊच्यन्नावशुचिन्नाव धरीने ॥ द्वरखे देहे जइएरे ॥ दह

तिगपण अहिगम साचवतां ॥ एकमना धुरि अइएरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे जे खते पूजा करवी ते ते खते प्रथम निर्मल जलथी स्तान करबुं अने शुद्धवस्त्र परिधान करवा, तेटलीज शुचि कें पवित्रता करवी, एम कर्त्तानी मान्यता नव्यी, पण ऊच्य अने ज्ञाव वंनेनी पवित्रता कही दे. ते प्रमाणे ऊच्य जावनी पवित्रताथी साक्षात्रण कोइ रोमरोजी विकस्वर थकां, निस्तिहि प्रमुख दश त्रिक तथा पांच अज्ञिगमन, जे रीते प्रवचन सारोङ्कार तथा चैत्यवंदनज्ञाप्य प्रमुख यंथोमां कहा दे, ते सर्व रीत साचवतां थकां हर्षनजर हैये जिनमंदिर जइए. त्यां जह प्रथम तो मात्र पूजा करवाने विषेज मननी एकायता करवी अर्थात् अन्य सर्व कार्यथी-सर्व प्रकारे मननी निवृत्ति करवी. एवीरीते तन्मयी यह पूजारूप शुभकरणी करीए ॥२॥

कुसुम न्द्वयण वर वास सुगंधो ॥ धूप दीप मन साखीरे ॥ अंग

पूजा पण नेद सुणी एम ॥ गुरु मुख आगम जाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पूजाना चार नेद दे. १ अंगपूजा २ अग्रपूजा ३ जावपूजा ४ प्रतिपत्ति

पूजा तेमा प्रथम अगपूजाना पांच ज्ञेद रे १ कुसुम ते भोगरो, चवेळी, गुलाब प्रमुख २ न्हवण ते गगाजल प्रमुख ३ वर के० प्रधान चदन, कस्तुरि, वरास प्रमुख ४ धूप ते अगर, सेव्हारसना दशाग धूप ५ वीं तथा सूतरनी वत्तियुक्त वीपक आ सब मननी एकाग्रताए सार्थक रे अने ते विना निरर्थक रे आ अगपूजा पण के० पाच ज्ञेदे जेम आगममा कहींठे तेमज युरुमुखथी श्रवण करी रे ॥ ३ ॥

एहनुं फल दोय ज्ञेद सुणीजे ॥ अनंतर ने परपरे ॥ आणा
पालण चित्त प्रसन्नी ॥ सुगति सुरमदिरे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पूर्णोक्त अगपूजानु फल कहे रे तेनु कार्य सिद्धरूप फल वे प्रकाखु रे १ अनंतर २ परपर, ते जेम सिद्धातमाथी श्रवण कर्यु रे तेज प्रमाणे कहु तु जे पूजामा तदाकार वृत्तिये सामि सेवक सवये प्रमत्ते, ते परमेश्वरनी आङ्गो लोपे नहीं चित्त प्रसन्नी के० मननी हर्ष प्रवृत्तिये आङ्गोपालनरूप फलनी प्राप्ति थाय ते पूजानुअनंतर के० आतरा रहित फल जाणवु कारण के जेने प्रक्षु आङ्गोनी प्राप्ति घड तेने जेनदर्शननु सवयेस द्वस्तगत थयु अने ए रीते आङ्गो सहित पूजन करनाराने परपर फल तो मुक्ति तथा सुगति के० उत्तम मनुष्यगति अने सुरमदिर के० देवजुन्-यन प्राप्त थाय तेमा पण जागधिकपणे मुक्तिज कहीं रे परतु जवस्थितिनी परि पयताना कारणने अजावे तथाविध जापनी निर्मदता न होय तोपण मनुष्य तथा देवनी उत्तम गति पामे ॥ ४ ॥

प्रथ अद्वात वर धूप पझ्यो ॥ गव नेवेद्य फल जल जरीरे ॥ आग
अग्रपूजा मसि अरुपिध ॥ जावे जविरु शुभगति वरीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ दृपे अग्रपूजा नामनो वीजो नेद वर्णवे रे पूर्णे पाच ज्ञेद अगपूजाना कहा ते साये ग्रण ज्ञेद अग्रपूजाना कहे रे १ अद्वात ते शुद्ध तत्त्वु र २ नेवेद्य ते साकर प्रमुख ३ फल ते सोपारी प्रमुख गम पूर्णोक्त ४ न्हवण २ चदन ३ पुष्प ४ धूप ५ वीप, साये अग्रपूजाना ग्रण नेद मेष्वता आर ज्ञेद थाय रे ते अग तथा अग्रपूजा जे जव्यजीव जावसहित करे ते प्राणी शुभगति के० पचम गति जे मुक्ति तेने प्राप्त करे ॥ ५ ॥

सत्तर ज्ञेद एकविश प्रसारे ॥ अछोत्तर गत ज्ञेदेरे ॥ जागपूजा
वहुविवि निरधारी ॥ दोहग झगति रेंद्रेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ दृपे अग तथा अग्र पूजाना भवी सत्तर ज्ञेद वताये रे १ न्हवण २ वि-
षेदन ३ वद्वुग ४ गामदेव ५ पुष्प ६ पुष्पमात्रा ७ पचमर्ण पुष्प ८ चूर्ण ९ धजा १०

श्री आनंदधनकृत चतुर्विंगतिजिन स्तवन्। घोषना १८
 आजरण १३ पुष्पधर १४ पुष्प पगर १५ अष्टमंगल १४ वृप १५ गीत १६ द्वै
 चाजीत्र ए रीते सचर ज्ञेइशी, एकवीश प्रकारथी, एकसो आठ ज्ञेइशी अ-
 हजार आठ ज्ञेइशी पण पूजा थाय. ए सर्व पूजाना ज्ञेइ जाव सहित आ-
 सुगति प्राप्त थाय. इवे त्रीजो पूजानो ज्ञेइ ते जावपूजा रे. जाव अच्छें परमात्मा-
 स्वरूपने ज्ञानादिक वहुविधि केण व्यापां प्रकारे निरवारी केण ते ते वक्षणे अवधा-
 चितवत्तुं अर्थात् मनन करुं. ते त्रीजी पूजानुं फख, छुभान्य ले स्वरूपनी अप्रा-
 रूप कर्म संवंधनी चारे छुर्गति तेनो तथा तेना छुःखनो नाग थाय अने पं-
 गतिनी प्राप्ति थाय ते रूप रे ॥ ६ ॥

तुरिय ज्ञेइ पदिवती पूजा ॥ उपशम स्तीण सयोगीरे ॥
 चतुर्वा पूजा एम उत्तर ऊयणे ॥ ज्ञापी केवल भोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इवे पूजानो तुरीय केण चोथो ज्ञेइ जे पनिवर्ची केण प्रतिपत्ति पूजा तेनुं
 स्वरूप कहे रे. प्रतिपत्ति केण अर्गीकार करुं अर्थात् पोताना स्वरूपने अविविभापणे
 आदरबुं ते प्रतिपत्ति पूजा रे. ते, अन्यारमा उपशम, वारमा जिणमोही अने ते-
 रमा स्तोगीकेवली गुणवाणे प्राप्त थाय. ए रीते चार प्रकारनी पूजा, ऊचराव्ययन
 स्त्रवना नम्यक पराक्रम नामना अव्यवनमां केवल ज्ञानना ज्ञानी केण धारण करनारा
 उप्योगे उपदेशेद्वारी रे. तेवी अहो भव्यो! नन ममत्वमां यम्न थइ, परज्ञवनी वीकने
 अवगणी. जन्स्त्रवना ज्ञापण करनाग. परमेश्वरनी पुष्प, वृप प्रमुख पूजामां आरंज
 द्वेन तो तिस्त्रांतमां तेवी पूजानुं वर्णन नहीं करनां नियेद्य करत; परंतु तेमणे तो बाज
 जाए। करवाने उपदेश करेद्वा रे ॥ ७ ॥

एम पूजा वहु ज्ञेइ सुणीने ॥ सुखदायक दुन्हकरणीरे ॥
 ज्ञाविक जीव करये ते खेडे ॥ आनंदधन पद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मादे हे भव्यो! ए रीते डच्य जाव पूजाना व्यापां ज्ञेइ ते सुख केण सुक्षि-
 द्धन आपनारूप द्युम करणी अर्थात् आत्माने न्यस्तरूप प्राप्त करावनार कर्चन्य
 अवधा करीने जे ज्ञविक जीव, डच्यपूजा तथा जावपूजा कर्णदो ते प्राप्ती आनंद
 अनिवार्य अतिशय प्रमोदना जगवन्य पद केण सुक्षिपदनी धरणी केण ज्ञमिने
 तत करदो ॥ ८ ॥ इति चतुर्विंशति जिन न्यवन ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥ मगदिकमाखा शुणह विशाला ॥ ए देवी ॥

शीतल जिनपति लखित त्रिजंगी ॥ विविध जगी मन मोहरे ॥

करुणा कोमलता तीक्षणता ॥ उदासीनता सोहरे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शीतलजिन ! सामान्य केवलीनास्वामि तमारा स्वरूपमा रमण थयेली, प्रत्यक्ष त्रिरोधानासी परतु तमारे विषे अविरोधपणे प्रवत्तेली, माटे ते मनोहर रे, एवी त्रिजंगी के० त्रण रे प्रकार जेना एवी एक त्रिजंगीने विषे, वही मूल जगीना नामोना अर्थ रिजेदे जगातरनी रचना विविध के० नाना प्रकारनी रे, ते जब्य जीवोने मनोहर के० चमत्काररूप रे, परतु भनमा जयानकपणे छुर्धपूर्ण नथी ते त्रिजंगीनी जग रचनानु स्वरूप कहे रे १ करुणा ते भननी कोमलता, दयाना परिणाम ते शीतलजिनना स्वज्ञावरूप अहिंसक जावेज परिणाम्या रे अहि करुणानो कोमलता अर्थ पद्य रचनामाज कयों रे, ते दोष नथी, कारण के जाप्य निर्युक्तिमा, पोताना पदनो अर्थ पोतेज योजनामा करे तेमा दोष नथी एम कहेलु रे वही तीक्षणता के० तीक्षणशृंगि, कूरता, छुर्धपूर्ण, आ वीजो जग रे अने उदासीनशृंगि ते वीजो जग रे जब्य जीज, काल परिपाक कारण भलता सेहेजे सिङ्ग थाय, माटे दया चितव थाथी शु ? वही कर्म पण सेहेजे सपी जाय, माटे कोमलता तथा तीक्षणतामा मध्यस्थ जावे प्रशृंगि करवी ते उदासीनता, एवी शीतलजिननी मनोहर त्रिजंगी रे ॥ २ ॥

सर्व जतु हितकरणी करुणा ॥ कर्म विदारण तीक्षणरे ॥

हानादान रहित परिणामि ॥ उदासीनता विक्षणरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ दूचे तेज त्रिजंगीनो सज्ज थतावे रे समस्त सूक्ष्म, थादर, ग्रस, थापर ससारी जीवमात्रने हितमारी चिंतणा ते करुणा नामनो प्रथम जग ज्ञानाननरणादि कर्मनु विदारख, नाश करखु ते तीक्षणता अहि निर्दीयपणु रे अर्थात् वापडा, राक ज ढोने कोण दृष्टे एवी रीते कर्मोनो नाश करवामा दया आगती नथी ते तीक्षणता नामनो वीजो जग दृष्टे वीजो जग उदासीनता, जे उजय विक्षणपी होवायी जेनो असज्जवज होय तेनो सज्ज कहे रे हान के० गोडगायोग्य अने आदान के० ग्रहण करवायोग्य, तेथी रहित परिणामि अर्थात् गोडगायोग्य वस्तुने गोडगानी इत्रा नथी अने ग्रहण करवायोग्य वस्तुने ग्रहणानी इत्रा नथी, ए रीते इत्रानो निरोप कयों रे ते पण जापीने अर्थात् कृत्रिमपणे नहीं परतु स्वज्ञावेज निरोप करेको रे ३८ अनिट वस्तु उपर्यी स्वज्ञाविकरीते हानादानपणु थयेमु रे ते उदासीनता शृंगिने हे

विक्षण केण विचक्षण धारो. अहिं “च” अक्षर पादपूर्ति मादे तजी दीधो ठे. हवे उदासीनतानुं लक्षण कहे ठे. अनादि निजस्वरूपनुं जे ग्रहण ते आदान अने परपरिणतिनो त्याग ते हान. ए वनेथी रहित परिणामीपणुं ठे, केमके भारा अनादि स्वरूपने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष, जेम ज्ञान दर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञान दर्शन. तेवीज रीते निश्चय नये ब्रण कालमां आत्मामां कर्मनो असंज्ञवज ठे तेवी जोक पण शुं. ए रीते उदासीनतानो संज्ञव कहो ॥ ४ ॥

परङ्गःखरेदन इत्या करुणा ॥ तीक्षण परङ्गःख रीक्षेरे ॥

उदासीनता उन्नय विदक्षण ॥ एक गमे केम सीक्षेरे ॥ शी४ ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ए त्रिजंगीने विषे अर्थ नेदथी त्रिजंगी वतावे ठे. संसारी जीवोने अनादि कालथी पुज्जलादि जम संवंधथी थयुं जे दुःख, तेने ठेद्वानी इत्या ते करुणा नामनो प्रथम जंग, भगवंत महावीर स्वामि, संगमाना उपसर्गथी पुज्जलोने दुःख पामता देखीने रीके केण हर्ष पामे अर्थात् ज्ञानी पुरुष एम विचारे के अनादि कालथी ए कर्मो मने दुःख आपता इता, आजे ए दुःख पामे ठे एवी विचारणा ते रीक कहेवाय, ए तीक्षणता नामनो वीजो जंग; अने उन्नय विदक्षण केण ए वने लक्षणोथी जे जुटीज ठे ते उदासीनता नामनो वीजो जंग. ते आ प्रमाणे. जेमके पुज्जलसंगी जीवोने दुःखी जोइने विचारे के, तेउनी जबस्थिति परिपक थया विना मारी करुणाथी शुं याय? वक्ती ए पुज्जलादिक जम वस्तुने वीजाना करेखा उपसर्ग प्रमुखथी दुःखी देखीने हुं राजी थयो, परंतु मारुं स्वरूप निश्चयथी एक आनंदोपेतज ठे. मादे जम तेने रोकी शके नही, ते उदासीनता. एम ब्रणे लक्षण कहा. ते एक परमेश्वररूप भाम केण स्थानकमां शीरीते सिद्धयाय? केमके तेना लक्षण चिन्ह जिन्ह ठे, तेथी एक स्थानकमां केम पामिये? तेनो उत्तर आगदी गाथामां आपे ठे ॥ ३ ॥

अन्नयदान ते भखदय करुणा ॥ तीक्षणता गुणजावेरे ॥

प्रेरण विषु कृत उदासीनता ॥ एम विरोध मति नावेरे ॥ शी४ ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ते त्रिजंगीनुं शीतल परमेश्वरमां अविरोधिषणे अवतरण करी देखाडे ठे. कोइ जीवने जय न उपजाववो एबुं अन्नयदान सर्व जीवने परमेश्वर आपे ठे, ते करुणा; ते राग देष्परूप मलना क्षयथी याय ठे. हवे सुमति पुरे ठे के, तीक्षणता अने करुणाने परस्पर विरोधि जाव ठे, मादे ज्यां करुणा त्यां तीक्षणता केम संज्ञवे? उच्चर के-परमात्मामां स्वयुण स्वभाव एवोज ठे के, कर्मो ऊपर अति तीक्षणता तेमने उत्पन्न याय. अहिं जीव उपर करुणा अने कर्म उपर तीक्षणता द्वेवाथी मतिमां वि-

रोध आवतो नथी वक्षी मतिनो अर्थं सुमति करीए तोषण प्रियोधिष्ठु नथी १
 वीजो जग हवे त्रीजा भगनु स्वरूप कहे रे प्रेरणा कर्या पिना उदासीनता रे ज्या
 इष्टनो वियोग अने अनिष्टनो सयोग थाय त्या उदासीनता थाय, परतु ते छु गर्नी
 प्रेरणाथी यह कहेवाय, पण परमेश्वरने प्रिये जे उदासीनता रे ते प्रेरणापिना रे,
 केमके आत्मर्थमयी वीतराग परिणति परिणमि परमात्मवृत्तिये स्वज्ञाव प्राप्ति यह,
 तेनो शो हर्षे, तेथी प्रेरणाविना उदासीनता रे भाटे हे सुमति । त्रीतक परमेश्वरमा
 पूर्वोक्त रीते त्रिजगीनी परस्पर विरोधता आपती नथी ॥ ४ ॥

शक्ति व्यक्ति त्रिज्ञवन प्रज्ञता ॥ निग्रथता सयोगेरे ॥

योगी ज्ञोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयोगी उपयोगेरे ॥ त्री० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे वे जागाना प्रयोगथी त्रीजो जागो थाय एवी पाच त्रिजगी कहे रे
 १ शक्ति २ व्यक्ति तेमनी साथे “न” जोडवायी ३ न शक्ति, न व्यक्ति वक्षी १ त्रि-
 ज्ञवन प्रज्ञता २ निग्रथता तेमनी साथे “न” जोडवायी ३ न त्रिज्ञवन प्रज्ञता, न नि-
 ग्रथता एम जांगा थाय रे स्वगुणपर्यायने ग्रहवानु सामर्थ्य ते “शक्ति” तेज शक्तिथी
 स्वस्वज्ञावनु प्रत्यक्ष करबु ते “व्यक्ति” वक्षी स्वगुण ग्रहण करता शक्ति फोरवानु
 शु काम ? ते तो आत्माना युण हता ते आत्मामा प्रगट थया, भाटे “नशक्ति” अने
 आत्मा पोताना स्वज्ञावमा रम्यो तेमा प्रत्यक्ष शु कुँ ? ते “नव्यक्ति” ए प्रथम त्रि-
 जगी वक्षी त्रण जगतना पूज्य तेथी “त्रिज्ञवन प्रज्ञता” अने वाहा अन्यतर ग्रंथीयी
 रहित तेथी “निग्रथता” स्वेत्वाये त्रण जगतना पूज्यपणाना अवारक तेथी “न त्रि-
 ज्ञवन प्रज्ञता” पासे उघो मुहूर्ति राख्ये नही, निग्रथी इझ्ने फरे नही, तेथी “न नि-
 ग्रंथता” ए वीजी त्रिजगी १ योगी २ ज्ञोगी साथे “न” जोडता ३ नयोगी, न
 ज्ञोगी मनवचन कायाना योगना रुधनारा तेथी “योगी” निजगुणना ज्ञोका, तेथी
 “ज्ञोगी” सिङ्क्लस्वरूपने चिंतवनारा तेथी “नयोगी” स्वज्ञावे सिङ्क्लगुणना अतर्जन्मी तेथी
 “नज्ञोगी” ए त्रीजी त्रिजगी १ वक्ता २ मौनी साथे “न” जोडता ३ नवक्ता,
 नमोनी छादशागीना उपदेष्टा, तेथी “वक्ता” आश्रव सवधी वचन न कथन करे,
 तेथी “मौनी” अनता तीर्थकरे छादशागी ग्रहणी तेमनाथी काइपण हिनाधिक न
 कल्य, तेथी “नवक्ता” तीर्थप्रवर्तनसमये छादशागी वचनवर्गणाए जापी, तेथी “न
 मौनी” ए चोथी त्रिजगी हवे अनुपयोग उपयोगने सयोगे पाचमी त्रिजगी वतावे
 रे १ अनुपयोगी २ उपयोगी साथे “न” जोडता ३ न अनुपयोगी, नउपयोगी उप
 योग प्रयुज्या विना अनतापदार्थ केवसज्ञानथी प्रत्यक्ष रे, तेथी “अनुपयोगी” केवस-

श्री आनंदघनकृत चतुर्विंशतिजिन स्तवन.

ज्ञानोपयोगी, केवलदर्शनोपयोगी, तेथी “उपयोगी”: सिद्धद्वयस्यामां केवलज्ञान के वददर्शन ए वे उपयोगोनो संज्ञव, तेथी “नञ्चनुपयोगी” परंतु उपयोग प्रयुञ्जवाचुं कारण कोइषण वसते पडतुं नथी, तेथी “नउपयोगी” ए पांचमी विज्ञंगी। ५ ॥

इत्यादिक वहु भंग विज्ञंगी ॥ चमल्कार चित्त देतीरे ॥ शीण॥ ६ ॥

रिजकारी चित्रविचित्रा ॥ आनंदघन पद लेतीरे ॥ शीण॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादि अनेक छिक संयोगी विज्ञंगीर्णना जांगा रे. जेमके १ कामका २ कोधकमै. साथे “न” जोमतां ३ नकामकमे, नकोधकमे. स्वस्तरूप यहवानो काम केण अनिवाप तेमां कमकेण व्यापि रेहेवापण. मोहादिक शत्रु हणतां कोध व्यापि र- हो रे. संज्ञवलननो लोन स्वपावी वारमे गुणठाणे चब्धा त्वारे “नकामी श निष्कामी अहिं कामकोधादि सर्वना त्यागी रे ए विज्ञंगी थङ्. तेमज ३ सकामी परपरिणातिने ३ नसकामी ननिष्कामी. स्वरूप यहवाने अनिवापा, तेथी “सकामी”. इत्यादि अनेक नहीं यहवास्थी, “निष्कामी”: कामकर्मने त्यागवायी, “नसकामी” अने पोताना अनेक नंतर्यणोमांथी एकपण युण उंगे न यहण कर्या, तेथी “ननिष्कामी”. इत्यादि अनेक विज्ञंगीर्ण रे. असंज्ञवपणाने प्राप करती थकी चित्तने चमल्कार उपजावनारी रे, केमके चित्र केण नानाप्रकारना विचित्रा केण अनेक भंग तरंगनी विज्ञंगी ते असंज्ञव संज्ञवरूप तेथी अचरिजकारीरे. जेमके करण, त्यांज तीक्षणता, त्यांज उदासीनता, ए केम संज्ञव माते आर्थर्यकारी रे. ए विज्ञंगीर्णनी फलप्राप्ति ते ज्ञानानंदना जराव हृप जे मुकिपद तेने लेतीकेण यहण करनारी रे. अर्थात् विज्ञंगीर्णना भंग ते पण आनंदघनपदथी व्यापी र- हैस रे ॥ ६ ॥ इति शीतखजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

“रागगोटी” ॥ अहो मतवाखे साजना ॥ ए देशी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामीरे ॥ अध्या तम मत पूरणपामी ॥ सद्वज सुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रेष्ठ ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांस प्रचुने सादीनृत करीने कहीरे. हे सुमति ! केवलज्ञानादि ल- द्मीवादा श्रेयांस परमात्मा आपण अंतर केण अंत.करणना सर्वज्ञेनना जामी केण जाणनार रे. ते सर्वना अंतरजामी तेथीज वेणुं नाम आनमाराम रे. वदी जेण च- स्वरूप संकंधी संपूर्ण ज्ञान अखंटितपणे शास्त करेस रे, तेथी अध्यात्ममनना पूरण पामी रे, वदी नि.प्रयाते मुकिगतिने प्राप्त करनारा रे ॥ १ ॥

रोध आवतो नथी वद्दी मतिनो अर्थ सुमति करीए तोपण प्रिरोधिपणु नथी ए
वीजो जग इवे त्रीजा जगनु स्वरूप कहे रे प्रेरणा कर्या विना उदासीनता रे ज्या
इष्टनो वियोग अने अनिष्टनो सयोग थाय त्या उदासीनता थाय, परतु ते ऊसनी
प्रेरणायी थइ कहेवाय, पण परमेश्वरने विषे जे उदासीनता रे ते प्रेरणामिना रे,
केमके आत्मधर्मयी वीतराग परिणति परिणमि परमात्मवृत्तिये स्वज्ञाव ग्रासि थड,
सेनो शो हर्षे, तेथी प्रेरणाविना उदासीनता रे माटे हे सुमति । शीतल परमेश्वरमा
पूर्वोक्त रीते त्रिजगीनी परस्पर विरोधता आवती नथी ॥ ४ ॥

शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रज्ञुता ॥ निग्रथता सयोगेरे ॥

योगी ज्ञोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयोगी उपयोगेरे ॥ झी७ ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ इवे वे ज्ञागाना प्रयोगयी त्रीजो ज्ञागो थाय एवी पाच त्रिजगी कहे रे
१ शक्ति २ व्यक्ति तेमनी साथे “न” जोडवायी ३ न शक्ति, न व्यक्ति वद्दी १ त्रि
जुवन प्रज्ञुता २ निग्रथता तेमनी साथे “न” जोडवायी ३ न त्रिजुवन प्रज्ञुता, न नि-
ग्रथता एम ज्ञागा थाय रे स्वगुणपर्यायने ग्रहवानुसामर्थ्य ते “शक्ति” तेज शक्तियी
खल्खज्ञावनुं प्रत्यक्ष करतु ते “व्यक्ति” वद्दी स्वगुण ग्रहण करता शक्ति फोरववानु
शु काम ? ते तो आत्माना गुण हता ते आत्मामा प्रगट थया, माटे “नशक्ति” अने
आत्मा पोताना खल्खज्ञावमा रम्यो तेमा प्रत्यक्ष शु करुं ? ते “नव्यक्ति” ए प्रथम त्रि
जगी वद्दी त्रण जगतना पूज्य तेथी “त्रिजुवन प्रज्ञुता” अने वाहा अच्यतर ग्रथीयी
रहित तेथी “निग्रथता” सेहाये त्रण जगतना पूज्यपणाना अवारक तेथी “न त्रि-
जुवन प्रज्ञुता” पासे उघो मुहूर्पत्ति राखे नही, निग्रथी यझ्ने फरे नही, तेथी “न
निग्रथता” ए वीजी त्रिजगी १ योगी २ ज्ञोगी साथे “न” जोडता ३ नयोगी, न
ज्ञोगी मनवचन कायाना योगना रुधनारा तेथी “योगी” निजगुणना जोका, तेथी
“ज्ञोगी” सिद्धखल्पने चिंतपनारा तेथी “नयोगी” खल्खवे सिद्धगुणना अतज्ञावी तेथी
“नज्ञोगी” ए त्रीजी त्रिजगी १ वक्ता २ मौनी साथे “न” जोडता ३ नवक्ता,
नमौनी छादशागीना उपदेष्टा, तेथी “वक्ता” आश्रव सवधी वचन न कथन करे,
तेथी “मौनी” अनता तीर्थकरे छादशागी प्ररूपी तेमनायी काङ्घण हिनाधिक न
कल्य, तेथी “नवक्ता” तीर्थप्रवर्तनसमये छादशागी वचनवर्गणाए ज्ञापी, तेथी “न
मौनी” ए चोरी त्रिजगी इवे अनुपयोग उपयोगने सयोगे पाचमी त्रिजगी वतावे
रे १ अनुपयोगी २ उपयोगी साथे “न” जोडता ३ नअनुपयोगी, नउपयोगी उप
योग प्रयुज्या विना अनता पदार्थ केवक्षज्ञानयी प्रत्यक्ष रे, तेथी “अनुपयोगी” केवक्ष-

श्री आनंदघनदृष्ट चतुर्विंशतिजिन स्तवन्.

हानोपयोगी। केवलदर्शनोपयोगी, तेव्री “उपयोगी”, सिद्धान्तस्थामां केवलज्ञान के-
वदर्शन ए वे उपयोगोनो संचर, तेव्री “नअनुपयोगी” परंतु उपयोग प्रकृञ्जवासुं
कारण कोष्ठण वसते पठतु नर्थी, तेव्री “नउपयोगी” ए पांचमी विजंगी। ॥ ५ ॥

इत्यादिक वहु भंग विजंगी ॥ चमत्कार चित्त देतीरे ॥ शीण॥ ६ ॥

रिजकारी चित्रविचित्रा ॥ आनंदघन पद् खेतीरे ॥ शीण॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादि अनेक द्विक संयोगी विजंगी उना जांगा रे, जेमके ३ कामकर्म में

२ कोधकर्म, लाये “न” जोकर्ता ३ नकामकर्म, नकोधकर्म, स्वस्त्रृप वहनामा काम
के० अनिवाप तेमां कमके० व्यापि रेहेवापाणं मोहादिक शत्रु व्यष्टानां कोध व्यापि र-
हो रे, संज्वलननो दोन स्वपावी वारमे हुएगागे चब्या त्वारे “नकामी नकोधी” :

३ नगद्वामी ननिष्कामी सर्वना त्वारी रे, ए विजंगी वड, तेमज ३ सकामी ४ निष्कामी
नहीं अहवाची, निष्कामी स्वस्त्रृप वहनाने अनिवापा, तेव्री “नसकामी” अने पोनाना अ-
नंगयुणोमांथी एकपण उष उषे उषे न अहण कर्ये, तेव्री “ननिष्कामी” : इत्यादि अनेक

विजंगीरे असंज्वलणाने प्राप्त करती थकी विच्छने चमत्कार उपजावनारी रे,
केमके वित्र के० नानाप्रकारना विचित्रा के० अनेक भंग तरंगनी विजंगी ते असंज्वल
संज्वलस्त्रृप तेव्री अचरिजकारीते, जेमके कलणा, त्वांज नीद्वयाता, त्वांज उदासीनता,
ए केम संज्वल मादे आर्थर्यकारी रे, ए विजंगी उनी फखप्राप्ति ते जानानंदना भराव
स्त्रृप जे मुक्तिपद तेने खेतीरे० यहण करनारी रे, अर्थात् विजंगी उना भंग ते तरंग,
केवलज्ञान केवलदर्शनात्मक रे, अथवा एकेक नंग ते पण आनंदघनपद्धती व्यापी र-
हेतु रे ॥ ६ ॥ इति शीतवजिन स्तवन्.

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन् ॥

॥ रागगाढी ॥ अहो मतवावे साजना ॥ ए देवी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामीरे ॥ अव्या
तम मत पूरणपामी ॥ महज सुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रेण ॥ २ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांस प्रचुने साढीचृत करीने कहेते, हे सुमति ! केवलज्ञानादि ल-
क्ष्मीवाला श्रेयांस परमात्मा आपण अंतर के० अंत करणना जामी के०
जानेनार रे, ते सर्वना अंतरजामी तेव्रीज तेउ नाम आतमराम रे, बदी जेए स्त-
रृप संवंधी संपूर्ण ज्ञान असंदित्पणे प्राप्त करेत रे, तेव्री अव्यात्मसतना पूरण
पामी रे, बदी निष्प्रयाते मुक्तिगतिने प्राप्त करनारा रे ॥ ३ ॥

सयदसंसारी इडियरामी ॥ मुनिगुण आत्मगमीरे ॥

मुस्त्यपणे जे आत्मरामी ॥ ते केवल नि कामरि ॥ श्रीश्रेण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ सर्वे ससारी जीवो, शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श रूप इंडियोना सुख ज्ञागमा दीनपणे प्रवृत्ति रक्षा रे अने सिद्धांत वचनामुसारे आत्मस्वरूपने साधनारा मुनिराजो ज्ञानादि आत्मगुणोमा रमी रह्या रे तेथी निश्चयनयने मत्ते मुग्यपणे, युणगुणीने अनेदस्वरूपे, आत्मस्वरूपमा तद्रूपपणे प्रवृत्ति करनारा जे मुनिराज, तेमने तो नि केवल एक आत्मस्वरूपनी कामना शिवाय अन्य अनिकाप मात्र नयी, तेथी तेउ निष्कामी रे ॥ ७ ॥

निजस्वरूप जे किसिया साधे ॥ तेह अध्यात्म लहियेरे ॥ जे

किसिया करी चारगति साधे ॥ ते न अध्यात्म कहियेरे ॥ श्रीश्रेण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! जे प्राणी पोताना आत्मस्वरूपमा रमना थका प्रतिकमणादि पापनिवर्त्तनरूप कियामात्रने साधे ते प्राणी अध्यात्म के० आत्मामा अत्मतो रम्य एतु सखरूप अविदेकरूप आत्मस्वरूप पामे अर्थात् तेने अध्यात्म लहिये के० क हिए परतु जे प्राणी निजस्वरूपमा नहीं रमता कियाकरी चारगति सिद्धकरे अर्थात् शुभकरणी करी देव तथा मनुष्यनी गति सिद्धकरे अने अशुभ करणी करी नरक तिर्यंचनी गति सिद्ध करे, द्वांत के साधुपणामा देव अने मनुष्यनी गति सिद्ध करे अने साधुपणु रता वचक करणी करी अथवा प्राणातिपातादियुक्त करणी करी नरक तिर्यंचगति सिद्ध करे, ते कियाने अध्यात्म स्वरूप अनुयायी किया न कहीए ॥ ८ ॥

नाम अध्यात्म रवण अध्यात्म ॥ ऊव्य अध्यात्म ठंडोरे ॥

जावअध्यात्म निजगुण साधे ॥ तो तेहशुं रट मंमोरे ॥ श्रीश्रेण ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मकियाना चाव प्रकार रे तेमा ग्रथम, अध्यात्मशब्दनो मात्र अर्थ पण न जाणे अने जे युरे तेने कहे के अमे अध्यात्मी रईए ते नाम अध्यात्म वीजो अध्यात्म स्वरूपनो अक्षरविन्यास आदि स्वरूप ते स्यापना अध्यात्म वीजु, रेचक, पुरक, कुञ्जकादि प्राणायामना भेदे वाह्यवृत्तिए परु ध्यान घतावे के जे मने देखी सोको एम जाणे के तेणे अतरवृत्तिए आत्मानु स्वरूप प्रत्यक्ष कर्यु देखाय रे, परतु पोते तो कोरानेकोरा होय, ते ऊव्य अध्यात्म आ प्रणे अध्यात्म ठामवा योग्य रे तेथी ते उने तजीयो अने जे आत्मस्वरूपमा रमणतासहित कियामा प्रवर्तनरूप जाव ते जाव अध्यात्म ते आत्माना ज्ञान दर्शनादि गुणोने सिद्धकरे, निर्भव करे भाटे अहो चव्यो ! जो तमारे निजगुणनी सिद्धता करणी होय तो जाव अध्यात्मनीज रटना करो

शब्द अध्यातम अरथ सुणीने ॥ निरविकल्प चादरजोरे ॥

शब्द अध्यातम भजना जाणी ॥ हान ग्रहणमति धरजोरे ॥ श्रीश्रेष्ठ ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे जन्यो ! आत्माने अंतर्वर्ती आत्मस्वरूपमां तदाकारपणे रमणता करवी ते अध्यात्मशब्दनो अर्थ रे. ते गुरुमुखांशी श्रवणकरी, निश्चयनये आत्मानेविषे स्वरूपनुं निरविकल्पपणुं अर्थात् अनेकिपणुं रे ते आदरजो के० अवधारजो. वक्ती अध्यात्मशब्दना वीजा वे ज्ञेद रे. एकमां स्वरूप अध्यात्मीपणुं रे अने वीजामां स्वरूप अध्यात्मीपणुं नयी. माटे भजना समजजो अर्थात् मात्र नामपण अर्थ रहित एवो अध्यात्मशब्द, स्वरूपनी सिद्धताना अचावने दीप्ते हान के० ग्रंसुवा योग्य रे, तेथी तेमां ग्रंडवानी बुद्धि धारजो, अने अर्थ अध्यात्ममां स्वरूपनी सिद्धता होवाथी तेने ग्रहण करवानी बुद्धि धारजो ॥ ५ ॥

अध्यातम जे वस्तु विचारी ॥ वीजा जाण लवासीरे ॥

वस्तुगते जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मत वासीरे ॥ श्रीश्रेष्ठ ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तु के० आत्मतत्त्वने तदाकार स्वरूपे विचारनारा, लक्ष्य लक्षणना अनिन्द्र विचारी, तेतो अध्यात्मने ग्रहण करेने; अने लेउ अध्यात्मस्वरूपशी जिन्न तथा शुन्य हृदय रनां हृषि ग्राहीपणे अध्यात्मसत्तना ममत्वी, मात्र निश्चयनयना वाद करनार तेउतो लवासीके० लबाड रे. जे मुनिराज वस्तु के० सिद्धांतनेविषे गत के० प्राप्त थवेद एवुं वस्तु के० अध्यात्म तत्त्वप्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् सिद्धांतमां जेस अध्यात्म स्वरूप कक्षुं रे तेमज प्रकासे, ते आनंदघन के० अनंत केवलज्ञानीउनो जे सप्तनयाधित मत के० जिनमत, तेनो वासी होय ॥ ६ ॥ इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी तथा परज ॥ तुंगीवानिरि शिखर सोहे ॥ ए देवी ॥

वासुपूज्यजिन त्रिजुवनस्वामी ॥ घननामी परनामीरि ॥

निराकार साकार सचेतन ॥ करम करम फलकामीरे ॥ वासु ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो जन्यो ! वासुपूज्य प्रनु त्रणजुवनना पूज्य होवाथी स्वामि रे. वक्ती जे घननामी के० घणां नामवालां रे अने जे परमात्माना नामो तै तै परिणामेज परिणामि रखा रे. हृवे संसारी जीवोना वे ज्ञेद रे १ वहिरात्मा २ अंतगत्मा. तेमां अंतरात्मानी अहिं विवक्षा करतां, निराकार ते सामान्य उपयोग अने साकार ते विशेष उपयोग, एवां उपयोग लक्षणमहिन चेतन रे. ते करम करम फलकामी के० सामान्य

विशेष शुञ्चशुञ्च उपयोगे प्रवर्ततो चेतन ज्ञानापरणादि कमोनो कामी कें अनिकारी
दापी तेमां शुञ्च उपयोगे प्रवर्ततो चेतन शुञ्चपुण्य प्रकृतिनो कामी कें अनिकारी
अने शुञ्च उपयोगे प्रवर्ततो चेतन अशुञ्च पाप प्रकृतिनो कामी रे ॥ १ ॥

निराकार अन्नेद सग्राहक ॥ ज्ञेदयाहक साकारोरे ॥

दर्शनज्ञान इन्नेट चेतना ॥ वस्तुयद्वण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे निराकारनु खक्षण कहे रे ज्ञेदरहित जे सग्रह करनार ते निराकार,
दर्शनोपयोग अने जे जिन्न जिन्न स्वरूपनो ग्राहक ते साकार, ज्ञानोपयोग एवी रीते
निराकार अने साकार वे उपयोगना ज्ञेदर्थी चेतनाना पण वे ज्ञेद थया एवी रीते
सामान्य विशेष वे उपयोगे जडर्थी आत्मतत्त्वने जिन्न कें जुङु करी लेबु ते रे व्या-
पार कें प्रवर्तन ते जेनु एवो चेतनावत खक्षणयुक्त अतरात्मा रे ॥ २ ॥

कर्त्ता परिणामी परिणामो ॥ कर्म जे जीवे करीएरे ॥

एक अनेक रूप नयवादें ॥ नियते नर अनुसरीएरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्मनु कर्त्तापणु ते परिणामि कें व्यापीने परिणामो कें परिणमबु ते
रे, अर्थात् कर्मनु कर्त्तापणु ते परिणामे व्यापि रख्यु रे पण जीवमा नथी कोइ पुठे के
जीवमा कर्त्तापणु केम नथी, तेने उत्तर के, जे परिणामे प्रवर्त्ते ते कर्मने जीव करे
जेमके मिथ्यात्वपरिणामे परिणमतो जीव, मिथ्यात्व कर्मप्रकृतिने करे पण अविर-
तिने न करे तेथी कर्त्तापणु परिणाममा रे, पण जीवमा नथी जे करीए ते कर्म तेथी
करणामात्र कर्म तो एकज रे, परतु नयवादे कें नय घचन मार्गे तेना अनेक रूप
रे अर्थात् वस्तु तत्वे एक नयवचन मार्गे ज्ञानापरणादि कर्म आठ रे ते हे जब्य
नर कें भनुप्यो नियते कें निथ्यथी अनुसरिये कें अगधारो ॥ ३ ॥

छ खसुखरूप करमफल जाणो ॥ निश्चय एक आनदोरे ॥

चेतनता परिणाम न चूके ॥ चेतन कहे जिनचदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे जब्यो ! छ खस्तरूप अने सुखस्तरूप एवा वे कर्मना फल रे ते व्यव
हारनयनी अपेक्षायें वे अने निश्चयनयने मते तो ग्रणे कालमा निज स्वज्ञावनोज
आत्मा कर्त्ता, एक अद्वितीय आनदमयी रे चेतनाने निये चेतन्य धर्म ते चेतना
पाणु रे, ते चेतनतानो परिणाम कें परिणमन धर्म ते चेतना कदि मुके नही, केमके
ते तेनो धर्म, युण रे धर्मथी धर्मनी उंखाण थाय, युणथी युणीनी उंखाण थाय
यथा ॥ धर्मी अपने धर्मकु ॥ न तजे तिनूकाव ॥ आत्मज्ञान युण नर तजे ॥ जड किं-

रियाकी चाल ॥ २ ॥ माटे धर्मने अज्ञावे धर्मीनो अनाव अने तेने सद्ग्नावे तेनो
सद्ग्नाव, तेथी चेतनता धर्मवंतने श्रीजिनचंडे चेतन कहो ॥ ४ ॥

परिणामी चेतन परिणामो ॥ ज्ञान करमफल ज्ञावीरे ॥ ज्ञान
करमफल चेतन कहिये ॥ देजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे चेतना धर्मे परिणामि के० व्यापी रहो एवो चेतन जे जीव तेनुं प-
रिणामो के० परिणमन शुं रे, अर्थात् धर्म शुं रे ? ते कहे ठे. ज्ञान के० निजस्वरू-
पझान, जेमके हुं चेतन दुं अने पुज्जलादिकमां रमी रहोहुं, ते जरु रे. हुं अविना-
शी तुं, जम विनाशी रे. हुं चेतन्य धर्मी तुं, शास्वत दुं, ते सम० पडण विघ्वंसन
धर्मी रे. तेथी ते ज्ञानस्वरूप आत्मानुं करम के० करदुं ते शुद्ध आत्मस्वरूप प्रातिरूप
फल तेनो ज्ञावि के० विचारनारो तेथी ज्ञान के० आत्मज्ञानानुं करम के० करदुं, प्रयु-
जदुं तेनुं फल ते स्वरूप प्राप्तिरूप तेने चेतनावंत चेतन कहीए एटदे लक्षण सहित
चेतन कहीए; केमके सिद्धांतमां स्वरूप प्राप्ति अद्व तेनेज लक्षण सहित चेतन कहो
रे; अने बीजा तो कहेवा मात्र चेतन जाणवा. माटे अहो जब्यो ! ते शुद्ध आत्म-
स्वरूपने मनावी देजो के० निरंतर तेनी साथे हेत राखजो, अर्थात् स्वरूपमांज प्र-
वर्तजो. अन्य कांइ पण चितवनमां प्रवर्तशो नहीं ॥ ५ ॥

आत्मज्ञानी श्रमण कहावे ॥ बीजा तो उव्य लिंगीरे ॥ वस्तु
गते जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मति संगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे अंतरात्मवंत ज्ञानीने साधु कहीए, कारण के ते शुद्ध आत्मस्वरूपना
ज्ञाता रे. जेने आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष अद्व रहुं रे तेज श्रमण के० साधु कहेवाय रे.
“नाणेण्य मुणी होइ” इति वचनातः अने बीजा जे स्वरूपज्ञानथी रहित रे, तेतो
मात्र ठंडा मुहूर्पत्तिना धारक उव्यलिंगी रे. स्वरूप ज्ञानमां ज्ञावलिंगीपणुं रे.
उंडा मुहूर्पत्ति धारण करवामां उव्यलिंगीपणुं रे. माटे वस्तुगते के० आत्मवस्तु
जेम रे, तेमज आत्मवस्तु तत्त्वने जे प्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् आत्माथी
बहार स्वरूपज्ञान नथी परंतु आत्मानी अंदरज स्वरूपज्ञान रे, एदुं जे कहे. ते
आनंदघन मति संगी के० चित् आनंदनो समुह तेनी मति जे सुमति तेनो संगी के०
सहचारी थाय. ॥ ६ ॥ इति श्री वासुपूज्यजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मध्वार ॥ ईडर आवा आवदीरे ॥ ए देवी ॥

उख दोहग दूरें टट्यारे ॥ सुख सपदगु ज्ञेटा धींग धणी माथे कियारे ॥
कोण गजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दींग लोयण आज ॥ मारासिंशा व-
हितकाज ॥ विमलजिन ॥ दींग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनर्थी चारे गतिना छु य अने अ-
नादि कालनु अङ्गान सबधी छुर्जांग दूर टट्या केण नाश पास्यु वली प्रज्ञुने निरसता
हर्षे निर्जर गात्रो थवाथी आत्माने उद्घास प्रगट थवारूप सुख थयु ते सुखर्थी,
शमदम इम विचक्षण रुची, प्रज्ञु स्वरूपानुयायी अनुज्ञव सबधी प्रीत तेथी प्रगट
थती निजस्पृहप सपदा जे रबत्रय तेनो ज्ञेट केण मेलाप थयो हे सुमति ! परमात्माना
दर्शन मात्रर्थी छु य दोर्जांग दूर थया अने सुखसपत्तिनी प्राप्ति अर्ह, तो एवा धींग
केण समर्थने माथे धणी कर्या रता, अर्थात् वरवान धणीना सेवकने, रेटनर केण
खानारा अने मारनारा एट्डे के रातदिवस तुकशान करवाना इखाजमाज प्रवर्त्त-
नारा एवा भोद कपायादि जे नर, ते पराज्ञव करवाने समर्थ नर्थी एवा विमलनाथ
प्रज्ञुने मारा आजे नेत्रोथी दींग मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने प्रज्ञु
दर्शनर्थी मारा मनोवारित कार्य सिद्ध थया ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल विरपद देम ॥

समल अविरपद परहरीरे ॥ पकज पामर पेख ॥ विं ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गायानो अर्थ अन्वयर्थी करीए ठीए कमला केण खक्षीण पोताना
निवासनु स्थान, कमल कादगमा उत्पन्न थएछु होवाथी समल केण मस सहित रे
एम जाणी तथा ते कमलनी पासर्हीउ खरी जत्ती होगाथी अन्य कमलमा निवास
करवानी जहर पने एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी, रक्षी तेज कमलने पामर
पेह देण राक्षसमान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि केण तजी दीघु
अने हे सुमति ! तेणीए निरमल केण कर्मस्त्रप मेलरहित विमलनाथ प्रज्ञुना चरणक
मस केण पास्त्रप कमलने विरपद देस केण स्तिर स्थानक देसीने तेमा निवास कयो
अर्थात् त्रय जगननी छदमी प्रज्ञुना चरणकमलमा निवास करे रे सुध प्राणीउ छ
द्यैनो वास अन्यस्थलमा धारे रे, तेउ जूगा रे, कारण के विमलनाथ प्रज्ञुना चरण
कमलनी सेगा करवाथी निर्गाणपदादिक समस्त सपदाउ मखे रे ॥ २ ॥

श्रीआनंदघनकृत चतुर्विंशतिजिन स्तवनः

मुजमन तुंकपदं पंकजेरे ॥ लीनो गुण मकरंदं ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ ईंदं चंदं नागिंदं ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर ब्रह्मरार्घ लीन अई कम-
लमां तदाकार श्राय तेम मारो मनरूप ब्रह्मर, अनंत ज्ञानादि उण्युक तमारा चर-
एकमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेव रे अने ते हर्षणी एवा उन्मत्त थयो रे के०
मंदरधरा के०मेरु पर्वतीनी सुवर्णमय चूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक
समान गणे रे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगव ते वस्तुर्जे
श्री गणतीमां रे ? एम मारो मनरूप ब्रह्मर जाणे रे, एट्टुंज नहीं पण देवोना स्ता-
मि इंदं, तारायहनास्त्रामि चंदं अने नागेऽज्ञने पण रांक तुव्य गणे रे; एतु मारुं मन
मोहुं थयुं रे ॥ ३ ॥

साहेव समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥

मन विसरामी वालहोरे ॥ आत्मचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेव के० प्रभु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थ-
यो तेवी मारा सर्वकर्मरूप अबुर्ज, हवे मने परानव करी शक्तशे नहीं. वली हे प्रभु !
तमो संतुष्ट वये पोतारुं परमपट आपो रो तेवी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त
थया. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवायी
शांति नहोती तेवी हे प्रभु ! तमो मखवायी मनने स्थिरतारूप शांति थई तेवी
तमो मनना विसरामी रो. हे प्रभु ! तमो मने पूर्ण वहावा रो एट्टुंज नहीं पण मारा
आत्माने स्वरूपातिमारे परम आधार रो ॥ ४ ॥

दरिशन दीरे जिन नणोरे ॥ संशय न रहे वेध ॥

दिनकर करन्नर पसरतारे ॥ अंधकार प्रतिपेध ॥ विष ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ प्रभुने मैं नेवधी निरन्त्रा, ते प्रभुना दर्शननो
प्रजाव एवो रे के० जाव विगुर्जनाए ते प्रभुरुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाद्यनाए
ते दर्शनमां स्विरता पामी तेने स्वरूपने मारुं मनमां संशय के० ब्रांति रहे नहीं,
एट्टुंज नहीं पण प्रभुरुं थये मारुं स्वरूप एक रे थये तेनां वेद के० विरोध नहीं
एवी मननी निर्वोप स्थिति यद्य जाय. दर्शन के० दिन दर के० सूर्यना कर के० दिर-
णोनो जर के० समूह जगतनां प्रस्तरतांज थंधदारनो प्रतिपेध दे० निपेध वर्द्ध जाय
तेज प्रमाणे प्रभुरुं दर्शन थतांज संशर तवा वेद मात्र रहे नहीं. ॥ ५ ॥

अमीय भरी मूरति रचीगे॥ उपमा न घटे कोय ॥

गात सुधारस जीवतीरे ॥ निरखत तृपति न होय ॥ विष ॥ दी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परमात्मानी मूर्तिना स्वरूपनु अधिक वर्णन एक मुखे केटलु करी शकु ?
तोपण अब्यपमा वहु कहीश जगतमा अमृतसमान प्रशसापात्र कोइ वस्तु नथी,
तेथी नि केख अमृतमयज जेम कोईए रची होय तेम तमारी मूर्ति स्वजापिक तेवी
रचायेली रे जगतमा एवो कोई पदार्थ नथी के जेनी उपमा तमारी मूर्तिने आपी
ज्ञाकाय, तेमज तमारी मूर्तिमा उपमा सरधी अतिव्याप्ति, अव्याप्ति के आसन्नप एवो
दोष पण नथी, वही प्रत्यक्ष के अनुमान प्रमाण पण उपमा सरधमा वीजा पदार्थने
दोगतु नथी, अहीं जे मूर्तिने अभीयन्तरी कही ते तो मात्र वचन व्यापार करपारूप
उपमा कही रे, परतु प्रजुनी मूर्ति तो राग छेषना अज्ञापथी परम शातरूप अमृत
रसमाज जीक्षी रही रे, जाणे मूर्तिमान शातरस ऊपतो होय, तेवी मूर्ति रे वही
अमृतोपमा पण घटती नथी, कारण के अमृतथी तो मात्र अंगोपाग अजर थाय रे
अने प्रजु मूर्तिना शातरसथी आत्मा जन्मभरणरहित थाय रे तेथी प्रजुनी मूर्तिने
निगमता निरमता भारी चक्षुने, दर्शननी इत्तुने अने हृदयनेत्रने तृष्णि थती नथी

एक अरज सेवक तणीरे ॥ अवधारो जिनदेव ॥

हृषा करी मुज टीजीयेरे ॥ आनन्दधनपद् सेव ॥ विष ॥ दी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ देवे सुमतिपत आनन्दधन विमङ्गप्रजुने आधीन यह विनति करे रे हे
जिनदेव । मामान्य केमङ्गीना सामि, हु साजानद नामनो तमारो अनुचर, सेपक, तेनी
एव अरज अवधारो देव मानो मारा उपर सपूर्ण छुपा करी भने यापनानी इत्या क-
रता हो तो, वीजु तो शु परतु पाच अनुतरवासी देवोना सुगन्नी पण हु अजिसापा
रामनो नथी परतु निनमृत्युषी उत्पन्न थयो जे आनद, तेनो जे समूह ते रूप
पदने ग्रात करात्नारी एवी तमारा चरणकमलनी सेवा थापो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनन्तजिन स्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ कमरगनि देशी ॥

धार नग्नागनी मोदेखी दोदेखी ॥ चउदमा जिनतणी चरणमेगा ॥

धारपर नाचता देव गाजीगग ॥ मेवना वारपर रहे न देवा ॥ धार० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनन्दधन आ पदम काषमा जेनदर्शनीर्वनी जेनदर्शनथी विमुद्ध आ
चारा देशी छुग्नी यजाथी तेमज अननप्रनु भेपित चारिश्रनी पण छुपमनामा

छुकरता देखी महाङ्गी यवाधी सुमतिने कहे रे. हे सुमति ! तरवारनी तीक्षण धार उपर उधाहे पगे चाकबुं ते दोहेलुं रे, पण विचार करतां सेहेलुं रे, परंतु चउ-इमा श्रीअनंतनाथ प्रभुना चरण कें चारित्रनुं सेवन ते दोहेलुं रे. अर्थात् तरवारनी धार करतां चारित्रनी धार तीखी रे. जुरे के चोगठामां चारे वाजुए तरवारने वांधी ते तरवारोनी धारोनी वचमां गुलांटा खातां खातां निकली जनारा एवा वाजी-गरोने नाचता दीरा रे, परंतु चारित्रनी आसेवनारूप धारा उपर महागक्षिवंत एवा देवो पण रही शकता नथी, देवताउने ब्रतना उद्यनोज असंनव तो चारित्र प्रवर्तन तो क्यांधीज होय. तेथी तरवारनी धारा सुगम अने चारित्र प्रवर्तनरूप धारा विपम रे. ॥ ३ ॥

एक कढे सेवियं विविध किसिया करी ॥ फल अनेकांत लोचन न देखे ॥

फल अनेकांत किसिया करी वापडा ॥ रम्बडे चारगतिमांहि देखे ॥ धाण॥४॥

अर्थ ॥ कोइ गणजेदी, समुदायना नायक कहे रे के विविध प्रकारे तपस्या प्रमुख किरिया कें शाचरणा शाचरीने परमेश्वरना चारित्रनी सेवना करीए, कारण के चारित्रनुं मूळ क्रिया रे जेम दुंहकादि करे रे तेम. ते प्रमाणेवोलनारा प्रवर्तन रहस्यना अजाण रे. कारण के नथी जेमां एकांत फल ते अनेकांत फल एवी अनेक क्रियाउनां अनेक फल रे. जेम क्रिया जिन्न जिन्न तेम तेनां फल पण जिन्न निन्न उद्य पण जिन्न जिन्न ज्ञोगणण जिन्न जिन्न. जेम शाविन्नजना जवमां देवसुख ते संगमाना जवमां दान देवानुं फल तेम. आ सर्वे शुं लोचने नथी जोतां ? आ प्रमाणे अनेकांत रे फल जेनां एवी अनेक क्रिया करीने परमार्थगृन्य ते निरर्थक रतां आंधीना रेटनी जेम चारे गतिमां रडवडे कें परिच्छमण करे ते देखे कें न्याये अनेकांत फलवाली गतिनी समृद्धि यवाधी जवग्रमण टवे नर्ही. तेथी आत्मानी सिद्धि पण केम याय ? ए प्रमाणे एकांत क्रियाज करवी ते तो आश्रव रे. ॥ ४ ॥

गर्वना ज्ञेद वहु नयण निदालतां ॥ तत्वनी वात करतां न लाजे ॥

उद्र जरणादि निज काज करता थकां ॥ मोह नडिया कलिकाल राजे ॥ धार ३ ॥

अर्थ ॥ गर्व कें समुदायविशेष, जेस के खरतर, तपा, लोंका प्रमुख गठो; तेम-ना मतोना ज्ञेद यहण करतां, प्रतिज्ञेद पण यहण याय. तेवा मत मतांतरना वहु कें घणांजेद प्रतिज्ञेद नयण निदालतां कें तात्त्विक दृष्टियें, हृदयरूप नेत्रे, विचारी जोतां एम लागेरे के शुं ते निर्देज्ञोने आत्मतत्त्वनी वातो करतां झरम नर्ही आवती होय ? कारणके ममत्व अने तत्वनी वातने परस्पर विरोध रे. जेम वृक्षना को-

टरमा अभि होय तो वृक्ष नवपूष्व न थाय, तेम आत्मामा ममत्व होय तो आत्म
तत्त्वन्ध वृक्ष नवपूष्व न थाय तेथी शुद्ध तत्त्वज्ञानी मत भमत्वीने तत्त्वनी वातो क
रता देखीने हसे रे गढ जेवीडीउने जे जे धर्म करणी करवा प्रमुख थाय रे ते उद्दर
जरवा निमित्तेज थाय रे तेमज आदि शब्दशीकोध, मान, माया, सोज, राग, द्वेष,
उग्रति प्रमुखने थर्येंज थाय रे उत्तम पुरुष तो लालमा कोइक हळे वाकी वीजा
तो वेगना धारण करनारा जाणना आ छुपम कलिकालमा मोहनु प्रवल राज्य
तेथी ससारीड करता पण गठधारीड उपर तेनु विशेष शासन चाले रे रहस्य ए रे
वे, समारी जींगोमाथी कोडए मोहने गलेथी, कोइए गातीएथी अने कोडए केमथी
पकडेल रे अने गठधारीएतो मोहने सर्वांगे मस्तक सुधी पकडेल रे ॥ ३ ॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥
वचन निरपेक्ष व्यवहार ससारफल ॥ साजदी आदरी काइराचो ॥ धारण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे मनवादी होय ते अपेक्षा सदित घोखनारो यायज नहीं तेतो एकात-
यादि, निरपेक्षी अर्थात् अपेक्षारहित घोखनारा याय तेवा अपेक्षा रहित वचने,
अत्यन अहिन चारित्रमा प्रवर्त्तन होय तोपण ते व्यवहार जूठो कें आज्ञाथी पि
रुद्ध जालयो तेथी हे जट्यो, यात्रायुक्त ते सापेक्ष कदेगाय जेम निश्चय सवधी वचन
व्यवहारनी यात्रा रामे रे तेम, झान क्रियासदित उत्सर्ग अपवादयुक्त, सापेक्ष व
परो जे टप्पवदार कें चारित्रनु प्रवर्त्तन ते सिद्धान अनुयायी व्यवहार रे ते चारित्र
आज्ञाथी अपिरुद्ध तेथी सातु रे तेथी यात्रा गिनानु अर्थात् अपेक्षा वगरनु वचन
ते निरपेक्ष वचन कदेगाय तेवा वचनवाका पकातवादीउनु चारित्र, ससारफल आ
पनार रे तेथी तेवा पकातवादीउना वचनवर्ण्य अनिकापीउने साजदाना योग्य
नदी वदाच साजदानामा आरी जाय तो आदरवा नहीं अने कदाच आदरवा मा
दावी जाय तो तेमा रात्रवु नहीं निरपेक्ष वचन जेतमतथी गिरुद्वज रे तेथी रेग
वरनो मानसी राग वरवो नहीं यथा ॥ नामे निरपेक्ष वचन ॥ क्रिया देवापे
श्वर ॥ वाको तप मयम सरव ॥ क्यों कायो धर ॥ ? ॥ तेथी एकात क्रियापटी,
द्वात पूजारही, पकान नक्षिपदी, पकान गुम्पदी, द्रत्यादि वचनना वयन कर
नागार्ज चारगतिमा नटकनारा रे ॥ ४ ॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कदो रेम ग्वे ॥ रेम ग्वे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥
शुद्धश्रद्धानभिए मर्यं द्विग्या करी ॥ वाग्पण खांपणो तेह जाणो ॥ धारण ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो जन्मो ! ते एकांतवादिठंता वचनयी शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मनी परिक्षा केम थइ थके ? अर्थात् नज थइ थके; अने शुद्ध देव युरु धर्मनी परिक्षाने अजावे शुद्ध देव युरु उपर अद्वा केण प्रतीत ते पण केम रहे. कारण के साची वस्तुनी उद्घाष विना साची प्रतीत पण न थाय, ए वात आणो केण अवधारो; अने शुद्ध श्रद्धा-प्रतीतविना सर्व क्रियानुं प्रवर्त्तन, ते गर केण राख अथवा खातरनी पृथ्वी उपर गाण प्रमुखतुं लीपण करवा तुव्य निरर्थक रे ॥ ५ ॥

पाप नहीं कोई उत्सूत्र जापण जिस्यो ॥ धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो ॥

सूत्र अनुसार जे ज्ञाविक क्रियाकरे ॥ तेहनो शुद्ध चारित्र परखो ॥ धारण ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे निरपेक्ष उत्सूत्र जापण रे, तेवी सूत्रयी विरुद्ध जापण समान वीजुं पाप नयी. सिद्धांतमां उत्सूत्र जापीने महापापी कहेवो रे; अने सूत्रमां जे प्रमाणे वचन होय तेज प्रमाणे जापण करबुं, ते समान तप संयमादिमां पण धर्म नयी. तेवी सूत्रने अनुसारे जे ज्ञव्यजीव, तप संयमादि क्रिया करे ते चारित्रवंतनुं शुद्ध चारित्र परखो केण जाणजो, अर्थात् जे बुं चउदमातीर्थकरनुं चारित्र तेबुंज तेनुं चारित्र जाणजो ॥ ६ ॥

एह उपदेशनो सार संक्षेपयी ॥ जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥

ते नरा दीव्यवहुकाल सुख अनुभवी ॥ नियत आनंदघनराज पावे ॥ धारण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त उपदेशनो सार अर्थात् सूत्र अनुयायी चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते संक्षेपयी कद्युं. तेने जे ज्ञव्यप्राणी निरंतर पोताना चित्तमां धारी राखे. सार ए वे के वर्त्तनाना गढधारीडे शुद्ध धर्मतत्वनुं स्वरूप पुठतां, हृत्याहीपण शिखवे रे, तेवी तेवा मतवादीउनो उपदेश अंगीकार न करवो; अने जे ज्ञव्य प्राणीडे सूत्र अनुसारे प्रवर्त्तनारा रे ते दीव्य केण निरूपम देवता संवंधी वा मनोहर मनुष्य संवंधी घण्ण पव्योपम अने सागरोपम काल सुधी सातावेदनीना विपाकोदयने अनुभवी के जोगवीने नियन केण निश्चयपणे, संदेह रहितपणे परमानंद, अतिंद्रिय आनंद समूहने पासे अर्थात् मोक्षस्थान पासे ॥ ७ ॥ इति अनंतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ राग गोक्ती सारंग ॥ रसीयानी देवी ॥

धरम जिनेसर गाउं रंगाशुं ॥ ज्ञंग म पमशो द्वो प्रीति ॥ जिनेसर ॥

वीजो मनमंदिर आणुं नहीं ॥ ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्मण ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्ध चेतनावंत थइ जावोल्वासें हर्षोत्कर्पवंत थइ, परंतु प्री-

तिना जगनो जय दागवाथी, दीनपचने धर्मनाथ प्रजुनी स्तवना करे रे हे प्रजु। तमने निजन्यरूप प्राप्तिरूप रंग केण रागथी वचनद्वाराए स्तवु तु, परतु दधिरागथी स्त यतो नथी हे शुद्ध चेतना। ते स्तवनारूप कार्यारंज अपिष्ठिन्न धाराए पार पामजो तेमा काङ्पण पिष्ठ पमशो नहीं धर्मनाथ प्रजुविना वीजा राग छेषयुक्त देवोने मारा म नरूप मदिर केण मेहेसमा सावु नहीं अर्थात् रागादि दोषयुक्त देवोनु ध्यान कदापि करु नहीं, कारण के आत्मधर्मे धर्मित एवा आत्मामात्रना कुखनी घट केण मर्यादा एज रे, एज धर्म रे एज सक्षण के वीतराग विना वीजाने ध्यावे नहि ॥१॥

धरम धरम करतो जग सहु फेरे ॥ धरम न जाएहो मर्म ॥ जिं० ॥ धरम जिनेसर चरण ग्रहा पठी ॥ कोइ न वायेहो कर्म ॥ जिं० ॥ धर्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! जगतना प्राणीमात्र धर्म धर्म करता फेरे रे, कोइ शिव पर्म, कोइ पिण्डापर्म, कोइ सन्यस्तधर्म, कोइ श्वस्याश्रमधर्म, कोइ इतपधर्म, कोइ कुसधर्म, एम प्राणीमात्र निरर्थक ब्रमण करी रहा रे परतु तेगा सर्व प्राणीं धर्मशब्दनो जे मने पेण रहस्य ते पिण्डापुङ्ग जाणता नथी अर्थात् आत्मस्वजापरूप धर्म जेथी पिनाय परिणतिनो स्याग करी मनात परिणतिमा गमणता करवी तद्वय धर्मनु रूप रहस्य जाणा गिना तेउ धर्म धर्म पोकारे रे परतु हे शुद्ध चेतना ! धर्मनु रहस्य तो धर्म परमेश्वरना चरणकमलमा व्यापेशु रे, तेथी जे प्राणी घहिरात्मपणानो स्याग यरी अनरात्मयन यड धरम परमेश्वरना चरणकमलमां आत्मस्वरूप प्रगर्तीए गनो स्यापे ते प्राणी आश्रमद्वारने वध करवाथी कोइपण कर्मनो वध न करे ॥२॥

प्रपचन अजन जो मदगुम रङे ॥ देरे परमनिधान ॥ जिं० ॥ हृदय
नयण निदाखे जगवाणी ॥ महिमा मेन ममान ॥ जिं० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हृदे धर्मनाथ प्रजुनु अस्य केवीते जाणी शकाय ते कहे रे हे सुमति ! शुद्ध उपदेशक युक जो कृपा करीने, हृदयस्य चक्षुने गिरे सिद्धातस्य अजन करे तो अनादिकावनो मिष्यात्वस्थी टद्यनेप्रनो रोग दूर थाय ते रोग दूर यगाथी आत्म स्वरूपस्य परमनिधान केण अनाशयन धन जे अनादिथी युक हतु ते प्रत्यक्ष थाय एजी ते टद्यस्य नेत्रयी धण जगनना म्यानिने ते प्राणी निदाखे केण देरे अने म्य स्वजारे पोनाना स्वरूपने प्रगट जाणे जे प्राणी पोनाना स्वरूपने उक्षरं ते प्राणी इदयचक्षुर्थी परमेश्वरना स्वरूपने उक्षमी शक्ति, अने ते प्राणीनो महिमा केण प्रतार मेहरंत ममान मर्वोलृष्ट थाय, अर्थात् निर्गम थाय ॥३॥

दोमृत दोमृत दोमृत दोमीर्डे ॥ जेती मननीरे दोरु ॥ जि० ॥ प्रेम
प्रतीत विचारो द्वृकडी ॥ गुरुगम लेजोरे जोरु ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हृषे शुद्ध चेतना आनंदघनने कहेरे के प्रबचन कारण विना परमनिधान देखवानो बीजा मत समत्वीर्डें कहेको सिद्धांत शुं कारण नयी? त्यारे आनंदघन कहेरे के हुं तो आत्मस्वरूप उलखवा माटे दोनी दोनीने थाक्यो. मत मात्रने हुंडि जोया. मात्र वाह्य हृषिए नही, परंतु तेठना संकल्पित वेदांत न्यायादिक सिद्धांतोमां उत्तरवा सारु जेटखी मारा मननी दोक हती अर्थात् विचार वब हरुं तेटखे सुधी दोड्यो, परंतु स्वरूप प्राप्ति न यद्द; अने विचार करतां प्रेम केण स्वरूप अन्निदापनो निश्चय तेनाथी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत हुंकरी केण अत्यंत नजीक रे, दूर नयी अर्थात् आत्मामां ज रे; अने नजीक रतां पामता नयी, ते पामवानो उपाय गुरुगम केण गुरु-ए वतावेको मार्ग अंगीकार करवो अर्थात् सूत्र मर्यादाथी गुरु जे मार्ग वतावे ते मार्ग निजस्वरूपनी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत नजीक रे ॥ ४ ॥

एक पक्षी केम प्रीति वरें पडे ॥ उज्जय मिल्या हुए संधी ॥ जि० ॥
हुं रागी हुं मोहें फंदिर्जे ॥ तुं निरागी निरवंध ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ धर्म जिनेश्वरनी साथे प्रीति केम यद्द जके? हुं प्रीतिनो अन्निदापी, प्रज्ञ प्रीतिना अन्निदापी नयी. कदाच एक पक्षी प्रीत याय तो पण ते वरे पडे नही केण नज्जे नही. विरुद्ध स्वजावनी प्रीत टके नही. प्रज्ञ शुद्ध आत्मस्वरूपी, हुं तेवा स्वरूपयी रहित, तेवा वबे प्रीति केम नज्जे? प्रीतिनो तो उज्जय केण वंने समान धर्मवादा होय तो संधि केण मेदापथाय. माटे हे जिनेश्वर! हुं तमारी साथे मेदाप करवा द्वं हुं, परंतु मारा परिणाम संवंधमां अंत.करणशी विचार करतां संधी माटे विप अमृत जेटखो तफावतरे. हुं रागी हुं, तमे वीतराग गो. हुं मोह फंदमां फसायेको हुं अने तमे तो मोहना वंधनयी रहित गो. तेथी मारो अने तमारो प्रकृतिए मेदापज नयी, तो प्रीति केम याय? यथा ॥ प्रकृति मिले तें मन मिले, अनमिलते न मिलात ॥ दूध दहीं तें जमत हे, कांजी तें फट जात ॥ ३ ॥ तेथी अगर जो हुं अने तमे सच्चाए तो एक रझए, परंतु दहींनी खटाग अने कांजीनी खटाग प्रकृतिमां जिन्न निन्न रे, दहींयी छुध जमे, कांजीयी छुध फाटी जाय, तेम मारी सराग प्रकृति, तमारी निराग प्रकृति तेथी प्रीतिरूप छुध जमे नहीं. हुं तो प्रीतिने जमाहुं, परंतु तमे वीतराग होवाथी प्रीति जमावो नहीं. ॥ ५ ॥

परमनिधान प्रगट मुख आगवे ॥ जगत उक्तधीहो जाय ॥ जि० ॥

ज्योति विना जुर्ज जगदीगनी ॥ अधोअध पुलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वक्ती हे शुरु चेतना । जगतनी विपरीत रीति तेतो जो । पूर्वे कथन कर्युं पहुं परनिधान प्रत्यक्ष अत करणरूप हृदयरुमखमाज रे, दूर नथी, ठता जगतना प्राणीमात्र ते उक्तधी जाय रे, ज्यां ते प्राप्त याय ते स्थानकने तो जोतांज नथी अने कष्ट क्रियादिक, ज्या तेन पामी शकीए तेनी पाठबज मढी रह्या रे कारण के जगतना सामिनी झान प्रकाशक ज्योति अने आत्मानी स्वरूप प्रासिनी ज्योति ते वनेमा अन्नेद पछुं रे, परतु जुर्ज, जेम ज्योतिस्वरूपने अचावे आंधखानी पाठब आधखा दीर्घे तेम, ह्यानस्वरूप हृषिने अचावे, अङ्गानीनी पाठब अङ्गानी दोड्या जाय रे वक्ता पण आधखा अने श्रोता पण आधखा एवो योग रे ॥ ६ ॥

निरमल गुणमणि रोहण न्मूधरा ॥ मुनिजन मानसहस ॥ जि० ॥

धन्य ते नगरी धन्य वेळाधमी ॥ मात पिता कुलवंगा ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे जगदीश्वरनी ज्योतिविना जगतमा अधकार व्यापि रहो रे, ते जगदी-श्वर, महा निर्मल रे झानादि गुण जेना एवा अनत गुणरूप रलोना रोहिताचल पर्वत समान रे वक्ती मुनिराजोना मानस केण अत करणरूप मानसरोवरने विपे हृस समान रे, अर्थात् जे मुनिराजोना अत करणमा वसी रह्या रे एवा परमेश्वरे जे नगरीमा जन्म लीधो ते नगरीने धन्य रे, जे वेळाए जन्म लीधो ते वक्तवतने पण धन्य रे, तेमना माता, पिता, कुट तथा वंश सर्वने धन्य रे ॥ ७ ॥

मन मधुकर वर कर जोमी कहे ॥ पठकज निकट निवास ॥ जि० ॥ धन

नामी आनदधन साजलो ॥ ए सेवक अरदास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेथी वर केण उत्तम एवो मारो मनरूप ब्रह्मर, परम उद्दासवत थङ्क हाय जोमी विनति करेरे के, हे प्रजु । मारा ऊपर कृपा करीने, तमारा चरणकम-सनी निकट केण नजीकज मने निवास करना थो हे प्रजु । तमे अनेक नामोवालागो, चिदानन्दना समूह ठो, माटे आधीन वृत्तिवाखा था नेवकनी अरज साजलो ॥८॥ इति

॥ अथ श्रीगातिजिन स्तवन ॥

॥ राग मद्भार ॥ चतुर चोमासु पडिकमी ॥ ए देशी ॥

गातिजिन एक मुज विनति ॥ मुण्डो विलुवन राथरे ॥ गाति सरप केम जाणीए ॥ कदो मन केम परसायरे ॥ गाति० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन शांतिनाथ परमेश्वरनुं शांतस्वरूप स्वपक्ष, परपक्षथी नि-
श्चय करवा प्रज्ञुने विनतिरूप प्रश्न करे रे. हे ब्रण चुवनना स्वामि ! तमे मारी एक
विनति कृपा करी सांचखो. तमे शांतरस पूर्ण तो तेथी तमारं नाम शांति रे. ते शां-
तरसनुं स्वरूप यथात्थ्य केवीरीते जाणी शकीए ते कृपा करी मने उपदेशो, जेथी
मारा मनने शांतरसनी परीक्षा थाय. ॥ ३ ॥

धन्य तु आत्म जेहने ॥ एहवो प्रश्न अवकाशेरे ॥ धीरज
मनधरी सांचखो ॥ कहुं शांति प्रतिज्ञासरे ॥ शांतिण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वक्षी आनंदघन पोताना मनमां हर्षवंत थड कहेरे के हे आत्मा ! तने
पण धन्य रे, तुं सर्व आत्मामां उक्षुष्ट थयो, कारणके तने शांतरसना स्वरूपनो
प्रश्न करवानो अवकाश केण्ठवसर प्राप्त थयो; अने शांतिनाथ प्रज्ञुने तें प्रश्न पुर्यो.
हवे गांतिनाथ प्रज्ञुए प्रश्ननो जे उत्तर आप्यो ते आनंदघन जब्य जीवोने कहेरे, हे
जब्य आत्मार्ड ! तमे अंतःकरणमां धीरज धारण करी शांतरसनुं स्वरूप कहुंतुं ते
एकाग्रताए सांचखो. जे प्रमाणे शांति जिनेवरे कहुं, तेज प्रतिज्ञास केण रहस्य हुं
कहुंतुं, मारी न्मत कव्यनाथी कहेतो नवी. ॥ २ ॥

ज्ञाव अविगृष्ट सुविशुद्ध जे ॥ कह्या जिनवर देवरे ॥ ते तेम
अवितर सहदे ॥ प्रथम ए शांतिपद सेवरे ॥ शांतिण॥५॥

अर्थ ॥ पद्मव्यना शुद्धशुद्धज्ञाव जे रीते जिनवर देवे कथन करेला रे, तेम,
शुद्धज्ञावने शुद्धपणे अने अशुद्धपणे अविनिवृ केण भ्रांतिरक्षितपणे-
सहदे केण श्रद्धान करे ते शांतिरसनुं प्रथम पद केण स्यानक तुं समजजे अने ए प्र-
थमपदने तुं शादर, कारणके शुद्ध श्रद्धानविना शांतिपदनुं कथन संनवेज नहीं, तेथी
प्रथम शुद्ध श्रद्धानरूप शांतरसनुं स्यानक हे आत्मा तुं तेव केण शादर ॥५॥

आगमधरणुर समकीति ॥ किरिया संवर सारे ॥ संप्रदायी
अवंचक सदा ॥ शुची अनुभव आयारे ॥ शांतिण ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वक्षी निरुद्धानना धारण करनारा कोइ गुरु कहेरे नवपूर्व नुधी अनव्य पाप
जागे तो आगमधर गुन्नी झी अविक्षयना? उत्तर के शुद्ध देव गुरु धर्मनी प्रतीनवाडा,
समक्षिनवंत गुन्धी आंत नव्य पामीए. ते गुरु केवा हांप? आश्रवनो निगेय करी ना-
रकेण उत्तम संवरनी कियामां प्रवर्ती रथा हांप. मुख्य प्रार्थीउने उगवानो नंप्रदायी
केण परंपरा, गुन्नमागते देशनाथ आचरण जेननामां नरी. अर्थात् जेउ निर्मल न-

प्रदायवाक्षा ते शुचि के० पवित्र आत्मस्वरूपना ज्ञानना अनिखापी होवायी, अनुज्ञव स्वरूपमां प्रवर्त्तवाशी अनुज्ञना आधार ते, तेवा युरुयी शात रसनुं स्वरूप पामी०

शुद्ध आद्वन आदरे ॥ तजी अवर जंजादरे ॥ तामसी
वृत्ति सवि परिद्वरी ॥ नजे सात्त्विकी सादरे ॥ शाति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वक्षी ते युरु केवा होय ? आत्मस्वरूपना अनुज्ञयी प्रगट येव निर्मल ज्ञानयी सिद्ध स्वरूपनु अवद्वन करनारा ते, अर्थात् स्वस्वरूपमा पित्तमान रता सिद्धादिनु ध्यान करनारा ते वीजा शार्त्तरोऽध्यान अने भोद्द तथा रागादि पित्तकारक जजाक्षोने धूर करी, शुद्ध आद्वनने आदरी रह्या ते वक्षी तामसी के० क्रोधादि ऊर्युणे जेथी उत्पन्न थाय तेवा आहार प्रमुख खावी आजीविका करनानो जे भणे त्याग कयो ते, वा हृप्राहीपणे प्राणायामादिकनो त्याग करी शावके० प्रधान सात्त्विक वृत्ति अगीकार करी ज्ञानादि युणयी उपजेद्वी शब्द मित्रउपर समानवृत्तिना धारण करनारा ते ॥ ५ ॥

फल विसंवाद जेमां नहीं ॥ शब्द ते अर्थ संवधीरे ॥ सकल
नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधीरे ॥ शाति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवा युरु उत्सूत्रना ज्ञापण करनारा, अर्थात् प्रिसवाद के० प्रिलुक्ता जेमा होय नहीं तेवा वचनना वोखनारा होय, जे वचननु फल पण विरुद्ध न होय शब्दनो अर्थ पण सवध युक्त कहेनारा होय जेमना वचनमा नैगमादि साते नयनु वाद के० कथन होय एवा शातरसना भरेखा युरु ते शिव साधनना हेतु के० मेलाप करावनारा ते

विधि प्रतिपेध करी आत्मा ॥ पदारथ अविरोधरे ॥ ग्रहण
विधि महाजने परियह्यो ॥ इस्यो आगमे वोधरे ॥ शाति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवा युरुना मेलापयी स्वरूप अनिखापी प्राणी स्वकार्य साधे ते विधि कहेरे जेथी आत्मस्वरूप सुखे ग्रहण थाय ते आचरवा योग्य आचरण ते विधि कहेवाय, अने जे आत्म स्वरूपने ग्रहण करवामा विप्त करे एवा जडादि स्वरूपने न ग्रहण करया ते प्रतिपेध कहेवाय एवा विधि प्रतिपेधयी आत्मा मुक्तिरूप पदना अर्थ कार्यनो अविरोधपणे करनारो थाय एवा ग्रहण करवा योग्य विधिने महाजन के० महा मुनिराजो० समस्तपणे ग्रहण करेखो ते एम सिद्धात्मा कथन करेलु ते, वा सिद्धात्मनो एवो वोध ते एम तमे अवधारजो ॥ ७ ॥

झटजनसंगति परिहरी ॥ ज्ञजे सुगुरु संतानरे ॥ जोग सामर्थ्य
चित्त जावजे ॥ धरे मुगति निदानरे ॥ शांतिष ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वक्ती शांतरसना अनिकापी पुरुष छुट केण कुड अंतःकरणवाला, मत
ममत्वधारी, हरग्राही मनुष्य जेमना वचनथी थ्रद्धा छट थाय तेनी संगतनो त्याग
करे अने ज्ञानादि उत्तम गुणना धारण करनारा सद्गुरु अने तेमना शिष्य परंपरानुं
ज्ञजे केट सेवन करे, पठी जोगसामर्थ्य केण मनादि त्रणे योग, स्ववशीभूत रत्तां,
चित्तने विषे जाव केण आत्मजावने अठेदी, अन्नेदीपणे जे प्राणी धारण करी राखे ते
निदान केण निश्चयणे मुक्ति प्राप्त करे, कारण के विचर्त्तिनो निरोध तेज कर्म-
क्षयनुं मूल कारण रे ॥ ७ ॥

मन अपमान चित्त समगणे ॥ समगणे कनक पाषाण रे ॥

वंदक निंदक समगणे ॥ इस्यो होय तुं जाए रे ॥ शांतिष ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एवा आत्मस्वज्ञावमां प्रवर्त्तेदा पुरुषोनां चित्त केवां होय ते कहेठे. तेमनो
कोइ सत्कार, सन्मान करे तेशी ते हर्षवंत न थाय अने कोइ अपमान करे तो खेदवंत
न थाय एवी तेमनी चित्तवृत्ति समान होय. वक्ती दोन्नदशानी मंदता यवाची तेम-
नीपासे कोइ सुवर्ण मुके वा कोइ माटी के पटर मुके तोपण वंनेमांची कोइने हिना-
धिकपणे न माने. वंनेने तुल्यमाने. वक्ती कोइ प्रशंसा करी तेमने वंदना करे तो ते-
मना उपर प्रसन्न न थाय वा कोइ तेमनी निंदा करे तो तेना उपर नाराज न थाय.
है जब्ब ! ते पुरुष एवा होय ऐस तुं जाए केण अवधार ॥ ८ ॥

सर्व जगंतुने समगणे ॥ गणे त्रणमणि जावरे ॥ मुक्ति

संसार वेहु समगणे ॥ मुणे ज्ञवजखनिधि नावरे ॥ शांतिष ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वक्ती त्रस थावर समस्त जगतना जंतु केण जीत्रो जेमके राजा रांक,
शब्दु मित्र, त्वजन परजन. इत्यादि सर्वने तुल्य माने, तेमज त्रण अने मणि केण चंद्र-
कांत्यादि मणि प्रमुखने पण तुल्य गणे; कोइने हिनाधिक न गणे. वक्ती मुक्ति तथा
चार गतिरूप संसारने पण समलुल्य माने. आ कथन अप्रमत्तादि सातमा गुणगणे
प्रवर्तकने माटे छे. त्वां मन स्वस्य वृत्तियें छे. तेने हिनाधिक कांड नशी. संसारथी
चदासीन वृत्ति गद अने मोहन पामवानी हर्षे वृत्ति पण गद भारा पदने हुं पास्यो
तेमां जो हर्ष ते जब्ब संसारसमुद्धमां आंतरसने नाव समान मुणे केण जाए अ-
थवा ज्ञवजखनिविनो शांतरसरूप नावाए करी मुणे केण पार पासे ॥ १० ॥

आपणो आतम ज्ञावजे ॥ एक चेतना धाररे ॥ अवर सवि
साय सयोगथी ॥ एह निज परिकर साररे ॥ शांतिः ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हे जब्य! एहु जाण के मारो आत्मा ज्ञानदर्शन स्वज्ञापवत रे एक अद्वितीय स्वरूपमयी चेतनानो आधार के० आग्रह करी रखो रे चेतनाने आधारे आत्मा आधेय रे ए चेतनाविना अवर के० वीजा सर्व पुज्जल सवध, शरीर पुण्य पापादि, सयोगजन्य रे ज्ञानादि युण समवाय सवधे रे रागदेष्पादि इत्तादि सर्व आरोपित धर्म रे ते आत्मस्वज्ञाव नशी झांत्यादि धर्म तथा समित्यादिने पोतानो सार के० प्रधान परिवार जाण ॥ २१ ॥

प्रज्ञु मुखयी एम साज्जली ॥ कहे आत्मरामरे ॥ ताहरे
दरिंगणे निस्तर्यो ॥ मुज सिद्धा सवि कामरे ॥ शांतिः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ अहो जब्यो । पूर्वे जे कल्यु ते परमेश्वरे पोताना मुखयी जे कथन करेखु ते सिद्धात्माथी मे० साज्जल्यु ते प्रज्ञुनी वाणी साज्जलताज मारो आत्मराम अत्यत उद्घास पाम्यो ते कहेरे के अहो परमेश्वर । तमारा दर्शनथी अर्थात् जैनदर्शनथी हु निस्तार पाम्यो अर्थात् शातरसना स्वरूपनोपार पाम्यो कारणे कार्योपचार ए न्यायै शातरसना स्वरूप जाणवारूप कारणथी मारा स्पस्वरूपादि सर्व कार्यनी सिद्धि यह ॥ २२ ॥

अहो अहो हु मुजने कहु ॥ नमो मुज नमो मुजरे ॥ अमित
फलदान दातारनी ॥ जेहनी जेट यह तुजरे ॥ शांतिः ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ आनन्दघन कहेरे के अहो जब्यो । मैं परमेश्वरने शातरसनो प्रश्न पुछ्यो, परमेश्वरे मने उत्तर आप्या, तेथी हु हर्षवंत यह मारा आत्माने कहुतु अहो आत्मा! मने नमस्कार करो, मारा आत्माने नमस्कार होजो कोइ प्रश्न करे के पोताना आत्माने पोतेज नमस्कार करे एम केम घटे? उत्तर के आत्माने अमित के० प्रमाणर हित दानना आपनार श्रीशातिनाथ परमात्मानी जेट के० प्राप्ति यह तेथी नमो मुज नमोमुज एम कहु, परतु रहस्यार्थतो आनन्दघने श्रीशातिनाथ परमेश्वरने शातरसनो प्रश्न करता उत्तर मध्याना हर्षवंती ए बचन रे ॥ २३ ॥

शातिसरूप सद्गेपथी ॥ कहो निज पर रूपरे ॥ आगम

मादे विस्तर घणो ॥ कब्यो शातिजिन ज्ञप्रे ॥ शांतिः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ आनन्दघन कहेरे के अहो जब्यो । आ स्तनमा शातरसनु स्वरूप निज स्वरूपथी के० पोताना स्वरूपने तथा वीजा जब्य जीपोना स्वरूपनी प्राप्तिनेमाटे य

आतध्य रीति संदेशपथी कहुं. जो तमे ते रसना विशेष रुचिवंत होतो शांतिनाथ जि-
नराजे खजापित सिद्धांतनेविषे तेनुं विस्तारपणे खरूप कहुंते लांथी अवधारजो ॥१४॥

शांतिसरूप एम भावशे ॥ धरी शुद्ध प्रणिधानरे ॥ आनंद
घनपद पासशे ॥ ते लहेशे वहुमानरे ॥ शांतिण ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ मादे अहो जाव्यो । पूर्वोक्तरीते, रागद्वेष विषय कपायादि रहितपणे अने
प्रणिधान केण मननी एकाव्रताए जे प्राणी शांतरसना स्वरूपने जावशे केण विचारशे,
ते प्राणी आनंद केण परमानंदनो घन केण समूह ते रूप पद जे मुक्तिपद तेने प्राप्त करशे,
अर्थात् त्रण जगतना पृज्यपणारूप वहुमान पासशे ॥१५॥ इति श्री शांतिनाथ जिनस्तवन.

॥ अथ श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ रामकली ॥ अंवर देहो मुरारी हमारो ॥ ए देझी ॥
कुंथुजिन मनहुं किमही न वाजे ॥ कुंथुण ॥ जेम जेम जतन
करीने राखुं ॥ तेम तेम अखगुं भाजेहो ॥ कुंथुण ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे कुंथुनाथ परमेश्वर ! मारा मनने महाकष्टे तमारीसाथे जोखवा चाहुंतुं,
परंतु जावस्तव संबंधी ध्यानादिकमां कोश्पणरीते न वाजे केण जोक्तातुं नथी अन्य
स्थानके जोक्ताय रे पण तमारी साथे जोडातुं नथी. हे परमेश्वर ! जेम जेम मारा म-
नने, प्रयत्न करी कवजे राखवा इहुंतुं, प्राणायामादिके, रेचक पुरक कुञ्जक इत्यादिके
एकाव्र करवा ध्यानथी प्रयास करुंतुं तेम तेम हे प्रजु ! ए मन तमारी साथे नहीं जो-
डातां अखगुं केण दूर यतुं जाय रे ॥ ३ ॥

रजनी वासर वस्ति उज्जान ॥ गयण पायालें जाय ॥ साप
खायने मुखहुं योउं ॥ एह उखाणो न्यायहो ॥ कुंण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कोइ एम कहेके मननो एवो खजावज ठे के कोइ स्थानके जाय नहीं
तेथी परमेश्वरपासे पण जतुं नथी. तेबुं बोलनारने आनंदघन उत्तर आपेरे के, हे
जाइ ! तेनो तो मने अनुज्ञव ठे. ए मन तो जेम रात्रे तेम दिवसे, जेम वस्तिमां तेम
उज्जाडमां, जेम आकाशमां तेम पातालमां, एवी रीते ग्राम ग्राम फरी रखुं ठे. ए मननी
गति अप्रतिहत ठे, भ्रमणशील ठे, एवी चंचल ठे के तेनी उपमा आपी शकाय एवो
कोइ जगतमां चंचल पदार्थ नथी. बली कोइ कहे के जे फरे ते चरे पण खरो, तेथी
शब्द रूप रस गंध स्पर्शनो खाइ तेने मखतो हझो ? उत्तर-ना. तेम पण नथी. दृष्टांत के
जेम कोइ पुरुपने सर्वे खाधो, एबुं कहेनारने कोश्ए पुरुं के सापना मुखमां काँइ

ग्रास आव्यो ? उत्तर आप्यो के, सापना मुखमां शु आवे ? तेनु मुखतो थोशु केण
खालीज रे ए उत्तराणो केण हृष्टांतं न्याय केण सत्य रे शब्दादिनो स्वाद मात्रतो पा
चेइडियने मध्यो अने भनना मुखमां काइ आव्यु नहीं ॥ २ ॥

मुगतितणा अन्निलापी तपीया ॥ ज्ञान ने ध्यान अन्न्यासे ॥

वयरीमु काइ एहवु चिते ॥ नाखे अखवे पासेहो ॥ कु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए भन महाङ्गुष्ठ निर्दय रे, केमके मात्र मोहनाज अन्निलापी तपस्याना
करनारा ते भनने साधवा माटे अर्थात् आत्मस्परूप जाणगमाटे ज्ञान अने ध्याननो
अन्न्यास करी रहा रे, तदाकार वृत्तियें स्वरूपचिंतयनमा लीन यह रहा रे, एवा भ
हामुनिर्भने पण ए महाङ्गुष्ठ भन एवु करेरे के, अर्थात् तेना सवधमा एवो घाट बि-
चारे रे के, तेउ अखवे केण नि प्रयासे, पिशेप विचाररूप उथम कर्यापिनाज कर्मचरूप
पास केण जादमा फसाइ पडे हृष्टात के प्रश्नचङ्ग राजर्पिने सातमी नर्कना दलीया ए-
कठा करावी दीधा अने अब्द्य समयमां केवलज्ञान पण उपजावी दीधु भाटे ज्या-
सुधी भन स्थिर न थाय त्यासुधी कट किया जवध्रमणरूप रे ॥ ३ ॥

आगम आगम धरने हाये ॥ नावे किणविधि आकुं ॥ किछा

कणे जो हर करी हटकु ॥ तो व्याखतणी परे वाकु हो ॥ कु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्यासुधी आगमनी प्रवृत्ति जाणी न होय त्यासुधी भन
उ साध्य रे उत्तर जे आगम जो भननी स्थिरतानु कारण होय तो आगमना धर
नारा जेना हाथमाज आगम रे अने जेउ भन दमन करवा सवधी अविकारज
वाची रहा रे, तेउनु भन पण स्थिरताथी हे प्रभु ! तमारा चरणकम्भोमा कोइ
पण विवि केण रीते चोटनु नथी सर्व प्रयास निष्पक्ष जाय रे केमके ते भन आकु
केण वाकु रे सरख नथी, वक रे पिना रोम्यु कदाच रही जाय, परतु रोम्यु तो र
हेज नहीं एम जाणता रता पण किछा कणे केण कोइ स्यानके ए भनने हृत करीने
हटकु केण खीजवु, तो जेम सर्पनु गमन रेम कर्यापिना पण वाकु रे तो रेम कर्या
परी तो तेनी वफतानु शुज कहेहु ? तेम ज्यासुधी ए भनने हटकु नहीं त्यासुधी तो
ज्ञानु, परतु जो खीजवु तो सर्पनी जेम वक थश्ने हे प्रभु ! तमारी साये जोकाय नहीं ॥ ४ ॥

जो रग कहु तो रगतो न देखु ॥ गाहुकार पण नाही ॥ सर्वमाहि

ने सहुथी अखगु ॥ ए अचरिज मनमाहि हो ॥ कु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर ! जो हु ए भनने रगाइ करता देखु तो रग कहु, परतु उ
गाइनी करनारी तो इडियो रे अने भन तो पाचे इडियोनो प्रेरक रे तेबी भनने

ठग केम कहुं? बढ़ी पांचे इंडियो तेना प्रवर्त्तन विना प्रवर्त्ती जकती नथी अर्थात् गद्द
रूपादिकमां प्रवर्त्तवानुं मूलकारण मन रे, तेथी ए मन जाहुकार पण नथी, एट्लेके
नारद जेबुं महा ठग रे केमके नर्व जे पांचे इंडियो तेमां ए नोइंडिय मढ़ी रल्हुं रे,
एकीज्ञू श्रद्ध रल्हुं रे. तेना मेलापविना इंडियोथी ठगाइ यायज नहीं. बढ़ी इंडियो
पोतपोताना विषय यहण करे ते वस्त्रते पोतानो जाग वेहेंची देबुं नथी, माटे स-
र्वथी वेगबुं पण रे. तेथी हे परमेश्वर! मने आश्र्वय लागे रे के सर्वथी जेबुं ते वे-
गबुं केम कहेवाय? अने सर्वथी वेगबुं ते जेबुं केम कहेवाय? एम परस्पर विरोध
रतां अविरोधपणे जेलां रखां रे. ॥ ५ ॥

जे जे कहुं ते कान न धारे ॥ आपमते रहे काळुं ॥ सुरनर
पंमित जन समजावे ॥ समजे न मारुं साढ़ुं हो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बढ़ी तेने जे जे हितशिद्धानो उपदेश करुं ते ते तमाम मारां वचनो का-
नेज धरतुं नथी, अर्थात् पोतानी इत्ताए जे जे गुजाशुज तरंग उपजे रे ते ते प्रमाणे
वर्ते रे, तेथी ते काळुं कें महा मेलुं रे. आर्तरोङ्ग चित्तवनथी इयाम रे, तेवाने हुंतो शुं
समजावी शकुं? महा गक्किवंत देवताऊं, सिंह अष्टापद जेवा पञ्च पक्षीर्त पण जेनाथी
जय पामे तेवा प्रवल शक्किवंत मनुष्यो अने शास्त्रना जाणनारा कोविदो पण जेने स-
मजावी जकता नथी. तेथी ए मारी कुमति छीनो जाइ, मारो साको रे अने आत्मा
छुरु उपयोगे प्रवर्त्ते त्यारे पण ए मारी सुमति छीनो जाइ होवाथी सालोज रे. ॥ ६ ॥

में जाएयुं ए खिंग नपुंसक ॥ सकद मरदने रेले ॥ वीजीवाते
समरथ रे नर ॥ एहने कोइ न जेलेहो ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहो प्रज्ञ! शास्त्रद्वाराए में जाएयुं के ए मन नपुंसकलिंगे रे. परंतु प्र-
त्यक्ष प्रमाणे विचारी जोतां ए मन समस्त मरदोने रेले कें हरावी नांखे तेबुं रे. पुरु-
षत्वधर्म सहित रतां जो मन परवग होय तो पुरुष पण खीने संयोगे नपुंसक स-
मान यद्य जाय तेथी ए मन सर्व मरदोमां अग्रगामी रे. जो के तप करवामां, कष्ट
क्रिया साधवामां, सिंहनागादिने दमन करवामां, समुद्धादि जल तरणमां, आकाश
गमनादि क्रियामां, चूतपिशाचादि वशीकरण क्रियामां पुरुष समर्थ रे, परंतु हे
कुंयुप्रज्ञ! ए मनने एक ज्ञवपरिणति परिपाकी मुनिराज विना वीजो कोइ पण जेले
कें जीवी शके नहीं, अर्थात् तेनी गतिने रोकी जके नहीं, तेने एकाग्र करी शके नहीं॥७॥

मन साध्युं तेणे सधबुं साध्युं ॥ एह वात नहीं खोटी ॥ एम
कहे साध्युं ते नवि मानुं ॥ एक ही वात रे मोटी हो ॥ ८ ॥

दरग्नन ज्ञान चरण यकी ॥ अखसखसरूप अनेक रे ॥ निर-
विकलप रस पीजियें ॥ शुद्ध निरजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ केवलदर्शनरूप पर्यायि एक अखसनुज स्वरूप रे अने केवलज्ञानरूप पर्यायि जोड़ए तोपण एक अखसनुज स्वरूप रे, वही ज्ञायकचारित्र पर्याय जोता पण एक अखसनुज स्वरूप रे एम वीजापण अजर, अमर, अचल, अकल, अरुज इत्यादि अखसर कें परमेश्वरना अनेक स्वरूप रे परतु पर्यायातर सबधी ज्ञेद क-द्वपनाए रहित, ऊर्ध्वार्थिकपणे अन्नेदवृत्ति चित्तवनरूप, निरविकटपरूप, अमृतोपशम रसनु पान करता, शुद्ध निर्मल कर्मश्रजन रहित जे परमेश्वर ते एकज रे जेम क-पञ्चादिथी महावीरपर्यंत सर्व तीर्थकर सत्ताए निन्न परतु रूपे अनिन्न तेम ॥ ५ ॥

परमारथ पथ जे कहे ॥ ते रजे एक तंतरे ॥ व्यव-
हारे खख जे रहे ॥ तेहना ज्ञेद अनंतरे ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे परम कें उक्षुष अर्थ कें कार्यमु करनार एवो जे पथ कें मार्ग व-
तावे ते पकात निश्चयनयनाज रागी रे, एटखे तेडे खेशमात्र व्यवहार नयना अ-
पेक्षी नथी, अथवा ए बने पदोना अर्थनो अन्नय आ प्रमाणे करीएतो तीष्ण जास
याय जे एकात रागी ते परमार्थ पथ कहे एटखे उक्षुष मार्ग कहे, पण वीजा तेम
न कहे आ कथन निश्चयमु रे जे प्राणी व्यवहार नयनेज खख कें जाणीने रखा रे,
एटखे मात्र व्यवहारनेज मुरय जाणी रखा रे, ते व्यवहार नयवादीठना ज्ञेद कें मि
कद्यप अनत कें घणा रे ॥ ६ ॥

व्यवहारे लखे दोहिला ॥ काइ आवे हायरे ॥ शुद्ध

नय यापना सेवता ॥ नविरहे छविधा साथरे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे प्राणी व्यवहारना रसीया होय, ते स्थिविर युणजाला प्रवृत्तकादिकोनी
घणी सेवनादि कष्ट क्रियाथी, तप सयमादि व्यवहारने खरे कें शीदीने दोहिला
कें महाकष्ट करता प्रवत्ते रे, परतु तेवा व्यवहारने सेवता जन्मारो वही जाय परतु
मात्र व्यवहारनी कडाकुट करणी करता खेशमात्र स्वरूपप्रातिरूप उस्तु हाय आवे
नहीं, तेथी शुद्धनयने यापना कें प्रमाण करीने, अर्थात् आत्मा शुद्ध निर्मल कर्म-
पारियें रहित एम सेविये कें प्रिचारीगतो, आत्मा शुद्ध स्वरूप रहित रे वा आत्मा
आत्मस्वरूप पामओ एवी छुपिथा कें वे प्रकारनी साथ कें कद्यना न रहे अ-
र्थात् आत्मा घणे काँडे शुद्ध आत्मस्वरूपीज रे, ए अरनायनो धर्म रे, ते धर्मने प्रसादे
छुपिथानी प्रिचारणा न रहे ॥ ७ ॥

एक पखी दखी प्रीतनी ॥ तुम साथे जगनाथे ॥ कृपा
करीने राखजो ॥ चरणतलें गृही हाथ ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे जो शुद्धात्मस्वरूपी हुं हुं तो तमे शुद्ध आत्मस्वरूपी ज गो, परंतु
हुं रागी तमे निरागी, माटे तमारे मारे असमान धर्मपण् ठे, तेथी मैं तमारी साथे
एक पक्षी प्रीत दखी के० जाणी; अर्थात् तमने तो मारी साथे प्रीति करवानी इ-
द्वाज नथी तो पराणे प्रीत शी रीते थाय ? तेथी हे जगतना नाथ ! तमारी साथे प्रीति
थायज नहीं. तमे ब्रण जगतना पूज्य, हुं निखारी लोकोक्ति पण एम ठे के वेर, वि-
वाह अने प्रीति सरखा साथे करीए. मोटानी साथे प्रीति शी ? मोटानी तो कृपाज
जोइए. दचावंतपणानुं तमारुं विरुद्ध ठे तेथी मारा उपर कृपा करीने तमारा चरण
के० पगनी नीचे मारा हाथने राखजो. अहीं परमेश्वर तो मुक्ति पास्या तेथी तेने च-
रणनो असंज्ञ अने सेवकना हाथने ग्रहण करवानो पण असंज्ञ, परंतु चक्किनां
वचनो ठे, तेथी छुपण नथी चक्क लोकोने उलंगा देवानो स्वज्ञाव ठे. ॥ ८ ॥

चक्री धरम तीरथतणो ॥ तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ
सेवे ते लहे ॥ आनंदघन निरधार रे ॥ ध० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर ! तमारा समयधर्मनुं शुद्ध आत्मस्वरूपप्राप्तिरूप फल
करुं अने तमारा धर्मसमय संवंधी तीर्थनुं आनंदघन प्राप्तिरूप फल आगल वर्णव्युं.
ते धर्मीतीर्थ के० चतुर्विध संघना तमे चकवर्ती गो तेथी तमारी आङ्गा चतुर्विध सं-
घमां अखंडपणे वर्ते ठे वदी तीरथफल के० चतुर्विध संघना तमे फल गो. तेमज ती-
रथ शब्द साथे तत शब्द जोडनां, तीर्थना तत्व गो-रहस्यगो तेमज तीर्थमां सार
के० प्रधान तमे गो वदी तीर्थनुं चकवर्तीपण, तीर्थनुं फलपण, तीर्थनुं तत्वपणुं अने
तीर्थनुं सारपणुं एबु जे तमानं तीर्थ, जेने तमारा जेवा नमो तीर्थस्म एवी वाणीए
नमस्कार करे ठे, एवा चतुर्विध संघरूप तीर्थने जे प्राणी सेवे ते प्राणी निरधार के०
निश्चयपूर्वक आनंदघननो समूह पामे ॥ ९ ॥ इति श्रीश्रावजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमद्विजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ सेवक केम अवगणीए हो ॥ ए देशी ॥

सेवक केम अवगणीए हो ॥ मद्विजिन ॥ एह अव गोना सारी ॥

अवर जेहने आदर अतिदीए ॥ तेदने मूख निवारी हो ॥ मद्विजिन ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे मद्विजिनाथ परमेश्वर ! अव के०हवे कर्मदात करवाथी पास्या जे केवल

झान, केवलदर्शन तेनी शोजा सारी कें प्रधान पामीने पोतानी साची सेवाना करनार चाकर तेनी आवे टाणे केम अवझा करो ठो अर्थात् मारी अगझा करवी योग्य नथी अवर कें वीजा मारा जेवा ससारी जीव रागादि परिणतिये ग्रस्त जेने आशा दासी अत्यत आदर सत्कार करे रे ते आशा दासीने हे प्रजु । तमे मूळ कें जडथी निवारण करी अर्थात् निखोचता खीदीए उसेमी नाखी दिक्षा लेताज आशानो त्याग कयो अने उधारे धारमे गुणगाणे चढवा त्यारे मुक्तिरूप आशाने पण तजी दीधी झानसुखरूप अनादि तमारु ॥ ते लीबुं तमे ताणी ॥ जुर्ज
अझान दगा रीसावी ॥ जाता काण न आणीहो ॥ मळ्हिं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! तमारु झानसुखरूप अनादि कालथी, मोहथी प्रगटी जे अझान दशा तेथी आगादित द्यु, ते तमे ताणी लीधु अने हे सुमति । तमे जुर्ज कें देखो अनादि काळनी दीर नीर जेवी सवधवाळी अझानदशा नामनी खी ते मळ्हिनाथ परमेश्वरने, आत्मस्वरूप अनुजपीने, असोहामणी सागी तेथी अप्रीतकारिणी जाणीने तेने आत्मरूप घरथी जाता जाणी पण काण न आणी एटके तेनी साये अनादि परपास द्यतो ते घर ठडीने जेम उर सोंघ गया तेम जाय रे तो जखे जाऊ एम फर्हुं, पण तेनी साये जापण करतु एटकी पण काण कें मर्याद न आणी ॥८॥

निजा सुपन जागर उजागरता ॥ तुरिय अवस्था आवी ॥

निजा सुपनदगा रीमाणी ॥ जाणी न नाय मनावीहो ॥ मळ्हिं० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वसी हे परमेश्वर ! नव्य अनव्य ससारीजीने निजा तथा सुपन, वे अवस्था रे अने नन्यने नन्यतनो परिपाक काळ तेरमे गुणगाणे याय त्यारे ए वे अवस्थानो नाश याय अने ते जापत अवस्था पामे तथा चउदमा गुणगणाना अतथी मिळ्डनेविषे उजागर अम्बा होय ए चार अवस्थामा हे प्रजु तमारे तुरिय कें घोर्थी उजागर अम्बा प्राप्त यझ, ते जोडीने निजागर्तिन सुपनअवस्थाप जाएयु के अमने ग्रुषुण छुर्वचन कहापिनान अमारी प्रतिपक्षीणीउने मनावी, तेथी अमारो तिरम्बार ययो एम जाणी तेऊ रीमाणी तेऊने आत्मघरथी जाती देगीने, वरूपमा अनरापशारक तेऊने जाणीने हे नाय ! तमे तेऊने मनावी नदी ॥ ९ ॥

समर्जित माये मगाढ रीधी ॥ मपरिवागमुं गाटी ॥ मिश्या

मनि अपग रण जाणी ॥ घरथी वाहिर जाटिहो ॥ मळ्हिं० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर तमे निष्पात्यथी पराद्यमुग यज्ञने उपगम प्रियेक मंगरादि परिवार सट्टिन समर्जित माये मगाढ गाटी कें दृष्टपणे कीधी तेम यगाथी आत्म

स्वरूपश्चि विरुद्ध प्रवर्त्तनारी मोहरायनी पुत्री जे मिथ्यासति तेने आत्मस्वरूप प्राप्तिमां
जंग पक्षावनारी अपराधी जाणीने तमारा आत्मघरथी बहार काढी मुकी अने
तेणीने फरी घरमां प्रवेश न करवा दीधो ॥ ४ ॥

हास्य अरति रति शोक छुगंगा ॥ नय पामर करसाली ॥

नोकपाय श्रेणीगज चट्टां ॥ श्वानतणी गति जादीहो ॥ मल्लिं० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वक्ती हे प्रज्ञ ! नोकपाय जे हास्य, अरति, रति, शोक, छुगंगा अने नय
ए ठ नोकपाय मोहनी क्रोधादि कपायनी अपेक्षाए पामर केण रांक, परंतु संसाररूप
खेतीनी वृद्धि करनारी, तेथी करसा केण खेती खेक्षानी आदी केण पंक्ति जे क्रोधादि
कपाय तेनी सदृश माटे नोकपाय, तेउने ज्यारे तमे क्षपकश्रेणिरूप गज केण हाथी
उपर स्थारी करी ल्यारे श्वान केण कुतरानी रीत अद्वय करनारीने गणी नही. जेम
राजमार्गे हाथी चालतां हाथी उपर चडेखाने कुतरा पहँची शके नही, परंतु हाऊ
हाऊ करे तेम परमात्मा श्रेणिरूप गजे आरूढ थ्या, त्यारे हास्यादि ठए कुतरानी
जेम हाऊ हाऊ करता रह्या. ॥ ५ ॥

रागद्वेष अविरतिनी परिणति ॥ ए चरण मोहना योधा ॥ वीत

राग परिणति परिणमता ॥ उठी नाळ्या वोधाहो ॥ मल्लिं० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वक्ती ज्ञवरूप वीजना अंकुरना उत्पादक राग तथा द्वेष तेमज अविरति-
नी परिणति, ए त्रेणेनुं परिणमन; तेउ त्रेणे चारित्रमोहनीयना योधा केण सुन्नत वे.
चारित्रमां प्रवर्त्तनारा मुनियोने चारित्रथी पाडनारा वे. परंतु हे परमेश्वर ! तमे ज्यारे
वीतराग परिणतिने विषे तदाकार प्रवृत्तिए प्रवर्त्त्या त्यारे तेउए विचार्यु के अमारी
विरोधी वीतरागता घरमां आवी तेथी हवे अमे रही शकीये नही, एम विचारी
योधा केण एबुं जाणनारा ते पोतानी भेदेज उठीने नाशी गया. ए प्रमाणे हे प्रज्ञ !
तमारुं कार्य सेहेजे सिद्ध अर्थुं. ॥ ६ ॥

वेदोदय कामा परिणामा ॥ काम्यकर सहु त्यागी ॥ निःकामी

करुणारस सागर ॥ अनंत चतुर्पक्पद पागीहो ॥ मल्लिं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वक्ती हे प्रज्ञ ! वेदना उदयथी कामना परिणाम केण अन्निकाप एटवे पु-
रुषने खी, खीने पुरुष, एवो अन्निकाप वेदोदयथी थाय. ते वेदना उदयथी कामनो
अन्निकाप तो छुर रहो, परंतु तमे तो काम्यकर केण वांगरूप कर्मसात्रना त्यागी
थ्या, तो वेदनो सर्वया अन्नाव थाय तेमां चुं नवाश ! हे प्रज्ञ ! तमे निरन्निकापीपणा-
यीज करुणारूप रसना समुद्ध वे. निप्कामी विना दयाना परिणामने नावज होय.

तेरथी तमे अनंतज्ञान, अनन्तदर्शीन, अनंतचारित्र, अनन्तवीर्य ए अनन्त चतुष्पद जे
निर्वाणपद तेना पागी कें पदना रंगाणा अर्थात् मोक्षपदमा दीन गो ॥ ७ ॥

दान विधनवारी सहु जनने ॥ अन्जयदान पद दाता ॥ खाज

विधन जगविधन निवारक ॥ परम खाज रस माताहो ॥ म० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रनु ! तमे दान सबधी विधन एटखे दानातरायनो नाश करीने जब्य
राशि जीवमात्रने अन्जयपद जे मुक्तिपद तेरूप दानना दातार थया बद्दी साजात
राय कर्मनो नाश करीने तेमज जगतग्रासी सर्व जीवोना साजातरायना दूर करनार
यठने पोते परम कें उत्कृष्ट आत्मरीङ्गि सबधीरस ते अव्ययपद प्राप्त यवाथी उत्पन्न
ययो जे अर्तिङ्गियरस ते रसमा माता कें मम यया ॥ ८ ॥

वीर्य विधन पमित वीर्यं हणी ॥ पूरण पदवी योगी ॥ ज्ञोगो

पज्ञोग दोय विधन निवारी ॥ पूरण ज्ञोग सुज्ञोगीहो ॥ म० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ बद्दी परम आत्मस्वज्ञाव पामवाथी उत्पन्न ययु जे परम आत्मवीर्य तद्वृप
पमित वीर्यं कें पराक्रमथी वीर्यांतरायनो नाश कर्यां तेथी सपूर्ण पदवी जे तीर्थंकर
पदवी, ते पाम्या अर्थात् आत्मवीर्य फोरवता आत्मपदवीने विघ्न करनार मोहनी तमे
नाश कर्यां ए योग्य रे अर्हीं पदमा योगने वदखे योगी शब्द सूत्रकारे गुण्यो रे ते
प्राप्त मेसवना माटे सागे रे योगी शब्दनो अर्थ करीए तो ते पदवीथी सयोग ययो
एम याय थने आत्माने स्वरूपपदवीनो समग्रायसबध सजवे पण सयोगसबध न
सजवे तेथी योग शब्दनो अर्थ ए पदवीने योग्य रे एम कर्यां रे कर्त्तनो आशय
कर्त्ता जाणे बद्दी तमे ज्ञोगातराय, उपनोगातराय, वने अतरायने आत्मवीर्यथी
निवारीने सिद्धात्मसभधी आउ गुणरूप ज्ञोगना सुज्ञोगी कें उत्तम ज्ञोगवनारा य
याग्नो अर्थात् सुज्ञोगने अतराय करनारा ज्ञोगोपज्ञोगातराय वनेनो नाश कर्यां ॥ ९ ॥

ए अदार दूपण वरजित तनु ॥ सुनिजन वृद्धे गाया ॥ अवि

गतिरूपक दोय निरूपण ॥ निरदूपण मन ज्ञायाहो ॥ म० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! पूर्वोक्त अदारे दोय रद्वित तमाह तनु कें शरीर अस-
र्यात प्रदेशम् नाभ्नो थने तेमणे तमने मनव्या परतु हे सुमति ! अपिरति दोपयीनयी
वदा योग्य यया भग्नायन तो दोय निरूपण रे अर्थात् अदारे दोपमा प्रगर्चयु ते दोय
निर्वत्तु जेने तेनु कृत्त्वा योग्य परंतु प्रनु तो अपिरति प्रमुख इष्पणोथी रद्वित यया
तो सर्वजीवमात्रमा कृद्वित नाग मनमा ज्ञाया कें सुद्धाया-गम्या रे ॥ १० ॥

इण्विध परखी मन विसरामी ॥ जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनवंधु
नी मेहेर नजरथी ॥ आनंदघन पद पावेहो ॥ मटिद० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे सुमति ! जे खरूपज्ञाता प्राणी होय ते पूर्वोक्त अढार दोप वर्ज-
वानी विधि कें रीत कही, ते रीते मन वीसरामी कें मनने स्थिरताज्ञावे प्रवर्त्तावी
अढार छूपण रहित तेज अरिहंत देवाधिदेव एवी परीक्षा करीने सामान्य केवली-
उमां प्रधान एवा मद्विपरमेश्वरना गुण वर्णीने स्तवना करे अथवा मनने विशरामना
धाम एवा मद्विजिनना गुण वर्णीने स्तवना करे. ते प्राणी मोहम्है इणायेदा, निज-
खरूपे रहित, संसारमां जन्मजरादिवी खिल थयेदा इन होवाथी तेमना वंधु कें
आतासमान निःस्थाय सहायना करनार मद्विपरमेश्वरनी मेहेर कें कृपानजररूप-
शिक्ष दृष्टिवी, अर्तिक्षियानंदनो समूह एवुं जे मुक्तिपद ते निःसंदेहपणे पामे ॥११॥

॥ अथ मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ आधा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिनराय एक मुज विनति निसुणे ॥ आत्मतत्त्व
क्युं जाण्युं जगतगुरु ॥ एहविचार मुज कहियो ॥ आत्मतत्त्व
जाण्याविण निरमल ॥ चित्तसमाधि नवि दहियो ॥ मुनिष ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो मुनिसुव्रत जिनराज ! आनंदघननी आत्मतत्त्व संवंधी एक विनति
अतिशयपणे श्रवण करो हे त्रण जगनना सामि ! आत्माथी विसर्जन अयेदुं एवुं
आत्मधर्मरूप तत्त्व नमे केवी रीते जाएयुं ? तेनो विचार अनुक्रम विधिए मने कपा-
करीने कहो. केमके आत्मतत्त्व जाण्याविना अर्थात् पुज्ञादि जडथी आत्माने जिन्न
अवधारण कर्याविना, काम, क्रोध, खोज मोहादिना जोरथी मननी समाधि कें स्थि-
रता न पार्मी शकीए. परंतु अकामी, अक्रोधी, अमानी, अखोर्नी इत्यादि वृत्तिवी
निरमल यह चित्तवृत्ति निरोधकरी नदाकारं चन्द्ररूपने विषेज प्रवर्त्तन, ते न पास्यो.
माटे आत्मनत्त्व जे रीते जाएं ते उपदेश करो ॥ १ ॥

कोइ अवंध आत्म तत माने ॥ किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया
ताणुं फल कहो कोण ज्ञानवे ॥ एम पुरुयुं चित्तरीमें ॥ मुनिष ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ कोइ प्रभ्न करे के, सर्व भतोमां आत्मतत्त्वनुं वर्णन वे, तेवी परमेश्वरने
पुरुजानुं शुं कारण वे । उच्चर के मुनिसुव्रत प्रज्ञविना, वीजातने जो आत्मतत्त्वनो निर्णय
होय तो कोइ कें सांख्यादि मनवादा अवंधपणे आत्मतत्त्व माने वे. । के

“विगुणो न वध्यते न मुच्यते” गुणविनानो आत्मा त्रये काल कर्मयी वधातो नथी, सुकातो नथी निश्चयनयनो मत तो एमज रे, परतु व्यवहार नयनी अपेहायी तेउ रहित रे वही वेदांति आत्माने अवध माने रे अने काम क्रोधादि उपयोगे प्रवर्तता तेमुने पुरीए के तमे कर्मयी वधाई ठो के केम? त्यारे तेउ उत्तर आपे रे के, जे कर्मयी वधाय एम माने ते कर्मयी वधाय, परंतु आत्मा तो सज्जावेज निर्मल रे तेथी आत्मा वधातो ज नथी एग्रमाणे घोलनारा वेदाति प्रसुखने पाठा किया करतां तो देखीए ठीए माटे हे शुद्ध चेतना। मैं तेउने कियामा प्रवर्तता देसीने चित्त रींस के० मनमाँ रींस आववायी पुरवु के तमे आत्माने तो अवध मानो ठो एटके शुज्जाशुभ करणीए आत्मा शुज्जाशुभ कर्मनो वध करतो नथी, परतु आत्मा आत्मस्वज्ञावे निर्मल अवधक रे, एम मानो ठो, तो महाकष्टकरी, शुभकरणी करी ते कियानु फल आत्मा जो-कापणे जोगवे एम मानशो तो तमारो पक्ष रेदाशे, अने कियानु फल आत्मा न जो गवे एम मानशो तो किया करो ठो तेनु फल कोण जोगवशे? अने जो कियानु फल आत्मा न जोगवे तो किया निरर्थक थइ, असिद्ध थइ, तेथी व्यग्नहारनयने अगी-कार कर्या रता तेने रेदो ठो तो हे शुद्ध चेतना। एवा मतवालाठने पुरवायी हुं आत्मतत्वने केम पासु? तेथीज परमेश्वरने पुरवु ॥ २ ॥

जड चेतन ए आत्म एकज ॥ यावर जगम सरिखो ॥ ऊख
सुखशकर दूपण आवे ॥ चित्त विचारीजो परिखो ॥ मुनिमा ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वही औद्धेतवादीना धण पक्ष रे १ औद्धेत २ छैताऔद्धेत ३ विशिष्टाऔद्धेत वि-शिष्टाऔद्धेतपक्षी विष्णुना उपासक रे तेउ जड चेतन के० जडयुक्त चेतन एवो आत्मा एकज रे एम माने रे सर्व शरीरधारीउमा परमात्मा अंशे व्यापी रह्यो रे, ते एक रे सर्व गत रे, नित्य रे एवो तेमनो मूल सिद्धात रे जीगात्मा कोइकाले परमात्मा नज थाय, त्रयोकाल जीगात्मा सेवक अने परमात्मा स्वामि एम तेउ माने रे इत्यादि तेमनी मान्यतानो धणो विस्तार रे वही छैनाऔद्धेतपक्षी स्थावर जगममा कथचित् ज्ञेद माने रे। तेउ विशिष्टाऔद्धेतने पुरे रे के, पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने यनस्पतिने निर्मल पृथ्वीना अतर्जावी मानोरो तो यावर जगममा जड सबधीत चेतना एक रे वा कथ-चित् ज्ञेद रे त्यारे तेउ कहे रे के यावर जगम सरिखो के० यावर अने जगम अ-ज्ञेद रे तो हे शुद्ध चेतना। मैं तेउने पुरवु के तमारो मत जे तमे स्थाप्यो, तेनो चित्त विचारी परिखो के० चित्तमा विचार करी काइ परिक्षा तो करो तमारा मत-माँ तमाराज कहेवायी डु ख सुख सबधी शकर दूपण प्रवेश करे रे सुखझ यने प

रस्पर विरोध रे. सुख ते छुःख न थाय अने छुःख ते सुख न थाय. एवा सुख छुःखने
एक समान अधिकरणरूप मानी सुखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन अने
छुःखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जम चेतन; तेथी थावरनुं करेलुं सुखछुःख जं-
गममां प्रवेश याबुं जोइए अने जंगममुं करेलुं सुख छुःख थावरमां प्रवेश याबुं जोइ-
ए. एम कहेवायी शंकर द्रूषण थावर जंगम थाय ॥ ३ ॥

एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दूरशण दीनो ॥ कृत
विनाश अकृतागम दूषण ॥ नवि देखे मतहीणो ॥ मुनिष ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वर्दी कोइक अद्वैतवादी, तेरापंथी, समयसारीया, वाशिष्ठसार ग्रंथी
एम कहेरे के आत्मा निश्चययी चारे गतिमां जमतां रतां पोताना स्वरूपदर्शनमां
दीनो केण व्यापक रे अर्थात् त्रणे काल आत्मा स्वरूपदर्शनयी रहित नथी. तेमने मैं
पूर्व्युं के जो आत्मा आत्मस्वरूपमांज लीन होय तो कृत विनाश केण साधेकी उत्तम
उत्तम फलनो विनाश तेरूप दूषण शुं तमे नथी देखता ? अने अकृता-
आत्मा आत्मस्वरूपमां लीन होय तो छुप्कृतनो वंध नज थाय अने प्राणी-
फल जोगवता तो देखीए ठीए तेथी ते अकृतागमरूप दूषण तेने
केण चुम्हिहीन तमे देखता नथी. तमाराज शास्त्रसां कहुं ठे के “कृ-
” तेथी कर्याविना जोगवाय केम ? ॥ ४ ॥

रागी कहे वादी ॥ हणिक ए आतमजाणो ॥

सुखछुःख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ मुनिष ॥ ५ ॥

शुरु चेतना ! वौधमतना रागी, वादी केण पक्ववाला एम कहे
आत्मा, क्षणेक्षणे निन्ननिन्न रे एम जाणो केण अवधारो. अर्थात्
नव तथा पदार्थ मानव क्षणिक ठे, जे प्रथम क्षणे रे ते वीजी क्षणे
सिद्धांत ठे. ते वौधमतवादीने मैं कहुं के आत्माने जो क्षणेक्षणे
तो तो वंध केण शुभाशुभ कर्म वंध तथा मोक्ष केण कृतकर्मनो
त्योनुं फल सुख अने छुप्कृत्योनुं फल छुःख, आ चारे प्रकारो क्ष-
न न घटे केण संज्ञवता नथी; कारण के जे क्षणे आत्मा वंध करे ते वं-
तीयी वीजी क्षणनो आत्मा जे ज्ञोक्ता रे ते निन्न रे, तो कर्ता आत्मा निन्न
न चोका आत्मा निन्न एम थाय ठे. तो तेवीरीते याबुं असंज्ञव ठे, तेथी ते असं-
ज्ञवनो विचार मनमां आणो केण लावो माटे हे शुरु चेतना ! जे पोतेज आत्मतत्व

“विगुणो न वध्यते न मुच्यते” युणविनानो आत्मा त्रणे काल कर्मयी वधातो नथी, मुकातो नथी निश्चयनयनो मत तो एमज रे, परंतु व्यवहार नयनी अपेक्षायी तेउ रहित रे वही वेदांति आत्माने अवध माने रे अने काम क्रोधादि उपयोगे प्रवर्ततां तेमने पुरीए के तमे कर्मयी वधाउ गो के केम? त्यारे तेउ उत्तर आपे रे के, जे कर्मयी वधाय एम माने ते कर्मयी वधाय, परतु आत्मा तो सज्जावेज निर्मल रे तेथी आत्मा वधातो ज नथी एषमाणे बोलनारा वेदाति प्रसुदने पाठा किया करता तो देखीए थीए माटे हे शुद्ध चेतना। मैं तेउने कियामा प्रवर्तता देखीने चित्त रिंसे के० मनमाँ रिंस आववायी पुरयु के तमे आत्माने तो अवध मानो गो एटले शुचाशुज करणीए आत्मा शुचाशुज कर्मनो वध करतो नथी, परतु आत्मा आत्मसज्जावे निर्मल अवधक रे, एम मानो गो, तो महाकटकरी, शुजकरणी करी ते कियानु फल आत्मा जो-कापणे जोगवे एम मानशो तो तमारो पक्ष रेदाशे, अने कियानु फल आत्मा न जो गवे एम मानशो तो किया करो गो तेनु फल कोण जोगवशे? अने जो कियानु फल आत्मा न जोगवे तो किया निरर्थक थइ, असिद्ध थइ, तेथी व्यवहारनयने अगी-कार कर्या रता तेने रेदो गो तो हे शुद्ध चेतना! एवा मतवाकाउने पुरवायी हु आत्मतत्वने केम पासु? तेथीज परमेश्वरने पुरयु ॥ २ ॥

जड चेतन ए आत्म एकज ॥ आवर जगम सरिखो ॥ छख
सुखशंकर दूपण आवे ॥ चित्त विचारीजो परिखो ॥ मुनिण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वही अद्वैतवादीना त्रण पक्ष रे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत विशिष्टाद्वैतपक्षी विष्णुना उपासक रे तेउ जड चेतन के० जडयुक्त चेतन एवो आत्मा एकज रे एम माने रे सर्वे शरीरधारींमा परमात्मा अंशे व्यापी रहो रे, ते एक रे सर्वे गत रे, नित्य रे एवो तेमनो मूल सिद्धात रे जीवात्मा कोइकाले परमात्मा नज थाय, त्रणेकाल जीवात्मा सेवक अने परमात्मा स्वामि एम तेउ माने रे इत्यादि तेमनी मान्यतानो घणो विस्तार रे वही द्वैताद्वैतपक्षी स्थावर जगममा कथचित् ज्ञेद माने रे, तेउ विशिष्टाद्वैतने पुरे रे के, पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने वनस्पतिने निर्मल पृथ्वीना अतर्जवी मानोरो तो आवर जगममा जड सवधीत चेतना एक रे वा कथचित् ज्ञेद रे त्यारे तेउ कहे रे के आवर जगम सरिखो के० आवर अने जगम अ-ज्ञेद रे तो हे शुद्ध चेतना! मैं तेउने पुरयु के तमारो मत जे तमे स्थाप्यो, तेनो चित्त विचारी परिखो के० चित्तमा विचार करी काइ परिक्षा तो करो तमारा मत माँ तमाराज कहेवायी हु ख सुख सवधी शकर दूपण प्रवेश करे रे सुखछ खने प

रस्पर विरोध दे, सुख ते छुःख न थाय अने छुःख ते सुख न थाय. एवा सुख छुःखने एक समान अधिकरणरूप मानी सुखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन अने छुःखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन; तेथी थावरनुं करेलुं सुखछुःख जंगममां प्रवेश थावुं जोइए अने जंगमनुं करेलुं सुख छुःख थावरमां प्रवेश थावुं जोइए. एम कहेवारी शंकर दूषण थावर जंगम थाय ॥ ३ ॥

एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दरशण दीनो ॥ कृत

विनाश अकृतागम दूषण ॥ नवि देखे मतहीणो ॥ मुनिष ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली कोइक अद्वैतवादी, तेरापंथी, समयसारीया, वाशिष्ठसार ग्रंथी एम कहेरे के आत्मा निश्चययी चारे गतिमां जमतां रतां पोताना स्वरूपदर्शनमां दीनो के० व्यापक रे अर्थात् त्रये कात्र आत्मा स्वरूपदर्शनमयी रहित नथी. तेमने में पुरुणुं के जो आत्मा आत्मस्वरूपमांज लीन होय तो कृत विनाश के० साधेवी उत्तम क्रियाना उत्तम फलनो विनाश तेरूप दूषण शुँ तमे नथी देखता ? अने अकृतागम के० आत्मा आत्मस्वरूपमां लीन होय तो छुप्तुतनो वंध नज थाय अने प्राणी-उने छुप्तुतोना फल ज्ञागवता तो देखीए रीए तेथी ते अकृतागमरूप दूषण तेने पण हे मतहीणा के० बुद्धिहीन तमे देखता नथी. तमाराज शास्त्रसां कहुं रे के “कृतंविना न जोक्तव्यं” तेथी कर्याविना जोगवाय केम ? ॥ ४ ॥

सुगतमति रागी कहे वादी ॥ क्षणिक ए आतमजाणो ॥

वंधमोक्त सुखछुःख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ मुनिष ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना ! वौधमतना रागी, वादी के० पक्षवाला एम कहे रे के, यावन् मात्र आत्मा, क्षणेक्षणे जिन्नजिन्न रे एम जाणो के० अवधारो. अर्थात् जगतमां आत्मा मात्र तथा पदार्थ मात्र क्षणिक रे, जे प्रथम क्षणे रे ते वीजी क्षणे नथी एवो तेमनो सिद्धांत रे. ते वौधमतवादीने में कहुं के आत्माने जो क्षणेक्षणे जिन्नजिन्न ररावशो तो वंध के० शुनाशुन कर्म वंध तथा मोक्ष के० कृतकर्मनो नाश, तेमज सुकृत्योनुं फल सुख अने छुप्तुत्योनुं फल छुःख, आ चारे प्रकारो क्षणिक आत्माने न घटे के० संज्ञवता नथी; कारण के जे क्षणे आत्मा वंध करे ते वंधना कर्त्ताथी वीजी क्षणनो आत्मा जे जोक्ता रे ते जिन्न रे, तो कर्ता आत्मा जिन्न अने जोक्ता आत्मा जिन्न एम थाय रे. तो तेवीरीते थावुं असंज्ञ रे, तेथी ते असंज्ञनो विचार मनमां आणो के० खावो मारे हे शुद्ध चेतना ! जे पोतेज आत्म—

पास्या नथी अने जूळ्या फरेरे तेरने पुरतां हु आत्मतत्त्व शीरीते जाणु ? माटे परमेश्वरने विनति करु तु के मारी विनति तत्वनी उंडायाण कराववानी अवधारो ॥ ५ ॥

जूत चतुष्क वरजित आत्म तत ॥ सत्ता अखगी न घटे ॥

अध शकट जो नजर न देखे ॥ तु शुं कीजे शकटे ॥ मुनिष ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! वली नास्तिक मतवादी कहे रे के १ पृथ्वी २ अप ३ तेज ४ वायु आ चार जूत शिवाय आत्मतत्वनी सत्ता के० आत्मतत्वनु अस्तित्व-पाणु अखगी के० पृथक् न घटे के० सजवतु नथी अहीं आकाश तत्वने जूळु सरयु नथी, कारण के ज्या ए चार जूत होय त्या आकाश पण होयज तेथी नास्तिकम तिए चारनुज ग्रहण कर्युं तेरे ए जूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिरा दृष्टाते माने ठे जेम मदिराना एक एक अगमां केफनी शक्ति नथी, तमाम अगना एकत्र य वाथी तेमा केफनी शक्ति आवे ठे तेवीजरीते चारे जूतने सयोगे चेतन्य शक्ति प्रगट थाय ठे हे नास्तिमति ! आ तमारो मत श्रयोग्य ठे जेम अध के० जन्माध प्राणी शकट के० गामानी लबाइ, पहोलाइ नजरे देखी शकतो नथी तेने गाडानी परोक्षात करवाथी शु समज पडे तेवीरीते ज्यारे गाडा जेबु मोटु दृष्टांत हृदयरूप नजरथी न देखाय तेवाने वीजु दृष्टात शाकामनु ? जेमके कोइ प्राणी मरण पास्यो, तेना शरीरमा चारे जूतोथी प्रथम आत्मसत्ता प्रगट थइ हृती अने चारे जूतो विद्यमान रता आत्मसत्ता अखग थाय तेम तो घटनुं नथी तो आत्मसत्ता चारे जूतोने तजीने केम चाली गइ तेथी हे शुद्ध चेतना ! तेवाथी आत्मतत्त्व केम उंडायाय ॥ ६ ॥

एम अनेकवादी मत विच्छ्रम ॥ सकट पडीयो न खद्दे ॥ चित्त

समाध तेमाटे पुरु ॥ तुमविण तत कोइ न कहे ॥ मुनिष ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे जैनविना वीजा एकातपक्षी सर्व मतवादीना सिद्धातोथी चिन्म निज्ञ कथन साजखता आत्मतत्त्व सवधी विच्छ्रम केव विशेष शका त्राति तद्वूप सकट के० महाकष्टरूप समुद्रमा कुच्यो रतो अर्थात् त्रातिमा पड्यो रतो आत्मतत्वने पामे नहीं, परतु हे शुद्ध चेतना ! अनेक मतवादीर्ठना कथनरूप विच्छ्रममा हु पड्यो नथी तेथीज मारा चित्तने समाधि ठे अर्थात् तेमना कहेवा मुजव मारु मन प्रवर्त्ततु नथी तेथीज परमेश्वरने पुरु तु के हे प्रज्ञ ! तमाराविना वीजा कोइ आत्मतत्त्वनु खरूप कहेवाने समर्थ नथी तेथी तमेज कहो जेथी शुद्धात्मतत्त्व पामीए ॥ ७ ॥

वखतु जगयुरु एणी परे जाखे ॥ पक्षपात सव रमी ॥ राग

द्वेष मोह पखवर्जित ॥ आत्मशु रठ मडी ॥ मुनिष ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मारा प्रभ्ननो ब्रण जगतना स्वामिष आ प्रमाणे उच्चर शास्यो ते कहुँ दुँ
जे प्राणी आत्मतत्त्व जाणवानी चाहना करे ते प्राणी एकांतपक्षी वाद सर्वथा मुक्तीने
राग द्वेष मोह अने अद्वाननो पक्ष वजें तो ते प्राणी अवद्य आत्मस्वरूप प्राप्तिश्ची
रात्रदिवस, सुतां जागतां, उठतां वेसतां, खातां पीतां, कार्यादिकमां प्रवर्तता रठतां
तेनी अंतरवृत्ति अर्थात् मनःप्रवृत्ति आत्मस्वरूपमां प्रवर्ततां आत्मतत्त्व यत्रार्थ जाणे ॥७॥

आत्मध्यान करे जो कोउ ॥ सो फिर इणमें नावे ॥ वागजाल
बीजुं सहु जाणे ॥ एह तत्व चित्त चावे ॥ मुनिष ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ ए रीते जे प्राणी ब्रह्मरंध्र मध्य आसन पुरीने आत्मामां बयलीन अह
तदाकारवृत्तिए शुद्धात्मस्वरूपनुं ध्यान करे ते प्राणी अनेक भतवादीर्ठना विद्रम
समत्वरूप जालमां फसे नहीं, ते प्राणी एक आत्मस्वरूप कथनविना अन्य जे जप
तप पुजा नियमादि कथनमात्रने वागजाल केह वचननी जाल, आत्माने फसवानो
फंद जाणे अने आत्मस्वरूपना तत्वनेज पोताना चिचमां चावे केह चित्तव्याकरे ॥८॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहियें ॥ ते ततज्ञानी कहियें ॥

श्री मुनिसुब्रत कृपाकरो तो ॥ आनंदधन पद् लाहिए ॥ मुनिष ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ माटे जे विवेक धरी केह विवेकवंत प्राणी होय ते आत्मध्यान संवंधीपक्ष
ग्रहण करे अने तेनेज तत्वज्ञानी आत्मतत्त्वनो वेत्ता कहीए, माटे सिद्ध संपटाना
धारण करनारा अहो मुनिसुब्रत प्रनु । कृपा करो केह आत्मतत्त्वनी उक्तस्वाण करावो
तो अनादि कावथी जेथी छूर रझए एवा चितामणि सदृश परमानंदना समूद्ररूप
पद जे मुक्तिपद ते पासीए ॥ ९ ॥ इति मुनिसुब्रतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन ॥

॥ राग आशाउरी ॥ धनधन संपति साचो राजा ॥ ए देवी ॥

पट द्रश्यण जिन अंग ज्ञाणीजे ॥ न्यासपडंग जो साधेरे ॥

नमिजिनवरना चरण उपासक ॥ पट द्रश्यन आराधेरे ॥ पटष ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! पूर्वना स्तवनमां वर्णवेद्या रण दर्शन जिन केह जिनेश्वरना
अंग दे, परमात्मा पोते रण अंगोना धारक दे अने धीजाई एक एक अंगना
धारक दे, जेननां वचन सत्सनयात्रीन दे, धीजाई एक एक नयना अपेक्षी दे, नेथी
अन्यने अंग कहा अने जेन उत्तमांग दे, कल्पनो आशय एदो दे के जे अंगोने उद्दे
ते जिनेश्वरना उत्थापक दे, कारण तेउ जिनेश्वरना अंग दे, अर्द्दी बोइ प्रक्ष करे के

“एगते होइ मिष्टं” एवो पाठ रे उत्तर के ते सत्य रे, परतु अन्य मतोमां जे जे स्थले जैन सदृश वस्तुप्रहृष्टा करी होय ते ते स्थलने सर्वेषा असत्य कहेगाय नहीं कारण के पद्मदर्शन ते जिनेश्वरना अग रे एवो पाठ रे तेउने जिनेश्वरना अग कथा परंतु दर्शन कहेख नधी तेथी हे शुद्ध चेतना ! आ स्तपनमां जेम पठग के० उए अगनु न्यास के० स्थापन कर्यु रे तेवी रीते नभि परमेश्वरना चारित्रना आरा धन करनारा, निरममत्की, समपरिणामि यह उए अगोरूप पद्मदर्शननु आराधन करे कर्त्तानो आशय एवो रे के अन्यदर्शनी सर्व एक एक नयाश्रीत रे, तेउने ते ते नयें सत्य कहे परंतु ज्यासुधी अन्यदर्शनी जैनदर्शननु उत्थापन करे तेवा वचनो कहे नहीं त्यासुधी जैनी पण तेउने छूपता वचन कहे नहीं ॥ १ ॥

जिनसुर पादप पाय वखाणु ॥ सारब्य जोग दोय जेदेरे ॥ आतम सत्ता विवरण करता ॥ लहो छुग अंग अखेदेरे ॥ पट० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ उए मतोमा जे जे मत परमेश्वरना जे जे अग रे ते कहे रे एक सारय, धीजो योग के० नैयायिक आ वे दर्शन, ते नभि परमात्माना सुरपादप के० कल्पशुद्ध समान उपमा रे जैने एवा पाय के० चरण वसाणु के० व्यारथ्यान करु हु अर्थात् तेउ परमेश्वरना वे पग रे जेम शरीरनु भडाण पगोर्थी रे तेम जीवमात्रनु भडाण सत्ताथी रे आ वने दर्शनो पण आत्मसत्ताना विवेचन करनारा रे सारयदर्शन कहे रे के आत्मामात्र पुष्करपत्रवत् निखेप रे, लेप तो प्रकृतिने रे इत्यादि वहु विस्तारयुक्त कथन रे, परतु सर्व आत्मसत्तानु विवेचन रे नैयायिक पण आत्मा मा त्रमा सत्ता तो एकज माने रे, परतु एक जीवात्मा धीजो परमात्मा एम आत्मानी वे जाति भाने रे तेमा जीवात्माने मात्र कार्यनुं कारणजूत माने रे अने परमात्माने कर्त्ता माने रे ए प्रमाणे हे शुद्ध चेतना ! जेम सत्ता सर्वनु मूख रे तेम पाद अंगोनु मूख रे ए प्रमाणे आ वे दर्शन ते परमेश्वरना छुग अग के० वे चरण ते अखेद के० प्रसन्नचित्तं लहो के० जाणो दर्शनोनु विशेष स्वरूप पद्मदर्शन समुद्दय प्रमुख अंगोर्थी जाणबु ॥ २ ॥

निद अन्नेद सुगत मीमासक ॥ जिनवर दोय करनारी रे ॥

लोकालोक अवलवन भजिये ॥ गुरु गमथी अवधारी रे ॥ प० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सुगत के० वौधर्दर्शन अने मीमासक दर्शन तेमा वौधर्दर्शन कणे कणे आत्मादि सर्व वस्तुने जेद के० जिन्न माने रे मीमासक आत्मा नित्य अकर्त्ता माने रे ग्रणे काल स्वरूपे अन्नेद माने रे, यथा ॥ एक एवही जूतेन्नुते व्यव

स्थितः ॥ एकधा वहुधा चेव, दृढयते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ वकी, एकः सर्वगतो नित्यः पुनः वेदे, विगुणो न वध्यते न मुच्यने ॥ इत्यादिः माटे आ वे दर्जन ते परमेश्वरना दोष कर केण वे हाथ ठे. जारी केण गंजीर आगयवाला ठे माटे युरुगम केण युरुए वतावेल जे रेचक, पूरक, कुञ्जक संवधी प्रवर्त्तन. ते श्री प्रथम तो लोक केण ब्रह्मरंग्रथी नीचेनु वाकीनु शरीर जेने लगोल सङ्घा ठे ते लोक अडड ठे, तेनु अवलंबन केण आत्माने आश्रयकरीने, आ वे दर्शनरूप परमेश्वरना वे हाथ तेने अवधारी केण निर्णय करीने जजिये केण ध्याइए. तेमज अखोक केण शुन्य माटे खगोल सङ्घा ते ब्रह्मरंग्रने ठे तेवी अखोक अडडे ब्रह्मरंग्रने विषे आत्माने आश्रयकरीने आ वे दर्शनरूप वे हाथनो निर्णयकरी जजीए, ध्याइए.

आ वे दर्जनमां बोद्धदर्जन, जे विद्यमान ते क्षणेक्षणे निन्ननिन्न ठे, एवो तेनो सिर्जांत ठे. ते प्रमाणे आत्मा प्रमुखने व्यवहार नवथी पर्यायांतर कालथी अवधारीए तो क्षणेक्षणे निन्ननिन्न ठे ते सत्य ठे. मीमांसक वस्तुने अन्नेद माने ठे. ते प्रमाणे निश्चय नयनी अपेक्षाए आत्मा प्रमुख सर्ववस्तु पोतपोताना लक्षणथी त्रणे काले अन्नेद ठे ते सत्य ठे. ए प्रमाणे आ वे दर्जन ते व्यवहार अने निश्चय नयना अपेक्षी ठे. परमेश्वरनुं प्रवर्त्तन निश्चय अने व्यवहार वनेवी ठे तेवी बोद्धदर्शननुं व्यवहारथी प्रवर्त्तन ठे तेवी ते चामकर ठे अने मीमांसकनुं निश्चयथी प्रवर्त्तन ठे तेवी ते दक्षिण कर ठे. आ आगय समजवामां कठिन ठेतेवी गंजीरकाणुं. एरीते परमेश्वरनां चार अंग वर्णव्यां.

लोकायतिक कूप जिनवरनी ॥ अंश विचारी जो कीजे रे ॥

तत्त्वविचार मुश्वारस धाग ॥ युरुगमविण केम पीजे रे ॥ पट० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नभि परमेश्वरनुं कूप केण पेट ते सोकायतिक केण नास्तिकवादी चार्वाक दर्जन ठे. जीव, पुण्य, पाप, गत्यागति कांइ नथी, एवो नास्तिकनो मत ठे. सर्वाशे तो ते परमेश्वरनुं पेट नथी, पण अंशविचारी जो कीजे केण एक अंश विचारी जोडए तो परमेश्वरनुं ते पेट ठे. नाम्निक जेम शुन्यवादी ठे, तेम परमेश्वरनुं पेट पण शुन्य ठे. परंतु तत्त्वविचारे जोडए ठीए तो सर्व दर्जन वाणीथी वर्णव्या अने वाणी पेटवी उत्पन्न थड माटे कूख ते पांचे अंगनो खजानो ठे. ए कूखथी पांचे दर्जननी उत्पत्ति ठे. माटे सुधारसधारा केण अमृतरूप रसनो प्रवाह ठे तेवी ए सर्वांग धारानो मेलाप करीने पीक्षे केण रस आस्वाडन करीए. निर्ममत्वी युरुना वतावेला मार्गविना सर्वांग दर्जनना मेलापरूप तत्त्वनो विचार तदूप सुधारसनी धारा औरीते पान करी शकीए. ममत्वरूप छुर्जन पान करतां टोटी नांखे. एरीते पांच . . .

जैन जिनेश्वर वर उत्तम अग ॥ अंतरग वहिरंगेरे ॥ अद्वर
न्यास धराच्छाधारक ॥ आराधे धरी सगेरे ॥ पट० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जैनदर्शन ते नमि परमेश्वरनु वर केण प्रधान, सर्व अगोमा शिरोमणि
उत्तमांग, मस्तक टे, केमके अतरगे जोइए तो जैनदर्शनना अज्ञावे स्वस्वरूप प्राप्ति
न थाय, अने धाह्यागे जोइए तो जैनदर्शन सर्वांशी टे सर्व नयाश्रित टे तेथी ते उ-
त्तमांग टे परतु जे प्राणी निर्ममत्वी थड अक्षरन्यास केण एकेक अक्षरनु स्यापन
तेनी धरा केण जूमिका स्यानक अर्थात् आ पहेला अक्षरने रहेनानु स्यानक, आ वी-
जाने रहेवानु स्यानक यम एकेक अक्षरना आधारक केण आधारचूत एटले आग्रह
करीने रह्या जे अर्थ ते अर्थने सगे धरी केण साथे करीने, सर्वांशी जैनदर्शननु आ-
राधेकेण आराधन करे अर्थात् एक अक्षर मात्रनो उघेद करवो ते तो दूर रह्यु परतु
अक्षर आगल पाठल पण न कहेतु एवीरीते जैनदर्शननु आराधन करे ए ठ दर्शन
परमेश्वरना अग वर्णन्या ॥ ५ ॥

जिनवरमा सधला दरशन ठे ॥ दर्शने जिनवर जजनारे ॥

सागरमां सधली तटनी सही ॥ तटनीमा सागर जजनारे ॥ पट० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ए रीते नमि परमेश्वरमा सर्व दर्शन टे तेथी ए ठए दर्शन परमेश्वरना
अग ठे एकेका अन्य दर्शनमां सर्वांगी सत्ता न पामीए अर्थात् एकागी सत्ता पा-
मीए तेथी ते अश्वे जिनवर जजना कहीए जेम समुद्रमा सर्व तटनी केण नदींठ
सही केण निश्चयथी ठे, परतु नदींठमा समुद्रनी जजना ठे, एटले समुद्रनी वेळतु
पाणी जे नदीमा आवे तेरीते ते नदीमा समुद्र एक देशे सजवे ठे ए रीते समुद्रो-
पमाए जिनवरना ए ठए दर्शन अग ठे ॥ ६ ॥

जिनस्वरूप थइ जिन आराधे ॥ ते सही जिनवर होवे रे ॥ झृगी

इखिकाने चटकावे ॥ ते झृगी जग जोवे रे ॥ पट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए रीते सर्व दर्शनोना एकज ज्ञावरूप जिनेश्वरना स्वरूपरूप थइ तदाकार
वृत्तिए परमेश्वरनु आराधन करे-ध्यान करे ते प्राणी सही केण निश्चयथी जिनवर
केण केवलज्ञानदर्शनी थाय जेम भृगी केण जमरी उप्पणकासमा मदनी उन्मत्ताथी,
चचक्षता वधवाथी अने पोताना काटामा पण विष वधवाथी, काढी अथवा पीढी
नीनी माटीमा पोते सब मुकी, गोखीचाली, एकेक गोखी कावी घर वाधी, तेमा पोते
इखिका केण खट, तेने काटाथी चटको दइ ते सटने घरमा मुकी, फरी एक गोखीए

ते घरनुं मोहुं हांकी. नजरमें दीक्षमें, चटकायी ते घरनुं मुख उथाडे. उथाननांज जे
लट हन्ती ते जमरी थड उडी जाय. ते लटने जमरी अयेकी जगन देखे. ते हटांते जि-
ननव्यप थड जिनने आराधनां पोते जिनवर याय ते आ प्रमाणे. जिनेश्वरनां वचन
प्रमाणे श्रंतगत्स्मवर्ती थड लट्टप वाहात्माने चटको आपी निजन्वरूपमां परिषमन
तद्वप घरमां रही ध्यानथी प्रवर्तनां लट्टप वाहात्मा ते जमरीन्वप परमात्मा याय.
एम सर्व जगतने जासन थतां, मिखमां गमन ते उन्वारूप याय ॥ ३ ॥

चूरण जाप्य सूत्र निर्युक्ति ॥ वृत्ति परंपर अनुभव रे ॥ समय
पुष्पना अंग कहा ए ॥ जे छेदे ते ऊरजव रे ॥ पट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहो शुद्ध थङ्ग ! परमेश्वरना उत्तमांगन्वप जैनवर्णन तद्वप समयपुरुप
नाठ अंग रे. १ पूर्वधरकृत नुटक पदमी व्याख्या ते चूर्णि २ सूत्रोक्त अर्थ ते जाप्य ३
गणधारादि कृत वचन मात्र रचना ते सूत्र ४ पूर्वधरकृत पदजंजनना ते निर्युक्ति ५
सूत्रो उपर विस्तारयुक्त टीका ते वृत्ति ६ परंपर अनुभव के० युक्त संप्रदायथी अनु-
भव के० उत्तरनी यथार्थ स्मृतिपूर्वक जिन्न तात्कालिक झान. या प्रमाणे समय
के० सिळांतरूप पुष्पना पुर्वोक्त चूर्णि प्रसुख र अंग रे. तेने जे प्राणी, परन्नवनी वीक
नहीं राखतां निर्जय थड उधेदे, ममत्वरूप रसधी हिनाधिक जापे ते प्राणी ऊरजव
के० छुट जवगामी जाएवो ॥ ७ ॥

मुझा वीज धारणा अद्वार ॥ न्यास अरथ विनियोगे रे ॥
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे ॥ क्रिया अवंचक जोगे रे ॥ पट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मुझा वीज धारणा अद्वारन्यास ए वधा ध्याननां अंग रे. ए मुझा वीज
धारणादिनो अर्थ के० नात्पर्यार्थ-रहस्य तेनुं विनियोगे के० विशेषपणे विभिन्नं झान.
आ ध्यानना अंगोना रहस्यनुं मने जासन नथी अने कर्त्ताए त्रीजा पदमां जे ध्यावे
एवुं पद गुण्डुं रे तेथी ते ध्याननुंज कथन रे, परंतु मने जासतुं नथी, कर्त्तानो आ-
शय कर्त्ता जाणे. तेथी जे प्राणी उपग्रहयुक्त, निर्ममत्वी थड पुर्वोक्त मुझा वीज धा-
रणादिके स्तवना विविध्यावे अर्थात् एकाधचिंत्य, तदाकार वृत्तियें, तद्वप तन्मयी त-
द्वेशी तदाजिलापी थड ध्यान करे, जेने विषय विषयी अजिज्ञ जाते ते प्राणीनुं
आत्मस्वरूप रूप चिंतामणि रख रागादिशी वा छुट ममत्वी रगोनी नवंचिजे के०
रगाइसां जाय नहीं. ते प्राणी अवंचक क्रियानो जोगी याय. शुद्ध सरख त्वजाविक
करणीनो जोगी याय. ते सायावी वचनोनी रगाय नहीं. अर्ही कोइक प्रनमां ध्यावेने

रे काणे साधे एवो शब्द रे तेनो अर्थ एवो रे के मुझा वीज धारणादिके जे समय पुरुषने साधे ते किया अवचकनो जोगी होय आ पदनु रहस्य कर्ता जाणे मने जास्यु नयी॥५

श्रुत अनुसार विचारी बोलु ॥ सुगुरु तथाविधि न मिले रे ॥

किरियाकरी नवि साधी जकीये॥ ए विपवाद चित्त सधेदे रे ॥ पट० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना । आ कालमा जेगा प्रर्जने मारो कालकेप थाय रे ते तने बहु तु ज्ञेनदर्जनना श्रुत के० सिद्धातनु नैगमादि नयानुयायी कथन, वचन पर्गणाण वदेता अपार रे माटे अनुसार के० ते पारने समीप रासी अर्थ करता पि चारी विचारी बोलु तु वही सिद्धातमा जे ग्रनाणे गुरुनु उक्षण कर्यु रे, तेगा पिशुद्ध श्रद्धापत, इन्द्री, आत्मार्थी, परोपकारी, निर्मायी, निर्ममती, कथनी करणी समान, सप्तनयानुयायी, जिन प्रवचन पिशुद्धजापी तथाविधि के० तेवा प्रकारना गुरुनी योग याइ मने मखती नारी तेथी सूत्रमर्यादाए पिचारीने बोलु तो पण शु ? कारण के ते मर्यादामा रन्नीने साधु मध्यी किया करी उदयमां आवेदा चारित्रने नविसाधी जर्कीण के० साधी शकनो नयी, कारण के श्रुतमर्यादाए पण चारित्र साधवु अति क रिन रे तेथी एक तो ए अने धीजु तथाविधि गुरुनो योग न मखगायी किया न करी शारु माटे जोके वेषधारी तु, तोपण कोइ पुत्रे के तमे कोण ठो ? त्यारे महाहीन यचने मुग्धी बहु तु के हु जेननो जनो तु तेनी समस्त चित्तने निषे प्रदेशे प्रदेशे पिपवाद य० उदासीनता सानी रही रे ॥ १० ॥

ते माटे उजा करजोनी ॥ जिनवर आगद कढीएरे ॥ समय

चरण मेगा शुद्ध देजो ॥ जेम आनदघन खडीएरे ॥ पट० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे शुद्ध चेतना । तु, हु अने शुद्धश्रद्धा, आपणे त्रणे परमेश्वरनी आगम वै दाय जोनी उजा यह पिनति करीण के हे प्रबु ! तमारा जापित समय के० मिद्धान अनुसार शुद्ध चारित्रनी मेगा के० प्रर्जना अमने आपजो, जेम अमे पण आनदना समृद्ध पामीण अथवा हे परमेश्वर ! अमने घरमापतीन, घरमकरण अने पावरिलानि दरिपाद समये शुद्ध आगमोक्त चारित्रनी सेवा आपजो या तमारा घरदृशमध्यनी भेदा आपनो जेथी आनदघन पद पामीण॥११॥ इति नमि जिनमनन

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन मनवन ॥

॥ राग माहारी ॥ धारा दोङा ॥ ए देशी ॥

अष्ट जगानर वाखदीरे ॥ तुं सुन आनमगम ॥ मनरावाखा ॥

मुगति स्त्रीं आपणेरे ॥ सगण कोइ न काम ॥ मन० ॥ १ ॥

धर आवोहो वालिम धर आवो ॥ मारी आगाना विसराम ॥ म० ॥

रथ फेरोहो साजन रथ फेरो ॥ साजन मारा मनोरथ साथ ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नेमनाथ प्रज्ञ राजेमतिनुं पाणिग्रहण करवा तोरणे आव्या त्यारे मृगादि पशुने सज्जय देखी तेउने निर्जय करवा सारथिने कन्युं के रथ पाठो फेरवा, ते समयनां राजेमतिनां वचनो नेमनाथजी परव्ये ठे. हे परमेश्वर! तमे आठ ज्वत्री मारा बद्धन वो, आठमांथी एकपण ज्वमां प्रीतिनी न्युनता राखी नथी तेवी मारा आत्मानेविष्ये तमे रसी रह्या ठो. अंतःकरणसुप कमलनी पांखडी ढीर रसी रह्या ठो. तेवी हे खानि! आपनं मुक्तिक्वी साथे संबंध करवानुं कांड पण काम केण जहर नथी. मुक्ति क्वीनो रूप रहिन ठे. हुं राजकुमारी जो जनहृषा ब्रीरब तुं. जो मारा उपर मुक्तिक्वीने लावयो तो ते खी मारी ओक थब्बे अने खीने ओकना छुःख करतां मरणनुं छुःख मोटुं नथी, माटे नमारे मारी प्रीतिनो नाश करवो द्योय तो वीजी खी बावो ॥ २ ॥ माटे अहो खानि! मद्वारा बाला उग्रनेनना घरनेविष्ये पधारो. अहीं राजेमति अल्यनं रागथी रं-जित थवेद्वी पनिना फरवाथी विकल चित अर्ता शुन्य हृदय अह जवाथी कहे ठे. हे खानि! तमे मारी आगाना विसराम केण धाम ठो. हे बावेसर! नमे विकंब न करो. कारणके मारी आगारुप वेख तुट्ठो तो फरी संवादी नहीं, तेवी हे सज्जान! अन्धने पाठो फेरवो अने मारा मनना मनोरथ पुराकरो, केमके तमारा रथने अने मारा मनोरथने जेवो माश ते तेवो साथ फरी मख्तो नहीं ॥ ३ ॥

नारीपदो अयो नेहखोरे ॥ साच कहे जगनाथ ॥ मन० ॥

इश्वर अरथंगे धरीर ॥ तुं सुज जाले न द्याय ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नारीविना स्नेह नहीं. जोके स्नेहनो वास अंतःकरणमां ठे. परंतु नारी स्नेहलता ठे, स्नेहरूप फखने उत्तम करनारी ठे. तेवी नारी साक्षात् मूर्तिमान स्नेहज ठे. जगतना जीवो नारीविना स्नेह माननाज नथी. जो नारीविना स्नेह गणानो होय तो महादेव ले मृष्टि संहारकर्ता कहेवाय ठे ते पण पानाना अर्थागमां पार्वतीने केम धारण करी राखे ठे. तेण तो न करवा योग्य कार्य कर्तुं, तमारे तो तेम करवानुं नथी. सगाइ करीने पाणिग्रहण तो सर्व जगत करे ठे, तेम नमारं पण करवानुं ठे, माटे तमे मारो हाथ जावो. ॥ ३ ॥

पशुजननी करुणा करीर ॥ आणी हृदय विचार ॥ मन० ॥

माणसनी करुणा नहीर ॥ ए कोणवर आचार ॥ मन०

अर्थ ॥ हे स्त्रामि ! तमे पशुठंनी करुणा सवधी पिचार अत फरणमा आळो के पशुठंनी हिसा थडो, तेथी धि कार ठे मारी परणवानी प्रीतिने, कारणके एगा श्विवेकी पुण्यहीन प्राणीठंनी दया चिंतवी रथ केरव्यो अने हु तेउथी असरयात मुण पुन्यप्रपञ्च मनुष्यनी दया तमने न आवी आवो पिचार ते कोना घरनो आचार जोइ आव्यो जगतमा हीनमा हीन अने अधिकमा अधिक जातिगता घरोमा आयु प्रवर्तन नवी ॥ ४ ॥

प्रेमकृपतरु घेटीउरे ॥ धरीउ जोग धतुर ॥ मन० ॥

चतुराइरो कोण कहोरे ॥ गुरु मखीउ जगसूर ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कटपृष्ठ आजन सवधी मनोपारक ठे तेम हे स्त्रामि ! प्रेमरूप कटपृष्ठ पण आजन मनवी बागाठे पुरनार ठे, अर्थात् क्षीना सुदरूप, हातनाव, मद-दाम्य, तीइण कटाह, मनोजापित पट्रस जोजन, अतर पुण्यादिकनी सुरजि इत्यादि मनोपात्रित प्रेमकृपतरुने ठेदीने हे स्त्रामि ! तमे योगरूप धतुरो धारण कर्यो कार एके छुपा पिपासा, शीत छाण, दशमशक इत्यादि शरीरनी शाताने पिप्राय ठे, अगानाना कारणरूप होगारी धतुर प्राय ठे माटे हे स्त्रामि ! आवी चतुराइनो शिष्यवनारो जगतमा सूर्य जेवो रत्नप्राय तमारे हाथ क्यारी चढी आव्यो ॥ ५ ॥

मास्तो एमा कयुटी नदी रे ॥ आप विचारो राज ॥ मन० ॥

गजमजामे वेसता रे ॥ किमटी वधग्रे लाज ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे राजन् ! मने तज्जीने आप जाउ ठो तेमा मारी घदनामोशी निचित् माझ नवी केमरे, तमे पोतानी इत्याप रथ पाठो केरव्यो, तेथी में अकार्य कर्युं एम पांड फदेशे नहीं वय्यी मारो त्याग करो ठो तेथी चित्तमा निचारजो जे तमारा समान राजाउनी मजामा त्यारे जड्ने वेसशो त्यारे तमारी किसकी केंद्र केवी शोना वधने ? कोइर वडु योठो दझे तेनो तमने जोइनेज मुर्गे कहेशो के जुउ आ मरद आन्या, एम कहेशो त्यारे तमारी केंद्री साज नधशो घणी शरम जेवी यात ठे दुःखाद यगद्यु नवी रथ पाठो फेर्यो ॥ ६ ॥

प्रेमरे जगजन महुरे ॥ निर्वाहे ते उर ॥ मन० ॥

प्रीत दर्नने ठोक्नेउरे ॥ तेडु न चाखे जोर ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ममारी जीवनाप्र रागी ठे तेथी प्रीति करनाना अनिवार्या ठे सगामीगु श्रीशङ्कर कार्यनु कारण ठे ए प्रमाणे प्रीति तो करनाग महु ठे, परतु करेक्षी प्रीतिनो

निरवाह करनारा ठंडे केण जुदाज थे, तमे तेवा नथी, तमे प्रीत नो करो वो परंतु प्रीतने नजावतां तमने आवक्तुं नथी, यथा ॥ प्रीतरीत अति कठिन हे ॥ समज करेठे काय ॥ जांग जम्बना सोहेली ॥ खेडेरां मुश्किल होय ॥ १ ॥ तेथी हे बहूच्छ' जे मनुष्य प्रथम प्रीत घांसीने परी ग्रोसी नाखं तेनी साथे झुं जोर चाक्षे? पराणे प्रीत थती नथी ॥ २ ॥

जो मनमां पहवुं द्वनुं रे ॥ निसपत करत न जाए ॥ मन० ॥

निसपत करीने घांसना रे ॥ माणस सहुए नुकसाए ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जो आपना मनमां प्रथमथीज, तोणथी रथ फेरवी, मने तजी देवानी छां दती तो निसपत केण मारी साथे संवंध करवो घटतो नहोतो अने हुं पण संवंध करन नहीं, तेथी हवे विचार करो के स्त्रीमात्रनी ज्यांसुधी सगाड घइ नथी त्यांसुधी तो दरेक स्त्रीने धंधन नथी, परतु ज्यारे कोइ पुरुषनी साथे कोइ स्त्रीनो सगपण संवंध याय त्यारे ते पुरुषनी साथेज तेनो संवंध रखो, हवे ज्यारे संवंधी पुरुष स्त्रीने तजी हे त्यारे ते तजायेकी स्त्रीने वीजो पुरुष रंधेकी हांडकी प्राये जाए अने तेनी साथे कोइ संवंध करवा जाय तो ते पुरुषने वीजाठे कहे के तमने वीजी कोइ कन्या मखती नथी, ते कन्याने तो अमुक पुरुषे तजी दीधी वे तेथी विषकन्या प्रमुख छुपणो पण ते कन्या उपर लोको मुके, तेथी संवंध कर्या परी कन्यानो त्याग करतां ते कन्याने भोदुं नुकशान थे, प्रगट रीते कलंकित करवा जेदुं थे ॥ ७ ॥

देतां दान संवत्सरी रे ॥ सहु खहे वंहित पोप ॥ मन० ॥

सेवक वंहित नवी खहे रे ॥ ते सेवकनो दोप ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे सामि! तमे रथ फेरवी धेर गया, लोकांतिक देवताए दीक्षानो अवसर जाणी तमोने विनंति करी, जेथी तमे संवत्सरी दान देवा लाग्या, सर्वे प्राणीमात्रना मनोवांशित पूर्ण करवा लाग्या, दाननो वरसाढ वरसावर्ता रतां मारा जेवा परम सेवक कांझपण धंठीत पामता नथी, तेथी एवी केहेवत घइ के ॥ पेंडा खावे दूरका, जूर्ह्या मरे हजूरका ॥ अथवा, घरनां रेयां धंठी चाटे, पामोसणने आटो ॥ एवी वातो तमे साची करी वतावी; पण तेमां तमारो दोप नथी, तमारा सेवकनोज दोप थे, वीजा सविने जोगकर्मनो उदय इतो तेथी तेउ तमारी पासेथी ऊव्याडि पान्या अने मारे जोगोपजोग कर्मनो असंज्ञ तेथी हुं न पामी, एवी रीते मारा कर्मनोज दोप थे ॥ ८ ॥

सखी कहे ए जामलोरे ॥ हु कहुं लक्षण सेत ॥ मन० ॥

इण लक्षण साची सखीरे ॥ आप विचारे हेत ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ आजसुधी पुरुपसवधी मारी परिक्षा साची पझी, मात्र तमारी परिक्षा हु वरापर करी जकी नहीं तमारी साथेनी सगाइने यत्ते मारा सदीपर्णे मने सूचव्यु हतु के तमारो जर्तार अतर अने वहार इयाम रे, मे तेउने कल्यु के वहारथी तो इयाम रे, परतु अनरथी ते सेत कें उज्ज्वल, निकाफटी रे हवे तमे ज्यारे मारो सपथ करी मने कुवामा उतारी दोरहु काप्यु, त्यारे सखीउना वर्गनु केहेतु साचु ययु अने मारी परीक्षा खोटी पडी ते हेत कें कारणने असत्य गणता हो तो आप चिचारी जोजो ॥ १० ॥

गणीमु गणी सहु रे ॥ वैरागीस्यो राग ॥ मन० ॥

रागप्रिना केम दाखवोरे ॥ मुगति सुदरी माग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे प्रनु ! हु सरागणी तु तेथी आपने सरागी यु योग्य रे जगतनी पण एर्हीज नीति रे राग राखे तेनी साथे रागतो सपव थाय, परतु रागरहितनी साथे राग यंम याय ? हु रागी तमारा उपर तु तेथी जो तमारामा राग होय तो मारा उपर राग रायो, परतु तमारामा रागज सागतो नथी तेथी मारा उपर केही रीते राग घरो यक्षी मने एक चिचार आवे रे के जो तमे रागी नथी तो रागने अनापे जे माग मुक्तिक्षी पार्मीण तेनो मार्ग जेने मुगति सुदरी मार्ग कहेगाय रे, तेने वारे परंदामा केम दायरो कें प्रगट वनारो रो ? तेथी जेम अन फरणमा होय तेज होरे आवे तेम तमारे मुक्तिक्षी उपर राग रे अने तेणीने सर्व समक्ष लाजनो ल्याग करो मरो रो जेने अनेक जर्तार रे एवी श्रीने इओ रो अने मने परिहरो रो आगे ते बोना घन्नो आचार ॥ ११ ॥

एक गुद्य पटनु नयी रे ॥ सबलो जाणे लोक ॥ मन० ॥

अनेकातिक नोगवो रे ॥ ब्रह्मचारी गतरेग ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हे भानि ! छोरो मने आरी कहे रे के तमारा जर्तारनो केही रीत के नजीने चाड़ा गया मे कद्यु रे तेमनामा कामरूपी रोग नयी अने ते ब्रह्मचारी रे तेयी गया छोरो कहे रे के एक रानेमतिने तद्या तेमा शु ? अनेकातिक जोगरेव अने ब्रह्मचारी कहेवाय रे तेयी जो आप ब्रह्मचारी नाम धरायता होतो आज दर नु के आतु एव युद्ध आपने घटनु नयी छोरो जाणे ते युद्ध शानु ? छोरो जाणे

रे के ते अनेक जोगवे रे अने निष्कामी, ब्रह्मचारी एवं नाम धरावो तेथी एवं युद्ध अधिट्ठित रेघटित युद्ध तो ते कहेवाय के जेने लोको न जाणी शके. चतुरनी युसवात कोइ जाणी शके नहीं. आपनु युस तो सर्व लोकोए जाएयु के अनेकने जोगवोरो तो मने एकने जोगववामां ब्रह्मचर्यनो शुं जंग याय रे ? जो ब्रह्मचर्यने अखंक पालवुं एवं धारता होतो अनेकांतने जोगवबुं तजीयो. पण तमे तो वे घोडे चमो गो, अनेकांतने जोगवो गो अने ब्रह्मचारी नाम धरावो गो. ॥ ३७ ॥

जिण जोणी तमने जोउं रे ॥ तिण जोणी जुर्ज राज ॥ मन० ॥
एकवार मुजने जुर्ज रे ॥ तो सिजि मुजकाज ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामी जिण जोणी केण जे जोवानी रीते हुं तमने जोउं हुं अर्थात् जे सराग दृष्टिए हुं आपने निरखुं हुं, तेज सराग दृष्टिए हे राजन् ! मने आप हृदय-रूप नेत्रे जुर्ज. जो कृपाकरी आप एकज वखत मारा उपर दृष्टि करशो तो मारुं वांचित कार्य सिद्ध यजो ॥ २३ ॥

मोहदशा धरी जावनारे ॥ चित खदे तत्वविचार ॥ मन० ॥
वीतरागता आदरी रे ॥ प्राणनाथ निरधार ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अत्यारसुधी राजेमति सखीरुं साये तथा नेमनाथजी साये मोहद-शानी व्यवस्थानां वचनो वोखती हती. हवे वित्तमां मोहदशा धारण कर्या रतां स्व-ज्ञाविकरीते एकत्वजावना आवी अने तेवाज आशयने प्रसंगे, कर्त्ताए पारदी गाथामां “एकवार मुजने जुर्ज” एवं पद सुख्युं रे तेथी मोहमयी वचनो कहां रतां स्वज्ञाविकरीते एकत्वजावना आवी एस लागे रे. राजेमति विचारे रे के, मारुं आत्मद्वय मारा आत्मप्रदेशोने आधारे रे तो मारे तेमनी साये शुं संवंध रे ? आवो आत्म-तत्वनो विचार केण जेद राजेमति पामवाशी पोताना आत्माने कहेरे के हे आत्मा ! प्राणनाथ केण प्राणोना नाथ जे नेमनाथ स्वामी तेमणे निरधार केण निश्चययी वीत-रागता आदरी केण ग्रहण करी, तेथी तारो राग तेमने केम जेदी शके, मार्दे ते कोण अने हुं कोण ? एम एकत्वजावना जावता हवा ॥ १४ ॥

सेवक पण ते आदरे रे ॥ तो रहे सेवक माम ॥ मन० ॥

आशय साये चालीए रे ॥ एहीज रुहुं काम ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे राजेमति नीतिशुक सन्मुख दृष्टिए एकत्वजावना जावे रे हे आ-त्मा ! नेमनाथजी साये स्वामी सेवक संवंध करवो तने योग्य हृतो ? तेवा संवंधवी

तारे परवश यतु पडत थने परवश यतु ते स्वेताचारीने नरकतुल्य ते परतु एता तारे प्रथम निचारवी योग्य दृती पाठवधी विचार करवायी शुं सिद्धि । स्वामीं वीनरागता आदरी तो सेवक पण निश्चयधी तेज आदरे थने तेम करे तोज सेवकने माम कें महिमा रहे, धर्म स्थिर रहे माटे हे आत्मा । स्वामिना मननो आशय उ अनिप्राय जाणी ते प्रमाणे चालीए तो तेज उत्तम काम वने सेवकनो सेवयर्थम् एतो वे के पोतानी मरजी प्रमाणे नहीं चालता स्वामिनी आङ्गाप्रमाणे वर्तवु ॥ ३५ ॥

त्रिविध योगधरी आदयों रे ॥ नेमनाथ भरतार ॥ मन० ॥

धारण पोषण तागणो रे ॥ नवरस सुगताहार ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटे श्रीनेमनाथ स्वामिए मन वचन काया, त्रिविधधी योग आदर्य तेथी मारे पण तेमज करु ते उत्तम ते मारा मननो वट्ठुज श्रीनेमनाथ मारा था मिक गुणोनो आधार वे, वली उणोनु पोषण करनारा पण तेज ते तेमज मारा था रमाने संमारसमुद्धी तारनारा पण तेज वे वली तेज मारा स्वामि नवरम मुक्तानो हार ते शृगार, द्वास्य, कलण, रोड, वीर, जयानक, विजत्स, अद्वृत थने शात, था नप रस ते तेमा निरुपम आत्मिकस्वरूप ते अद्वितीय शृगार ठ अनादि कर्तो पक्षनी जेम पुरुषनो प्रगृहितिथी वियोग तेथी अर्तीऽियनो इयाकर्पे ते परम द्वास्य व. स उत्तुने अनयदान देवानी वृत्ति ते करुणा ते कर्मने विडारानी वृत्ति ते रोड ग्स वे इत्यादि रसपे रसनो विचार पथार्थीते करवो विशेष खखाणवधवायी विस्तार कया नवी ॥ १६ ॥

वारणस्थी प्रञ्जु भन्योरे ॥ गण्यो न काज झकाज ॥ मन० ॥

कुपाक्त्री मुज दीजीए रे ॥ आनदधन पदराज ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हे प्रञ्जु ! मे आपनी कारणस्थं प्रेवा करी अथर्वन् मारा मनमा परम भग्नु स्वरूपस्त्वं कारण प्रवर्त्तने तो मारु आत्मस्वरूपरूपसार्य सिद्ध यंगे "री भाग्यायी तमान सेवन करतां मे करणा नहीं करणा योग्य काइ गण्यु नहीं नम ममारीन न द्वादिनु सेवन ते करतीय थने वेराग्यनु सेवन ते अस्तरणीय पर्माने मनन नग न एता मात्र परमेश्वरुं ज सेवन क्युं माटे हे परम-भर ' मारा उपर उपा रीन व सग घइ मने आनदधन के० निर्वाणप्रदग्धप सात्य थापो ॥ १७ ॥ इनि ग्रन्थमनाथ निनस्तवन इति श्रीथानदधननी इन धार्मीना आ नाम स्वरूपना गाङ्गावरण न नसारजीए हृष्पगद्भान रही सग्न । ८८६ ना जादवामुद ॥४ ता गर मह कर्यो ते प्रमाणे आशये हेइ उपना भूष घइदोप ते वाचमारे नुगरी गारा ॥ १८ ॥

३

श्री आनंदघनहृत चतुर्विंशतिजिन स्तवन्.

बीजी प्रत उपर आनंदघनजीना रेह्वा वे स्तवनो हता ते पोतानाज करेला हता अन्
तेनी उपर ज्ञानविमलसूरिए वालावावोध कर्यो रे. ते हवे परी गाप्या रे ॥

॥ अथ श्रीपार्बतजिन स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

धृवपद्रामीहो स्वामि माहरा ॥ निःकामी गुणराय ॥ सुग्यानी ॥

निजगुण कामीहो पामी तुं धणी ॥ धृव आरामीहो हाय ॥ सुणाधुणा ॥ १ ॥

अर्थ ॥ धृव के० निव्रिकपद जे सिद्धपुणुं तेना रामि के० रमणहार प्रलु ते मारा
स्वामि रे, वली कामकंदर्पना अचिकाप रहित रे तेशी निष्कामी रे. अष्टुणु युक्त
होवाची गुणराय रे. अद्यवावाध सुखना जोगी रे. केवलज्ञान युक्त होवाची सुज्ञानी रे.
पोताना गुणना अचिकापी रे एटदे स्वस्त्राव प्रगट यदो तेनाज अर्थो रे. सम्यक्
दृष्टि जीवो तमारा जेवो धणी पामी धृवपद आरामी के० अचिक द्वाखना आत्मारामी
आय, कारणके जे परमात्माने सेवे ते परमात्मा आय ॥ ३ ॥

सर्वव्यापि कहे सर्व जाणेंगपणे ॥ परपरिणमन सरूप ॥ सु० ॥

पररूपे करी तत्वपणुं नही ॥ स्वसत्ता चिदरूप ॥ सु० ॥ धु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे प्रलु ! तमने केटलाएक तर्वव्यापि कहे रे. तमे सर्वहृ होवाची ज्ञान-
सरूपे सर्वव्यापि रों एवी रीते आरोपे घडे रे, परंतु तेडे जो वस्तुधर्मे सर्वव्यापि-
कहे तो दोप उपजे रे; केमके जे परमात्म इच्छने अस्तिरमन्नाव तथा अन-
व्यापे अने परपरिणमन सरूप यवाची परमात्म इच्छने अस्तिरमन्नाव तथा अन-
व्यापे अने पररूपे दृष्टपणे थाय. वली पररूपे थतां, अन्य इच्छरूप यवाची नत्वपणुं रहे
गही मादे पोतानी सच्चाज चिङ्गुप द्वानसरूप रे तेनाची तत्वपणुं कहेवाय ॥ २ ॥

इय अनेके हो ज्ञान अनकता ॥ जख नाजन रवि जेम ॥ सु० ॥ धु० ॥ ३ ॥

एकत्वपणे गुण एकता ॥ निजपद रमताहो खेम ॥ सु० ॥ धु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हैय के० नवरूप ते अनेक रे तेने ज्ञाने करी जाणे तेशी आत्मानुं
न अनेक रे. हैयना जेवर्थी ज्ञानना पण अनेकरूप रे. जेमके सर्व एक रे रनां

शयमां प्रतिविव एटतां अनेक जोनारने ष्ठदृ ष्ठदृ देसाय रे, तेमज ज्ञान गु-
णकरणहृत सर्व आत्मनावनुं न्यानरूप जे आत्मरूप तेनुं तगा प्रदागन्पयुग्मुं
पणे अन्योने प्रकाश करवाची । ते ष्ठदृ ष्ठदृ खाने रे. एषमाणे नवरुप पोतपोनानुं
तेन इच्छ तेमां रमतां दृम इच्छाप रे अर्थात जोऽगुण पर परिणामी नशी.

परदेवे गत डेयने जाएवे ॥ परदेवे थयु झान ॥ सु० ॥

अन्तिपाणुं निजदेवे तमे कहुं ॥ निर्मलता गुणमान ॥ सु० ॥ धु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ न अवगाहनाथी पर के० अन्य केवे रसु जे जीवज्ञव तथा अजीवज्ञव तेन मात्र जापायी, झान परदेवी थयु, परतु जे गुणी होय ते गुणयी अजेदपणे होय तेथी झान निज केवे के० आत्मानेविषे व्यापकपणे रसु ते तेथी तमे तेने अनिपाणु कहुं झानमां सजापे निर्मलता ते तेथी तेमा सर्वज्ञव दर्पणनी जेम जासे ते परतु झान भेदभाव इय जतां नयी अने इयमा झान जतु नयी ॥ ४ ॥

डेव निनागेहो झान विनिश्चरु ॥ काख प्रमाणेरे थाय ॥ सु० ॥

स्वसाके करी स्वमत्ता मदा ॥ ते पररीते जाय ॥ सु० ॥ धु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ बोउ बहुे के देय जे घटपटादि तेना निनाशयी झान पण निनाशी ते अगीन अनामा यांमानने परायने, जे अनामात पर्याय ते वर्तमानपणु पामे अने यांमारा पर्याय ते अगीनपणु पामे ते सर्व पर्यायनु जासन झानमां ते जासन पर्याय ए गीन परिलुमे ते तेथी झानमन्ये निनाशी धर्म ते तेने उत्तर के, सकाळे करी पोताना टालादद्यपद्य वरिणमा जोता झान उत्पादन्ययरूप ते, तोपण तेनो स्वसत्ता धर्म बदापि पामनापणु पामतो नयी परानुपायी जास न ग्रहण करवायी स्वरूप धर्म ते

परनामे करी परना पामता ॥ स्वमत्ता थिर गाण ॥ सु० ॥ आत्म

ननुप्रमयी परमा नदी ॥ तो केम भहुनोरे जाए ॥ सु० ॥ धु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वसी पानारे इरी के० परनामने जाणवाशी झान ते पर थाय अर्थात् सारारात् पामे, परतु झान ममनारूप ते, म्यिर स्वानक ते माटे स्वसत्तारूप होय ते बदापि परदातु पामे नर्वी अर्थात् आग्नेयनुप्रमयीपणु ते परमा न पासीए साराश ते स्वरूप, नर्वे व, स्वाम, स्वामपणे आत्मानो धर्म होय ते अन्यमा न पासीए, एम जिपादा बहुे अर्दी बोउ धूते ते, त्यारे झान सर्व परज्ञवनु जाण ते एम केम थाय?

अगुम छतु निज गुणने देगता ॥ उच्च सक्ष देगत ॥ सु० ॥

मारगल गुणनी मायर्वना ॥ दर्पण जखने दग्धान ॥ सु० ॥ धु० ॥ ७ ॥

अर्थ ८ नेने टन्ना आरे ते जीवादि सर्व ज्ञयमा अगुमतु धर्म ते ते गर्व उद्दन्न मानारूप ते जीवमा दण सर्वज्ञपि ते ते पानानो अगुमतु गाय देमतां सर्व उद्दन्न तेवे, सर्वने जाणे, दर्पणोपर्योगे मामान्य जाणे, झानोपयोगे निर्गंग जाँचे मारगल तुशने निरवादिकने तथा अगुमतु वादिकने समानधर्मिं तेथी

एकने जाणवे सर्वनो जाण थाय. जेम आरसीमां सर्वनुं प्रतिविंव पके रे, पण जेनुं जेनुं प्रतिविंव आरसीमां पके रे, ते ते वस्तुमां आरसी प्रवेग करती नथी, तेम ते ते वस्तु पण आरसीमां प्रवेग करती नथी तेवीज रीते जलनुं दृष्टांत पण समजबुं. ए दृष्टांतो मुजव ज्ञान डोयमध्ये परिणमतुं नथी अने डोय ज्ञानमध्ये परिणमतां नथी ए रीते स्व अवगाहनागत ज्ञानशुण ते आत्मानुं स्वरूप रे.

श्रीपारसजिन पारसरस समो ॥ पण इहां पारस नाहिं ॥ सु० ॥

पूरण रसीर्जहो निजगुण परसनो ॥ आनंदघन मुज मांहि ॥ सु० ॥ ध्रुणा० ॥

अर्थ ॥ एवा पार्श्वनाथ जगवान पार्श्वमणि समान रे जेम पार्श्वमणिनो स्पर्श थतां लोह ते कनक थाय तेम पार्श्वप्रज्ञुना योगथी आत्मारूप सेवक परमात्मा थाय. पार्श्वनाथ जगवानमां पार्श्वमणिनो रस नथी परंतु पोताना अनंतज्ञानादि गुणरूप रस रे ते अनंतज्ञानादि मारामां पण रे, पण सच्चारूपे रे अने परमात्मामां प्रगट रे तेथी जगवान पूज्यरो ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

वीर जिनेश्वर चरणे लागुं ॥ वीरपणुं ते मागुं रे ॥ मिथ्या

मोह तिमिर जय ज्ञागुं ॥ जितनगारु वागुरे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्री महावीर परमात्माना चरणमां नमस्कार करीने हुं क्षायकवीर्यपणुं मागुं तुं. जे वीर्यना उज्ज्वासथी मिथ्यात्व कें कुश्रक्षा अने मोह कें मूढता तङ्गुप तिमिर कें अंधकारनो जय दूर कर्यो रे एवा हे प्रज्ञ। तमे गङ्गानो नाग करीने जीत नगारु वगाड्युं तेहु वीर्य हुं मागुं तुं जे वीर्यथी हुं पण कर्मगङ्गुने जीतुं ॥ १ ॥

रठमथ्य वीरय लेद्यासंगे ॥ अन्निसंधिज मति अंगेरे ॥

सुद्धम यूख कियाने रंगे ॥ योगी यथो उमंगे रे ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रज्ञ ! रद्धस्यवीर्य ते द्वयोपशमवीर्य ते लेद्याए जे परिणम्यो ते अन्निसंधिजवीर्य अनेक कर्म ग्रहण करे. जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य ते अन्निसंधिज वीर्य कहीए. ते सूक्ष्म किया कंपनरूप, स्थूलकिया आकुंचनप्रसारणरूप एटदे ज्ञाव योग तथा ऋच्ययोगरूप. सूक्ष्म तथा स्थूल कियाने रंगे योगवंन थयो थको आत्मा संसारमध्ये उमंग पामी रह्यो रे. आ विचार कम्मपयकी ग्रंथमां रे ॥ २ ॥

असख्य प्रदेशे वीर्य असंखे ॥ योग असखित कर्खेरे ॥ पुज्जल
गण तेणे द्वे सुविशेषे ॥ यथागक्ति मति लेखे रे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आत्माना असंरयाता प्रदेश रे एकेका प्रदेशे असरयाता वीर्य विज्ञाग
रे, एम कम्मपयडीना योगस्यानकमा कद्यु रे एरीते जीपने योग पण असरयाता
रे जे क्योपशमी वीर्य असरयातु रे ते योगरूप रे, तेणे करी जीव कर्मपुज्जलना
समूहने यहण करे रे योगविशेषे, विशेष कर्म ग्रहणे करे जेनी योग वलशक्ति तेहु
कर्मनु दल जीव ग्रहण करे, एम समजबु ॥ ३ ॥

उक्तुष्टे वीरयने द्वेसे ॥ योग क्रिया नवि पेसे रे ॥ योगतणि
ध्रुवताने द्वेसे ॥ आत्म गक्ति न खेसे रे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ज्या उक्तुष्ट केण अनतरीर्य त्या कर्म न द्वागे ज्या चलवीर्य त्या कर्म द्वागे
जे प्रदेशोमा उक्तुष्ट वीर्य होय त्या योगक्रिया जे कर्म ग्रहणरूप क्रिया ते प्रवेश करी
शके नहीं आत्माना आठ रूचक प्रदेशोमा कर्मग्रहणरूप योगक्रिया नथी वदी
योगनी ध्रुवता केण निश्चलता रे ज्या योगनी निश्चलता त्यां आत्मशक्तिने कोड कर्म
रुधी शके नहीं, अर्थात् ते प्रदेशो आवरण न थाय ॥ ४ ॥

कामवीर्यवगे जेम ज्ञोगी ॥ तेम आत्म थयो ज्ञोगी रे ॥ सूरपणे
आत्म उपयोगी ॥ याय तेहने अयोगी रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम काम केण अनिकापना नीर्यना नशथी जेम ज्ञोगी पुरुप सर्व परज्ञापने
वारे रे, तेम आत्मा परज्ञापनो ज्ञोगी थयो रे थने तेज आत्मा शुरवीर यइ मारा
स्वरूप विना परज्ञावमा प्रवेश करवो नहीं एवी प्रतिझ्ना धारण करी आत्मोपयोगी
याय तो अयोगीपणु प्रगट करे यहु शुरवीरपणु हे वीरपरमात्मा! तमार घणुज उक्तुष्ट रे

वीरपणु ते आत्म ठाणे ॥ जाएयु तुमची वाणे रे ॥ ध्यान

विनाणे शक्ति प्रमाणे ॥ निज ध्रुवपद पहिचाणे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ यहु वीरपणु ते आत्मस्यानकमा अर्थात् आत्मामाज रे, एम मैं तमारी
वाणीथीज जाएयु रे तेम ध्यानथी, पिङ्गानथी तथा शक्तिना प्रमाणथी जेम जेम
आत्मानु भूल वीर्य शूरत्व चिंतनीए तेम तेम आत्मा तेमा रमीने पोतानु भुजपद केण
निश्चल परमानदपद तेने पहिचाने केण ठक्करे ॥ ६ ॥

आदंवन साधन जे त्यागे ॥ परपरिणतिने ज्ञागे रे ॥ अद्य
दर्गन ज्ञान वेरागे ॥ आनंदघन प्रज्ञु जागे रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ परंतु परने अवलंबन करी जे साधन करुं, तेनो ल्याग करवायी परावलं-
बनपणुं ठंडाय तो परपरिएति जागे केष जाय अने ए प्रमाणे जे करे ते अक्षय अ-
प्रतिपाति द्वायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अने वीतरागता केष यथाख्यात चारि-
त्रमां लयदीन ययो यको आनंदघन केष परमानंदमय प्रज्ञता जाग्रत करे ॥ ७ ॥
इति श्रीमहावीर जिनस्तवन्. श्रीज्ञानविमलसूरि तथा पंमित देवचंडजीए आ चो-
वीसीना पाठखा वे स्तवनो कर्या रे. ज्ञानविमलसूरिजीए वाकावबोध चोवीसे स्त-
वनो उपर कर्यो रे. देवचंडजीए कर्यो नन्दी. अहीं ज्ञानसारजीनो वाकावबोध गायो
रे, अने हवे पठीना तेमनाज वे स्तवनो गापेला रे

॥ अथ श्रीपार्वतिजिन स्तवन ॥

॥ शांतिजिन एक मुज विनति ॥

पासजिन ताहरा रूपनुं ॥ मुज प्रतिज्ञास केम होयरे ॥ तुझमुझ
सत्ता एकता ॥ अचल विमल अकल जोयरे ॥ पास० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो पार्वतीनाथ प्रज्ञ ! तमारा स्वरूपनो मने प्रतिज्ञास केष प्रकर्पे आज्ञास
अर्थात् साक्षात्कार केम थाय ? विचार करतां तमे अने हुं सत्ताए एक ठीए तेथी
अन्निन्न ठीए अने निन्नज्ञावीपणुं थया विना तमारा स्वरूपनो मने प्रतिज्ञास केम
थाय ? वदी निश्चयनयथी हुं मारा स्वरूपने विचारं तो जेम तमे स्वरूपथी ब्रणेकाळ
निश्चल ठो तेमं हुं पण मारा स्वरूपथी चल्यो नन्दी. वदी जेम तमे निर्मल तेम हुं पण
निश्चयथी कर्मसव रहित, जेम तमने कालादिके कल्या नन्दी तेम हुं पण कालादिकथी
अकल हुं, माटे ए ब्रणे रीते एकता देखीने अहो पार्वतीप्रज्ञ ! तमारुं रूप निन्नपणे
प्रत्यक्ष केम करी गङ्कुं ? ॥ १ ॥

मुज प्रवचन पद्मयी ॥ निश्चय ज्ञेद् न कोयरे ॥ व्यवहारे

दखी देखीए ॥ ज्ञेद् प्रतिज्ञेद् वहु लोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे परमात्मा उच्चर आये रे. हे आनंदघन ! निश्चयनयनी अपेक्षाए तो
परमात्मा अने जीवात्मामां निन्नज्ञावीपणुं अर्थात् ज्ञेद् कांइ नन्दी अने व्यवहार
नयनो आश्रय करी जोइए तो अर्थात् हेतुप्रतिहेतुपुर्वक हृदयनेवे अवखोकन
करीए तो जीवना लोय केष लोकने विषे वहु केष घणां ज्ञेद् प्रतिज्ञेद् आय. एक दे-
वता एक मनुष्य तेज जीवने नरकपणुं प्राप्त आय ए रीते ज्ञेद् प्रतिज्ञेद् घणां आय ॥ २ ॥

वंधन मोख नहीं निश्चयें ॥ व्यवहारे ज्ञज दोयरे ॥ अखंडित

अवाधित सोय कदा ॥ नित अवाधित सोयरे ॥ पास० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वदी हे आनदघन। निश्चयनयथीज आत्माने अपदोकन करीए तो आत्मा मात्रने त्रेणकालमा कर्मवधन नथी निश्चयनयथी जीउ त्रेणकाल अरुपीज रे अने ज्यारे वधन नथी त्यारे मोक्ष के० मुकवापणुज नथी अर्थात् निश्चयनयथी आत्माने वध मोक्ष नथी, अने व्यवहारनयथी आत्माने वध अने मोक्ष वने जज के० अवधार व्यवहारनयें आत्मा असंक्षित नथी अहरनो अनतमो पिजाग ज्ञान रही गयु तेथी वदी पर्याय मरण तेथी अनादि नथी गत्यागति करवाथी अचल नथी ढीणपिन श्वर तेथी नित्य नथी कमें पीकित तेथी अवावित नथी ए रीते व्यवहारनयनी अ पेक्षाए सोय के० आत्मा रे अने तेज आत्मा निश्चयनयथी पिचारता आठ रुचक प्रदेश निरावरण होवाथी त्रेणकाल असंक्षित रे अणाइए अपज्ञातसिए ए जागे अ पर्यवसित तेथी अनादि रे सर्वथा ज्ञाननो अज्ञाव यतो नथी तेथी अचल रे त्रेण काल आत्मज्ञव्यनो नाश यतो नथी तेथी नित्य रे अनादि निर्मल स्वरूपने वाधा पहाँचती नथी तेथी अव्यावाध रे ए रीते पण सोय के० आत्मा रे ॥ ३ ॥

अन्वय हेतु व्यतिरेकयी ॥ अंतरो तुझमुझ रूपरे ॥ अंतर
मेटवा कारणे ॥ आत्मस्वरूप अनूपरे ॥ पास ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे रते ते रतु ते अन्वय कहेवाय अने जे अरते ते अरतु ते व्यतिरेक कहेवाय एगा अन्वय नया व्यतिरेक हेतुथी अर्थात् स्वरूपने सद्ज्ञावे परमात्मानो सद्ज्ञाव अने स्वरूपने अनावे परमात्मानो अज्ञाव एवी रीते तमारा अने मारामा अतर के० जेद पडेसो रे ते मारा अने तमारा जेदने मटारुवा माटे अन्वयहेतुरूप तमारा आत्माजु निरूपम स्वरूपज रे ॥ ४ ॥

आत्मता परमात्मता ॥ शुद्धनय ज्ञेद न एकरे ॥ अधर
आरोपित धर्म रे ॥ तेहना ज्ञेद अनेकरे ॥ पास० ॥५॥

अर्थ ॥ हे प्रनु ! मारा आत्माने प्रिये रहेकी आत्मता अने परमात्माने प्रिये रहेकी परमात्मता तेमा जेद रे के केम ? उच्चर, हे आनदघन ! शुद्धनयथी तारा आत्मामा अने मारा परमात्म स्वरूपमा काइ जेद नथी कारण के अन्नर के० स्वरूपथी व्यतिरिक्त जेटका सयोगजन्य आरोपित धर्म रे ते कमें आरोपित रे तेना अनेक जेद रे यथा ॥ करहु हाटक करहु नाटक, काटक करहु करहु ॥ करहु साटक करहु फाटक, चेटक करहु करहु ॥ करमकी केसी वात कहु ॥ एम अनेक जेद रे-

धर्मी धरमयी एकता ॥ तेह मुजरूप अज्ञेदरे ॥ एक सत्ता
लख एकता ॥ कहे ते मृद्मति ऐदरे ॥ पास० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन । आत्मत्व धर्मयुक्त आत्मस्वरूपमां अने मारा स्वरूपमां अनेदपर्णु रे, केमके हुं आत्मत्वधर्मयुक्त यथो हुं अने बीजा जे आत्मत्वधर्मे युक्त आय तेमां अने मारामां जेद कांइ न रहे. परमात्मानी सत्ता जेम निर्मल रे तेम श-रीरमां रहेको आत्मा त्रणे काले कर्मदेपरहित निर्मल रे एवी जे एकता केण एक-त्वपलुं अद्वैतपक्षी लख केण कहेरे ते अतात्त्विक रे. एवो खेड केण प्रयास रे ते मू-हमति केण बुद्धिहीन पुरुषनो रे ॥ ६ ॥

आत्म धरम अनुसरी ॥ रमे जे आत्मरामरे ॥ आनंद-
धनपद्मी लहे ॥ परम आत्म तस नामरे ॥ पास० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन ! जे आत्मा आत्मधर्मने अनुसरी तड़वत अह रमे केण प्र-
बर्त्ते, तेनुं नाम आत्मराम कहीए अने तेज आत्मा आनंदघन केण अनंता पदा-
र्थोनुं ज्ञानन आय एवा ज्ञानना समूहनी पदब्री जे मुक्तिपदब्री तेने लहे केण प्राप-
करे, तेज आत्मानुं नाम परमात्मा कहीए, ए रीते अहो प्रज्ञ ! मने तमारा कहेचाथी
तमारा रूपनो प्रतिज्ञास करामलकवत् यथो ॥ ७ ॥ इति श्रीपार्वतिजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमद्भावीरजिन स्तवन ॥
॥ पंथको निहालुरे बीजा जिनतणोरे ॥ ए देखी ॥

चरमजिणेसर विगत स्वरूपनुरे ॥ जावुं केम स्वरूप ॥ साकारी
विण ध्यान न संज्ञवेरे ॥ ए अविकार अरूप ॥ चरम० ॥ १॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! चरमजिनेश्वर ज्ञासननायक महावीर परमात्माना स्व-
रूपनुं चिंतवन कर, ज्ञारे शुद्धचेतना कहेरे के ते तो विगतस्वरूपी रे. अर्थात् मनःप-
र्यवज्ञानी पण जेना स्वरूपने जाणी शके नहीं तो हुं शी रीते जाणी शकुं, वली सिद्धां-
नमां साक्षंवन ध्यान कहुं रे तो रूपविना आक्षंवन केम संज्ञवे ? आक्षंवनने अज्ञावे
ध्याननो असंज्ञव तेथी साकारी केण आकारवालाविना ध्यान केम करी शकुं ? वली
परमेश्वर ज्ञानावरणादि कर्मना विकाररहित माटे अविकारी रे तथा रूपरहित तेथी
अरूपी रे, माटे एवा चरमपरमेश्वर अखल स्वरूपीने स्वरूपे केम चिंतवी शकुं ? ॥ १॥

आप स्वरूपे आत्ममां रमेरे ॥ तेहना धुर वे जेद ॥ असंख
ऊकोसे साकारी पेदेरे ॥ निराकारी निरजेद ॥ चरम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! ते कलुं के, विगतस्वरूपीने शीरीते ध्याई शकुं ? ते तारुं
चवन सत्यासत्य रे, कारणके अरूपीनुं ध्यान संज्ञवे रे तेथी असत्य रे अने तुं पण

चेतना मात्र चिंतववारूप रो तेथी आत्मधर्मरहित अने हु आत्मा रता अघरूपीतु
 तेथी आत्मधर्मरहित हु, तेथी आपणे वने विगतस्वरूपीनु ध्यान ध्यावा अशक
 ठीए तेथी सत्य रे परतु तुज शुद्धचेतना थड मारा आत्मामा रमणा कर, तो हु
 पण आपस्वरूपे आत्मामा रमु जे आत्मा आपस्वरूपे आत्मामा रमे ते आत्माने
 ध्याता अने आत्मस्वरूपने ध्येय कल्पु रे कारणके ते आत्माने तथा परमात्माने
 अनेद रे घनधाती चार कर्म खपावी अधाती चार कर्म जेना शेष रहे तेवा आत्मा
 ते साकारी परमात्मा रे अने जेना धाती अने अधाती सर्व कर्म गपी गयारे ते
 निराकारी परमात्मा रे तेमा वली साकारी परमात्माना वे जेद रे एक तीर्थकर नाम
 कर्मोदयी साकारी, वीजा अतीर्थकर नाम कर्मोदयी साकारी तेमा तीर्थकर साकारी
 उत्कृष्ट पदे १७० अने उत्कृष्ट पदे अतीर्थकर साकारी-सामान्य केवली नवकोड
 पासीए निराकारी अनतसिङ्कोनु एकरूप भाटे तेडे जेदरहित रे ॥ ६ ॥

सूखम नाम करम निराकार जे रे ॥ तेह जेदे नदीं अत ॥ निराकार
 जे निरगत कर्मथीरे ॥ तेह अनेद अनत ॥ चरम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्धचेतना ! आ वचनो मारा साडना वचनो रे ते साजद नि-
 राकारना वे जेद रे एक सूखम नामकर्मी निराकार अने वीजा निर्गतकर्मी निराकार
 अदीं ध्यान करवा भाटे वर्णन नथी, परतु निराकार नाम मात्रना जेदनु प्रणत रे सूखम
 नामकर्मोदयथी प्राप्त थयु जे निराकारीपणु तेना जेदनी सरयानो पार नथी, तेमज
 निर्गत केण सर्वथा खपाव्या रे कर्म जेणे पवा निराकारी जे सिङ्क तेना पण जेद
 अनत रे सर्व सिङ्कोनी सत्ता असरयात प्रदेशात्मक, निन्द्रपणामाटे अनत रे ॥ ३ ॥

रूप नदीं कर्द्दै वंधन घट्युरे ॥ वधन मोक्ष न कोय ॥ वध
 मोक्षविण सादि अनतनुरे ॥ जग सग केम होय ॥ चरम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली हे आनदधन ! जो आत्माने रूप नथी तो वधन शीरीते घटे ? एट्ये
 कर्मधी वधातु शीरीते सजवे रूपविना वधनो असज्जन ज्यारे वध नहीं अने या
 त्माने ग्रणेकाले अवधक मानशो तो पुण्य पापना क्षयथी जे मोक्ष याय ते मोक्षनो
 पण असज्जन अने मोक्षने अनावे सादि अनत जागाना सगनो पण असज्जन होय ॥ ४ ॥

इव्यविना तेम सत्ता नवि दहेरे ॥ सत्ताविण स्यो रूप ॥ रूप
 विना केम सिङ्क अनततारे ॥ जातु अकल स्वरूप ॥ चरम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई मनुष्यने पुत्रुके एच्ची उपर घटे ? तेणे पृथ्वी तरफ जोई

घट न दीरो यारे कल्युं के पृथ्वी उपर घट झव्य नथी, झव्यने अजावे सत्ता केष
अस्तित्व पण न होय अने सत्ताने अजावे रूप केष स्वरूप पण शेनुं होय. माटे है
आनंदघन ! रूपने अजावे वस्तुनो अजाव समजबो अने वस्तुने अजावे, एक, वै,
त्रण. चार, एवी संख्यानो पण संज्ञन नथी तो सिद्धनी अनंतता तो केम संज्ञवे ?
माटे चरम जिनेश्वरनुं स्वरूप चितवना तमे कल्युं परंतु अकल स्वरूपनुं स्वरूप केम
जाहुं ते आप कहो ॥ ५ ॥

आत्मता परिणति जे परिणम्यारे ॥ ते मुज ज्ञेदञ्जन्नेद ॥ तदा
कारविण मारा रूपनुरे ॥ ध्यावुं विध प्रतिषेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धचेतना तथा आनंदघनने चरम जिनेश्वर उत्तर आये ठे. आ-
साने विषे रहुं जे आत्मस्वरूपम् तेने विषे आत्मतानुं परिणम्युं-तद्गूपथवुं, अर्थात्
आत्मस्वरूपने विषे स्थिरताजावे- रूपातीत जावे अजेदोपचारे प्रवर्त्तुं, तेवी परिण-
तिए परिणम्या एवा, ज्ञानदर्शनरूप आत्मा अने आत्मता ते ज्ञानदर्शन, आत्मामां
अने मारामां एटदोज ज्ञेद ठे. ते साकारी परमात्मा अने हुं सिद्ध निराकारी पर-
मात्मा, माटे वहिरात्मपणुं तजी अंतरात्म स्वरूपवंत यह मारा अजेय अठेद्यादि स्व-
रूपने विषे तदाकार यह मारा रूपनुं ध्यावुं केष ध्यान करवुं तेतो विध केष ध्याननो
विधि ठे अने तदाकार यथाविना स्वरूप धर्मने अजावे अर्थात् वहिरात्मपणे ध्यान
करवुं ते प्रतिषेध केष निषेध ठे, एस जाणजो ॥ ६ ॥

अंतिम ज्वगद्दणे तुज ज्ञावनुरे ॥ ज्ञावथुं शुभस्वरूप ॥ तद्यें
आनंदघन पट् पामगुरे ॥ आत्मरूप अनुप ॥ चरम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते सांजली आनंदघन वे हाथ जोकी वीर परमात्माने विनंति करेरे, अहो
स्वामि ! अंतिम ज्वगद्दणे केष जविष्यमां सर्वथा अजावी एवो जे रेह्वो जव अर्थात्
चरमावर्त्तन, चरमकरण अने ज्वपरिणतिनो परिपाक, ए सर्व प्राप्त यशो त्यारे तुज
ज्ञावनुं केष परमात्मस्वज्ञावनुं मारा आत्मामां ज्ञावशुं केष चितवन करीश. यारे
परमात्मस्वज्ञावनुं चितवन करीश त्यारेज जे अरूपी ठे तथा जे अनुपमेय ठे एवा
आनंदघनपद केष मुक्तिपद, तेने प्राप्त करीश ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥
इति श्री ज्ञानसारजीकृत वालाववोध संपूर्ण ॥

ॐ ॥ इति श्रीआनंदघनकृतचतुर्विंशति ॥

ॐ ॥

॥ श्रीशतिनाथायनम् ॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृत उद्व्यगुणपर्यायनो रास ॥
॥ चालावोधसहित दखिये ठैये ॥

॥ श्लोक ॥

इङ्कश्रेणीनित नत्वा । जिन तत्वार्थदेविन ॥
प्रबधे लोकवाचात्र । खेशार्थ कथिष्ठच्यते ॥ १ ॥
॥ ढाल पहेली ॥
॥ चोपाइनी देशी ॥

श्रीगुहजितविजयमनधरी ॥ श्रीनयविजयसुगुरुचादरी ॥
आतमच्छ्रवथीनेउपकार ॥ करुद्व्यञ्चनुयोगविचार ॥ २ ॥

अर्थ ॥ श्रीजितविजयपक्षित अनेश्रीनयविजयपक्षित एवेहुरुडागुरुने चित्तमा सज्ञारीने आत्मार्थी झानरुचि जीवना उपकारनेहैते उद्व्यानुयोगनो विचार करुद्गुजे अ-
भुयोगते सूत्रार्थव्यारंयान तेहना चारनेद शास्त्रेकल्पावे १ आचारवचन आचाराग
प्रमुखसूत्र ते चरणकरणानुयोग २ सरयाशास्त्र उद्गप्रङ्गतिप्रमुखसूत्र ते गणितानुयोग
३ झाताप्रमुख आरयायिकावचन तेकथानुयोग ४ पद्मुद्व्यादिविचारते सूत्रमध्येसू-
त्रकृताग तथाप्रकरणमध्ये समतितत्वार्थप्रमुख भहाशास्त्र तेउद्व्यानुयोग एचारनेदमा
उद्व्यानुयोग जे उद्व्यगुणपर्याय ते विचारेरे तेनोमहिमाकहेरे इहाप्रथम गुरुने नम-
स्कारकरीने प्रयोजनसहित अनिध्येयदेखाड्यु पहेलावेपदे नमस्कारकस्यो ते मगला-
चरणदेखाड्यु अने इहाअधिकारी आत्मार्थिजीपरे तथाआत्मार्थिने अपवोधथसे ते
उपकाररूप प्रयोजनजाणद्यु उद्व्यनो अनुयोगकेठ कथन तेइहाआत्मार्थी झानरुचिजी-
वनाउपकारनेअर्थेकरु ॥ १ ॥

विनाउद्व्यञ्चनुयोगविचार ॥ चरणकरणनोनहिकोसार ॥
संमतियर्थेज्ञाप्युइस्यु ॥ तेतोद्युद्जननमावस्यु ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एउद्व्यानुयोगनो विचारकस्याविना केवलचरणसितरी तथाकरणसितरी
प्रमुखनो सारकोइहेनही एहुसंमतिप्रथनेपियेकल्पुरे तेतो बुद्धजननामनमापस्यु पण
घास्यदृष्टीना चित्तमावसेनही उक्तच चरणकरणप्पहाणा ॥ ससमयपरसमयमुक्तगामारा ॥
चरणकरणस्ससार ॥ ऐष्ठयसुद्धनयाणत्ति ॥ ३ ॥ वक्षीतेहीजद्वकरेरे ॥ २ ॥

शुभ्षाहारादिकतनुयोग ॥ मोटोकहिउँज्व्यञ्चनुयोग ॥ ए
उपदेशपदादिकव्रये ॥ सांखलहीचालोशुन्नपर्ये ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वेतावीसदोपरहित शुद्धआहारबें इत्यादिकयोगरे पणतेसर्वं तनुकेऽन्हा-
नयोगकहियें अने स्वसमयपरिज्ञानजे ऋग्यञ्चनुयोगते मोटोयोगकहोरे केमके शु-
द्धआहारादिकेंतो स्वाध्यायतुंज साधनरे एसांख उपदेशपद आदेइने ग्रंथोषीलेइने
शुन्नपर्ये केऽन्हतममार्गचालो पणवाह्यव्यवहार प्रधानकरीने ज्ञाननीगौणताकरवी ते
अशुद्धमार्गजाणवो अनेजिहांज्ञाननी प्रधानता राखवी तेशुन्न उत्तममार्ग जाणवो जे
ज्ञानादिकगुणनोहेतु युरुकुलवासतेनेरांकी शुद्धआहारादिकनी यत्तावंतने महारोपे चा-
रित्रहानि कहीरे यतः युरुदोपारं चित्याखव्यकरणयत्तो निपुणधीजिः ॥ सञ्जिंदादेश्व-
तथाज्ञायतेयज्ञियोगेन इतिपोडशके ॥ ३ ॥

एयोगेंजोलागेरंग ॥ आधाकर्मादिकनहिञ्चंग ॥ पंच
कटपन्नाप्येइमन्नपर्यु ॥ सद्युरुपासेइस्युमेसुपर्यु ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे ऋग्यानुयोगविचाररूप जेज्ञान तेनेयोगे जोश्रंगं सेवारूप रंगलागे
तो युरुकुलवासे समुदायमध्ये ज्ञानाच्यासकरतां कदाचित्आधाकर्मादि दोपलागे
तोपण चारित्रन्नंगथायनही केमके जावशुक्रि वलवंत रे माटे एरीते पंचकटपन्ना-
प्यमां कहुं रे तथा सफुरुपासेश्रीपण एमसांनन्नपर्यु अतएव कटपाकटपतो अनेकांतं
जाम्बेकहुंरे ॥ आहागमाइन्नंति अणमणेसकम्मुणा उवलितेवियाणिज्ञाआणुवत-
वित्तन्तिवापुणोएतेहिदोहिंगरणेहिं ववहारेणविज्ञाइ एतेहिदोहिंगरणेहिं अणायारं तु-
जाणए ॥ २ ॥ एमवीजाअंगनापदेखाअध्ययनमांकल्युंरे तथा किंचिहुद्धकटप्य-
मकटप्यस्यादकटप्यमपिकटप्यं ॥ पिंडःशय्यावस्थाप्रांवाज्ञेपजायंवा ॥ ३ ॥ देशंकालंपु-
रुपमवस्थामुपयोगशुद्धिपरिणामान् ॥ प्रसमीद्यन्तवतिकटप्यं नैकांतात्कटप्यतेकटप्यं
एमप्रशमरतिव्यंथमांकल्युंरे ॥ ४ ॥

वाह्यक्रियावेवादिरयोग ॥ अंतरक्रियाउँज्व्यञ्चनुयोग ॥ वाह्य
हीनपणज्ञानविशाल ॥ भलोकहोमुनिजउपदेशमाल ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आवश्यकादिरूपवाह्यक्रियातेतो वाह्ययोगरे अनेऋग्यानुयोगजे स्वसमय
परिज्ञानते अंतरंगक्रियारे माटेजे वाह्यक्रियायेहीनहोय पणज्ञानविशालवहुश्रुतहोय
एवो मुनीश्वर ते उपदेशमालामां जलोकहोरे यतः नाणाहिउँवरतरं हीणोविहुपवयणंप-
नावंतो ॥ नयछुकरंकरितो सुहुविश्वप्पागमोपुरिसो ॥ ३ ॥ हीणस्तविसुद्धपरुवगस्स

नाणाहियम्सकायद तेमाटे कियाहीनतादेसीनेपण ज्ञानवंतनी अपहा न करवी तेहने
ज्ञानयोगेकरीनेजप्रत्याविकजाणु ॥ ५ ॥

ऊळ्यादिकचित्तायेसार ॥ शुक्रध्यानपणद्वाहियेपार ॥ ते
माटेएहिजआदरो ॥ सदगुरुविष्णुमतजूलाफिरो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुरेजे कियाहीन ज्ञानपतनेजखोकह्योतेतो वीपकसम्यक्तनी अपे-
क्षायंकह्यो पणकियाहीनतायें मात्र ज्ञानथीज पोतानो उपकार न थाय एमकहे तेनी श
काटावाने ऊळ्यादिकज्ञान तेहिजशुक्रध्यानद्वारे मोक्षनु कारणरे माटेउपादेयरे ए
ऊळ्यादिकनी चित्तवणाये शुक्रध्याननोपण पारपामियें केमके आत्मऊळ्य गुणपर्याय
ज्ञेदचित्तायें पण शुक्रध्याननो पहेलोपायोहोय अने तेनीज अचेदचित्तायेशुक्रध्याननो
वीजोपायोहोय तथाशुक्रध्य गुणपर्यायनीजापनायें सिद्धसमातिथाय तेतो शुक्रध्या
ननुफक्षरे एमप्रवचनसारोद्धारमध्येकहुरे जोजाणइथरिहते दवगुणपञ्चतरीहिं ॥ सो
जाणइथरपाण मोहोव्यव्युजाहितसत्तत्य ॥ १ ॥ तेमाटेएहिज ऊळ्यानुयोगने आदरो
एहिजउपायरे पणसद्युरुविना स्वमतिकव्यपनायें जूलाफिरसोनही ॥ ६ ॥

एहनोजेएपाम्युताग ॥ उघेएहनोजेहनेराग ॥ एवेविण
त्रीजोनदिसाध ॥ जाप्योसंमतिअरथअगाध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेज्ञानविना मात्रचारित्रथीज सतुष्यायरे तेहनेशिक्षा कहेरे एक
तो एऊळ्यानुयोगनो जे ताग कें पारपामी समतिप्रसुख तर्कशास्त्रनणीने जेगीतार्थ
थयो ते तथा वीजो उघे कें सामान्यप्रकारे एऊळ्यानुयोगनो जेनेरागरे तेगीतार्थनिधित
एवेहुरिना त्रीजोसाधुनही एवोअगाधअर्थ समतिथयमाकह्योरे तेमाटेज्ञानविना
चारित्रजनहोय उक्तच गाथा ॥ गीयठोयपिहारो वीडीगीयठनिस्तिन्नठीजाणीठ ॥ इत्तो
तइयविहारो नाणुणाठजिणवरेहिं ॥ २ ॥ पटझोविशेय जे चरणकरणानुयोग हटी
निशीथ कठण व्यवहार हटीवादीध्ययने जघन्यमध्यमोक्ष गीतार्थजाणवा ऊळ्या
नुयोगहटीते समत्यादिक तर्कशास्त्रपारगामीज गीतार्थजाणवा अने तेनीनिश्चायें
अगीतार्थनेचारित्रकहेरु ॥ ३ ॥

तेकारणगुरुचरणआधीन ॥ समयसमयइण्योगेलीन ॥ सा
धुजेकिस्तियाव्यवहार ॥ तेहिजअममोटोआधार ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एऊळ्यानुयोगनी देशमात्रप्राप्ति पोताना आत्मानें कृतकृत्यताकहेरे ते
माटे ऊळ्यानुयोगनी धववत्तानेहेते गुहचरणने आधीनतायेकरी मतिकव्यपरि-

हरीने समयसमय एऽव्यानुयोगे दीन के० आसक्तयका जेकियाद्यवहारसांतु र्थ्ये
तेहिजश्चमने० महोटोश्राधाररे केमके एनाथी इत्यायोगसंपज्ञे तेहनुंदक्षणकहेरे कर्त्तु-
मिठोःश्रुतार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः ॥ विकलोधसंयोगोय मित्रायोगउदाहृतः ॥ ३ ॥
एमद्वितविस्तरादिग्रन्थनेविषेकल्पुं एमइत्यायोगेरहीने० हुंपरोपकारनेश्वर्यं ऊव्यानुयोग-
नो विचारकहुंदु पणएटलेंज संतुष्टकरवोनही० विशेषार्थं गुरुसेवामूकबी० नही० एहित-
शिक्षाश्रागदीगायामांकहेरे ॥ ४ ॥

संमतितत्वार्थसुखग्रन्थ ॥ मोटाजेप्रवचननियंथ ॥ तेहनो
देशमात्रएलहो० ॥ परमारथगुरुवयणेरहो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ संमतितत्वार्थ प्रसुखग्रन्थ जे महोटानियंथ प्रवचनरूपरे तेनोलवदेशमात्र
एलहोके० आप्रवंधमांध्योरे पणपरमार्थं गुरुवचनरहेरो श्रोरुंजाणीने गर्वकरशो-
नही० अधनेनधनंप्राप्तं त्रृणवत्मन्यतेजगत् एद्वृत्ते माटेज ऊपरखाचारनय ते अति-
गंजीरे घणाने न परिणमे एमजाणीने सिद्धांते पेहेवादेखाद्यानयी अनेजेगंजीर
होयगुरुश्चार्थीनहोय तेहनेजेदेखाडवाकहारे ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धनधनसंप्रतिसाचोराजा ॥ ए देवी ॥

गुणपर्यायतण्जेजाजन ॥ एकरूपतिहुंकारे० ॥
तेहडव्यनिजजातिकदियें० ॥ जसनहिजेदविचाले०
रे० ॥ जिनवाणीरंगेमनधरिये ॥ २ ॥ एञ्चांकणी ॥

अर्थ ॥ गुण तथा पर्यायिनो जे जाजनके० स्थानक तेजेहनोश्रीत अनागत तथा
वर्तमान एवरेंकाले० एकस्त्रूपेंद्रोय पणपर्यायनीपरेफिरेनही० तेहने० निजजातिके०
पोतानी स्वज्ञाति ऊव्यकहियें जेमझानादिक गुणपर्यायतुं जाजन तेजीवदव्यव्ययने
रूपादिगुणपर्यायतुं जाजनते पुज्जलऊव्य तथा रक्तादि घटादि गुणपर्यायतुं जाजन ते
मृडुऊव्य वलीतंतुतेपटनीश्रेष्ठायें ऊव्य अनेतंतुश्रवयवनी अपेक्षायें पर्याय केमके
पटनेविचाले० पटावस्थामध्ये तंलुनोन्नेदनशी० अनेतंतुश्रवयव अवस्थामध्ये अन्य-
त्वरूप ज्ञेदरे भावे पुज्जलस्कंधमां ऊव्यपर्यायपणो ते अपेक्षायें जाणवो इद्वाकोइ कहेशेजे०
एरीतै० ऊव्यत्वपणुं स्वज्ञाविकनश्रयुं पण अपेक्षिकश्रयुं तेने उत्तर जे सत्रवस्तुनो ऊव्य-
वहारते अपेक्षायें द्वौयठे भावे इहांदोयनवी० जे समवायी कारण प्रसुखे० ऊव्यवद्वण
मानेठे तेनेपण अपेक्षा अवश्य अनुसरवी० गुणपर्यायवत् ऊव्य इतितत्वार्थं एजिनवा-
णीनेरंगके० विश्वासे० सनमांधरियें ॥ ३ ॥

धरमकदीजेगुणसहजावी ॥ कमजावीपर्यायोरे ॥ जिन्नञ्चनिन्न
त्रिविधतियत्क्षण ॥ एकपदारथपायोरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ सहजावीके० यावत् ऊव्यजावी जेधर्म तेनेगुणकहिय जेमजीनोगुण उपयोग अने पुज्जनोगुण ऊव्यणणो तथा धर्मास्तिकायनो गतिहेतुत्वगुण वलीअधर्मास्तिकायनो स्थितिहेतुत्वगुण अने आकाशऊव्यनो अपगाहनाहेतुत्वगुण कालऊव्यनो वर्तनाहेतुत्वगुण एरीतेऊव्यना स्तजापिकधर्म ते गुणजाणवा तथा कमजाविके० यावत् ऊव्यजावी ते पर्यायिकहिये जेम जीवने नरनारकादिक पर्याय तथा पुज्जने रूपरसादि परावर्तिते पर्यायजाणवा एम ऊव्यादिक ते ऊव्य गुण पर्याय ए त्राणीते जिन्न रे तथा सक्षणादिकथी अनिन्नरे अने प्रदेशना अभिन्नागथी त्रिविधरे केमके नवविधोपचारे एकेकमा त्रणत्रणनेद आवे ते नवविधोपचार कहेरे १ ऊव्ये० ऊव्योपचार २ ऊव्ये गुणोपचार ३ ऊव्ये० पर्यायोपचार ४ गुणेऊव्योपचार ५ गुणेगुणोपचार ६ गुणे पर्यायोपचार ७ पर्याये० ऊव्योपचार ८ पर्याये० गुणोपचार ९ पर्याये० पर्यायोपचार तथा तियत्क्षणके० उत्पादव्यय अने ध्रुवस्वरूपरे एहवाजावने एकपदार्थ जेनप्रमाणे पास्यो थकोरे पद्धाररूप पाठ्यावेपद जाणवा ॥ ७ ॥

जेममोतीउज्ज्वलतादिकथी ॥ मोतीमालाअदगरी ॥ गुण
पर्यायव्यक्तियीजाणो ॥ ऊव्यशक्तिमवलगरी ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आढालमा प्रथम ऊव्य गुणपर्यायनो जेदयुक्ति देखाडेरे जेम मोतीयकी तथा भोतीना उज्ज्वलतादिक धर्मयकी मोतीनीमाला अखगीरे तेमज ऊव्यनीशक्ति ते गुणपर्यायनी व्यक्तियी अखगीरे तथा एकप्रदेश सप्रधेनखगीरे एटडे एमजे मोती ते पर्यायनेवरमें जाणवा अने उज्ज्वलतादिक धर्म ते गुणने रामे जाणवा तथा माला ते ऊव्य नेनामे जाणवी यम दृष्टात जोक्तो एरीते घटादिऊव्य प्रत्यक्ष प्रमाणे सामान्य विशेषरूप अनुज्ञयेरे ते सामान्य उपयोगे मृत्तिकादि सामान्य जासेरे विशेष उपयोगे घटादिक विशेष जासेरे तेमाहे जे सामान्य ते ऊव्य जाणबु अने विशेषते गुण पर्यायरूप जाणगरै

उरधतासामान्यशक्तिने ॥ पूरव्यत्रपरगुणकरतीरे ॥ पिंम्कुसु
लादिकआकारे ॥ जेममाटीअणफिरतीरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली गाथामा ऊव्यने सामान्य कल्पु ते सामान्यना वेप्रकाररे ते देगराडेरे एकउर्ध्वता सामान्यरूप ऊव्यशक्ति ते तेहनेकहिये० जे पूरवके० पहेला अने अपर के० आगले० गुण के० विशेष तेने करती ते सर्वेमा एकरूपे रही रे जेम पिंम के०

माटीनो पिनो अने कुसूलादिकेष कोठीप्रसुख एवा मृत्तिकाना अनेक आकारफिरे वे पण तेमां माटी फिरतीनथी ते विंम कुसूलादिक आकारने उर्ध्वता सामान्य कहियें अने जो पिंडकुसूलादिक पर्यायमां अनुगत एक मृछुऋग्य न कहियेंतो घटादि पर्यायमां अनुगत घटादि ऋग्यपण न कहेवाय तेथी सर्व विशेषरूप यातां क्षणिकवादि वौद्धसत आवे अथवा सर्वऋग्यमां एकज ऋग्यआवे माटे घटादिऋग्य अने तेमां सामान्य मृदादिऋग्य अनुज्ञवने अनुसारे परापर उर्ध्वता सामान्य अवश्यमानवा घटादि ऋग्य ते रक्तादिक योडा पर्यायने व्यापेरे अने मृदादि ऋग्य ते रक्तादिक घटादिक घणपर्यायने व्यापेरे एम नरनारकादिकपणुं तेपण ऋग्यनो विशेष जाणवो ए सर्व नेगमनयनुं सत अने गुरुसंग्रहनयनेमतेतो सबैद्वेतवादें एकज ऋग्यआवे एमजाणदुं ॥४॥

निन्नविगतमांरूपएकजे ॥ ऋग्यशक्तिजगदाखेरे ॥ तेतिर्यक्
सामान्यकहीने ॥ जेमघटघटपणेराखेरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे वीजोज्ञेद देखाडेरे ते निन्नविगतमांकेष निन्नप्रदेशी विशेषमां लेङ्गव्य पोतानीशक्ति एकरूप एकाकारारे ते देखाडेरे तेतिर्यक् सामान्यरे जेम घटघटपणे घटत्वराखेरे इहां कोइपुरे जे घटादिक निन्नव्यक्तिमां जेमघटत्वादिक एकसामान्यरे तेसज पिंडकुसूलादि निन्नव्यक्तिमां मृदादिक एकसामान्यरे तो तिर्यक् सामान्य अने उर्ध्वता सामान्यनो स्योविशेषरे तेनेकहियेंते देशज्ञेदें जिहांएकाकारप्रतीतउपजे तिर्हांतिर्यक् सामान्यकहियें अने जिहांकालज्ञेदें अनुगताकारे प्रतीत उपजे तिर्हांउर्ध्वता सामान्य कहियें कोइक दिगंवरानुसारी एमकहेरे जे पद्मव्यने कालपर्यायरूप उर्ध्वता प्रचयरे अने कावविना पांचऋग्यने अवयव संघातरूप तिर्यक् प्रचयरे तेनेमते तिर्यक् प्रचयनो आधार घटादिक तिर्यक् सामान्य याय पण परमाणुरूप प्रचयपर्यायिनो आधार निन्नव्य जोइयें माटे पांचऋग्यने खंध देश प्रदेशज्ञावेज एकअनेक व्यवहार उपपाठचो पण तिर्यक् प्रचय नामांतर न कहेदुं ॥५॥

शक्तिमात्रतेऽव्यसर्वनी ॥ गुणपर्यायनीक्षीजेरे ॥ कार्यरूप
निकटदेखीने ॥ समुचितशक्तिकहीनेरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेजार्धतासामान्यशक्तिनावेजेद देखाडेरे तेमांजे सर्वऋग्यनी पोतपोतानागुणपर्यायनी शक्तिमात्रक्षीजे तेठेवशक्तिकहियें अनेजेकार्यरूप निकट केष वहेदुं उपजतुं देखीयें तेकार्यनीश्रयेक्षायें तेनेतसमुचितशक्तिकहियें समुचितकेष व्यवहारयोग्य ॥६॥

घृतनीशक्तियथातुणज्ञावें ॥ जाणीपणनकहायरे ॥ छग्या
दिक्कन्नावेतेजनने ॥ भाषीचित्तसुहायरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इहा दृष्टात कहेरे जेमपुज्जल ऊऱ्यमां घृत उपजनानीशक्ति तृणजावेरे न हीकां तृणआहारथी धेनुङ्गुध आपेरे तेषुधमा घृत नीपजवानीशक्तिकिहायीआवी एम अनुमान प्रमाणे तृणमा घृतशक्तिजाणी पण कहेवायनही माटे तेनेऊघशक्ति कहियें अने जोतृणने ऊऱ्यादिकजावेकें० ऊऱ्य दहीप्रमुखने परिणामे घृतशक्ति कहियेंतो ते जापीयकी जनकें० लोकना चित्तमा सुहायरे माटे तेने समुचितशक्ति कहियेंएटद्वे अ नतरकारणमां समुचितशक्ति कहेवी अने परपरकारणमा ऊघशक्ति कहेवी एविवेकरे एवेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एवेनीजानाम पणकहेरे तेजाणवा ॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुज्जलनेआवंत्तरे ॥ ऊघेसमुचित
जेमघटीकहियें ॥ वेहद्वेतेआवंत्तरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे एशक्ति ते आत्मऊऱ्यमा फक्कावेरे जेम प्राणीकें० ऊऱ्यजीवने पूरव कें० पद्मेश्वर अनता पुज्जल परावर्त्तवित्या तेमापण ऊऱ्यकें० सामान्ये धर्मशक्ति कहियें जोनकहियें तो रेहेले पुज्जल परावर्त्तते शक्ति आवेनही नासतो विद्यतेजाव इत्यादि वचनात् अने रहेले पुज्जल परावर्त्तधर्मनी समुचितशक्ति कहियें अतएव अचरम पु-
ज्जलपरावर्त्तजाव वालकाल कल्युरे अने वहेलो पुज्जल परावर्त्तधर्म योवनकाल कल्युरे अचरम परिश्छेद्वे सु कालोजाव वालकालमो जणिठ ॥ चरमो उधम्मजुवण कालोतह चित्तजेउत्ति ॥ ९ ॥ एयोगनीवीजीवीसीमध्ये कल्युरे ॥ ९ ॥

कारयनेदेशक्तिनेदद्धम ॥ व्यवहारेव्यवहारियेरे ॥ निश्चय
नानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी ऊघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकऊऱ्यनीपामिये केमके कार्य नाजेदेशक्तिनोनेदथायरे तेव्यवहारनयेकरी प्रिवहरियें केमके एव्यवहारनय ते कार्यकार एनेदमानेरे अने निश्चयनयथी ऊऱ्यना नानाप्रकारना कार्यकारण ते एकशक्तिस्तजावज ऊऱ्यमाधरियें नहींतोस्तजावनेदेशक्तिय अनेव्यवहारनयें ते तेकायादिकनीथपे द्वायें एकनेथनेक कार्यकारण स्तजावमानता कोइदोपनथी कारणातरनी आपेक्षापण स्त जावमाज अतर्जुतरे तेमाटे तेमुपण निष्फलपणु नयाय तथायुद्धनिश्चयनयनेमरततो का रणकार्यतेमिथ्यारे आदावतेचयनास्ति वर्तमानेपितत्तथा इतिवचनात् कार्यकारण कृपनारहित शुद्ध अनिचक्षितरूप ऊऱ्यजरे एम जाणवु एशक्तिरूप ऊऱ्य त्रयाएयु ॥१०॥

गुणपर्यायविगतवहुनेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ गक्ति
रूपगुणकोइक्कापे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥ जिन० ॥ १० ॥

द्रव्यगुणपर्यायिनो रास वाकावोध सहित् । शकान्तर । ३२३

श्रव्य ॥ हवे व्यक्तिरूपगुणपर्यायवस्थाएरे तेगुणपर्यायनीव्यक्तिवहुन्नेदेकेण अनेकप्रकारें निजनिजजाति सहजाविक्रमज्ञावि कल्पनाहृत आपआपणे स्वज्ञावेवतेरे कोइक दिगंबरानुसारी ते जक्तिरूपनेजगुण ज्ञापेकेण कहेरेते आवीरीतेजे जेम द्रव्यगुणपर्यायनुं कारण इव्यरे तेमगुणपर्यायव्युं कारण गुणरे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथाज्ञाव जेम नरनारकादिक अथवा इव्यएक त्यणुकादिक गुणपर्याय गुणनो अन्यथाज्ञाव नही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा ज्ञवस्यसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एम एकद्रव्य वीजोगुण एजातिगाम्बत अने पर्यायवी अशाम्बत एम आव्युं एम कहेरे ते निरतेकेण हडेसार्गे नही केमके एकल्पना जाल्पवी तथा उक्तिये मिलेनही ॥ १७ ॥

पर्यायवीगुणनिन्ननज्ञापीडे ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेहनो

नेदविवद्वावश्वायी ॥ तेकेमकहियेशक्तिरे ॥ जिनण ॥ ११ ॥

श्रव्य ॥ तेहनेउचरकहेरे जेपर्यायवकीगुणते निन्नकेण जूदोज्ञाप्योनवी एमसंमतिं ग्रंथनेविषे व्यक्तिरूपेण प्रगटश्वकरेकहुंरे गाथा ॥ परिगमणंपञ्चाठे अणेगकरणे गुणत्तिलुप्त्वा ॥ तहविषणगुणत्तिनणेइ पञ्चापणवदेशणाजह्वा ॥ ११ ॥ श्रव्य ॥ जेम कमज्ञाविपलुं पर्यायनुंखद्वयरे तेमथनेकपलुंकरहुं तेपणंपर्यायिनुखक्षणेरे इव्यतो एकजठे अनेडान-दर्शनादिकनेदकरेरे तेपर्यायरे पणगुणनकहिये केमके इव्यपर्यायनीदेशना जगवंतनीरे पणइव्यगुणनीदेशनानवी इतिगाम्बार्य ॥ इहांकोइपुरे जे परीतेजो गुणते पर्यायवीनिन्ननवी तोइव्यगुणपर्याय एत्रणनानाम किमकहोरो तेमनेकहेबुंजे विवद्वाकेण नेदनयनीदेशना तेहथीजेम तेखस्यधारा इहां ते खने धारा निन्नकहीदेशाट्या पण तेख अनेरेखनीधारा निन्ननवी तेमसहजावी कहीने गुणपर्याय निन्नकही-देशाट्या पणपरमार्थेनिन्ननवी एरीते जेहनोनेद उपचरितरे तेहनेंगक्तिकेमकहियें जेम उपचरित गायइजेनही तेम उपचरित गुण तेपणगक्तियरेनही ॥ १२ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनवद्वदीयेरे ॥ उव्या

रथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेकहीयेरे ॥ जिनण ॥ १२ ॥

श्रव्य ॥ हवेजेगुणनेपर्यायवीनिन्नमानेरे तेहनेइपणथापेरे के जोगुणएहवोत्रीजोपदा-र्थइव्यपर्यायवी जूदोज्ञावहोय तोनयपएत्रीजो छहीयेकेणमिये पणतेनो इहांविवद्वान-वी सूत्रमाहिनो १ इव्यार्थं पर्यायार्थएवेदुनयकदावे अनेजोगुण दोय तोत्रीजोगुणार्थ-नयपणवद्वाजोइयें उक्तंचसंमनो दोठापणयानगवया द्वचियपञ्चविद्याणिपया ॥ जह-पुणगुणोविहुंनो गुणठियरहर्विजुक्तंनो ॥ १ ॥ जंचपुण दगवया तेसुमुनेसुगांयमार्थार्थं ॥ प-ञ्चवसणार्थीयया वागरिचातेपञ्चाया ॥ २ ॥ हपादिकनेगुणकहीने नृत्रेनोसाम्बानवी प-

प्रकरणरत्नाकर जाग पहेलो

एवन्नपञ्जावा गधपञ्जावा इत्यादिकपर्यायशब्दे वोकाव्या रे तेमाटेपर्याय कहिय पुण कहियें नही अने एगुणकालए इत्यादिकग्राम जे युण शब्दवेते गणितशास्त्र सिद्धपर्यायित्वेषरसरयागचीठे पणतेरचनयनियवाचीनथीउकचसमतिष्ठते ये जपश्थातिसमए एगुणोदसगुणोअष्टतयुणो ॥ रूगाइपरिणामो नन्नइतम्हायुण निसेतो ॥१॥ युणसहमतरेणावि तणपञ्जागविसेससदाण ॥ सिङ्गाइ नवरसदाण ॥ अधम्मोणय युणोन्ति ॥ २ ॥ जहदसम्भुदसयुणमिय ॥ एगमिदसत्तण ॥ अहियमिवियुणसहे तहेवइयपिछव ॥ ३ ॥ एम युण ते परमार्थ दृष्टिये पर्यायी नथी तो तेने ऊव्यनी परें शक्तिरूप केवी रीते कहिये ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुहोवे ॥ तोऊव्येसुकीजेरे ॥ युणपर्याय पटतर केवल ॥ युणपर्याय कहीजेरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ इवेजेपर्यायिनुं दबतेयुणरे माटे युणनेजेशक्तिरूपकहेते तेहने दूषणआपेरे जोगुणपर्यायिनु दबकेऽ उपादानकारणहोय तोऊव्यसुकीजे ऊव्यनोकाम युणेजकीधो माटे १ युण २ पर्याय एवेजपदार्थकहो पणत्रीजोऊव्यपशार्थनहोय कोशकहेते जे ऊव्यपर्याय तथायुणपर्यायिरूपकार्यजिन्न रे तेमाटे एकऊव्य वीजुयुणरूप रे तेथीकारणजेडे कहियेए एम कहेतेजूरो रे केमके कार्यमाकारणशब्दनोप्रवेश सिद्धायाय नहिका अकार्यजेद सिद्धायाय अनेकार्यजेदसिद्धाययोहोय तो कारणजेद सिद्धायाय नहिका अन्योन्याथ्रय नामेदूषणउपजेमाटे युणपर्याय जे कहियें ते युणपरिणामनो जे पटतर जेदकल्पनारूप तेथीजकेबलसजवेरे पण परमार्थ नही अनेऊव्ययुणपर्याय ए त्रण नामकहियें रेयें तेपणजेदोपचारेंजकहियेंरेयें एमजाणडु ॥ १३ ॥

एक अनेकरूपथी एणीपरे ॥ जेद परस्पर जावोरे ॥ आधा राधेयादिक जावें ॥ इमजनेद मन लावोरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एणीपरेकेऽ ए रीतें ऊव्य एक अने युणपर्याय अनेक ए रूपे परस्पर केऽहोमाहे जेदजाव विचारो एमज आधार आधेय प्रमुख जावेकेऽ स्वजावें करीने गो जेद मनमा खावो केमके परस्पर अवृत्तिर्थम परस्परमा जेद जणावे ॥ १४ ॥

ऊव्य आधारे घटादिक दीसे ॥ युणपर्याय आधेतरे ॥ रूपा दिक एकेजियगोचर ॥ दोह घटादिक वेतरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे तेहीज विवरीदेसाहेते जेघटादिकऊव्यते आधारदेसायरे अनेपछदन दिकते एमजाणियेरेयें जेयुणपर्याय रूपरसादिक तथानी-ती विवरीदेसाहेते जेघटादिक तथानी-ती

ज्वयगुणपर्यायिनो रास चालावोध सहित.

व्यजपरेहद्वारे एसआधाराधेयनावें ज्वयश्री गुणपर्यायिने ज्ञेद्वरे तथारूपादिक
र्याय एकेक इंडियनो गोचरकेऽविप्रयरे जेम ल्पते चक्षुरिंडियेंज जणावरे तथा
रसनेंडियेंजजणाय इवादिक अने घटाडिक इव्यरे ते चक्षुरिंडिय अनेस्पर्याईंडिय
इकेऽवेंडियेंकरीजणायरे एनेयायिकमत अनुसरीनेकछुं अनेस्वमते गंधाडिकपर्याय
प्राणेंडियाडिकेपण इव्यप्रत्यक्षरे नहींकां कुमुगंधुंतुं इव्यादिक ज्ञानने ब्रांतिपणोऽ
यरे तेजाणबुं एमएकअनेक इंडियग्राहकपणे इव्यश्री गुणपर्यायिने ज्ञेद्वजाणबुं ॥ ३५ ॥

संज्ञा संख्या लक्षण्यी पण ॥ ज्ञेद् एहोनो जाणीरे ॥ सुजग
कारणी सुन्नमति धारो ॥ इरमति वेलि कृपाणीरे ॥ जिन ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाकेऽ नाम तेवीज्वयनोज्ञेद् एटलेनामज्ञेद्ज्ञेद् तेमांवदी एकइव्य
नामश्रीज्ञेद् वीजोगुणनामश्रीज्ञेद् त्रीजोपर्यायिनामश्रीज्ञेद् तथासंख्यातेऽकवेत्रणनीग-
णना तेवीज्ञेद् एटलेरेकव्यरे गुणअनेकरे पर्यायअनेकरे जिन्वकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वतोव्या-
पर्यायिगमन इव्यलक्षण नएकवीश्रान्यने ज्ञेद्वजाणीने उत्तमयशनीकर-
नारी ज्ञवीमतिनेधारो तेकहेवीरे जेभुरमतिकेऽ इव्याद्वेतपक्षनीमारीमतितेहृष्पणीजेवे-
ली तेहनेविपे कृपाणीकेऽकोहाढीसमानरे एदालमां इव्यगुणपर्यायिनोनेद्वदेखाव्यो ॥

॥ गाल त्रीजी ॥

॥ शालिन्ज ज्ञोगी रखो ॥ एदेशी ॥

एकांतेजोन्मावियेंजी ॥ इव्यादिकनोरेज्ञेद् ॥ तोपरइव्यपरेहुएजी ॥
गुणगुणीज्ञावउर्चेदरे ॥ ज्ञविका ॥ धारोगुरुउपदेश ॥ १ ॥ ए आंकणी
अर्थ ॥ हवेजेइव्यसां एकांतेजेव्यनोरे तेनेश्रेव्यनोरे अनुसरीने दूपणदीयेरेइव्या-
टिक केऽ इव्यगुणपर्यायिनोजो एकांतेजेव्यनोरे तो परइव्यनीपरें ल्पद्व्यने विपे पण
गुणगुणी ज्ञावनो उद्वेद्व्ययीजाय जेमजीवइव्यना गुणह्यानाडिकरे तेनोगुणी जीवइव्य
उपापुज्जलइव्यनागुणरूपादिकरे तेनोगुणी पुज्जलइव्यरे ए व्यवस्याशास्त्रप्रसिद्धरे तेनो
उपापुज्जलइव्यनागुणरूपादिकरे तेलोपाय जीवइव्यने पुज्जलगुणी जेम ज्ञेद्वरे तेमगोतानागुणपणज्ञे-
तेनोगुणी ज्ञावनतां तेलोपाय जीवइव्यने अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्यवहाररे तेनो
उत्तोथमुकइव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी एहवो अनेद्वनयनागुरुनो उप-
तेनोपययीजाय माटेइव्यगुणपर्यायिनो अनेद्वजसंचवे एहवो अनेद्वनयनागुरुनो उप-
तेनेहेजन्वप्राणीतुमेधारो आदरो जेमथात्मइव्यगुरुइव्य ॥ ३ ॥

जव्येणुणपर्यायनोजी ॥ तेऽन्नेदसवध ॥ निन्नतेहजो
कहियेंजी ॥ तोचनवस्थावधरे ॥ न० ॥ धा० ॥५॥

अर्थ ॥ वली अन्नेद ऊपरयुक्ति कहेरे जव्यनेविषे गुणपर्यायनो जे सवधते अन्ने-
दजरे केमके जो जव्यनेविषे गुणपर्यायनो समवायनामे सवधने निन्नकहियें तो
अनवस्थादोपनु वधनथाय जेथी गुणगुणाथीश्वरगो समवायसवधकहियेंतो तेसमगाय
नेपण अनेरोसवधजोइयें वली ते सवधने पण अनेरो सवध जोइये एमकरता कि
हापण रहेराव न थाय अने जोसमवायनो स्वरूप सवधनेज अनिन्न मानियें तो गु
णगुणीने स्वरूप सवध मानता सुविधटेरे जे फोकटनवा सवध मानोठा ॥ २ ॥

सुवर्णकुम्भादिकहुञ्जी ॥ घटरक्तादिकज्ञाव ॥ एव्यव
हारनसज्जवेजी ॥ जोनच्छेदस्वज्ञावेरे ॥ न० ॥ धा० ॥६॥

अर्थ ॥ वलीजेथ्यन्नेदनमाने तेहनेवाधककहेरे जे सुवर्णके० सोनुतेकुम्भयु तथा
घमोप्रथमउथामहतो तेहिजरातोवर्णययो एहवोसर्वलोकनोजे अनुज्ञवसिङ्गवहाररे
तेजोज्ञवादिकत्रणने अन्नेदस्वज्ञावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खधेशन्नेदेहुएजी ॥ वमणीगुस्तारेखध ॥ प्रदेशगु
रुतापरिणमेजी ॥ खंधअन्नेदसंवधरे ॥ न० ॥ धा० ॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेथ्यन्नेदनहीमाने तेहनेवीजुवाधककहेरे जे खधके० अवयवी अने
देशतेथवयव एहोनेजोन्नेदेजमानियें तो वमणीज्ञार राधमाहेथवोजोइयें जेमाटे सो-
ततुनोजेपटरे ते सोततुथामाजेटलोज्ञार तेटलोज्ञार तेनापटमापण यायरे तथा
जेकोइनगोनेयायिक एमकहेरे जे अवयवनाज्ञारथी अवयवीनो ज्ञार अत्यतहीनरे
तोतेहनेमते हिप्रदेशादिकराधमाहे किहापणउत्कृष्टगुरुता नथवीजोइयें मादेहिप्र-
देशादिकराधते एकप्रदेशादिककीथपेक्षायें अवयवीरे अनेपरमाणुमाहेजो उत्कृष्टगु
स्त्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमाहेमाननाजोइयें अनेहिप्रदेशादिकमा न
माननाजोइयें अनेन्नेदनयनो वधनमानियेंतो प्रदेशनोज्ञार तेहिजराधनारपणे परि-
णमे जेमततुरुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेगुस्तारूद्धीनोदोपकद्योतेनक्षागे ॥ ४ ॥

निन्नज्ञव्यपर्यायनेजी ॥ नवनादिकनेरेएक ॥ जापेक्षिम
दाखेनहीजी ॥ एकज्ञव्यमाविवेकरे ॥ न० ॥ धा० ॥५॥

अर्थ ॥ वलीजेज्ञव्यादिकने अन्नेदनयीमानता तेहनेउत्तजोथायेठे निन्नज्ञव्यजे पा
पाप काट पृथ्वी जसादिकतेनोपर्यायजेननादिक घरप्रमुख तेहनेतुएककहेरे जे

एकघरइत्यादिक लोकव्यवहाररे तोएकऊर्ध्वमां ऊर्ध्वगुणपर्यायनोश्चेदहोय एहवो
विवेक शावास्तेनश्रीकहेतो माटेजेआत्मऊर्ध्व तेहिजआत्मगुण अनेतेहिजआत्मप-
र्याय एहवो व्यवहारश्चनादिसिद्धरे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायच्छेदधीजी ॥ ऊर्ध्वनियतव्यवहार ॥ परिणति
जेवेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ चत्विंश ॥ धारा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीजीवऊर्ध्व अजीवऊर्ध्वइत्यादिक जे नियतकेण व्यवस्थासहितव्यवहार
यायरे तेगुणपर्यायनाश्चेदधीश्चायरे जेमझानादिकगुणपर्यायथी अनिन्नतेजीवऊर्ध्व
अनेरूपादिक गुणपर्यायथी अनिन्नतेअजीवऊर्ध्व नहींकांऊर्ध्वसामान्यथी गुणपर्यायनी
विशेषसंज्ञानयाय १ ऊर्ध्व २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामरे पणस्वजाति त्रणनेएकत्वप-
रिणामरे माटेयत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मऊर्ध्व झानादिकगुण तथातेहना-
पर्याय एस्वरूपएकजयात्माकहियें तथा जेम ३ रत्न ४ कांति ३ ज्वरापहारशक्ति ए
त्रणेनेएकजपरिणामरे तेमऊर्ध्वगुणपर्यायनेपण जाणबुं ॥ ६ ॥

जोअन्नेदनहीएहनेजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अठतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविपाणपरेजोयरे ॥ चत्विंश ॥ धारा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअन्नेदनमाने तेहनेदोपदेखानेरे जोएऊर्ध्वगुणपर्यायने अन्नेदनथी
तो कारणकार्यनेपण अन्नेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम
नीपजे अनेकारणमांहेकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे� अरुतिवार्यव-
स्तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविपाण शशवानाशिंगमा माटेजोकारणमांहे� कार्य-
नीसचामानियेंतो अन्नेदसहजेजथाव्यो ॥ ७ ॥

ऊर्ध्वस्तुपठतिकार्यनीजी ॥ तिरोन्नावनीशक्ति ॥ आविरजावें
नीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ चत्विंश ॥ धारा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ द्वेजोकारणमांहे कार्यउपनाथगाठ जोकार्यनीसचारे तोकार्यदशीनरेमय-
तुंनथी एहवींशंकाकरनारने उच्चरथार्पणे जे कार्यउपनोनथी तेवारेकारणमांहेकार्य-
नीऊर्ध्वरूपेतिरोन्नावनीशक्तिरे तेधीकार्यजणातुंनथी पणसामर्मामस्तु तेवारें गुणपर्या-
यनीव्यक्तियीश्चाविरजावदेण प्रगटन्नावथायरे तेधीकार्यदेवायरे तिरोन्नाव नथाश्चा
विरजावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायिगिरेपज्जाएवा तेप्रीश्चाविरजाप ने-
सदथसतविकल्पेन्दूपएहोयनही केसके यनुज्जवनेश्चतुर्सारेपर्यायकल्पियं

नैयायिकज्ञापेश्वरुजी ॥ जिमअवतानुरेङ्गान ॥ होवेविषय
अतीतनुजी ॥ तिमकार्यसहिनाणे ॥ ज० ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहबुकहेरे के जेमश्रीतिविषयजे घटादिकथरतारे तेह-
नुजेमज्ञानहोय तेमघटादिकर्त्त्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अरताजरे सामग्रीमिलेनि
पजसे अरतानीक्षित्तिहोयतो अरतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुगारणदादिकश्रमेकहि-
यैर्यैये तिहालाघवरे तुमारेमतेघटाजिव्यक्तिनु दक्षादिककारणहेबुतिहागोरवहोय
वीजुअचिव्यक्तिनुकारणचक्रप्रमुखरे पणदक्षादिकनथी माटेजेदपक्षजघटरे ॥ ६ ॥

तेमिव्यानहीसर्वथाजी ॥ अरतोविषयअतीत ॥ पर्यायारथ
तेनहीजी ॥ उव्यारथहेनित्यरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ होवेनैयायिकमतनेछुपवेरे जे अरतानीउत्पत्तिहोयएमकहेरे तेमत मिथ्यारे
केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअरतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेछुव्यार्थथीनि
त्यरे जेम नष्टपणमृत्तिकारूपेरे जोसर्वथानहोयतो शशकानाशुगपरेयाय ॥ १० ॥

अरतोज्ञापेङ्गाननेजी ॥ जोस्वज्ञावेसंसार ॥ कहेतोङ्गाना
कारतोजी ॥ जीपियोगाचाररे ॥ ज० ॥ धा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअरतोअर्थङ्गानमादेजासेरे एहबुकहेरे तेहनेवापकदेखाडेरे
जोङ्गाननेस्वज्ञावे अतीतघटप्रमुखनोअरतोअर्थजासेरे एहबुमानीयेतो सर्वसारङ्गा
नाकारज रे चाहाआकारअनादिअविद्यावासनायेअरताजासेरे जेमस्ममादे अर
तापदार्थजासेरे एहबोवाहाकाररहितशुद्धङ्गानते बुझनेजहोय एमकहेतो योगाचा
रनामेत्रीजोनोधजजीपे तेमाटेअरतानुङ्गान नहोय ॥ ११ ॥

द्वणाजाएयोअरथतेजी ॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्तमान
पर्यायथीजी ॥ वर्तमानताथायरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोरतानुङ्गाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाल्लो एमकेमकहेकायरे तेअ
तीतघटमेहमणाजाएयो एमजेजणायरे तिहाउव्यथीरताअतीतघटनेपिये वर्तमानहेय
आकाररूपपर्यायथी द्वमणाअतीतघटजाल्लोजायरे अथवा नैगमनयथीअतीतने पिये
वर्तमानतानोआरोपकरियैर्ये माटेसर्वथाअरतिवस्तुनोङ्गाननयाय ॥ १२ ॥

धर्मिअरतेवर्मनोजी ॥ अरतेकालेसुदाय ॥ सर्वकालनिर्ज
यपणेजी ॥ तोशशशुंगजणायरे ॥ ज० ॥ धा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिश्रतीत्थटश्चरते धर्मघटत्वश्चरतेकादें घटनेश्चावकादेंजासेरे अथवाधर्मिश्रतीन्थटश्चरते धर्मज्ञेयाकारश्चरतेकादें जासेरे एसीतेंजोतुजनेचित्तमांहे सुहाव तो सर्वश्रतीत अनागत वर्तमानकादेंनिर्जयपणे अदृष्टंकारहितपणे उशाशृंगप-एजाएयुंजोइये एमतो नथी ॥ २३ ॥

तेमाटेअवतातणोजी ॥ वोधनजनमनदोय ॥ कारयकारण
नेसहीजी ॥ वेच्चेदङ्गमजोयरे ॥ ४० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेअवतात्यर्थनोवोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्झरकार्यकारण-
नोश्चेऽठरे तेदृष्टांते ऊव्यगुणपर्यायनोपण अन्नेद्वरे एमसहितुं एन्नेदपक्षनीदाखउपरे
अन्नेदपक्षनीदाखकही केमकेन्नेदनयपक्षनो अन्निमानते अन्नेदनयटाखे ॥ १४ ॥

नेदेन्नेपणेनेयाचिकोजी ॥ सांख्यअन्नेदप्रकाश ॥ जैनउभय
विस्तारतोजी ॥ पामेसुजश्चविलासरे ॥ ४० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवेहुनयनास्तामीदेखाढीने स्थितपक्षकहेरे जेन्नेदनयतेनेयाचिकजापेरे
जेवीते असतुकार्यवाढीदेखावरे तथासांख्यमततेअन्नेदनयप्रकाशेरे अनेजैनते वेहुन-
यस्याद्वाढीकरीविस्तारतोथको जलायगनोविलासपामे केमके पक्षपातिवेहुनय माहो-
मांहे घसतां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजडीपिठे उक्तंच ॥ अन्योन्य प-
क्षप्रतिपक्षजावात् चथापरेमत्सरिणः प्रवादाः ॥ नयानशेपानविशेषमित्तव्यपक्षपाती
समयस्तथाते ॥ ३ ॥ यएवदोषा.किलनित्यवादे विनागिवादेपिसमास्तएव ॥ परस्पर-
ध्वंसिपुकंटकेपु जयत्यधृत्यंजिनशासनंते ॥ १५ ॥

॥ दाख चोथी ॥

॥ रागआसाडरी ॥ नंदनकुं त्रिसला हुखरावे ॥ ए देशी ॥
भेद्यअन्नेदुभयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एक
ठामेकदोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मेमन
दृढकरीराखो ॥ जिमशिवसुखफलचाखोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेन्नेदान्नेदनोविरोध आशंकीनेटाखेरे इहांकोइपरवाढी कहेरेजे ऊव्यादि-
कनेविषे ३ ज्ञेद २ अन्नेद एवेहुधर्म किममानोरो जिहांविरोधताने निरधारोरो के-
मकेजिहांनेहोय तिहांअन्नेदनहोय अने जिहांअन्नेदहोय तिहांनेदनहोय एविहुं
जावाजावरूपे विरोधीरे तोवेहुविरोधी एकठामेरहेनही जेमथातपहोय तिहांअंधारो
रहेनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमनेदान्नेदपण

इहांशुतधर्मे स्याद्वादप्रवचनमा मनहृष्टविश्वासवत करीराखो जिनजासन अद्भृत-
पणे मीक्षरूप कटपृक्षना सुखरूपक्षचाखो शुतधर्मविना चारिवर्धमे फलवतनहोय
केमके शकासहित चारित्रिठपण समाधीनपामे यहुक्त विजिगठसमावग्रेण अप्याणे-
एनखज्ञतेसमाहि इतिशाचारागे ॥ १ ॥

एहवींशिष्यनीशकाजाणी ॥ परमारथगुरुवोलेरे ॥ अविरो
धेसवींठामेदीसे ॥ दोयथर्मएकतोखेरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवींशिष्यनी शकाजाणीकरीने युहस्याद्वादी परमार्थवोलेरे जे घटयटा-
जावादिकने यद्यपिपिरोभरे तोपणनेदाजेदने पिरोधनथी केमके सर्विग्रामे जेदथनेद
एवेहुधर्म अविरोधें एकाथ्रयवृत्तिपणेज एकतोखे देखायरे पणकोइकएमकहेरेजे अजे-
दस्वाजाविक साचोरे अनेजेदउपाधिकतेजुवो तेअनुजवतानथी केमके व्यवहारेपरामे-
क्षाये वेहुनेगुणादिकनोजेद तथागुणादिकनोअनेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेसविजननीसाखे ॥ प्रत्यदेजेलहियेरे ॥ रूपरसा
टिकनीपरेतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामें घटादिकछव्यनेविपे सर्विकोकनीसाखे प्रत्यक्षप्रमाणे रक्तवादिक
युएपर्यायनो जेदाजेदजे लहीयेरेये तेनोविरोधकहो केवीरीतेकहिये जेमरुपरसादि-
कनो एकाथ्रयवृत्तिस्वानुजावथी पिरोधनकहिये तेम जेदाजेदनुपण जाणतुं उक्तच
नहिप्रत्यक्षहेयेविरोधोनाम तथाजेमप्रत्यक्षहेयें दृष्टातनुपणकार्यनथी उक्तच केद
मन्यत्रदृष्टव महोनिपुणतातव ॥ दृष्टातयाचमेयत्वंप्रत्यक्षेष्यनुमानवत् ॥ ३ ॥ ३ ॥

इयामज्ञावजेघटेरेपेहेला ॥ पठेनिज्ञतेरातोरे ॥ घटज्ञावे
नविनिज्ञजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेदाजेदना प्रत्यक्षनो अजिलाप तेपुक्षसङ्ख्यें देखाहेरे जेघटपेहेला
इयामज्ञावेरे तेपरेरातो थयो तेवारे जिन्नजजणायथे अनेविहुकाले घटज्ञावे अजिन्नज
जणायथे इयामतथारक अवस्थानेजेडेंघटएकजरे तोइहाविरोधतानीवातसीकहेवी॥४॥

वालज्ञावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणज्ञावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त
जावेतेएकज ॥ अविरोधेनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मक्षव्यमा जेदाजेदनो अनुजपदेसाहेरे जेप्राणी वालज्ञावे देखा
परे तेजप्राणी तरुणज्ञावे न्यारोकेऽनिज्ञठे अनेदेवदत्तज्ञावे एटखेमनुप्यपणाना प
यायें तेएकरेतोएकपदार्थनेविपे वालतयातरुण ज्ञावेजेदरे अनेदेवदत्तज्ञावे अजेदरे

एसअश्विरोयेनिरधारो उक्तं च पुरिसंमिषुरिसत्तदो जस्माइमरणकालपञ्चनो ॥ तस्सत्तवा दाईया पञ्जावज्ञेयावहु विचप्पा ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंये ॥ ५ ॥

धर्मभेदजोच्चनुज्ञवज्ञासे ॥ धर्मभेदनवीकहियेरे ॥ जिन्न
धर्मनुं एकज्ञधर्मि ॥ जरुचेतनपणलहियेरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जिहांतेद्वय तिहांश्चन्नेद् होयजनही केमके ज्ञेद्व्याप्यवृत्तिरे एहवी प्राचीननेयाविकनी शंकारे तेटाखेरे जे इयामोनरकः इहां इयामत्व रक्तवर्धम- नाज्ञेदनो अनुज्ञवज्ञासेरे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोन्नेद् ज्ञासतोनथी मादेएमजो कहियेतो जरुचेतननो ज्ञेद् ज्ञासेरे तेपण जमत्वचेतनत्व धर्मनोज्ञेदरे पणजनचेतन ऊव्यनोज्ञेदनवी एरीतें अव्यवस्थायाय धर्मिने प्रतियोग्यपणे उद्भेदतो विहु गामे सरिखोरे अनेप्रत्यक्ष सिद्धथये वाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

जेदाज्ञेदतिहांपणकहेतां ॥ विजयज्ञेनमतपावेरे ॥ जिन्नरूप
मांस्पांतरथी ॥ जगच्छेदपणच्छावेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजरुतथा चेतन्यमांपण जेदाज्ञेदकहेतां जेननो मत विजयपामेरे मादे जि- न्नरूपजे जीवयज्ञीवादिक तेमांस्पांतर ऊव्यत्वपदार्थत्वादिक तेशीजगतमां पण अनेदपणोआवे एटखेज्ञेदाज्ञेदने सर्वव्यापकपणुंक्लुं ॥ ७ ॥

जेहनोज्ञेदत्तेद्वज्ञेदजतेहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीज्ञेदजतेहनो ॥ मूलदेवतुनयसतनोरे ॥ श्रुत० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ बद्धीएहिजविवरीदेखाडेरे के जेहनोज्ञेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अनेद होय जेम थास कोस कुमूल घटादिकनोज्ञेदरे अनेतेजमृदुऊव्य विशिष्टअनर्पित स्वपर्यायनो अनेदरे बद्धीतेनोज रूपांतरथी ज्ञेदथाय जेम थास कोस कुमूलादिक पर्यायविशिष्टमृदुऊव्यपणे तेनोज ज्ञेदथाय एरीतेज्ञेदनेअनेज्ञेदरे तेशोकडागमनयनो मूलदेहुरे सातनयनाजे सातसेनयन्नेदरे तेएरीतेद्वयपर्यायनी अर्पणाअनर्पणाये थाय तेशतारनयचक्रावनयमां पूर्वेहता अनेहमणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिवि- धिरित्वादिरीतें एकएकनयमां वारवारज्ञेद उपजवाकह्यारे ॥ ८ ॥

खेत्रकालज्ञावादिकयोगे ॥ थायनंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकठामेंकहीये ॥ सप्तनंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमऊव्यादिक विशेषणे नंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक जंगथाय जेमघटऊव्यने खकरीविविहीये तेवारे खेत्रादिकवट परथाय एमप्रत्येके

इहांश्रुतधर्मे स्याद्वादप्रत्यनमा मनहृदविश्वासवत करीराखो जिनशासन थङ्काहृद
पणे मोहारूप कहपृष्ठक्षना सुपरूपफलचारामो श्रुतधर्मपिना चारित्रधर्मे फलपंतनहोय
केमके शकासहित चारित्रिभिरण समाधीनपामे यदुक्त प्रितिगठसमापन्नेण अप्याणे-
एनखजतेसमाहिं इतिआचारागे ॥ १ ॥

एहवीशिष्यनीशकाजाणी ॥ परमारथगुरुवोलेरे ॥ अविरो
धेसवीठामेंटीसे ॥ दोयथर्मएकतोलेरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवीशिष्यनी शकाजाणीकरीने युरस्याद्वादी परमार्थबोलेरे जे घटघटा
जावादिकने यद्यपिविरोधरे तोपणजेदाजेदने विरोधनथी केमके सर्वठामे जेदथजेद
एवेहुधर्म अविरोधं एकाश्रयवृत्तिपणेज एकतोले देखायरे पणकोइकएमकहेरेजे अनेजे-
दस्याज्ञाविक साचोरे अनेजेदउपाधिकतेजुरो तेअनुज्ञवतानथी केमके व्यवहारेपरापे
काये वेहुनेगुणादिकनोजेद तथागुणादिकनोश्चजेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेसविजननीसाखे ॥ प्रत्यद्येजहियेरे ॥ खपरसा
दिकनीपरेतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामेघटादिकझट्यनेविपे सर्वक्षोकनीसाखे प्रत्यक्षप्रभाणे रक्त्वादिक
युणपर्यायिनो जेदाजेदजे सहीयैर्थे तेनोविरोधकहो केबीरीतेकहिये जेमरूपरसादि-
कनो एकाश्रयवृत्तिगुज्ञावथी विरोधनकहिये तेम जेदाजेदनुपण जाणु उक्तच
नहिप्रत्यक्षहेयेविरोधोनाम तथाजेमप्रत्यक्षहेयेवृष्टातनुपणकार्यनथी उक्तच केद
मन्यत्रदृष्ट्व महोनिपुणतात्व ॥ वृष्टातयाच्चसेयत्वप्रत्यक्षेष्यनुमानवत् ॥ ३ ॥ ३ ॥

श्यामज्ञावजेघटेहेपेहेका ॥ परेजिन्नतेरातोरे ॥ घटज्ञावे
नविन्निजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेदाजेदना प्रत्यक्षनो अनिखाप तेपुज्ञखड्यें देखाहेरे जेघटपहेला
श्यामज्ञावेरे तेपरेरातो यथो तेवारें निन्निजजणायरे अनेविहुकाले घटज्ञावे अनिन्निज
जणायरे श्यामतथारक अप्यस्यानेजेदेंघटएकजठे तोइहाप्रिरोधतानीवातसीकहेवी॥४॥
वालज्ञावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणज्ञावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त
ज्ञावेतेएकज ॥ अविरोधेनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेयात्मझट्यमा जेदाजेदनो अनुज्ञदेखाहेरे जेप्राणी वालकज्ञावे देखा
यरे तेजप्राणी तरुणज्ञावे न्यारोरे ॥ निन्नरे अनेदेवदत्तज्ञावे एटखेमनुप्यपणाना प
र्यायें तेएकरेतोएकपदार्थनेविपे वालतयातरुण ज्ञावेजेदरे अनेदेवदत्तज्ञावे अनेदरे

एमश्विरोघेनिरधारो उक्तं च पुरिसंमिपुरिससद्वो जम्माइमरणकालपञ्जांतो ॥ तस्सउवा
लाईया पञ्जवन्नेयावहु विषया ॥ ३ ॥ इतिसंमतिग्रन्थे ॥ ५ ॥

धर्मज्ञेदज्ञोअनुज्ञवन्नासे ॥ धर्मज्ञेदनवीकहियेरे ॥ जिन्न
धर्मनुंएकजधर्मि ॥ जम्बेतनपणालहियेरे ॥ श्रुत० ॥६॥

अर्थ ॥ जिहांज्ञेदहोय तिहांश्वज्ञेद होयजनही केमके ज्ञेदव्याप्यवृत्तिरे एहवी
प्राचीननेयायिकनी शंकारे तेटालेरे जे श्यामोनरकः इहां श्यामत्व रक्त्वधर्म-
नाज्ञेदनो अनुज्ञवन्नासेरे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनेज्ञेद ज्ञासतोनथी माटेएमजो
कहियेतो जम्बेतननो ज्ञेद ज्ञासेरे तेपण जम्बत्व जम्बनोज्ञेदरे पणजरुचे-
तन ऋब्यनोज्ञेदनवी एरीतं अव्यवस्थायाय धर्मिने प्रतियोग्यपणे उद्वेष्टतो विंहु
गामे सरिखोरे अनेप्रत्यक्ष सिद्धग्रन्थे वाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

ज्ञेदाज्ञेदतिहांपणकहेतां ॥ विजयजेनमतपावेरे ॥ जिन्नरूप
मांरूपांतरथी ॥ जगअज्ञेदपणाच्चावेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजमतथा चेतन्यमांपण ज्ञेदाज्ञेदकहेतां जेननो मत विजयपामेरे माटे जि-
न्नरूपजे जीवश्रीजीवादिक तेमांरूपांतर ऋब्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पण
अज्ञेदपणोश्वावे एटलेज्ञेदाज्ञेदने सर्वत्रव्यापकपणुंकर्युं ॥ ७ ॥

जेहनोज्ञेदच्छज्ञेदज्ञेदहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां

तरथीज्ञेदज्ञेदहनो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥ श्रुत० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वक्षीएहिजविवरीदेखाडेरे के जेहनोज्ञेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अज्ञेद
होय जेम यास कोस कुसूल घटादिकनोज्ञेदरे अनेतेजमृष्टुऋब्य विशिष्टअनर्पित
स्वपर्यायिनो अनेदरे वक्षीतेनोज रूपांतरथी ज्ञेदयाय जेम यास कोस कुसूलादिक
पर्यायविशिष्टमृष्टुऋब्यपणे तेनोज ज्ञेदयाय एरीतेज्ञेदतेज्ञेदज्ञेदरे तेशैकडागमेनयनो
मूलहेतुरे सातनयनाजे सातसेनयज्ञेदरे तेएरीतेज्ञपर्यायिनी अर्पणाश्रनर्पणाये याय
तेशतारनयचकायनयमां पूर्वेहता अनेहमणा छादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिवि-
धिरित्यादिरीते एकएकनयमां वारवारज्ञेद उपजवाकहारे ॥ ८ ॥

खेत्रकालज्ञावादिकयोगे ॥ यायन्नंगनीकोडीरे ॥ संखेपे

एकठामेंकदीये ॥ सप्तन्नंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमऋब्यादिक विशेषणे नंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक
नंगथाय जेमघटऋब्यने खकरीविवक्षिये तेवारे खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येके

सप्तज्ञगीपण क्रोडोगमेनीपंजे १ घट स्यादस्त्वयेव २ स्याद्वास्त्वयेव ३ स्यादवाच्यएव
 ४ स्यादस्त्वयेवनास्त्वयेव ५ स्यादस्त्वयेवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्वयेवस्यादवक्तव्यएव
 ७ स्यादस्त्वयेवस्यादनास्त्वयेव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि सोकप्रसिद्धजे कुम्ही
 वादि पर्यायिंप्रितधटरे तेनेजस्वत्रेवडीने स्वरूपेश्चस्तित्व पररूपेनास्तित्व लेइनेसप्तज्ञगी
 देवस्वार्डेरे १ सङ्कल्प सखेव सकाख सज्जामनी अपेक्षाये घटरे अनेऽ२ परद्वय परस्पर
 परकाल परज्ञावनी अपेक्षाये घटनर्थी ३ तथाएकवारे वैपर्याय एकगच्छे मुख्य
 रूपे नकहेवायमाटे उज्जयविवक्षायें अवाच्यरे ४ एकअशश्वरूपे अनेएकअश्व पररूपे
 विवक्षिये तेवारे ठेनेनर्थी ५ एकअशश्वरूपे तथाएकअश्व युग्मपत् उज्जयरूपे विवक्षि
 येंतेवारेनर्थी अनेअनाच्य ६ एकअश्व पररूपे अनेएकअश्वयुग्मपत् उज्जयरूपे विवक्षि
 येंतेवारेनर्थी अनेअनाच्य ७ एकअश्व स्वरूपे तथाएकअश्व पररूपे अनेएकअश्व यु-
 ग्मपत् उज्जयरूपे विवक्षिये तेवारे ते नर्थी अने अवाच्य ॥ ८ ॥

पर्यायारथनिन्नवस्तुरे ॥ उव्यारथेअनिन्नोरे ॥ क्रमेउज्जय
 नयजोआर्पिंजे ॥ तोनिन्ननेअनिन्नोरे ॥ श्रुतः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनेदानेदमा सप्तज्ञगी जोनियेरैये १ पर्यायार्थनयर्थी सर्वेस्तु उव्य
 युणपर्यायिकक्षणे कथचित्पणे निन्नरे २ उव्यार्थनयर्थी कथचित्प्रथनिन्नजरे केमके
 उव्यनाजे युणपर्याय तेआविज्ञाव तथातिरोजावेरे ३ अनुकर्मे जो उव्यार्थिक तथा
 पर्यायार्थिक एवेनय अर्पिये तोकथचित् निन्न तथाकथचित् अनिन्नकहिये ॥ १० ॥

जोएकदाउज्जयनययहिये ॥ तोअवाच्यतेलहियेरे ॥ एके
 शब्देएकजवारे ॥ दोयअर्थनवीकहियेरे ॥ श्रुतः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ४ जोएकगरेंज वेनयना अर्थविवक्षियेनो तेअवाच्यसहिये केमकेएक
 शब्दे एकजवावते वेअर्थकहाजातानर्थी सकेतिकशब्दपण एकजसकेतिकरूपकहे पण
 वेन्नप स्पष्टकही शकीयेनही जेमपुण्पदतादिक शब्दपणएकोक्ति चक्षसूर्यकहे पणनि
 शोक्ति कहीशकेनही अनेवेनयनाअर्थ मुरयपणेतो निन्नोक्तिज कहेवा घटे इत्यादिक
 युक्ति शास्त्रातरथी जाणवी ॥ ११ ॥

पर्यायारथकटपनउत्तर ॥ उज्जयविवक्षासधिरे ॥ निन्नअवा
 च्यवस्तुतेकहिये ॥ स्यातकारनेवधिरे ॥ श्रुतः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेमाप्रथमपर्यायार्थकटपनापणे वेएकदाउज्जय नयार्पणाकरिये तेवार
 वस्तुने निन्नअवक्तव्य कथचित् एमकहिये ॥ १२ ॥

उव्यारथनेउभयग्रह्यायी ॥ अन्निष्टतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग
पतनयउभयग्रह्यायी ॥ जिन्नअन्निष्टत्त्रवाचोरे ॥ श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमक्षव्यार्थ कव्यनापणे अनेकदाउचयनय अर्पणाकरिये ते-
रारे कथंचित् अन्निष्टश्वकव्य एमकहिये ७ अनुक्रमे वेहुनयनी प्रथमश्रीर्पणाक-
रिये परेवेहुनयनी एकवारेश्रीर्पणाकरिये तेवारेकथंचित् निन्नश्वन्निष्ट अवकव्यएम
कहिये ए एकज्ञेदानेद पर्यायमां सप्तज्ञंगी जोकी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुरे-
त्रेके जिहांवेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएके गौणमुख्यज्ञावे सप्तज्ञंगी
याठं पण जिहांप्रदेश व्रस्यकादिविचारे तो सात ठ पांच प्रमुखनयना जिन्ननिन्नवि-
चारहोय तिहांश्वधिक्जंगयाय तेवारेसप्तज्ञंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेरे के
तिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि वीजासर्वनो नियेधेकेइ प्रत्येके अनेकसप्तज्ञंगीक-
रिये अमेतोएमजाणियेरेयेजे सर्वनयार्थ प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाण
वाक्य एकक्षणलेइने तेवेठामें स्यातकारालंवित सकलनयार्थसमूहालंबन एजंगेपण
नियेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने रेकाए वेजंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविये
देखाडीरे तजाया ॥ एवसत्त्वविथप्तो वयणपहोहोइश्वरपञ्जाए ॥ वंजणपञ्जाए-
पुण सविथप्तोनिविथप्तोथ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ एवंपूर्वोक्तप्रकारे सप्तविकटप
सप्तप्रकारवचनपथ सप्तज्ञंगीरूप वचनमार्गे तेअर्थपर्याय तेअस्तित्वादिकने
विषेहोय व्यंजनपर्यायजेघटकुंजादि शब्दवाच्यता तेहनेविषेसविकटप विधिरूप नि-
र्विकटप नियेधरूप एवेजांगाहोय पण अवकव्यादि जंगनहोय केमके अवकव्य श-
ब्दविषय कहियेतो विरोधयाय अथवा सविकटपगद्व समन्निरूढनयमते अनेनिर्दि-
कटपशब्द एवंज्ञूतनयनीमते एमवेजंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अर्थनय टे तेतो
व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अनेकांतविवस्याथी
जाणबु तदेवमेकत्रविषये प्रतिस्वमनेकनयविग्रतिपत्तिथवेस्यात् कारबांठितावन्नयार्थ-
प्रकारकसमूहालंबनवोधजनकएकएवज्ञंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्यदे जंगद्वयवत् यदिच-
सर्वत्रसप्तज्ञंगीनियमएवा श्वासास्तदाचालनीयन्यायेनतावन्नयार्थनियेधवोधको द्वितीयो-
जंग स्तन्मूखकाश्वान्येतावत्कोटिकाः पंचज्ञंगाश्वकटपनीयाइत्यमेव निराकांक्षसकलज्ञंग-
प्रतिपत्तिर्वाहादितियुक्तपश्यामः एविचार स्याद्वाद पंडितें सूक्ष्मवुद्धीयें चित्तमांधारवो-

सप्तज्ञंगएट्टद्वयन्यासी ॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकिरति

जगवाधेतेहनी ॥ जैनभावेतसदेखेरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेरे एकद्वाजेसातज्ञांगा ते २०

प्रिक्तादेवी नयससज्जंगप्रमाण ससज्जगद्यादि ज्ञेदे घणोश्चन्यासकरी जीवाजीवादि-
परमार्थसमजे देसे तेहनीजशकीर्तिवधे केमके स्याद्वादपरिहानेज जेनने तर्कवादनु-
यश उ अने जेनजावपण तेप्राणीनोज लेसेजाणवो केमके निश्चेनयथी सम्पत्त स्या-
द्वाद परिहानजठे उक्तवसमतो चरणकरणपदाणा ससमयपरसमयमुक्तवावारा ॥
चरणकरणससार नठयसुखनयाणत्ति ॥ १ ॥ एवोयीढाखमा जेदाज्ञेदेखाव्यो अने
ससज्जगीनु स्यापनकसु ॥ १४ ॥

॥ ढाक पाचमी ॥

॥ आदिजिणंदमयाकरो ॥ ए देशी ॥

एकव्यवरयव्यरूपठे ॥ देर्योनलेप्रमाणेरे ॥ मुख्यव्रतिउपचारथी ॥

नयजादिपणजाणेरे ॥ २ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखिये ॥ ए आकणी

शर्य ॥ द्येनयप्रमाण त्रिवेककरेरे एकथर्य जे घटपटादिक जीपश्चजीवादिक ते
प्रगम्पणे० ऊऱ्यगुणपर्यायम्पते केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेऽद्वय अनेघटादिरूपं
सजातीपद्वय पर्यायम्पतेरमात्मकपणेणुण यमजीवादिकमा जाणवो एहवेप्रमाणं स्या
द्वादवानेदेख्यु जेमाटे प्रमाणेससज्जगात्मके प्रयरूपपणो मुरयरीतेजाणियें केमके न
पयादीजे एकाशादीतेपण मुख्यगृह्णि अनेउपचारे एकथर्यनेविषे प्रयरूपपणोजाणे
पयभि नपशादिने एकाशयने शक्तिएकज अर्थकहियें तोपणक्षक्षणारूप उपचारे वी
जाथपंपणजाणे पणएकदावृत्तिद्वयनद्वय पणणततनयी जेमगगाया मत्स्यघोषो इत्या
दिग्यस्त्रे एमवेशूनियामानीजे इद्यापणमुख्य अमुख्यपणे अनतशमात्मिक वस्तुजाणाम
दाने प्रयोज्ञो एकनयशब्दनी नेशूनियामानना पिरोपनयी अथगानयात्मक शाव्वं क्रमि
वदामय छयेऽप्याथर्य जाणाविये अथगाणक्षोधशब्दे एकरोधययें एमथनेकजगा
जाणउडा परीने इनदृष्टीये जगननानाम देखीयें एथर्यकद्यो तेहि जस्पटपणे जणाम
वारोद्यागसीगायाइद्वे ॥ २ ॥

मुख्यव्रतिउपचारयो ॥ तामथनेदवयगाणेरे ॥ ज्ञेद

परम्पराहनो ॥ नेउपचारेजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ ७ ॥

शर्य ॥ मुख्यवृनिदें० शक्तिउपचार्य केढेतो जे ऊऱ्यार्थनयते तामके० तेनेणूप्ते
ऊऱ्यगुणपर्यायने अनेदव्यव्याणेते केमके गुणपर्याय अनिश्च परो मृदुऊऱ्यादिक तेने
प्रियेदव्यादिसदनी शक्तिउपचार्य उपचार्यनो परम्पराहे० मादोमाहेनेदवे तेउपचारेके० सक्षणे
उपचार्यमवरे नशावियनद्वद्वार प्रयोनने अनुमतीये निद्राउदाणाप्रगृहि ऊरपटनयी

इच्छगुणपर्यायिनो रास वालाबोध सहित.

मुख्यदत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथन्नेदेरे ॥ उपचारे
अनुभववदें ॥ मानेतेहच्छन्नेदेरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यदत्तिथकरीने सर्वज्ञनागुणपर्यायन्नेदेवेखवे केमके प्र-
यनेतेमुद्दादिपदनोऽच्यथर्थ अनेरूपादिपदनोगुणजघटादिकपदनो कंबुधीवादिपर्याय
ज तथाजपचारे लक्षणायेकरी अनुचन्नेवेकरी ते अनेदेमाने जेमघटादिमुद्भव्यादि-
अनिन्नजरे एप्रतीतें घटादिपदनी मृद्दादिकज्ञनेविषये लक्षणामानिये एपरमार्थ रे.

दोयधर्मनयजेयहे ॥ मुख्यच्छमुख्यप्रकारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

कटिपयें ॥ तासब्रतिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेदश्चन्नेदेवप्रमुख वहुधर्मते इच्छार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेयहे जहास्य-
प्रमाणेधारे मुख्यच्छमुख्यप्रकारे साक्षात् तसंकेते तेश्चन्नसारे तासकें
तेनयनीदृष्टि अनेतेनयनो उपचारकविषये द्वयांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्र-
वहुरूपर्थर्थनेविषये तेमादेप्रवाहेशकि तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो ते व्यव-
हित संकेतरे तेमाटे उपचाररे तेमज इच्छार्थिकनयनो साक्षात् तसंकेतते अनेदेवे अ-
नेशकिनानेदेव व्यवहितसंकेतरे तेशीउपचाररे एमपर्यायार्थिकनयनापण शक्तिशात्-
पचार तेजेदश्चन्नेदेव विषेजोडवा ॥ ५ ॥

निन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानभासेरे ॥ तोस्ततंत्र
भावेवहे ॥ मिथ्यादिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ कोइकहेरेजे एकनयते एकजविषयने ग्रहे पणवीजानयनो विषयवहेनहीते
हनेदूषवेरे जोनयझानमां निन्नविषयकें नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाकें अमुख्य-
पणेपण नजासे तो स्वतंत्रजावें सर्वयानयांतर विमुख्यपणे मिथ्यादिपासेरहे एटखे

र्नययाय पण सुनय याय नही एम जाएबुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावद्यके ॥ जेदश्चन्नेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

सविसंभवे ॥ जेदश्चन्नेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एथर्थविशेषावद्यके तथासंमतिविश्वमांरे एमधारो यत. दोहेविषणहि-
सरमूखपणतहविमित्तच ॥ जंसविसयहाप नणेष्वाणुपनिरक्षके ३ स्वार्थग्राही-
गाप्रतिदेवीसुनयद्वितिसुनयद्वाप तथाप्रतिदेवीरीडर्नयद्वितिडुनयस-
एम नयविचारयी जेदश्चन्नेद आप व्यवहारसंजवे तथानयसंकेतविशेषावी-
द्विचिविशेषपूर्व उपचारपण संजवे तेमादेजेदश्चन्नेद तेमुख्यपणे प्रत्येकनयविषय

मुरयामुरयपणे उन्नयनयविपयउपचारते मुरयृज्जितीपरें नयपरिकर पण विययनही
एसमोमार्गते श्रेतावरप्रमाणे शास्त्रसिद्धजाणवो ॥ ६ ॥

वामिमारगएसमो ॥ उपनयमुख्यजेकल्पेरे ॥ तेहप्रपञ्च
पणजाणवा ॥ कहियेतेजेमजटपेरे ॥ ग्यान० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एसमोमार्गवामिमार्गते जेदिगवर धात्र उपचारादिक ग्रहवानेकाजे उपनय
प्रमुखकल्पेरे तेप्रपञ्च शिष्यवुद्धी धधन मात्र ठेपण ते समानतत्र सिद्धतरे माटे जाण
वानेकाजे जेमते दिगवरीयो जह्येकें स्वप्रक्रियायेंयोक्तेरे तेमजकहियेठेये ॥ ७ ॥

नवनयउपनयतीनठे ॥ तर्कशास्त्रअनुसारोरे ॥ अध्यातम
वाचेवली ॥ निश्चयनेव्यवहारोरे ॥ ग्यान० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेदिगवरीडनेमते तर्कशास्त्रने अनुसारे नवनय अने व्रणउपनयठे तथा
बद्धी अध्यातमवाचेकें शैलीये॑ २ निश्चयनय ४ व्यवहारनय एवेजनयकहाठे ॥ ८ ॥

पद्मेलोङ्गव्यारथनयो ॥ दशप्रकारतसजाणोरे ॥ शुद्धक
मोपाधीयी ॥ उग्न्यार्थिकधुरेआणोरे ॥ ग्यान० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकउग्न्यार्थनय वीजोपर्यायार्थनय वीजोनेगमनय चोथोसग्रहनय पाचमो
व्यवहारनय रठोङ्गमुख्यनय सातमो शब्दनय आरमोसमजिरुद्धनय नवमोएवज्ञूत
नयएनवनयनो नियमठे तेमा पद्मेलोङ्गव्यार्थकनय तेना दशप्रकारजाणवा तेमा धुरेंकैं
पद्मेलो अकमोपाधीयी शुद्धउग्न्यार्थिकनय मनमाहेआणोएटलेकमोपाधीयीरहित
शुद्धउग्न्यार्थिक एप्रथमनेदजाणवो ॥ ९ ॥

जिमससारीप्राणीया ॥ सिद्धसमोवम्भाणीयेरे ॥ सहेजनाव
आगाखकरी ॥ नवपर्यायनगणीयेरे ॥ ग्यान० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धउग्न्यार्थिकनो निपयदेयाभेरे जेम सर्वससारीप्राणीमात्रने सिद्धस
मानगणिये॑ एटखे सहेजनावजे शुद्धात्मस्वरूप तेआगाखकरिये॑ अने जवपर्यायजेसता
रनाजाव तेगणियेनही॑ तेनीविवक्षानकरिये॑ एथनिप्राय उग्न्यसमहेकहोरे यत मगा
एगुणराणेहि॒ चउदसद्विद्वतितदथसुद्धणया विणेयाससारी सवे सुद्धाहुसुद्धणया ॥

उत्पादव्ययगोणता ॥ सत्तामुख्यजवीजेरे ॥ जेदशुद्ध
उग्न्यारयें ॥ उग्न्यनित्यजिमतीजेरे ॥ ग्यान० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ उत्पादव्ययनी गोणताये॑ अनेसत्तानी मुख्यताये॑ वीजोनेद्द शुद्धउग्न्यार्थनो जा
पवो उत्पादव्ययगोणत्वेन सत्ताप्राइक शुद्धउग्न्यार्थिक एवीजाजेदनेमते उग्न्य ते नित्यप

ऐकेवी एट्टेने नित्यते त्रिकालेश्वरविचलितरूप रात्ताने मुख्यपणेकेतां एजावसंजवे केमके जो पर्याय प्रतिक्षणे परिणामीरे तोपणजीवपुक्तादिक ऊद्यसत्ता कदापिचलतीनश्ची.

त्रीजोगुद्धूद्यव्यारथो ॥ ज्ञेदकृष्णनाहिनोरे ॥ जिमनिज
गुणपर्यावर्थी ॥ कहीयेउद्यव्यञ्जित्तोरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ इवेवीजोज्ञेद तेजेदकृष्णनायेहीन शुद्धूद्यव्यार्थिकरे ज्ञेदकृष्णनारहित शुद्धू
ऊद्यव्यार्थिक इतितृतीयज्ञेद जेमएकजीव अथवा पुक्तादिकृद्यने निजकेठ पोतानामु-
णपर्यावर्थी अञ्जित्रकहियें केमके जोज्ञेदपलुंते तोपणतेनी अर्पणानकरियें अनेअनेदनी
अर्पणाकरियें तोअञ्जित्तरेएत्रीजोज्ञेद शुद्धूद्यव्यार्थिकथयो ॥ १७ ॥

अशुद्धकमोंपाधिवी ॥ चोयोएहनोज्ञेदोरे ॥ कर्मज्ञावमय
आत्मा ॥ जिमकोधादिकवेदोरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ इवेदूद्यव्यार्थिकनो चोयोज्ञेद ते कमोंपाधिवीरे माटेअशुद्धकहेबुं कमोंपा-
धिसापेक्षोअशुद्धूद्यव्यार्थिक इतितृतीयज्ञेद जेमकोधादिक कर्मज्ञावमय आत्मावेदोरो
जाणोरो के जेवारेजेदूद्य जेज्ञावेपरिणमे तेवारे तेदून्य तन्मयकरीजाणबुं जेम लोह
अग्निपणे परिणम्युं तेकालेसोह अग्निरूप जाणबुं एमकोध मोहनीआदि कमोंदयनेअ-
वसरे क्रोधादिज्ञाव परिणतश्चात्मा क्रोधादिकरूप जाणवो अतएव आत्मानाज्ञेदआ-
र सिद्धांतमां प्रसिद्धरे ॥ १८ ॥

तेहत्रगुद्धवलीपंचमो ॥ व्ययउत्पत्तिसापेखोरे ॥ उत्पाद
व्ययद्वयएके ॥ समयेउद्यजिमपेखोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेवलीअशुद्धूद्यव्यार्थिकनामे पांचमोज्ञेद तेव्ययउत्पत्तिसापेक्षजाणवो. उ-
त्पादव्ययसापेक्ष सत्तामाहकअशुद्धूद्यव्यार्थिकपंचम जेमएकसमये दूद्यने उत्पाद-
व्ययभुवरूपकहियें जेकनकायुत्पादसमय तेहिज केयूरादि विनाशसमय अने कन-
कसत्तातो अवर्जनीयजटे एवंसति त्रैवक्षणग्राहकत्वेनेदं प्रमाणेवचनमेवस्यान्तरु नय-
वचनमितिचेन्न मुख्यगोणजावेनेवानेननवेन त्रैवक्षणग्रहणान्मुख्यनयस्वस्वार्थयहणे
नयानां सततंगीमुखेनेवव्यापारात् ॥ १९ ॥

ग्रहतोज्ञेदनीकृष्णना ॥ रघोतेहत्रगुद्धोरे ॥ जिमआत्मिक
वोलीयें ॥ झानादिकगुणगुद्धोरे ॥ ग्यान० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ ज्ञेदनीकृष्णनाग्रहतो रघोज्ञेदते अशुद्धूद्यव्यार्थिक जाणवो जेमझानादिक
२०

शुद्धगुण आत्मानावोक्तीयै इहांपष्ठीविजक्तीजिदकहेरे जिहो पात्रमितिवृथनेगुणगुणीने
जेदतोनथी पण जेदकद्वपनासापेक्ष अशुद्धजब्यार्थिकपष ॥ १५ ॥

अन्वयजब्यार्थिककहुं ॥ सप्तमएकस्वज्ञावोरे ॥ जब्यएक
जिमज्ञापियै ॥ गुणपर्यायस्वज्ञावोरे ॥ ग्यान० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ सातमोजेद अन्वयजब्यार्थिक कहोरे जे एकस्वज्ञाववोक्षे जेमएकजड्ब्य मु-
णपर्यायस्वज्ञावकहिये एटलेगुणपर्यायिनेविपे जब्यनो अन्वयरे जेम जब्यने जाणवाथी
जब्यार्थिदेशें तदनुगत सर्वगुणपर्याय जाणाकहियै जेमसामान्यप्रत्यासत्ति परवा-
दीनी सर्वव्यक्तिजाणी कहे तेमइहाजाणवु एअन्वयजब्यार्थिक सप्तम ॥ १६ ॥
स्वजब्यादिकग्राहको ॥ जेदआठमोज्ञाप्योरे ॥ स्वजब्यादि
कचारथी ॥ वर्तोअर्थजिमदारब्योरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ स्वजब्यादिकग्राहक नामेजब्यार्थिकनो आठमोजेदज्ञाप्यो जेम अर्थजे घ-
टादिकजब्यतेस्वजब्य स्वखेत्र स्वकाल स्वज्ञाव एचारथीरतोकहो स्वजब्ययी मृत्ति
कायें अनेस्वखेत्रथी तेपाटविपुरादिकें अनेस्वकालथी विवहितकालें तथास्वज्ञावयी
रक्ततादिकज्ञावें जे घटादिकनी सत्ताते प्रमाणरे सिद्धरे इतिस्वजब्यादिग्राहकजब्या-
र्थिक अष्टम एआठमोजेदययो ॥ १७ ॥

परजब्यादिकग्राहको ॥ नवमजेदतेमाहिरे ॥ परजब्या
दिकचारथी ॥ अर्थवर्तोकिमनाहिरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेजब्यार्थिकमा परजब्यादिक ग्राहक नवमोजेदकहोरे जेम अर्थजेघटादिक
तेपरजब्यादिकचारथी वर्तोनथी परजब्यजे ततुप्रमुख तेथीघटथसत्तकहिये अनेपरक्ष-
क्रजे काशीप्रमुख तथापरकासजे अतीत अनागतकास परज्ञावयी कालादिज्ञाये विव
हितपिपये अठतापर्यायितेथी परजब्यादिग्राहक जब्यार्थिकनवम ॥ १८ ॥

परमज्ञावग्राहककहो ॥ दशमोजशञ्चनुसारोरे ॥ ग्यान
सरूपीआत्मा ॥ ग्यानसर्वमासारोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ दशमो जब्यार्थिकनो परमज्ञावग्राहकनामे जेदकहेरे जेनयने अनुसारे
आत्मानेज्ञानस्वरूपकहियेठेये अने दर्शनचारित्र वीर्य केशादिक आत्माना अन-
तागुणरे पणसर्वमा झानते साररत्नाएरे केमके अन्यजब्ययी आत्मानेजेदते झान
शुणेदेग्राहेरे तेमाटे शीघ्रोपस्थिकपणे आत्मानुझानते परमज्ञावरे एमरीजाजब्यना
पण परमज्ञाप असाधारणगुणज्ञेना परमनापग्राहकजब्यार्थिकदशम ॥ १९ ॥

॥ ढाल रची ॥

॥ एकवारदरिशनश्चापगुरुजी ॥ ए देवी ॥

पठनेदनवपर्यायच्छ्रयो ॥ पहेलोअनादिकनित्यरे ॥ पुज
खतणोपर्यायकहियें ॥ जिममेरुगिरिमुखनित्यरे ॥ १ ॥
वहुभांतफेलीज्ञनर्थादी ॥ साच्छुंमनधाररे ॥ खोटसुंजे
कांझाणे ॥ तिहांचित्तनिवाररे ॥ वहु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इवेपर्यायार्थनय ठनेदेजाणवो तेमां पहेलोअनादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिक कहियें जेमपुज्जलनोपर्याय मेरुप्रसुख प्रवाहशी अनादिश्वने नित्यरे असंख्यातकादें अन्योन्यपुज्जलसंकरे पण संस्यानतेहिज्ञने एमज रबप्रनादिक पृथ्वीपर्यायपण जाणवा॥१॥ एमवणाग्रकारे जेननी शेलीफेलीरे विगंवरमतेपण जेनदर्शननाम धरावी एवीनयनी अनेक शेलीप्रवर्चावीरे तेमांविचारतां जेसाचुंहोयते मनमांनिरधारी राखबुं अनेति-हंजेकांश खोटुंजाणे तेचित्तमांनधरबुं पणगच्छफेरमात्रे द्वेषकरवोनही अर्थजप्रमाणरे.

सादिनित्यपर्यायच्छ्रयो ॥ जिमसिद्धनोपजाऊरे ॥ ग्रहे
शुद्धचनित्यसत्ता ॥ गोणवयउप्पाऊरे ॥ वहु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सादिनित्य शुद्धपर्यायार्थनय तेवीजोनेदजाणवो जेमसिद्धना पर्यायनी आदिरे केमके सर्वेकर्मद्वयथया तेवारेसिफपर्यायउपनो तेशीआदिश्वयी पणतेनो अंतन-शी केमकेपठी सिद्धनावसदाकादेंरे एरीतेजपर्यायसरिखो सिद्धद्वयपर्यायजाववो इवेसचाहुणत्वे उत्पादव्ययग्राहक अनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक त्रीजोनेदकहियेठेयें ॥३॥

जेमसमयमेंपर्यायनाशी ॥ रतिगद्वतनित्यअशुद्धे ॥
एकसमयेयथापर्याय ॥ तृतीयरूपेषुर्द्वे ॥ वहु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमएकसमयमां पर्यायविनाशीरे एमकहियें इहां नाशीकहेतां एनोप्रति-पक्षी उत्पादतोआवयो पणशुवताने गोणकरीदेवाढीनही चोयो रतिकें सचानेप्रहत्तो तेनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक कहियें जेमएकसमयमां पर्यायते उत्पादव्ययशुवद्वाण तृतीयरूपेषुर्द्वे एहुंवोलीवें पणपर्यायनुं शुद्धरूपतो तेनेकहियेंजे सचानदेखाडवी पणश्वांतो मूखसचादेखानी तेमाटेअशुद्धजेदवयो ॥ ४ ॥

पर्यायअरयोनित्यशुद्धे ॥ रहितकर्मोपाधिरे ॥ जेमसिद्धना
पर्यायसरिखा ॥ भवजंतुनानिरुपाधिरे ॥ वहु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकमोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यार्थिक पांचमोनेद कहेरे ते जेमज्ज
जतुकें ससारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहिये जोपणकमोपाधिजाव ठान
तोपणतेनी विवक्षानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यार्थीज विवक्षानरिये

पर्यायअरथअनित्यअगुद्धो ॥ सापेहकमोपाधिरे ॥ संसा
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणहव्याधिरे ॥ वहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकमोपाधि सापेह अनित्य अगुद्ध पर्यार्थिक ठहोनेदकहेरे जेम
ससारवासीजीभने जन्ममरणनीव्याधिरे एमकहिये इहांजन्मादिक जीवनापर्याय ने
कर्मसयोगेरे तेअनित्य अगुद्धरे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थे मोक्षां
जीवप्रवृत्तेरे एरीतेहव्यार्थिक तथापर्यार्थिक नयकहा ॥ ६ ॥

वहुमानग्राहिकहोनेगम ॥ नेदत्सठेतीनरे ॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेलीनरे ॥ वहु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नेगमनयकहेरे सामान्यपिशेषज्ञानरूप वहुमानकें घणाघमाण तेनो
प्रादी नेगमनयकहिये नेकेमानोमानोतीतिनिगम ककारलोपाङ्गेगमइतिव्युत्पत्ति तेनै
गमनयना ग्रणनेदरे तेमाग्रथमनेगमन्नूतार्थ वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्परठे ॥७॥

भूतनेगमकहोपदेखो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथा
स्वामीरीरजिनवर ॥ खदिउशिवपुरराजरे ॥ वहु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमाग्रथमनेदनु उदाहरण देसामेते जेमआज दीवालीना दिग्सनेदि
श्रीमहार्थमामी शिपुरनुराज्यपास्या इहाअर्थतीत दिवालीनादिननेपिये वर्त्तमां
दिवासीना दीरसनो आरोपकरियेरेयेपसर्वमान दिवसनेपिये भूतदिग्सनो आरोप
करिये देवागमनादिक महोटास्त्वयाण ताजनत्य प्रतीतप्रयोजननेअर्थे जेमगगायां
घोप इहागगानातटनेपिये गगानोआरोपकरिये झोत्यपागमत्यादि प्रत्यायन प्रयोज-
ननगरी तोएषउमानवे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय जक्किनेमास्तेप्रतीतिकमानिये
एथसकारनाजाए पमितहोय तेभिचारजो ॥ ८ ॥

नूनमतस्तदेभाविनेगम ॥ जाविजेमजिनसि दरे ॥ सि ८
वतरेपर्तमाने ॥ काङ्गिद्यमि दरे ॥ वहु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जावीनु बृनवडुपचारकरे एवीजोनेगमनानेद जेम जिननेसिद्ध कहिये
वर्ये केमझे केवर्तीनेमिद्धपणो अमद्यतारीते माँट बाइकसिद्ध थने काङ्गकथसिद्धने
बन्मानइहे तेवर्तमान नेगमकहिये ॥ ९ ॥

जापीयेंजिमनक्तपचियें ॥ वर्तमानारोपरे ॥ करेकिरिया
भूतलेश ॥ भूतवचनविदोपरे ॥ वहु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम चक्केण रसोद्धरांधिरे एमकहियें इहाँ रसोइना केटवाकअवयव
सिद्धथयारे अनेकेटवाक साध्यमानरे पणपूर्वापरन्नूतावयव कियासंतान एकबुद्धीयें
आरोपिये तेने वर्तमानकहियेंरेये एथारोप सामयी महिमाये कोइश्वरयवनी भूत
कियाखेह पचतिएरेकाए अपाकीत एप्रयोगनथीकरता जेनेयायिकाडिक तेएमकहेरे
जे चरमक्रियाघ्वंस अनेश्वतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पृष्ठकं किंचित्पृष्ठते एवुं कहे-
रेतो एप्रयोगनयवोजोइये तेमाटे एवर्तमानारोप नेगमनयनोजेदज जखोजाएवो॥१०॥

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधउघविशेषरे ॥ उव्यसवि
अविरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेषरे ॥ वहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंयहेते संयहनयकहियें तेना एकउघ बीजोविशेष ए वेजेदरे तेमां एक
उघकेण सामान्यसंयह अनेबीजो विशेषसंयह एवेजेदजाएवा झ्याणिसर्वाणिअवि-
रोधीनि एप्रथमनेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेऽविरोधिनः एवीजानेदनुं उदाहरण
सर्वज्ञव्यनेएकपणे बोलावबुंते सामान्यसंयह अने तेमांबी एकजीवझ्यने जृदो
करी सर्वजीवने एकजीवझ्य कहिवोलावबुं तेविशेषसंयह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविषयनेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ उव्य
जीवाजीवज्ञापे ॥ जीवन्नवियासिद्धरे ॥ वहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंयहनयनो विषय तेनाजेदनोदेखामनार तेव्यवहारनयकहियें तेना
तेमज संयहनयनीपरे द्विनिधकेण वेजेदरे १ सामान्यसंयहनेदकव्यवहार २ विशेष-
संग्रहनेदकव्यवहार एरीते वेजेदजाएवा झ्यजीवाजीवो एसामान्यमंयहनेदकव्यवहार
अने जीवा संसारिणः सिद्धाश्र एविशेषसंयहनेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविविदायें
सामान्य विशेषपाणुंजावबुं ॥ १२ ॥

वर्ततोऽजुमूलन्नापे ॥ अवनिजच्यनुकूलरे ॥ ऊणिकपर्याय
कहेमुषिम ॥ मनुप्यादिकस्थूलरे ॥ वहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ झजुसुव्यनयते वर्तमाने वर्तनो अर्थतापे पणअर्तीत अनागत अर्थने न माने
अनेवर्तमानेपण निजथरुकूलकेण पोनाना दामनो अर्थमाने पणपरकीयमाने नदी ने
झजुमूलनय वेजेदेकदेवो २ भूदद्वजुमूल ते झणिकपर्याय निउत्तराव्यय तेनेमाने
अनेबीजोस्थूल झजुमूलते मनुप्यादिपर्यायमाने एटदेमनुप्यतीर्यन्नाडिक न-

यग्नहे पणकाखत्रयवार्ति पर्यायमानेनही अनेजे व्यवहारनयरे तेत्रणेकालना पर्यायमाने तेमाटे स्थूलकृजुसूत्र तथाव्यवहारनयने सकरदोपनजाणगे ॥ १३ ॥

**शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिद्धमानेगव्दरे ॥ समनिरुद्ध
विजिन्नञ्चर्थक ॥ कहेजिन्नजगव्दरे ॥ वहु० ॥ १४ ॥**

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तिथी सिद्धयेकोशब्दमाने क्षिगवचनादिजेदे अर्थनोजेदमाने जेस तट तटी तट एत्रणक्षिगजेदे अर्थजेद तथा आप जख इहाँएकवचन वहुवचनजेदे अर्थजेदमाने अनेकृजुसूत्रनयने एशब्दनय एमकहेजे काखजेदे अर्थजेदतुमानेरे तोक्षिगादिजेदे जेदकानथीमानतो अने वहो समनिरुद्धनय एमकहेजे जिन्नशब्दते जिन्नार्थकजहोय माटे एनयते शब्दनयने एम कहेजे तुक्षिगादिजेदे अर्थजेदमानेरे तोशब्दजेदे अर्थजेदकेममानतोनथी तेमाटे घटशब्दार्थजिन्न अनेकृजनशब्दार्थजिन्न एमएमाने एवेशब्दनु एकार्थपणु तेशब्दादि-नयनी वासनाथकी प्रसिद्धरे ॥ १४ ॥

**क्रियापरिणतञ्चर्थमाने ॥ सर्वएवंज्ञूतरे ॥ नवेनयना
जेदएणीपरे ॥ अछावीसप्रज्ञूतरे ॥ वहु० ॥ १५ ॥**

अर्थ ॥ हवेएवज्ञूतनयते सर्वञ्चर्थक्रियाने परिणतक्रियावेकायें माने पणञ्चन्यदा मानेनही जेसठत्रचाभरादिके शोजे परपदामावेगा चाभरठक्षावे तेवारेज तेने राजा माने पण स्नानादिकवेकायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेनवेनयना अष्टाशीसजेद तेप्रज्ञूतकेऽ घणाथया १० ऊद्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगनना २ सवहिना २ व्यवहारना २ कृजुसूत्रना १ शब्दनो १ समनिरुद्धनो १ एवज्ञूतनो ॥ १५ ॥

**नवेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेंसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरथपरखी ॥ खहोजगविस्ताररे ॥ वहु० ॥ १६ ॥**

अर्थ ॥ एमनवेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगवरप्रक्रियायेंकहियेंरेयेएमा साचो श्रुतनोअर्थ पररीकरीने वहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढाव सातमी ॥

॥ चक्रउपनुसाररे ॥ एदेशी ॥

सम्भूतव्यवहार ॥ जेदप्रथमतिहा ॥ धर्मधर्मिनाजेदथीए ॥ १ ॥

शुभञ्चशुभञ्चिजेद ॥ शुभञ्चशुभना ॥ तेहञ्चरथनाजेदथीए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नयसमीपेतेउपनयकहियें तेमासम्भूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमजेदठे ते धर्म

अने धर्मिना ज्ञेददेखामवाथी होय ॥ १ ॥ तेहनावलीवेजेदरे एकशुद्ध वीजोश्चशुद्ध
तेमपिहेलो शुद्धधर्मधर्मिनाज्ञेदथी शुद्धसमूत व्यवहारथाय अनेवीजोश्चशुद्ध धर्मधर्मि-
नाज्ञेदथी श्रशुद्धसमूत व्यवहारथाय इहांसमूततो एटलाटेले एकङ्गव्यजंरे अने
चिन्नङ्गव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे ज्ञेददेखाकेते ॥ २ ॥

जेमजगकेवलज्ञान ॥ आत्मज्ञव्यनुं ॥ महाणादिकतेहनुंए ॥ ३ ॥

गुणपर्यायस्वज्ञाव ॥ कारकरतन्मनो ॥ अरथज्ञेदरेहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमां आत्मङ्गव्यनुं केवलज्ञान पष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसमूतव्य-
वहारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मङ्गव्यनागुणरे एमवोखावियें तेशुद्धसमूतव्य-
वहारथयो ॥ ३ ॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वज्ञाव स्वज्ञाववंतनोकारक अने तन्म-
यकेऽ कारकी तेहनोले एकङ्गव्यानुगत ज्ञेदबोखावियें तेसर्वेउपनयनो अर्थं जाणवो घट-
स्यरूपं घटस्वरक्ता घटस्यस्वज्ञावः मृदाघटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा ॥ ४ ॥

असमूतव्यवहार ॥ परपरिणतिज्ञायें ॥ उच्यादिकउपचारथीए ॥ ५ ॥

उच्युच्यउपचार ॥ पुञ्जखीवने ॥ जिमकहियेंजिमआगमेए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परङ्गव्यनी परिणति ज्ञेयेके जेङ्गव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते
असमूत व्यवहारजाणवो ॥ ५ ॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो झव्येङ्गव्यनोउपचार कहेरे
जेमजिनश्रागममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुञ्जखसायें मिल्योरे माटे जीवनेपुञ्जख
कहियें एजीवङ्गव्यें पुञ्जखङ्गव्यनो उपचार तेङ्गव्येङ्गव्योपचार पहेलोनेवययो ॥ ६ ॥

कालीदेस्याज्ञाव ॥ उद्यामगुणेज्ञली ॥ गुणउपचारगुणेकदोए ॥ ७ ॥

पर्यायेंपर्याय ॥ उपचारेवली ॥ द्वयगयखंधयथाकह्याए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञाववेङ्गव्यतेथात्मानो अरूपीगुणरे तेनेजे कुम्भनीखादिक कालीदेङ्गव्या
कहियेऱेये तेकुम्भादि पुञ्जखङ्गव्यनागुणनो उपचार करियेऱेये एथात्मगुणे पुञ्जखगुणनो
उपचारजाणवो एरीते गुणेगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते द्वयकेऽ
घोका गयकेऽ हाथी रवप्रमुन्न आत्मङ्गव्यना असमानजातीय झव्यपर्याय तेने खंध
कहियेऱेये तेश्चात्मपर्यायिरपरे पुञ्जखपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियेऱेये एप-
र्यायेपर्यायोपचारनो त्रीजोनेवययो ॥ ८ ॥

उच्येगुणउपचार ॥ वलीपर्यायनो ॥ गोरदेहहुंखोखनांए ॥ ९ ॥ गुणो

उच्यउपचार ॥ पर्यायउच्यनुं ॥ गोरदेहजिमआत्माए ॥ १० ॥

अर्थ ॥ झव्येगुणोपचारः चोथोनेवदहेवे ते हुंगोरवर्णदुं एमवोखनादुंतेश्रान्माङ्गव्य

अनेजे गौरतेषु ज्ञानो उज्ज्वलतापणो उपचलुं एचोओनेद इवेपाचमु ऊर्येपर्यायोप
चार ते जेमहुदैहृष्टमग्रोदे तेमा हुतेआत्मज्ज्वय अनेदैहतो पुज्जलज्ज्वयनो सामान्य
जातीय ऊर्येपर्यायउपचार्यु एपाचमोनेदथयो ॥ ५ ॥ गुणेऊर्योपचार जेम एगोरदेया-
यठे तेआत्मा एमगोरपणो उहेसीने आत्मविधानकरियें एटदेह गौरतारूप पुज्जलगुण
उपरें आत्मज्ज्वयनो उपचार तेगुणेऊर्योपचार ठठोनेदथयो तथापर्यायें ऊर्योपचार
ते जेम देहनेआत्माकहिये श्वादेहरूप पुज्जलपर्यायनेप्रिये आत्मज्ज्वयनो उपचार
कस्यो एसात्मोनेदथयो ॥ १० ॥

गुणपञ्जाबउपचार ॥ गुणनोपञ्जावे ॥ जिममतितनुतनुमतिगुणोए ॥ ११ ॥

असङ्गूतव्यवहार ॥ एमउपचारथी ॥ एहत्रिविधइवेसाज्जलोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचार तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यठे तेमाटे शरीरजकहियें
इहामतिज्ञानरूप आत्मगुणनेप्रिये शरीररूप पुज्जलपर्यायिनो उपचारकस्यो एआरमो
नेदथयो द्ये पर्यायेगुणोपचार ते पूर्वश्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआनीरीते के शरी
रते मतिज्ञानरूप गुणजठे तोइहा शरीररूप पर्यायनेप्रिये मतिज्ञानरूप गुणनोउप
चारकरायठे एनयमोनेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असङ्गूतव्यवहार नमप्रकारनोकस्यो
द्येपना घणनेदरेतेकहियेंरियें तेसाज्ञासो ॥ १२ ॥

असङ्गूतनिजजाति ॥ जिमपरमाणुर्जे ॥ वहुप्रदेशीज्ञापियेंए ॥ १३ ॥

तेहविजातिजाणो ॥ जिममूरतमति ॥ मूरतज्ज्वयेउपनीए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकस्वज्ञाति असङ्गूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते वहुप्रदेशीयगानी जातिठे
गाटे धहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मर्तिकेण मर्तिज्ञानने मूर्तिपत कहिये मूर्तिजे
प्रियासांकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहामतिज्ञानते आत्मगुण तेनेप्रिये मूर्तित
ते पुज्जलगुण तेनेउपचलु तेनेप्रिजातीय असङ्गूत व्यवहारजाणो एगीजोनेद ॥ १४ ॥

असङ्गूतदोउज्ञात ॥ जीवथजीवने ॥ विपयग्यानजिमज्ञापियेंए ॥ १५ ॥

उपचरितामङ्गूत ॥ कस्तियेउपचारो ॥ जेहएकउपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ दोउनानिकेण वेजाति तेस्वज्ञाति अने प्रिजानिय असङ्गूत न्यगदारनो
सपथ कहियें जेमज्ञीज्ञाजीत विपयज्ञानकहियें इहाजीरतेज्ञाननी स्वज्ञातिठे अनेथ-
जीतने इननोप्रिजातिठे एनेनोप्रियप्रिययीजार नामे उपचरित सपथठे तेमज्ञाति
प्रिजानिनामे असङ्गूतकहियें भजातीयाग्रेमिनायसङ्गूततिचेत् प्रिजातीयाग्रेप्रियना
सपथस्थोपचरितम्यज्ञानाज्ञादितिएहाण एत्रणनेदकहाण ॥ १५ ॥ जेणकउपचारथी
यीनोटरगारकस्यो तेउपचरित असङ्गूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

द्वयगुणपर्यायनो रास वाकाचोध सहित्। ३४५

तेहस्वजातिजाणोरे ॥ हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकठेमाहराए ॥ १७ ॥ विजा
तिथीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुक्त ॥ गढेशादिकउभयथीए ॥ १८ ॥
उपनयनाप्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिक्षाजशलहोए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असङ्घूत व्यवहारजाणो संवंधीकव्यनं जेहुंपुत्रादिक
इहांहुंमारा एवुं जेपुत्रादिकनेविपेकहुं तेपुत्रादिकने उपचर्यारे ते आत्मानो जेदानें-
दसंवंध उपचरियेठेये जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपे स्वजातिरे पणकटिपतरे न-
हीतो स्वशरीरजन्य मतकुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥ १७ ॥ तथाविजाति उपचरि-
त असङ्घूत व्यवहारते कहियेजे आवत्त्रादिक भाहरारे इहांवस्त्रादिक पुज्ञवनापर्यायें-
नामादिनेदें कटिपतरे नहीतो वटकलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेमनकहियें तेवि-
जातिमां स्वसंवंध उपचरियेठेये तेमज माहरागढेश प्रमुखरे एमकहेतांथकां स्वजा-
ति विजात्युपचरित असङ्घूत व्यवहार कहियें केमके गढेशादिकतो जीवअजीवउ-
चय समुदायरूपरे ॥ १८ ॥ एरीतेउपनयकह्या हवे आगदीडालमां अध्यात्मनयकहि-
ने एमांयुणदोप परिक्षानो यशपामो ॥ १९ ॥

॥ दाव आठमी ॥

॥ जायातुजविणघडीरितमास ॥ एदेशी ॥

दोयमूलनयनापीयरे ॥ निश्चयनेव्यवहार ॥ निश्चयद्विविकहुरे ॥

गु-ध्यात्म-ध्यकाररे ॥ प्राणीपरखोआगमनाव ॥ २ ॥ एच्छांकणी

अर्थ ॥ हृषेप्रथम अध्यात्मनापायेतो मूखदेजनयकहारे एकनिश्चयनय अनेवीजो
व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनावली वेनेडरे एकगुरुनिश्चयनय अनेवीजो अशुद्ध-
निश्चयनय हेप्राणी ! आगमना जावपरखीनेगहो ॥ ३ ॥

जीवकेवत्तादिकव्यारे ॥ गु-ध्यविषयनिरुपाधि ॥ मझनाए

दिक्यात्मारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपरे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शुद्ध
गुणविषयदेह आत्माने अनेडेखाकिये तेगुरुनिश्चय नयकहिये अने जे मतिज्ञाना-
दिक अशुद्धगुणने आत्माकहिये तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकरे एटखे जेनिश्चयनयते
अनेडेखाने अनेलेव्यवहारनयते जेडेखाने ॥ ५ ॥

दोइनेदव्यवहारनाजी ॥ सङ्घूतासङ्घूत ॥ एकविषय

सङ्घूतरेजी ॥ परविषयासङ्घूतरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वर्षी व्यपहारनयना वेनेदरे एकसमूतव्यवहार वीजोश्चसमूतव्यवहार एक पिपयके० एकद्वयाश्रितते समूतव्यवहार अनेजे परविपयते श्चसमूतव्यवहार ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितयीजी ॥ पदेखोदोयप्रकार ॥ सोपाधिक
गुणगुणीनेदरे ॥ जेअनिमित्तउपचारे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमा पदेखोजे समूतव्यवहारते वेप्रकारेंरे एकउपचरित समूतव्यवहार वीजो अनुपचरित समूतव्यवहार ते जे सोपाधिकगुणगुणीनो जेदैरेखारे जेम जीव-स्यमतिज्ञान एउपाधि तेहिजइहा उपचरित प्रथमजेदरे ॥ ४ ॥

निरुपाधिकगुणगुणीनेदरे ॥ अनुपचरितसमूत ॥ केवल
डानाटिकगुणारे ॥ आतमनाअमूतरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथानिरुपाधिक गुणगुणीनेदे वीजोनेदजाणगो यथाजीवस्यकेत्सज्ञानं इ-
दाउपाधिरहितपणो तेहिज निरुपचरितपणु जाणछु ॥ ५ ॥

असमूतव्यवहारनाजी ॥ एमजनेदरेदोय ॥ प्रथमअस
खेपितयोगंजी ॥ देवदत्तधनजोयरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वर्षीएजरीत असमूतव्यवहारनापण वेनेदरे एकउपचरित असमूत व्य-
वहार वीजोअनुपचरित असमूतव्यवहार तेमाप्रथमजेदते असम्भेपित योगे कटिप-
त संययेदोय जेम देवदत्तनुधन इदाधनते देवदत्तनेसपथ स्वसामीजावरूप कषिपतरे
तेमाटेउपचारथयो तथादेवदत्त अनेधनतेजाते वेहुआकद्वयनर्थी तेमाटे असमूत एम
जारनाकरथी तेहिपचरित असमूत व्यपहार जाणगो ॥ ६ ॥

सखेपितयोगंजीजोरे ॥ जेमआतमनुदेव ॥ नयउपनय
नयचम्भमारे ॥ कह्यामूखनयएदरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वीजोनेद मृत्येपितयोगे वर्ममरयेजजाणगो ते जेमथात्मानुशरीर आ
त्मानयादेवनामपथ तेमनसपंथनीयं कस्तिननर्थी पिपरीननापनाये निरपत्तनहीं जा
वजीवदे तेमाटे एअनुपचरित अनेनिश्चिपियमाटे असमूतनजाणगो परीतनयतथा उ
पनप एपेमूखनयमहिन तेदिगर देवमेनहृत नयचम्भमा कह्याते ॥ ७ ॥

पिपयनेदपयपिनहीं ॥ इदाग्रमारेयूख ॥ उखटी

पग्जापादम्भीं ॥ तोपणदाजेमूखरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इदादयपिश्चमारे ग्रेनामरने शूभ्रकं० महोटो पिपयनेदकं० अर्थनोफेर
नमी तोरामूखकं० प्रथमयी उखटीकं० पिपरीनपरिनापानी दोक्षीरीतेदाजेते रेद

करेरे यद्यपि न ज्ञवति ह्वानिः परकीयां चरतिरासज्जेष्टाकां ॥ असमंजसं तु दृष्टा तथा-
पि केरिखिवते चेतः इतिवचनात् ॥ ८ ॥

तत्वार्थेनयसातवेरे ॥ आदेशांतरपंच ॥ अंतरभा-
वितउद्धरीरे ॥ नवनोक्तिस्योप्रपंचरे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवेतेबोटीकनी उखटीपरिज्ञापारे ते देखानीचेहिये तत्वार्थसूत्रे सातनय
कहारे अने आदेशांतरके० मतांतर तेथीपांचनयकहारे सप्तमूलनयाः पंचेत्यादेशांतरं
एसूत्रे एट्टे १ शब्द २ समज्जिरुड ३ एवंज्ञूत एव्रणनयने एकशब्द एवेनामें संग्र-
हीये तो पहेलानेगमादिक चारनयसाथे मेलवतां पांचनयकहिये तेवदीएकेकना सो-
सोचेदहोय तिहांपण ७०० तथा ५०० ज्ञेत्रयाय एरीते वेमतकहारे तयोक्तमावश्यके
इक्किक्कोयसयविहो सत्तण्यसयाहृवंतिएसेव ॥ अणोविहुआएसो पंचेव सयाननयाणंतु ॥ १ ॥
एवीश्वानीरीत मूकीने अंतर्जावित सातनयमां ज्ञेत्र्याजे ऊव्यार्थिक पर्यायार्थिक
तेउद्धरी अखगाकाटीने नवनयकह्या एस्योप्रपंच हेतुरमनुप्योतमे विचारीजुरे ॥ १० ॥

पञ्जायव्यऊव्यारस्योरे ॥ जोतुमेअलगादी० ॥ अप्पियण
प्पियनेद्दीरे ॥ केमझ्यारनझ्यरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एमकरतां पर्यायार्थ तयाऊव्यार्थ एवेनयजोतुमे अखगादीरा अनेनवनय
कहा तोअर्पित तथाअर्नर्पित एवेनयअखगाकरीने इग्यारनयकेमकहानहीं ॥ ११ ॥

संग्रहव्यवहारादिकेरे ॥ जोतुमेजेदोतेह ॥ आदिअंतनय
योकमांजी ॥ केमनवीजेदोएहरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेजो एमकहेसोजे अर्पितानर्पितनिष्ठेइत्यादि एट्टे तत्वार्थसूत्रादिकमां
जे अर्पितानर्पित नयकहारे तेथर्पितके० विशेषकहिये अने अर्नर्पितके० सामान्यक-
हिये जे अर्नर्पितते भंघहनयमांज्ञे अने अर्पितते व्यवहारादिक विशेषनयमां नवे
माटे जूदानीरीतकहिये तो अर्पितानर्पित एवेनयजो जूदानवीकहेना नो आटिअंत-
के० पहेला तथापाठखनयना योकनामां ऊव्यार्थिक नयापर्यायार्थिक एवेनयकेमन-
धीजेतना जेयकीसूधीरीते मृक्षनयनानजकहेवाय तेसवेसुविधियेरहे ॥ १२ ॥

पञ्जवनयनिध्यअंतमारे ॥ प्रयमज्ज्यनयचार ॥ जिनज्ञता
दिक्मापियारे ॥ मदाभान्यनुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमच्ये ऊव्यार्थिक नयापर्यायार्थिक एवेनय ज्ञेत्र्यानी आचार्य
मत प्रक्षियादेन्वार्टे जे अंतमाके० उहेलाजे शब्द नमज्जिन्ट अनेएवंदूनरूप एव्रण

नयते पर्यायनयकहिये अनेप्रथमनाचारनय जे नेगम सग्रह व्यवहार शुभसूत्रसक्षण
तेज्जन्यार्थिस्तनयकहिये एरीतें जिनज्ञगणीसमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतगादि आचार्य-
ते श्रीदिग्देषाप्रश्नकना महानाष्टमध्ये निर्द्धारेकहेरे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे ॥ प्रथमज्ञव्यनयतीन ॥ तसञ्जु
सुत्रनमन्नवेरे ॥ उव्यावज्ञकदीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ द्वेमिद्धमेन तथामहुगादीप्रमुख तर्फगादीआचार्य एमकहेरे के प्रथम-
नामान्यनयने १ नेगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते ऊव्यनयकहिये अने १ शुभसूत्र
२ शन्द ३ समनिस्त ४ प्रमन्त्र एचारनय पर्यायार्थिककहिये ऊव्यार्थिकमते सबैं
पर्याया ग्रन्थ कहिपना ॥ सत्यतेआनन्दप्रियज्ञव्य कुम्हादिपुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायार्थिमते
ऊव्य पर्यायन्योस्ति नोट्यक ॥ यसेर्थकिया हृषा नित्य कुन्त्रोपयुज्यते ॥ २ ॥ इति
ऊव्यार्थपर्यायार्थनयप्रक्षात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षापीशुभसूत्र शुद्धमर्थपर्याय
प्रमन्यमान कथऊव्यार्थिक स्यादित्येतेपामाशय तेआचार्यनेमते शुभसूत्रनय ऊव्या
प्रथमनेनिये दीनमन्नवे तथाच उहुमुखस्सएगे अणुउत्तेषणद्वाप्रसत्यपुहुतनन्ती
इतिथुयोगद्वारमूलप्रियोध वर्तमानपर्यायाधारस्यऊव्याशपूर्वपरपरिणामसाधारण
उपर्येतामागामान्यज्ञयाशसादरयाम्नित्यरूपतिर्थसामान्यज्ञयाश एमांएकेपर्यायनमाने
तो उम्हुम्हो पर्यायार्थनयरहेता प्रमूखकेमसिक्ते तेमाटेहाणिकज्ञयादी सूक्ष्मश
उम्हुम्ह तद्वत्मानपर्यायापन्न ऊव्यादि भ्युक्षर उम्हुम्हते ऊव्यनयकहेवो एमसिद्धांतगा
दी। इहेवे अगुपयोगज्ञयाशमेइ मूलपरिणावितमादायोक्तमूलतार्थिकमततेनोपपादनी-
यमित्यमादेवपरिदीक्षित पदा ॥ १३ ॥

इमथनग्नापितनणोरे ॥ केमच्छक्षमोउपदेश ॥ पाचयसी
जेममानमरि ॥ गिययनेदनदीक्षेवरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमकें० परीतेआनग्नापितनें० माहेतेव्याने ऊव्यार्थिक तथापर्यायार्थनय
देनो अघ्यगोटरदेश केमव्यगो ब्रह्मचित्तो इमहेसोजे मतानरे पाचनयस्त्रियर्थे
तेमारेवद्वायद्वाय सातनयरहेता जेमथ्यगोउपर्यदेशते तेमथ्यमारे ऊव्यार्थिक पर्याया
दिक्कनो अघ्यगोटरदेशते देनोउन्नरजे शन्द समतिश्च तथापर्यन्तनने जेमप्रयत्नेदेशते
तेमज्ञन्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयर्थी निन्न गियय देगाई। जेमग्राणनयने प्र
सदादेमद्वी पाचनयद्वायते एगविषयतिश्च एगज्ञानो गिययतिश्चनयी केमके जेम
द्वायदिक्कना द्वायदेवाद्वाय नेमर्युद्धाशुद्धमंप्रदादिक्क नयमायार्थे तथाजे प
दायदिक्कना रदेवदेवाद्वाय तेमर्ये टप्परितानुपरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध उम्हुम्हा

दिक्मांश्चावे जोगोवविवर्दन्यायें विषयज्ञेदें जिन्ननयकहियें तोस्यादस्त्वेव स्याद्वास्त्वेव
इत्यादिक सततंगीमांकोनोरीतें अर्पितानपिन सत्वासत्व ग्राहक नय जिन्नजिन्नकरतां
सतमूखनयप्रक्रियाज्ञांजे एपंनितेविचारतुं ॥ १४ ॥

संग्रहनेव्यवहारवीरे ॥ नेगमकिहांएकनिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहवीरे ॥ एतोदोयव्यञ्जिन्नरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

अथ ॥ इहांजो विषयज्ञेदेनेनयज्ञेदकहेसो तो सामान्यनेगमसंग्रहनयमांश्चने विशेष-
प नेगमव्यवहारनयमांज्ञेदतांवाकीठनयवजयवीजातेहवी शिष्यनीथाशंकाटाखवाने
अर्थेकहेरेकेयथपि संयहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेनेगमनय
ज्ञेते नोपणकिहांएकप्रेशादिहांतस्यानेजिन्नवायवे उक्तंच ठन्हंतहवचउन्हं पंच
विहोनहयहोइचणिङ्गा ॥ तस्मयसोयपएते तोसोवेवणचेवतचन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे
किहांएक जिन्नविषयपणाश्री नेगमनयजिन्नकरुं पणइहांतो ऋग्यार्थिक पर्यायार्थिकवे-
हुनयनो नेगमादिकनयश्री अनिन्नविषयवे तोतेने अलगाकरीने नवज्ञेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविज्ञान ॥ जीवादिक
परेकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनवागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अथ ॥ एमकरनां नवनयदेखाननां तो विज्ञकनो विज्ञागथाय एटखे वहेच्यानुं
वहेच्वर्तुशाय जोतमारे वहेच्वणकरवीहोयतो तेवारे जीवादिवाः संसारिणःसिद्धाः संसा-
रिणः पृच्छीकाविकादि पदत्तेवाः सिद्धा पञ्चदशज्ञेदाः एमज नयादिवाः ऋग्यार्थिक
पर्यायार्थिक ज्ञेदात् ऋग्यार्थिकाविवाः नेगमादिज्ञेदात् क्लज्जुसुत्रादिज्ञेदाच्चतुर्थापर्याया-
र्थिकः एमकद्युर्ते पणनवनया एमएकवाक्यनो विज्ञागकीधो तेसर्वथा मिव्याजाणवो
नदीनो जीवसंसारी सिद्धा इत्यादि विज्ञागवाक्यपण थवापामे हवेकोइकहेसेजे
जीवाजीवाततत्वं एमकहेतां अनेरातत्वव्याव्या तोपणसात अथवानवतत्व जेमकहियें-
त्वयें तेमजक्लग्यार्थिक पर्यायार्थिको नयो एमकहेनांयकां अनेरानय सर्वथावेते तोपण
अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनज्ञेदें जिन्नजिन्न
तत्व व्यवहारसात्र साध्यवे तेतेमजसंजवे अने इहां इतरव्याघुचिसाध्यवे तिहांहेतु
कोटि अनपैक्षित ज्ञेदप्रवेगे वेवर्थदोयहोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजनरे जीव श्रज्जीव
एवेमुस्त्वद्योयपवार्थन्नाकहेवा अनेवंय सोऽक एवे मुस्त्वहेयउपादेयवे तेमाटे वंधका-
रण जेआथव ते देयकेण वांचनुं अनेमोद्वामुस्त्व पुरुषायवे तेनवेकारण एक संवर
वीजोनिर्ज्ञाराकहेवा एसातनत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुष्पपत्त्व श्रुत्वायुजवंध
ज्ञेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकयननीजाणवी ॥ १६ ॥

निन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूखनयसून् ॥ तेणेच्छिकुं
केमजापीयेरे ॥ राखीयेनिजघरसून्वरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अथ ॥ माटेइहाँइव्यार्थिक पर्यायार्थिकना निन्नोपदेशनुं कोइप्रयोजननथी केमके
सत्तमूखनयापणत्ता एहुखुसूत्रेंकल्पुत्रे तेउत्तुधीने नपनयकहियें तो आपणाघरनु सूत्रके
मरहे तेमाटे नवनया एमकहेतोथको देवसेननामा वोटिकतेउत्सूत्रजापीजाणवो ॥ १४ ॥
दशजेदादिकपणइहारे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नहीतो
कहोच्चंतरज्जवेरे ॥ प्रदेवार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहा नयचक्रग्रथमा द्विगवर्णे इव्यार्थिकादिक दशजेदादिकह्या तेपणउप-
खक्षेपकरीजाणो नहीतो प्रदेशार्थ नयकयास्थानकेआवे तेपिचारजो उक्तंक्षसूत्रे इव
छयाए पपसङ्घयाए इत्यादि तथाकमोंपाधीसापेक्ष जीवजाग्रथाहक इव्यार्थिकनय जेम
कहो तेम जीवसयोगसापेक्ष पुजासभावप्राहृकनयपण निन्नकहोजोइयें एरीतंकरियें
तो अनताजेदथाथ तथाप्रस्थकादि दृष्टाते नेगमादिकना श्रगुङ्ग श्रगुङ्गतर श्रगुङ्गतम
शुरुतर श्रुङ्गतमादिजेद किहासग्रह्याजाप उपचाररे तेमाटे उपनयकहियेनो अपसि
झांतथाथ एश्चनुयोगद्वारसूत्रे तेनयनाजेद देखाज्ञारे ॥ १६ ॥

उपनयपणच्छ्रुतगानहीरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहीतोज्जेद
प्रमाणनोरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ बढीएहिजवातहटेरे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादिनयथी अ
संगाननथी उक्तच तत्वार्थसूत्रे उपचारवहुसोविस्तार्थो खोकिकप्रायोव्यवहारश्ति एम
करता नयनाजेदनेजो उपनयकरीजानसो तो स्वपरब्यवसायि झानप्रमाण एवक्षण्ये
खक्षित झानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिझानादिक अथवा देशअवग्रहादिकतेने उप
प्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मात्तनय उपनय एवोटिकनीप्रक्रिया शिष्पव्युद्धीते धध
नमाच्चजाणवी ॥ १८ ॥

व्यवहारनेनिश्चयथकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्य
दृत्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारिशेपे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचाररे अनेनिश्चयनयमा उपचारनथी एपणस्योविशेष जे
वारे एकनयनी मुख्यवृत्तिचिह्नयें तेवारे वीजानयनी उपचारवृत्तिचिह्नावे अतएवस्याद
स्त्रेव एनयवाक्ये अस्तित्वप्राहृक निश्चयनयेंअस्तित्वपर्म मुख्यवृत्तिक्षेता कालादिकआवे
अनेदवृत्त्युपचारे अस्तित्वसवध सक्षमधर्मक्षेताज सक्षमादेशरूप नयवामय थाय एम

आकरम्येप्रसिद्धे सत्सार्थं सत्यपणानो अन्निमानतो सर्वेनयने मांहोमांहेरेज अने
फलशीसत्यपणुंतो सम्यक्कृदर्शनयोगेनेजरे ॥ २० ॥

तेणेएज्ञाप्येज्ञाप्युरे ॥ आदृश्येनिरधार ॥ तत्वव्यरथ

निश्चययग्रहेरे ॥ जिनअन्निमत्त्ववहाररे ॥ प्राणी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तेमादेनिश्चय तथाव्यवहारानुबद्धण जाग्येकेऽ विशेषावश्यके कहुंते तेरी-
तं निरधारीने आदरो तत्वार्थयाहीनयोनिश्चयः लोकान्निमत्तार्थयाहीव्यवहारः जेतत्व-
अर्थते युक्तिसिद्धर्थ्य जाणवो अनेजेखाकान्निमत्तते व्यवहारप्रसिद्धे तेयद्यपि प्रमा-
णेतत्वार्थयाहीरे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थयाही निश्चयनयः जरे एटद्ये एकदे-
शतत्वार्थयाही व्यवहार एनेऽनिश्चय व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चयनयनी विप्रवता अ-
नेव्यवहारनयनीप्रवताते अनुच्छविनिष्ठनिज्ञरे अत्राज्ञाननयनिष्ठ जेमसविकल्पकता-
निष्ठप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिनिज्ञ मानेरे एमहृदयमां विचारतुं ॥ २१ ॥

अच्यन्तरतावाह्यनेरे ॥ जेवहुविगतिअभेद ॥ निरमलपरि

एतिज्ञयनीरे ॥ एसवीनिश्चयनेदरे ॥ प्राणी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेवाह्यार्थने उपचारे अन्यतरपणुं करियें तेनिश्चयनयनो अर्थजाणवो यथा
समाधिनंदनंर्थें दंजोखि-समताशच्ची ॥ ज्ञानंमहाविमानंच वासवशीरियंपुनः ॥ २ ॥
इत्यादि पुंडरीकाव्ययनाव्यायोंग्येवेज्ञावनीयः जेघणीव्यक्तिनो अनेऽदेखानियें तेपण
निश्चयनयार्थ जाणवो जेस एगेआया इत्यादिसूत्रं वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादे-
शरूप शुद्धनिश्चयनयार्थ एमसंमतिग्रंथेंकहुंते तथाङ्गव्यनीजे निर्मलपरिणति वाह्य नि-
रपेक्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोर्थर्थजाणवो जेस आयासामाइ आयासामाइश्वरस्स-
श्रुतं एमजेजेरीते लोकातिक्रांत अर्थपाभियें तेते निश्चयनयनो अर्थनेदयाय अने ते-
शीलोकोन्नार्थ जावनाआवे ॥ २२ ॥

जेहृभेदेविगतिनारे ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त

अन्निज्ञतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ लेव्यक्तिनो ज्ञेऽदेखानियें जेस अनेकानिज्ञव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीते
व्यवहारनयनोर्थर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोर्थर्थ अतएव ति-
व्ययणएणपंचवद्वे जमरेववहारणएणकाववणे इत्यादि सिद्धांतप्रसिद्धे तथा कार्यने
निमित्तकेऽ कारण एवेहुने अन्निज्ञपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायते जेमथायु-
द्धृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिद्द्यते कुन्निकाववति इत्यादिक व्यवहारज्ञापा अने-
करूपे कहियेंर्यें ॥ २३ ॥

एमवहुविधयनिराकरीरे ॥ करतातससंकोच ॥ केवलवाल
बोधवारे ॥ देवसेनआखोचे ॥ प्राणी० ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एहवानिश्चयनय तथाव्यग्हारनयनाधणार्थ्ये तेनेनिराकरीके० टालीने तेमो
सकोचकरता थोकोनेददेखास्तां नयचक्रघ्रथनोकर्त्तजे देपसेननामादिगवरी तेनो आ
खोच ते पोतासरिखा केटलाक धालकनेज बोधवानोदेखायठे पणसर्वार्थनिर्णयनो
आखोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेतोव्वेतावर सप्रदायना शुद्धनयनाघ्रथ तेना
अच्यासथीज जणाय एजावार्थवे ॥ २४ ॥

एमवहुविधयनयन्नंगसुरे ॥ एकत्रिविधप्रथ्य ॥ परखोहरपो
हैयम्भैरे ॥ मुजगलहीपरमडरे ॥ प्राणी० ॥ ७५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामापणश्चुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धव्यर्थवे ते उपपातुरे तेमाटे ए
रीतैं वहुप्रकारनयेजगे एकजर्थ्ये त्रिविधके० ऊऱ्यगुणपर्यायरूप परख्यो स्वसमय पर
समयनु अतरजाणीने हृदयनेपिये हर्षों परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ २५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ इमधन्नोधणनेपरचावे ॥ एदेशी ॥

एकचरस्थतिहुखक्षणे ॥ जेमसहितकदेजिनराज
रे ॥ तेमसदहणामनधारता ॥ सीजेसधलासुभ
काजरे ॥ जिनवाणीप्राणीसाज्जदो ॥ एच्चाकणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेएकजर्थ्ये जीवपुज्जतादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पादव्ययधुव
एत्रण्णलक्षणेकरी सहित एमत्रीजिनराजकहेरे उपत्वेवा विगमेज्ञा भ्रुवेज्ञा ए त्रिप
दीयेकरीने तेमज सहृषणामनमाधरता सर्वकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वार्थव्यापकपण
धारयु तेजिनशासनार्थ्ये पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकशनित्यज एमनेया
यिकादिककहेरे तेरीतिनयी केमके नित्येकात अनित्येकात पक्षतोदोकयुक्तिधीपण यि
रोधरे माटे दीपयीमानीने आकाशसुधी जेटलापदार्थरेतेमा उत्पाद व्यय धुव ख
द्वणमानवु तेहिजप्रमाणरे उक्तच श्रीहेमाचाये आदीपमाव्योमसमस्वज्ञाव स्याद्वा
दमुडानतिनेदवस्तु ॥ तन्नित्यमेवेकमनित्यमन्यदितित्वदाङ्गाद्विपताप्रवाप ॥ ३ ॥

एजिनेश्वरनी वाणी हेप्राणीतुमेसाज्जदो ॥ ३ ॥

उत्पादव्ययधुवपणे ॥ ठेसमयसमयपरिणामरे ॥ पटज्व्य
तणोप्रत्यदयी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ह्वेषहिजनान् विवरीनेकहैरे १ उत्पाद २ व्यय ३ भ्रुवएखक्षणे पटक्ष-
व्यनो समयसमय परिणामरे इहांकोइकहैसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांभ्रुवपणो नजो-
इयें अनेजिहांभ्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहौवोविरोधरे तोव्रणक्षणे एक-
रामेकेमहोय जेम राया तथाश्चातप एकरामेनहोयतेम ए त्रणवक्षण एकरामे न-
होवाजोइयें तेनेकहियेंजे जीत उस्त स्पर्श जख तथा अनसकेण अग्निनेविषे परस्परे
परिहारेंटीरामे तेने एकरामे उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांनोव्रणक्षण सर्व-
चएकराज प्रत्यक्षात्रीदेखायरे परस्परपरिहारेंकिहांये प्रत्यक्षसिद्धनवी तोए विरोधनो
राम केमहोय अनादिकालनी पकांतवाक्तनायें मोहितजीव तेरनोविरोधजाएरे
एषपरमाये विचारीजोतां विरोधनवी समनियनतायें प्रत्ययजविरोधनंजकरे ॥ २ ॥

घटमुकुट्टुसुवर्णहच्चर्यिया ॥ व्ययउत्पत्तिवितिपेखंतरे ॥

निजस्तुपेद्वेवेदेमवी ॥ छवद्वर्पउपेदावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखावेरे जे एकहैमझव्यनेविषे घटाकांननाश अनेमुकुट्टाकारेउत्प-
त्ति नयाहैमाकारेस्यिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायरे केमके हैमवटनांजी नेहैममुकुट्ट
यायरे तेवी हैमवटार्थ छुवंतवायरे माटेघटाकारे हैमव्ययसत्यरे अने हैममुकुट्ट-
दार्थे हैपवंतवायरे तेमाटेहैमोत्पत्ति सुहृटाकारेसत्यरे अनेहैममात्रार्थ तेकालेनमुम्ब-
वंत नमुःवंतवायरे स्यितिपरिणामेरहेरे तेवी हैमसामान्यन्यिति नत्यरे एममर्वय
उत्पादव्यय स्यितिपर्याय ऋग्युपेजायवा इहांउत्पादव्यय नागेनिद्रडव्य अनेन्य-
तिनांगे चिन्नद्वय कोइदेखातुनवी केमके घटमुकुट्टायाकारे न्यर्ती हैमडव्यरेनदी
जेएकध्रुवदोय भ्रुवतानीप्रतिपेहरे भाटेनज्ञावाव्यरनित्य एवक्षण परिणामे ध्रुवयने
परिणामेन्द्रध्रुव एमवंतनावतु ॥ ३ ॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुट्टनी॥ ध्रुवनाकंचननीपकरे ॥ द्रुखापकं

वत्तेएकदा ॥ निजकारयदाकनिद्यनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ द्वेउत्पादव्यय भ्रुवनो अनेडव्यंत तेदेदेखावेरे हैमनादटनांजेव्यय नेहि-
ज हैममुकुट्टनीठत्तनिष्ठ एव चारएज्ञन्तरे तेमाटे विजागर्वायोत्तनिष्ठ मंतानंते तेवीज
पटनाश व्यवहारमंज्जेरे तेमाटे पर उच्चरपर्यायिडत्तनिष्ठ तेपृदेपर्यायनो नाम जापरो
छनेमंचननी भ्रुवतारपत्तेहिजरे वेमदे प्रतिग्रहर्वायोत्तदे एवमंतानपट्ट तेहिजडव्य-
ष्टद्वय ध्रोपद्वय एवक्षण एवदद्वये एवदद्वयेन्ट एवद्वयनिद्रद्वये एव ज्ञोउ प्रमाट
माप्तन्यद्वय एवनेव वायेहिजरे तव्यताग्निद्वये अनेदद्वये चिन्नदासी जागे
जेम ज्ञामान्यन्ये भ्रोपद्वय क्लनेविषेपस्तरे उत्पादव्यय एवनादटनांज्ञ विगेदनवी व्यय-

हारतोसर्वत्र स्याद्वादार्थानुं प्रवेशेजद्वौय विशेषपरतापण व्युत्पत्तिविशेषेजद्वौय अत एव स्याद्वृत्पथते स्यान्नश्चति स्यादध्वर्वं एमजगाम्यप्रयोगकर्त्युत्पन्नेवा इत्यादी वा शब्दोविवस्थायासच स्याध्वदसमानार्थं अतपव कृष्णं सर्पं एखोकिकगाम्यपण स्या तश्वदेवस्त्रीयें केमके सर्पने पृष्ठावधेदेश्यामतारे पण उदरापधेदेश्यामतानयी नया सर्पमार्त्रे कृष्णतानयी शेषनाम शुक्रकदेवायरे तेमाटे विशेषपणविशेष्यनियमार्थजो स्यात्शब्दप्रयोगरे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीजननासन्नवे ॥ ४ ॥

वहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेतेऽव्यस्वज्ञावरे ॥ तो
कारणनेदाज्ञावयी ॥ होयकारयनेदाज्ञावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेजे हैमङ्गव्यएकज अविकृतरे अनेजेविकार तेमिथ्यागे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति खजामतेरे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथाय रे तोकारणनानेदपिना कार्यनोनेद केमथाय श्रेष्ठसाधनते प्रमोदजनक अने सानिष्ठ साधनते शोकजनक तपुजयनिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपयी केम द्वौय शक्तिपण व्यातानुसारे कवियेत्रैयें नहींतो अभिसमीपे जखदाह जनकस्वज्ञावे इत्यादिककदपता पण कोणनिपेधकरे तस्मात् शक्तिनेद कारणनेद कार्यनेदानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवेरे ॥ ५ ॥

शोकादिकजननेवासना ॥ नेदेकोईवोलेबुझरे ॥ तसमन
सकारनीनिन्नता ॥ विणनिमित्तनेदकिमगुञ्जरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शोकके० वोधमतवादि एमकहेरे जे तुनानोमन्नोतमननीपरे उत्पादव्य यजपकदारे क्षणिकस्वरक्षणनेभुवतातोरेजनहीं हैमथीशोकादिक कार्यद्वौयरे निन्न निन्नस्त्रीकनी निन्नवासनारे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनानेदे कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष रे जेमसेलडीप्रमुख मनुष्यनेइष्टरे तथाकरन्नजेहट तेनेअनिष्टरे पणतिहा वस्तुनेदनयी तेमश्वापणजाणतु तेपौद्धने निमित्तनेदविना वासनारूप मनस्कारनीनिन्नता केमगु रुद्याय माटे शोकादिकनु उपादान जेमनिन्ननिन्नरे तेम निमित्तपणनिन्न अवश्यमा नवु एकवस्तुनीप्रमातृनेदे इष्टानिष्टतारे तिहापण एकङ्गव्यना इष्टानिष्टयान जननश किरूपपर्यायनेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तनेदविणग्यानयी ॥ गक्तिसक्तपविक्षुपरे ॥ तो
वाह्यवस्तुनालोपयी ॥ नघेटुजघटपटजटपरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि चौद्ध कहेसेजे निमित्तकारणनानेदपिनाज वासना

विशेषजनितज्ञानस्तज्ञावधी जोकप्रमोदादिक संकटपविकट्पहोयरे तो घटपटादिक
नेमित्तविनाज वासनाविशेषे घटपटाद्याकार ज्ञानहोबुंजोइये तेथी वाह्यवस्तु सर्व-
पोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारज्ञानपण संज्ञेनही अंतरवहिराकारविरोधे वाह्या-
कार मिथ्याकहिये तोचित्रवस्तुविषय नीकपीताद्याकार ज्ञानपण मिथ्या थयीजाय त-
पासुखाद्याकार नीकाश्चाकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्वे शून्यज्ञानवादि साध्यमिकवो-
द्वनो मतश्रावीजाय उक्तंच किंस्यात्साचिन्नतैः कस्यांनस्यात्स्यामतावपि ॥ यदीदंस्व-
रमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेग्रून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धिं व्याहतरे तेमाटे
सर्वनयचुरुद्द्याद्याद्य वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ १ ॥

घटनाशसुकुठतपत्तिनो ॥ घटएकजरुपेहेतरे ॥ एकांत
नेदनीवासना ॥ नेयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एमशोकादि कार्यव्रयनेज्ञेदें उत्पादव्ययध्रोव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्या
पण तेअविज्ञकरे ऋग्यपणेअज्ञिन्नरे अतएव हेमघटनाशाज्ञिन्न हेमसुकुटोत्पत्तिनेविषे
हेमघटाद्यवय विजागादिकहेतुरे अतएवच महापटनाशाज्ञिन्न खंडपटोत्पत्तिएकादि
तंतुसंयोगापमहेतुरे खंडपटे महापटनाशने हेतुताकटिपये तोमहागौरवथाय एमजा-
णतो एकाधवप्रियेनेयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतज्ञेदनीवासना केमदीयेरे तेहनुमतरे
जे कट्पनागौरवंयत्र तंपक्षनसहामहे ॥ कट्पनालाधंयत्र तंपक्षनुसहामहे ॥ ७ ॥

झग्धवतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीवतखायरे ॥ नवीदोइ
अगोरसवतजिमे ॥ तेणेतियत्क्षणाजगथायरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेदधिझव्यते झुग्धकव्यनही केमके जेहनेदूधनुंवतरेएटदेवूधजिमबुं ए-
हवीप्रतिज्ञारूपरे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअनेदक-
हिये तोदधिजिमतां झुग्धवतज्ञंगथयोनजोइये एमाटे जे झुग्ध तेदधिझव्यनही अने
जोपरिणामीरे माटे अनेदकहिये तो दूधजिमतां दधिवतज्ञंग नथयोजोइयेअने जेहने
दधिखावानुंवतरेतेपण झुग्धजिमतोनथी तथाश्रगोरसजजिमबुं एहवोवतवंत होय ते
झुग्ध तथादहीवेहुजिमेनहीएमगोरसपणे वेनेअनेदरे झहांदधिपणे उत्पत्तिअने झुग्ध-
पणेनाशतथागोरसधुवपणोप्रत्यक्षसिद्धरे एहषांते सर्वजगद्धर्त्तिज्ञावने खक्षणत्रययुक्त-
पणुं कहेबुं अदोक पयोवतोनदव्यतिनपयोत्तिदधिवतः ॥ अगोरसवतोनोने तस्माद्धम्नु-
त्रयात्मकं ॥ ८ ॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप ऋग्यपर्याययी सिद्धांत अविर्गिमंसवंत्र
अवतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकज्ञाव व्यतिरेकीज अने केटखाणकदावयन्व-
यीज एरीतेजे दर्शनीकहेरे तिहांअनेराजावस्याद्यव्युत्पत्तीये ॥

सत्ता व्रणकदाणरूपजठे उत्पादव्यय भ्रुव्ययुक्त सदितितत्वार्थ वचनात् तोसत्ताप्रत्यक्ष-
तेहजन्मितक्षणसाक्षात् ते तथारूपेण सद्व्यवहार साध्यथनुमानादिकप्रमाणश्चनुसरियेत्येण

**उत्पन्नघटेनिजज्ञव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमदोये ॥ सुणम्बु
वतामापदेखान्नतिया ॥ रेअनुगमशक्तिदोये ॥ जिन० ॥ १० ॥**

अर्थ ॥ इवेयावत्काल एकेकवस्तुमा त्रिष्णत्रिष्णकषणादिक केवीरीतेहोय तेनिर-
धारे उत्पत्तिथयीरेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिकषण सद्व्यवह रू-
पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहजपूर्वपर्यायिनाश तेतुमेपूर्वेष्याध्योरे एहवोशिष्येप्रभपुरुषो तेवारे
गुरुकहेरे प्रथमक्षणेण्यथाजे उत्पत्तिनाश ते भ्रुवतामानद्वया अने अनुगमकेण एकता
तेशक्तिसदाइरे अरतेषण आद्यक्षणे उपलक्षणेण्यथीने आगलक्षणे ऊर्ध्वरूपतत्सवध
कहिये जेम उत्पन्नघट नदोघट सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्ट एमकहिये तेवारे
एतत्कषणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणियें तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्वितीयादि-
क्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटकेण इहाऊर्ध्वार्थदेहें भृषुऊर्ध्वकेबु जेमाटे
उत्पत्तिनाशधरता सामान्यरूपेकहिये तत्पतियोगिता तेविशेषरूपेकहिये ॥ १० ॥

**उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ जूतादिकप्रत्ययनानरे ॥ पर्याया
रथयीसविघटे ॥ तेमानेसमयप्रमाणेरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥**

अर्थ ॥ निश्चेनयथी कज्जलाणेकडे एवचनश्चनुसरीने उत्पद्यमानते उत्पन्नएमक
हिये पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्न उत्पस्यतेनश्यतिनष्टनश्यति एविजक काल
प्रयप्रयोगरे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे झुसूत्रनय तेणेअनुगृहीत जे
व्यवहारनयते क्षेष्ट्रेकहिये केमके झुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेरे तिहा जेप-
र्यायना वर्तमान उत्पत्तिनाश त्रिवक्षीयें तेक्षेष्ट्रे उत्पद्यते नश्यतिकहिये अने अतीत
सेइ उत्पन्नोनष्ट एमकहिये वही अनागतनेक्षेइ उत्पत्त्यतेनश्यति एमकहिये व्यव-
स्यासर्वस्याधव्ययोर्गेसन्नवे ॥ ११ ॥

**जोतुजउत्पत्तिविगिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइप्ते ॥ व्यवहारे
उत्पत्तिआदरो ॥ तोपदेखाअरतिविशिष्टे ॥ जिन० ॥ १२ ॥**

अर्थ ॥ जो उत्पत्तिधारारूप नाशनेविषे जूतादिकप्रत्ययनकहिये अने नशधातु-
नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एवेक्षेइ तद्वुत्पत्तिकालत्रयनो अन्यसन्नवतो कहिये एरीते
कहेता नश्यसमये नष्ट एप्रयोगनद्वये केमके तेमानेनाशोत्पत्तिनु अतीतत्वनथी एम
व्यवहारनोजो समर्थनकरोगे तोव्यवहारे उत्पत्तिक्षणसवध मात्रकहो तिहाप्रागना

वर्धमानकालज्ञावधी कालत्रयनोश्रव्य समर्थनकरो अनेजोएमविचारसोजेघटने वर्तमानत्वादिके जेमघटवर्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मवर्तमानत्वादिके पटवर्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोत्पत्ति वर्तमानत्वादिके नाशवर्तमानत्वादिव्यवहारनहोय तोकियानिष्टा परिणामरूप वर्तमानत्वने अतीतत्वेष नश्यतिनष्टः उत्पद्यतेउत्पन्नः एविनक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाकाल निष्टाकालयोग-पद्य विक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगृह्णिगतं एसिङ्गांतिक प्रयोगसंज्ञवे अनेपरमतें इदानीं ध्वस्तोघटः एथाद्यक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अभारेनयनेदेसंज्ञवे उक्तंच संमतो स्वाधिकरणदण्डणत्वव्यापकस्वाधिकरणदण्डणव्यंसाधिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥ उप्पञ्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगद्यंतं ॥ ज्ञेदवियपन्नवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥ १ ॥

उत्पत्तिनहीनोआगामें ॥ तोअनुत्पन्नतेथायरे ॥ जिमनाश
विनाश्चविनष्टरे ॥ पदेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगामेंकेऽ द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिक्षणे अनुत्पन्नथाय जेमध्यंसथयापहेका नाशविना अविनष्टकहियेठेये तोएतर्कतुजने केम-सुहातुनन्थी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामद्वारे मानवा ऊव्यार्थदेशेऽद्वितीयादिक्षणे जोउत्पत्तिव्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथाक्षणांतरज्ञावे द्वितीयादिक्षणे उत्पत्तिपामीजोइयें जोश्रुकविपत अनुत्पन्नता होयनही तोपणप्रतिक्षणे उत्पत्तिविना परमार्थयी अनुत्पन्नताथवी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेज्ञावेज्ञासिद्धं ॥ संमतिमांदेऽज्ञावरे ॥ संयुणादिक
ज्ञवज्ञावधी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीनपजे ॥ केवलज्ञावेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमयीसदा ॥ शिवमांतियवददणएहरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमपरिणामयी सर्वऊव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिते एजश्चनिप्रायें संमति ग्रंथमां एजावज्ञाप्योरे जेसंधयणादिक ज्ञवज्ञावधीसीजतां मोक्षसमये केवलज्ञानज्ञाय ज्ञवस्य केवलज्ञानपर्याये नाशथाय एश्वर्यतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे तेही-जकेवलज्ञानपणे नावेरे ध्रुवरे एमोहोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया ततपरिणतसिद्ध-ऊव्यानुगमयी जिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंधयणाईया ज्ञवर्तकेवल विसेपप-ज्ञाया ॥ तेसिद्धमाणसमए एहोइविगयंतर्तहोइ ॥ १ ॥ सरूच्छणेणयपुणो उप्पणोएस-अवृपञ्जाते केवलज्ञावेतुपुकुञ्ज केवलदाइयंसुते ॥ २ ॥ एजावदेइने केवलनायेद्विव-

हैपन्नते चवश्वकेवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रे उपदेशरे एव्रणसक्षण स्थू
सव्यवहारनय सिद्धनेश्वाव्यु पणसूक्ष्मनयनाव्यु केमके सूक्ष्मशुसूत्रादिकनय तेसम
यसमयप्रते उत्पादव्ययमानेरे तेखेइने तथा इत्याथर्दिशनो अनुगमलेइने जेसिद्धके-
वलडानभा त्रैलक्षणकहियें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमपिचारीने पक्षातरकहेरे ॥२४॥१५॥

जेझेयाकारेपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायं ॥ व्यतिरेके

तेथीसिद्धने ॥ तियखद्दण्डमपणाथायरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेझानादिकके० केवलझान केवलदर्शन तेपोतानापर्यायें डेयाकारेके० वर्त्त
मानादिक विषयाकारे परिणमे व्यतिरेकेके० प्रतिक्षणेश्वन्योन्यपणे सिद्धनेपरिणमे
तेथीपणत्रणसक्षणथाय तेथावीरीतेजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकाररे तेहनो छिती
यादिक्षणेनाश अर्ताताकारेउत्पादश्वाकारेनावें अनेकेवलझान केवलदर्शनज्ञावें अथवा
केवलमात्रज्ञावें ध्रुवरे एमज्ञावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेपरिणमे ॥ क्षणसवधेपणाज्ञावरे ॥ तेथीतिय

दद्दण्डसंज्ञवे ॥ नहीतोतेथायच्चनावरे ॥ जिन० ॥१७॥

अर्थ ॥ एमजेझेय दृश्याकारसवधे केवलनेत्रेष्वक्षण कहुँ इवेनिराकारजे सम्यक्त-
वीर्यादिकज्ञाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्वयने काखनासवधथी त्रेष्वक्षणदेखाहेरे
एमजेज्ञाव क्षणसवधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थ तेथीत्रणसक्षण सज्जवे जेम
छितीयक्षणेनाव अने आद्यक्षणे सवधपरिणामे नाशपास्यो अनेछितीयक्षणे सवध-
परिणमे उपनो वदीक्षणसवधमात्रे ध्रुवरे तेकाखसवधथी त्रणसक्षणसज्जवे नहीतो
तेवस्तुनो अज्ञावयवीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज ज्ञावस्तुक्षणरे अनेतरहित जे श
शविपाणादिक तेथ्वाचरूपरे ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेकटा ॥ वहुसवधेवहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश

एमसज्जवे ॥ नियमेतिहाध्रोव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुज्जवने अनेपरपर्यायें आकाश अनेधर्मास्ति
काय अधर्मास्तिकायएव्रणद्वयने एककाले वहुके० घणासवधे वहुप्रकारे उत्पत्ति ना
शसज्जवे जेटखास्वपर्याय तेटखा उत्पत्तिनाशहीय तेथी तिहाध्रोव्यसरूपपण तेटखा
निरधाररे पूर्णपरपर्यानुगतथाधा राशतावन्मात्रहीय तेवति अत्रसमतिगाया एगसम
यमीष्म दपियस्तपहुआपिहोतित ॥ उप्पायसमापिगमा विईयउस्सगगोणियमा ॥१८॥

छिविधप्रयोगजबीससा ॥ उत्पादप्रयमच्चविशुद्धरे ॥ तेनियमे

समुद्यवादनो ॥ यतनेसयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पादद्विविधकेऽ वेपकारं रे एकप्रयोगज वीजोवीससाकेऽ स्वनावजनित तेमांपहेवो उत्पादते व्यवहारनोरे तेमाटे श्रविगृह्णकहियें तेनिर्दरि समुदयवादनो तथायलेकरी श्रवयवसंयोगें सिद्धकहियें श्रत्रसंमतिगाथा ॥ उपार्दुविश्रप्ये पञ्ज-गजणीठश्रवीससाचेव ॥ तव्यपठेगजणीठ ॥ समुदयवार्तापरिसुङ्गो ॥ १७ ॥

सद्जेयायतेवीससा ॥ समुदयएकत्वप्रकाररे ॥ समुदय
अचेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जनेजे सहजे यत्त्विनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेष्कसमुद-यजनित अनेवीजोएकत्विक उकंच साहाविठविसमुदय कर्त्तवएगचिठरहोङ्गाहैं ॥ जेसमुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेश्रचेतनसंध अत्रादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीर-वर्णादिकनो निरधारजाणवी ॥ १९ ॥

संयोगविनाएकत्वनो ॥ तेऽव्यविज्ञागेंसिद्धरे ॥ जिमखंध
विज्ञागेंअणुपणु ॥ वलीकर्मविज्ञागेंसिद्धरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेष्कत्विकजाणवो तेऽव्यविज्ञागें सिद्धकेऽ उत्पन्नजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक संधविज्ञागें अणुपणुकेऽ परमाणुऽव्ययनो उत्पाद थाय तथाजेमजीवने कर्मविज्ञागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेश्रवयवनासंयोगेंज ऋ-व्यनीउत्पत्तिहीय पणविज्ञागेनहोय एहुबुंजे नैयायिकादिक कहेरे तेनेमतें एकत्वादि-विज्ञागें खंकपटोत्पत्तिकेमधटे प्रतिवर्धकालजावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हे-कुताकृपतां महागोरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविज्ञागें ऋव्योत्पादकमा-नवो तोविज्ञागज परमाणुत्पादपणे एपणश्र्यसिद्धथयो एसंमतिमांसूचव्युठे तदुकं द्वंतरसंयोगाहि केइदवियस्सविंतिउपाय ॥ उपायश्याकृशवाविज्ञागजायणइथंति ॥ २१ ॥ अणुएहिंद्वेआ रक्षेत्रिअणुश्रंतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविज्ञत्तो अणुत्तिजाउंअणुहोइ ॥

विणखंधेद्वतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेऽउत्पादरे ॥ वलीजेक्षिण
क्षिणपर्यायथी ॥ तेष्कत्वज्ञविवादरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकत्वजरे तेमजजेनासंयोगें वंधनीपजेनही एहुवो जे धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुज्जलादिकना संयोग तद्वारे जेसंयुक्ते ऋव्योत्पादश्वसं-युक्ता अवस्थाविनाशपूर्वक तथाक्लजुसूत्रनयाज्ञिमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीय-समयादि ऋव्यव्यवहारद्वेतुतद्वारे जेउत्पाद तेसवैएकत्वउत्पाद अविवादपणेजाणवो इहांकोशविवादनयी ॥ २२ ॥

धर्मके० हैं ग्रन्थजाणवी, अनेसम्बन्धिता जीवनाजेश्वरीतार्थ तथाश्वरीतार्थ निश्चीत स्वस्त्राजि
निरें इरुक्ताप्रहमार्गे पठ्यारे, तेसरेजातिश्वरसरिया जाणगा, तेजोमुजाणीकरे
तोपगुनदुनहोय ॥ उक्तच ॥ सुदरखुख्लैश्वर्य बहुश्विष्मुदरहोइ ॥ माटेझब्ययुणप
यांगनेदपरिङ्गानेकरीने सूधूसम्बन्धवादरो, एहितोपदेशठे ॥ २ ॥

धर्मधर्महननसमयवस्ती ॥ पुजलजीवजएह ॥ पद्भव्य
कह्योरत्रीजिनशासने ॥ जासनआटिनवेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मस्तिकाय अनेश्वरधर्मके० अधर्मस्तिकाय तथागगनके० आका-
शमिन्द्राय तथासमयके० कालभव्य तथाश्वासमय जेहनु धीजुनामरे वलीपुज्ञके०
पुनरामिन्द्राय अनेजीपके० जीवस्तिकाय ॥ एषद्भव्यत्रीजिनशासननेविषे कहाहे,
जेनोऽभ्यजाति तथापर्यायप्रगाहे आदितथा ठेहके० अतनथी, एठमध्ये एककालभज्ञने
पार्षीपारभूत्यते अनिद्रायकहिये अस्तप्रदेशास्ते कायतेशब्दायते इतिव्युत्पत्ते ॥
एर्हांप्रदेशनोमयपठे, माटेश्विकायकहिये अनेकालभूत्यने प्रदेशसधातनथीमाटे
अनिद्रायनरुहिये, एमरु जे एकसमयते धीजासमयने मिलेनहीमाटे एमधीजापण
पर्मांपर्मांवादाये बमन परविमनतकालपिनास्तिकाया जीयमृतेचाप्यकर्तुणि इत्या
दिवगापर्म्य वेपर्म्यप्रशमद्यादिक महामयथी जाणयु ॥ ३ ॥

गनिपरिणामीरपुजलजीवने ॥ ग्रापनेजलजेमहोय ॥ तासञ्च
पेटांगेकागणांगोरुमा ॥ धरमभव्यवेरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमाप्रथम धर्मामिन्द्रायभूत्यनु खक्षणभूत्ये गतिपरिणामीजे पुनरुत्था
ज्ञाप्त्यय ते षोडू० शुद्धशारद्वामक आकाशगडतेमाठे तेनुजेश्वेष्माकारण परि
श्वाम-शारद्वामिन्द्रियस्त्रय उदामीननाकारण जेमगगनादि क्रियापरिणत ग्रप
के० मम्यतेनेम ज्ञवद्येष्माकारणते तेहनीपरंश्वेष्मामारणते धर्मामिन्द्राय भूत्य
जाएनु, भ्येष्माक्षिया व्याहृत्यनयाचिष्ठाहैस्तिकानामादैन नमयति नमुजक्षानामादिति
श्वाम-शारद्वामानामाव इनिचेष्म ॥ अन्यप्रवतिरेकान्याक्षोक्तमिल्लभयद्वारादेपतदेतु
मिल्लेन्द्रन्दद्यात्यकार्येनेत्तरामिल्लवारणान्ययामिल्लिग्रमगादितिदिग ॥ ४ ॥

विनिपरिणामीरपुजलजीवनी ॥ विनिनोदेनुव्यवर्म ॥ सपि
मामगगानगनिवनिदेनुना ॥ दोपभव्यनोरेवम ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हैं देवद्यरमामिन्द्रादृ० यनु खक्षणभूत्ये तेम्यनिपरिणामीजे पुनरुत्था तथाजी
दृ० तेहनीम्यनिनोदेनुके० श्वेष्माकारणतेभूत्य नेव्यरमामिन्द्रायजाणु गतिम्य

तिपरिणत सर्वज्ञव्यनुंजे एकज्ञव्यलाघवें कारणसिद्धहोय तेष्वेऽज्ञव्यजाणवा, तेथी ज्ञानादिगत्यपेक्षाकारण जलादिज्ञव्यनेविष्ये धर्मास्तिकायादिक ऋग्यलक्षणनी अति व्याप्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणे वेहुऽज्ञव्यनोरे ॥ ५ ॥

सद्भेजउर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिवंध ॥ गगनेश-
नंतरेकहीयनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इवेधर्मास्तिकायनेविष्ये प्रमाणकहेरे. जोगतिनेविष्ये धर्मास्तिकायनो प्रति वंधकेऽनियमनहोय तोसहज उर्ध्वगतिगामीजे मुक्तकेऽसिद्धजीव तेएकसमयें लोकाभ्यजाय. एहवेस्वज्ञावें अनंतगगनेजता हृजीखगें फिरवानारसनो धंधटलेनही, केमके अनंतालोकाकाशप्रमाणें एक श्रलोकाकाशरे, तेमांलोकाकाशाने गतिहेतुपुणुरे, तेथीश्रलोकामां सिद्धगतिनहोयएमतो कल्युंजायनही, पणधर्मास्तिकायविना लोकाकाशव्यवस्थाजनहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादावपि दंकविशिष्टाकाशसत्वेनेवहेतुतास्यादितिनर्किञ्चिदेतत् वीजुं अन्यस्वज्ञावपणे कविपतश्चाकाशनेस्वज्ञावांतर कदपनाते अयुक्तरे ॥ माटेगतिनिवंधप्रमुख धर्मास्तियकाऽज्ञव्य अवश्यमानबुं

जोथितिहेतुअधर्मनज्ञापीये ॥ तोनित्यथितिकोइठाण ॥ ८ ॥ गतिवि-
एहोवेपुज्जलजंतुनी ॥ संज्ञालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इवे अधर्मास्तिकायनेविष्ये प्रमाणदेखाडेरे. जोसर्वजीवपुज्जलने साधारण यितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायज्ञव्य नकहियेंतो कितुधर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्त गत्यज्ञावे श्रालोकेस्तित्यज्ञाव एमकहियेंतो श्रलोकाकाशें कोइकस्याने गतिविना पुज्जलजीवज्ञव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइये. वीजुंगतिस्थिति खतंत्र पर्यायरूपरे, जेमगुरुत्व लघुत्व एकने एकाज्ञावरूप कहेतां विशेषप्राहक प्रमाणनयी, तेमाटेकार्यज्ञेदें अपेक्षाकारण झव्यनेद अवश्यमानवो. धर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्तगत्यज्ञावें स्तित्यज्ञावकही, अधर्मास्तिकाये अपवर्पिये, तो अधर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्त स्तित्यज्ञावेगत्यज्ञावकही धर्मास्तिकायनोपण अपलापयाय, जेमनिरंतर गतिस्वज्ञावें झव्यनकहेवोजोइये तोनिरंतर स्थितिस्वज्ञावेपण केमकहीये ? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांजदीने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एवेऽज्ञव्य असंकीर्णस्वज्ञावेमानवा ॥ ८ ॥

सर्वज्ञव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक

अलोकप्रकारेभापिजे ॥ तेहज्ञव्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इवे आकाशज्ञव्यनुं लक्षणकहेरे सर्वज्ञव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश-

धधकेऽ क्षेत्रगत्वजाणवी, अनेसम्यक्तविनाजेथगीतार्थं तथागगीतार्थं निश्चीन स्वस्वानि
निवेशं हरकदाग्रहमार्गं पद्मार्गे, तेसर्वजातिश्रधसरिमा जाणवा, तेजोरुजाणीकरे
तोपणजन्मुन्होय ॥ उक्तच ॥ सुदरखुद्दीडक्य घुश्चपिण्डुदरद्दोऽ ॥ माटेऽद्वयगुणप-
र्यायज्ञेदपरिज्ञानेकरीने सूपूसम्यक्तवथादरो, एहितोपदेशरे ॥ २ ॥

धर्मच्छ्रधर्महगगनसमयवली ॥ पुज्जतजीवजएह ॥ पद्भव्य
कह्योरश्रीजिनशासने ॥ जासनआदिनहेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मकेऽ धर्मास्तिकाय अनेथधर्मकेऽ अधर्मास्तिकाय तथागगनकेऽ आका-
जास्तिकाय तथासमयकेऽ कालङ्घव्य तथाश्रासमय जेहनु वीजुंनामते वलीपुञ्जयकेऽ
पुञ्जास्तिकाय अनेजीवकेऽ जीवास्तिकाय ॥ एपटुङ्घव्यश्रीजिनशासननेविषे कहारे,
जेनोऽद्वयजाति तथापर्यायप्रवाहे आदितथा ठेहकेऽ अतन्यी, एठमध्ये एककालवर्जने
चाकीपाचङ्घव्यते अस्तिकायकहिये अस्तय प्रदेशास्ते कायतेशब्दायते इतिव्युत्पत्ते ॥
एरीतेप्रदेशनोसवधरे, माटेश्रस्तिकायकहिये अनेकालङ्घव्यने प्रदेशसधातन्यीमाटे
अस्तिकायनकहिये, केमके जे एकसमयते वीजासमयने मिखेनहीमाटे एमनीजापण
धर्मधर्माकाशाद्यैकमन परश्चिकमनतकालविनास्तिकाया जीवमृतेचाप्यकर्तृणि इत्या-
दिकसाधर्म्यं वेधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाप्रथमी जाणबु ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुञ्जखजीवने ॥ ऊपनेजखजेमहोय ॥ तासअ
पेद्यारेकारणलोकमा ॥ धरमङ्घव्यरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथम धर्मास्तिकायङ्घव्यनु खकणकहेरे गतिपरिणामीजे पुञ्जत तथा
जीवङ्घव्य ते सोकेऽ चतुर्दशरज्वात्मक आकाशखडतेमारे तेनुजेथपेक्षाकारण परि
णामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनादि क्रियापरिणत ऊप
केऽ मत्स्यतेनेजेम जलथपेक्षाकारणरे तेहनीपरेथपेक्षाकारणते धर्मास्तिकायङ्घव्य
जाणबु, स्यखेजपक्षिया व्याकुखतथाचेष्टाहे स्थितानावादेव नजवति ननुजलाजावादिति
गत्यपेक्षाकारणेमानाजाव इतिचेन्न ॥ अन्वयव्यतिरेकाज्यालोकसिङ्घव्यनहारादेवतङ्गु
सिङ्घरन्यथात्यकागणेनेतरासिद्धिकारणान्यथासिङ्घप्रसगादितिदिग् ॥ ४ ॥

यितिपरिणामीरेपुञ्जखजीवनी ॥ यितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि
साधारणगतिथिद्वेतुता ॥ दोयङ्घव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ द्वेथधर्मास्तिकायङ्घव्यनु खकणकहेरे तेस्यितिपरिणामीजे पुञ्जत तथाजी
वङ्घव्य तेहनीस्यितिनोहेतुकेऽ अपेक्षाकारणजेङ्घव्य तेथधर्मास्तिकायजाणबु गतिम्य-

तिपरिणत सर्वज्ञव्यनुजे एकज्ञव्यलाघवे कारणसिद्धहोय तेष्वेज्ञव्यजाणवा, तेथी ज-
खादिगत्यपेक्षाकारण जलादिज्ञव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक ऋब्यलक्षणनी अति व्या-
स्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणे वेहुज्ञव्यनोरे ॥ ५ ॥

सहेजउर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिवंध ॥ गगनेच्छ-
नंतरेकदीयेनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेवेधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणकहेरे. जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रति-
वंधकेऽ नियमनहोय तोसहज उर्ध्वगतिगामीजे मुक्तकेऽ सिद्धजीव तेएकसमये लोका-
येजाय. एहवेंसज्जावें अनंतगगनेजता हजीखगें फिरवानारसनो धंधटलेनही, केमके अ-
नंतादोकाकाशप्रभाणे एक अदोकाकाशरे, तेमांदोकाकाशने गतिहेतुपलुंठे, तेथीश्वदो-
कमां सिद्धगतिनहोयएमतो कल्युंजायनही, पणधर्मास्तिकायविना दोकाकाश व्यवस्याज-
नहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएव हि दोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेधटादावपि दंमवि-
शिष्टाकाशसत्वेनेवहेतुतास्यादितिनार्किचिदेतत् वीजुं अन्यसज्जावपणे कदिपतथाकाशने-
सज्जावांतर कट्टपनाते अयुक्तरे ॥ माटेगतिनिवंधप्रमुख धर्मास्तियकाज्ञव्य अवश्यमानवुं

जोथितिहेतुअधर्मनभाषीये ॥ तोनित्यथितिकोश्चाण ? ॥ गतिवि-
णदोवेरेपुज्जलजंतुनी ॥ संज्ञादोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हेवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेरे. जोसर्वजीवपुज्जवने साधारण
थितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायज्ञव्य नकहियेतो कितुधर्मास्तिकायाजावप्रयुक्त गत्यज्ञा-
वे आखोकेस्तियज्ञाव एमकहियेतो अखोकाकाशों कोइकस्याने गतिविना पुज्जलजी-
वज्ञव्यनी नित्यस्तिपामिजोइये वीजुंगतिस्तिति स्तंत्र पर्यायरूपरे, जेमगुरुत्व द-
शुत्व एकने एकाज्ञावरूप कहेतां विशेषयाद्वक प्रमाणनवी, तेमाटेकार्यजेदें अपेक्षाका-
रण ऋज्ञजेद अवश्यमानवो. धर्मास्तिकायाजावप्रयुक्तगत्यज्ञावें स्तियज्ञावकही, अधर्मा-
स्तिकाये अपदापियें, तो अधर्मास्तिकायाजावप्रयुक्त स्तियज्ञावेगत्यज्ञावकही धर्मास्ति-
कायनोपण अपसाप्याय, जेमनिरंतर गतिस्तज्जावे ऋज्ञनकहेवोजोडये तोनिरंतर स्ति-
तिस्तज्जावेपण केमकहीयें ? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांजदीने धर्मास्तिकाय
अधर्मास्तिकाय एवज्ञव्य असंकीर्णसज्जावेमानवा ॥ ७ ॥

सर्वज्ञव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ दोक

अदोकप्रकारेजापिर्ज ॥ तेहेज्ञव्यअवकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हेवे आकाशज्ञव्यनुं खद्धणकहेरे. सर्वज्ञव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश-

धधकेऽ हैशरूपजाणवी, अनेसम्यस्तविनाजेशमीतार्थं तथाश्वगीतार्थं निश्रीत स्वस्तानि
निवें इठकदाग्रहमार्गं पड्यारे, तेसर्वजातिश्वसरिद्या जाणवा, तेजोरुजुजाणीकरे
तोपणन्नजुनहोय ॥ उक्तच ॥ सुदरखुक्षीङ्कय चहुश्पिणसुदरहोऽ ॥ माटेऽद्वयगुणप-
र्यायज्ञेदपरिज्ञानेकरीने सूधुसम्यस्तव्यादरो, एहितोपदेशरे ॥ २ ॥

धर्मधर्मद्वयगगनसमयवली ॥ पुज्जलजीवजएह ॥ पट्ठव्य
कहारेश्रीजिनशासने ॥ जासनआटिनहेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मकेऽ धर्मास्तिकाय अनेथधर्मकेऽ अधर्मास्तिकाय तथागगनकेऽ आका-
शास्तिकाय तथासमयकेऽ कालझव्य तथाश्वसमय जेहनु वीजुनामरे वकीपुज्जलकेऽ
पुज्जलास्तिकाय अनेजीवकेऽ जीवास्तिकाय ॥ एपट्ठव्यश्रीजिनशासनेविषे कह्यारे,
जेनोऽद्वयजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा रेह्केऽ अतनथी, एठमध्ये एककालवर्जनी
वाकीपाचझव्यते अस्तिकायकहियें अस्त्यथ प्रदेशास्तै कार्यतेशब्दायते इतिव्युत्पत्ते ॥
एरीतेप्रदेशनोसवधरे, माटेश्रस्तिकायकहियें अनेकालझव्यने प्रदेशसधातनथीमाटे
श्रस्तिकायनकहियें, केमके जे एकसमयते वीजासमयने मिलेनहीमाटे एमवीजापण
धर्मधर्मकाशाद्यैकमन परविकमनतकालविनास्तिकाया जीवमृतेचाप्यकर्तुणि इत्या
दिकसाधर्म्यं वैधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाप्रथमी जाणवु ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुज्जलजीवने ॥ ऊपनेजदाजेमहोय ॥ तासञ्च
पेक्षारेकारणदोकमा ॥ धरमझव्यरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमाप्रथम धर्मास्तिकायझव्यनु खक्षणकहेरे गतिपरिणामीजे पुज्जल तथा
जीवझव्य ते खोककेऽ चतुर्दशरज्वात्मक आकाशपडतेमारे तेनुजेशपेक्षाकारण परि-
णामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनादि क्रियापरिणत ऊप
केऽ मस्त्यतेनेजेम जलशपेक्षाकारणते तेहनीपरेशपेक्षाकारणते धर्मास्तिकाय झव्य
जाणवु, स्थेजपक्षिया व्याकुक्षतयाचेष्टाहेत्विधाजावादेव नज्जवति ननुज्जलाज्ञावादिति
गत्यपेक्षाकारणेमानाजाव इतिचेन्न ॥ अन्वयव्यतिरेकान्याखोकसिझव्यपहारादेवतझेतु
सिझेकरन्यथात्यकारणेनेतरासिलकारणान्यथासिझिप्रसगादितिदिग् ॥ ४ ॥

थितिपरिणामीरेपुज्जलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि
साधारणगतिथतिदेतुता ॥ दोयझव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेथधर्मास्तिकायझव्यनु खक्षणकहेरे तेस्यितिपरिणामीजेपुज्जल तथाजी
झव्य तेहनीस्तितिनोहेतुकेऽ अपेक्षाकारणजेझव्य तेथधर्मास्तिकायजाणवु गतिस्थि-

तिपरिणत सर्वज्ञव्यनुंजे एकज्ञव्यलाघवे कारणसिद्धहोय तेष्वेऽज्ञव्यजाणवा, तेथी ज-
स्वादिगत्यपेक्षाकारण जलादिज्ञव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक ज्ञव्यलक्षणनी अति व्या-
स्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणे वेहुऽज्ञव्यनोरे ॥ ५ ॥

सहेजउर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिवंध ॥ गगनेआ-
नंतरेकहीयेनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इवेधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणकहेरे जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रति-
वंधके० नियमनहोय तोसहज ऊर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेष्वकसमये लोका-
ग्रेजाय. एह्वेंसज्जावे अनंतगगनेजता हजीखगें फिरवानारसनो धंधटबेनही, केमके अ-
नंतालोकाकाशप्रमाणे एक अलोकाकाशरे, तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपुण्ठे, तेथीअलो-
कमां सिद्धगतिनहोयएमतो कहुंजायनही, पणधर्मास्तिकायविना लोकाकाश व्यवस्थाज-
नहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादावपि दंमवि-
शिष्टाकाशसत्वेनवेहेतुतास्यादितिनर्किञ्चिदेतत् वीजुं अन्यसज्जावपणे कवितश्चाकाशने-
स्वज्ञावांतर कल्पनते अयुक्तरे ॥ माटेगतिनिवंधप्रमुख धर्मास्तियकाङ्गव्य अवश्यमानबुं

जोयितिहेतुअधर्मनभाषीये ॥ तोनित्ययितिकोइराण ? ॥ गतिवि-
एहोवेरेपुङ्गलजंतुनी ॥ संज्ञालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेरे जोसर्वजीवपुङ्गलने साधारण
यितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायज्ञव्य नकहियेतो कितुधर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्त गत्यज्ञा-
वे आलोकस्तित्यज्ञाव एमकहियेतो अलोकाकाशों कोइकस्थाने गतिविना पुङ्गलजी-
वज्ञव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइये. वीजुंगतिस्थिति स्तंत्र पर्यायरूपरे, जेमगुरुत्व ल-
घुत्व एकने एकाज्ञावरूप कहेतां विशेषप्राहक प्रमाणनथी, तेमाटेकार्यज्ञेदें अपेक्षाका-
रण ज्ञव्यज्ञेद यवज्यमानवो धर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्तगत्यज्ञावे स्तित्यज्ञावकही, अधर्मा-
स्तिकाये अपवर्पिये, तो अधर्मास्तिकायाज्ञावप्रयुक्त स्तित्यज्ञावेगत्यज्ञावकही धर्मास्ति-
कायनोपण अपवापथाय, जेमनिरंतर गतिसज्जावे ज्ञव्यनकहेवोजोइये तोनिरंतर स्थि-
तिसज्जावेपण केमकहीये ? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांजलीने धर्मास्तिकाय
अधर्मास्तिकाय एवेज्ञव्य असंकीर्णसज्जावेमानवा ॥ ७ ॥

सर्वज्ञव्यनेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक

अलोकप्रकारेन्नापित्ते ॥ तेहज्ञव्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इवे आकाशज्ञव्यनुं लक्षणकहेरे. सर्वज्ञव्यनेजे सर्वदासाधारण

आपे तेश्वनुगत एकआकाशस्तिकाय सर्वधारकहि॒ये, इहपक्षीतेहपक्षी इत्यादिव्यव-
हारयदेशन्नेदेहोय तदेशीश्वनुगतश्चाकाशज पर्यन्तसन्नहोय, तदेशोर्ध्वंनामावृष्टिस्त्रूत्ताज्ञा-
वादिनातप्त्ववहारोपपत्तिरिति वर्ज्जमानायुक्त ॥ नानवद्यतस्याजामादिनिष्ठवेनानुच्छयमा-
नङ्गव्याधाराशापलाप्रसगात्तावत्प्रतिसधानेषि लोकव्यवहारेणाकाशदेशप्रतिसधयो
क्तव्यवहाराच्च ॥ एमआकाश लोकालोकज्ञेदें द्विप्रिधनाप्युरे यत स्त्र छुपिहेआगा
सेपन्नते, लोकाशागसेय अलोकाशागसेय ॥ ७ ॥

धर्मादिकसुरेसयुतलोकरे ॥ तासवियोगञ्जलोक ॥ तेनिर
वधिरेरेच्चवधिच्चन्नावने ॥ वलगीखागेरेफोक ॥ समण ॥८॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकथी सयुक्त जेआकाश तेलोकाकाशरे, अनेते धर्मास्ति
कायादिकनो जिहावियोगरे तेश्वलोकाकाशकहि॒ये तेश्वलोकाकाश निरवधिरे, एट्टे
तेहनोरेहनन्थी कोइएमकहेझेके जेमलोकनेपारें अलोकनोरेहरे, तेमथागलपणहूरे
तेहनेकहि॒येजे, लोकतोजावरूपरे । तेमातोअवविधरेरे, पणथागल अलोकमा केसथ-
न्नावरे माटेतिहा असोकावधिपणुकेमधरे ? शशाशृगकोणनो अवधिहोय ? अनेजोनाव-
रूप आत्मामानियेतो तेश्वन्यङ्गव्यरूपनन्थी आकाशदेशस्वरूपनेतो तदतपणुकहेता व
दतोव्याधातहोय माटेश्वलोकाकाश अनुजाणबु ॥ ८ ॥

वत्तणलक्षणसर्वव्यवहतणो ॥ पञ्जवञ्चव्यनकाल ॥ उच्चव्य
नतनीरेच्चव्यञ्जेदयी ॥ उत्तराध्ययनेरेज्ञाल ॥ समण ॥९॥

अर्थ ॥ इचेकात्तङ्गव्यने सक्षणेकरीकहेरे जेकालते परमार्थथीङ्गव्यनन्थी, तोशुसर्व-
ङ्गव्यनो वर्त्तनालक्षण पर्यायजरे ! तेपर्यायनेपिये अनादिकालीन ङ्गव्योपचारथनुस-
रीने कालङ्गव्यकहि॒ये अतएत पर्यायेङ्गव्यनेदयी अनतकालङ्गव्यनेदनीजाल तेश्रीउ-
त्तराध्ययनेरे, तथाचतत्सूत्र ॥ धम्मोथागास दधिष्ठिमाहिय ॥ अणताणिय दवाणि
कालोपुग्लजतगो ॥ १ ॥ टीकाएतदुपजीव्यान्यत्राप्युक्त धर्मधर्मकाशाव्येकेमत
परत्रिकमनतमिति ॥ तेमाटे जीप अजीपङ्गव्यजेथनतरे, तेहनीवर्त्तनापर्यायज्ञणीज का-
सङ्गव्य सूत्रनेपिये अनतकद्याजाणवा ॥ १० ॥

जीवञ्जीवजममयेतेकत्वं ॥ तेणेकेमजुदोरेतेह ? ॥ एकवर्खा
ऐरेच्चाचारयझ्म्यु ॥ धरताशुन्नमतिरेह ॥ समण ॥११॥

अर्थ ॥ कठयीपणसूत्रं जीगाजीमथी अचिन्त कालकहोरे, तेदेशामेते समयरेऽसूत्रं
जरातेरेकालने जीप तथायजीपरूपजक्ष्योरे तेकारणे कालने जुदोकेऽनिन्द्रङ्गव्यरूप केम
वहि॒ये तथाचोक जीगनिगमादिसूत्रे किमयनतेकात्रोचिपञ्चश्च गोयमा जीगचेप-

अजीवाचेवत्ती ॥ एकआचार्यतो सिद्धांतनापाठने अनुसारे शुभमतिनीरेखाधरतां कालद्वयने एरीतेवखाणेरे ॥ ३१ ॥

वीजाज्ञापेरेजोइसचकने ॥ चारेंजेथितितास ॥ कालच्छ्रेप-
द्यारेकारणद्वयरे ॥ पद्मनीनगवझास ॥ सम० ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ तथावीजाआचार्य एमज्ञापेरे जेज्योतिपचकनेचारे परत्वापरत्व नवपुराणा-
दिज्ञावस्थितिरे, तेहनुं अपेक्षाकारण मनुष्यलोकमां कालद्वयरे. अर्थनेविषे सूर्यकि-
योपनायक ऊव्यनुं चारकेऽ फिरबुं तेकेत्रप्रमाणज कट्टपुंघटे, माटेएहुंकालद्वयक-
हियें तोज श्रीनगवत्तीसूत्रमां ॥ कट्टणंज्ञेतेदवापन्नता, गोयमा, रविहादवपन्नता धर्ममठी-
काए जाव अद्वासमए ॥ एवचनरे तोतेनुनिरुपचरितजव्याख्यानघटे अनेकालद्वयवर्त-
नापर्यायने साधारणापेक्षा ऊव्यनकहियेंतो गतिस्थित्यवगाहनासाधारणपेक्षा कारण-
पणे धर्माधर्माकागास्तिकाय सिद्धशया तिहांपण अनाश्वासआवे माटेएअर्थयुक्तिग्रा-
ह्यरे तेशीकेवलआज्ञाये� ग्राह्यकह्युं पणतेशीकेमसंतोपधराय ? ॥ ३३ ॥

धर्मसंग्रहणरेष्टोयमतकह्या ॥ तत्त्वार्थमारेजाण ॥ अनपे
द्वितज्व्यार्थिकनयमते ॥ वीजुंतासवखाण ॥ सम० ॥ ३३ ॥

अर्थ ॥ एवेमत धर्मसंग्रहणीयंथमां श्रीहरिनिःसूरियें कह्याठे, तथाचतज्ञाया ॥
जंवत्तणांश्चूलो कालोदवस्सचेवपज्ञार्त ॥ सोचेवतत्तोधर्ममो कालस्सवजस्सजोलो
एत्ति ॥ ३ ॥ तथातत्त्वार्थसूत्रेषण एवेमतकह्यारे ॥ कालथेत्येके इतिवचनात् ॥ वीजुंम
तते तत्त्वार्थनेव्याख्याने, अनपेक्षित, ऊव्यार्थनयनेमते कह्युंरे स्थूललोकव्यवहार
सिद्ध एकालद्वय अपेक्षारहितजाणुं अन्यथा वर्तनापेक्षाकारणपणेजोकालद्वय
साधियें, पूर्वापरादि व्यवहारविलक्षण परत्वापरत्वादि नियामकपणे दिग्भूत्यपणे
सिद्धशया अनेजो ॥ आकाशमवगाहाय तदनन्यादिगन्यथा ॥ तावप्येवमनुष्टेदानाभ्यां
चान्यकुड़ाहृतं ॥ एसिद्धसेनदिवाकरकृतनिश्चयद्वात्रिंशिकार्थविचारी ने आकाशशीय
दि कार्यसिद्धहोय, एममानीयेतोकालद्वयकार्यपणेकथंचित्तेहश्रीज उपपन्नहोय. तस्मा
त्कालथेत्येकेइतिसूत्रंअनपेक्षितद्वयार्थिकनयें नेवेतिसूक्ष्मदृष्ट्याविज्ञावनीये ॥ ३४ ॥

मंदृगतेंअणुयावतसंचरे ॥ नहप्रदेशएकेठोर ॥ तेहसमय
नोरेज्ञाजनकादाणुं ॥ इमज्ञापेकोइर्जर ॥ सम० ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्वयाधिकारें दिगंवरप्रक्रिया उपन्यासेठे, जेएकनन्नप्रदेशने गोर
केऽ मंदृगति अणुकेऽ परमाणुजेटदेंकादें संचरे तैपर्यायनेसमयकहियें रूपते

कालपर्यायसमयनु जेनाजन तेकालाणु कहिये तेएक आकाशप्रदेश एकपरमा
ए, एमकरता सोकाकाशप्रदेशप्रमाण कालाणुहोय, एरीतं कोइक ठर के० जेनाजास
दिग्वरज्ञापेरे उक्तचक्रव्यसम्हे० रथणाणरासीश्व तेकालाणुथसददवाणि ॥३४॥

योगशास्त्रनारेत्रतरश्लोकमा ॥ एपणमतठेरेइष्ठ ॥ लोक
प्रदेशेरेआणुआजूजुआ॥मुख्यकालेतिद्वादिष्ठ॥सम० ॥१५॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अतरश्लोकमां एदिग्वरमतपणश्टरे केमके तेश्लोकमा सो-
कप्रदेशे जूजूआ कालनाथणुआ तेनेमुख्यकालकहोरे तथाचतत्पाठ ॥ सोकाकाशप्रदेश-
स्था जिन्नाकालाणवस्तुये ॥ जावानापरिवर्तयि मुख्यकाल सरुच्यते ॥ १५ ॥

प्रचयन्तर्ध्वतारेएहनोसन्नवे ॥ पूर्वापरपरपर्याय ॥ तिर्यक्
प्रचयघटेनदीखधनो ॥ विणप्रदेशसमुदाय ॥ सम० ॥१६॥

अर्थ ॥ एकालाणुचक्रव्यनो ऊर्ध्वताप्रचयसन्नवे, जेममृदुचक्रव्यने स्थास, कोस, कुसूवा-
दि पूर्वापरपर्यायरे, तेमएहने समयाविप्रमुख पूर्वापरपर्यायरे, पणसधनोप्रदेश समु-
दाय एकालचक्रव्यनेनथी, माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरे तिर्यक्प्रचयसन्नवेनदी तेतिर्य-
क्प्रचयनथी, तेथीजिकालचक्रव्यने अस्तिकाय नकहिये वलीएहने परमाणुपुञ्जलनीपरे
तिर्यक्प्रचय योग्यतापणनथी, माटेउपचारेचक्रव्यरे तेथीपण कालचक्रव्यने अस्तिकाय
पणुनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमच्छाणुगतीनीरेखेइहेतुता ॥ धर्मचक्रव्यच्छाणुयाय ॥ साधार
एतारेखेइएकनी ॥ समयखधपणयाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिग्वरपक्ष प्रतिवादेङुपेरे एमजोमदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायसमयज्ञा-
जन चक्रव्यसमय आणुकटियेतो मदाणुगतिहेतुतारूप युणज्ञाजन तेधर्मास्तिकायाणु-
पण सिद्धहोय एमधर्मास्तिकायादिक आणुनोपण प्रसगथाय, अनेजो सर्वसाधारण
गतिहेतुतादिकवेइ धर्मास्तिकायादिक एकस्कधरूपज चक्रव्यकटियें, देशप्रदेशनीक-
व्यना तेहनीव्यवहारानुरोधे परीकरीएतो सर्वजीवाजीवचक्रव्य साधारणवर्तना हेतुताणु
एखेइने कालचक्रव्यपण सोकप्रभाणे एककटियेजोइयें, धर्मास्तिकायादिकने अधिकारे
साधारणगति हेतुताद्युपस्थितिकचक्रपक्ते अनेकासचक्रव्यकचक्रपक्ते मदाणुवर्तना हेतुतोप
स्थितिजरे, एकव्यनायेतो अनिनिवेशविना धीजुकोइकारण दिग्वरीयोमाजणातुरुनथी

अप्रदेशतारेसुत्रेऽनुसरी ॥ जोआणुकहियेरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनथीजोडीयें ॥ उपचारेसवीएह ॥ सम० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हृदेजोएमकहेगोजे सूत्रेकालप्रदेशकहोरे तेहनेश्चनुसारे कालाणुकहियें तोसर्वजीवाजीवनापर्यायरूपनकालकहोरे तेमांविरोभनश्ची तोऽव्यक्तावपण केमक-होरो माटेकालने ऋग्वेदवचन तथाकोकाकाश प्रदेशप्रमाणश्चनुवचन एसर्व उप-चारेंजोडीयें मुख्यवृच्छियेते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतरे, अतएव ॥ कालश्रेत्येके ॥ इहांएकवचनते सर्वसंमतत्वाज्ञावसुचब्यो ॥ १७ ॥

पर्यायेजेमन्नाप्योऽव्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकारणे ॥ तेमच्छानुतानोरेसार ॥ समष ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हृदे उपचारप्रकारज देस्ताडेरे ॥ पनेवऽव्याणि ॥ एसंख्यापूरणनेश्चर्थं जेमप-र्यायरूप कालनेविपे ऋग्वेदप्रणालोउपचार जगवत्सादिकनेविपे करियर्थेयं, तेमस्त्रे का-खऽव्यने अप्रदेशताकहियेर्थेयं, तथाकालपरमाणुपण कह्याने. तेयोजननेकारणे खोका-काशप्रदेशस्य मुक्ताणुनेविपेज, योगदान्वनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचारकस्योरे, तेजाणवो. मुख्यकालश्लोकवचनानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचारविषयइ-त्वर्यः ॥ अतएव मनुप्यदेवमात्रवृच्छिकालऽव्यवैवर्ण्यंतितेपामपिमनुप्यहेत्राविश्वाका-शादोकालऽव्योपचारएवगरणमितिद्विमात्रमेतत् ॥ १८ ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लिखियेंपुद्गतनेद ॥ मद्भज
चेतनारेगुणवलीजाएियोंजीवअस्पद्यवेद् ॥ समा०॥१९०॥

अर्थ ॥ हृदेपुक्त तथाजीवऽव्य त्वंस्त्रेपेकहेदे. जेवर्ण, गंध, रस, न्यगार्दिकगुणे पुक्त-खऽव्यनो अन्यदऽव्यनीजेदत्तियें. तेपुक्तसऽव्यः अनेजीवऽव्य—ते महृज चेतनागुणर्थ-तेत्वाणेजसर्व अनेतनऽव्यवी जित्वर्थे. ते व्यवहारनयथी रूप तथावेदसहितपर्यंते अनेनिश्चयनयथी रूपतथावेदरहितरे उक्तंच ॥ अरमसर्वरमगंध अवद्वचेयणागुणम-सदं ॥ जाणश्चिगगद्यणं जीवमरीदित्तनंगाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएन्नांप्यारेसंखेपंकरी ॥ उव्यतपापद्जेद ॥ विन्नारेजा
णिश्रुतयकी ॥ सुजग्नाखदोगनखद ॥ सम० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एरीते उव्यनानेंपंकरी ठनेदन्नांप्यारे. तेविन्नारे श्रुतदेव० निळांतश्चर्ण। जारीने खेदरहितयदा प्रवचनदादिएपणानो सुजग्नेव० सुव्योध तेपासो ॥ ११ ॥
॥ नोपनगिरिज्ञूषपत्रिमध्यानेदनेषु ॥ देवी ॥

॥ दात्र इन्यान्नां ॥

द्वेजेदगुणानाज्ञापीजे ॥ निहांश्चनित्ताकहियेनी ॥ नहृत
तायल्लुताज्ञानि ॥ व्यक्तिरूपनाखदियेनी ॥ उव्यतावद

काखपर्यायिसमयनु जेनाजन तेकाखाणु कद्दियं तेपाहो आगामप्रदेशे गकेरुपरमा
ए, एमकरता खोकाकाशप्रदेशप्रमाण काखाणुद्वेष, अरीते कोडह हर कें जेनानाम
दिगवरजापेठे उक्तचक्रव्यसंप्रदे ॥ रयणाणरासीञ्ज तेकाखाणुअमरात्माजि ॥४॥

योगशास्त्रनारेत्रतरलोकमा ॥ एपणमतहेरेइ ॥ खोक
प्रदेशेरेअणुआजुञ्चामा।। सुरत्यकाखेतिदादिटाममण ॥५॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अतरश्लोकमां एदिगवरमनपणइष्टरे केमके तेश्लोकमा छो
कप्रदेशें जूङ्था काखनाअणुआ तेनेमुग्यफालकहोत्रे तथानत्याह ॥ खोकाकाशप्रदेश-
स्या निन्माकाखाणवस्तुवे ॥ ज्ञानापरित्याये मुग्यकाख सञ्चयते ॥ १५ ॥

प्रचयउर्ध्वतोरेहनोसज्जवे ॥ पूर्वप्रपरपर्याप ॥ तिर्यु
प्रचयघटेनदीखधनो ॥ विणप्रदेशसुदाय ॥ सम०॥१६॥

अर्थ ॥ एकाखाणुद्वयनो ऊर्ध्वताप्रचयसज्जवे, जेममृदुद्वयने स्थास, कोस, कुसूबा-
दि पूर्वपरपर्यापे, तेमपद्वने समयाविप्रमुत पूर्वपरपर्यापे, पणरधनोप्रदेश समु-
दाय एकाखाणुनेनयी, माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरे तिर्युप्रचयसनदेनही तेतिर्य-
क्तप्रचयनयी, तेथीजकाखाणुनेश्चस्तिकाय नकद्दिये वहीणहने परमाणुपुञ्जवनीपरे
तिर्युप्रचय योग्यतापणनयी, माटेउपचारेद्वयरे तेथीपण काखाणुनेश्चस्तिकाय-
पणनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमअणुगतीनीरेखेहेतुता ॥ धर्मद्वयअणुयाय ॥ साधार
एतारेखेश्चएकनी ॥ समयखधपणयाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगवरपक्ष प्रतिवादेंदुपेठे एमजोमदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायिसमयजा-
जन द्वयसमय अणुकल्पियेतो मदाणुगतिहेतुतारूप युणजाजन तेधर्मास्तिकायाणु-
पण सिद्धहोय यमथधर्मास्तिकायादिक अणुनोपण प्रसगथाय, अनेजो सर्वसाधारण
गतिहेतुतादिकसेइ धर्मास्तिकायादिक एकस्कधरूपज द्वयकल्पिये, देशप्रदेशनीक-
द्वयना तेहनीव्यवहारानुरोधे पठीकरीएतो सर्वजीगाजीवद्वय साधारणवर्तना हेतुताणु-
पणेहेतु काखाणुपण खोकप्रमाणे एककल्पवोजोइये, धर्मास्तिकायादिकने अधिकारे
साधारणगति हेतुतायुपस्थितिकल्पकरे अनेकाखाणुव्यकल्पकते मदाणुवर्तना हेतुत्वोप
स्थितिजरे, एकद्वयनायेतो अनिनिवेशविना वीजुकोइकारण दिगवरीयोमाजणातुनयी
अप्रदेशतारेसूत्रेअनुसरी ॥ जोअणुकहियेरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनयीजोडीये ॥ उपचारेसवीएह ॥ सम० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हृवेजोगमकहेशोने सूत्रेकालप्रदेशकहोठे तेहनेत्रनुनारे काजाणुरहियेनोमर्यजीवजीवनापर्यायनपञ्चाकालकत्योठे तेमांपिरोधनवी तोडवकालपा केमकहोठो माटेकालने ऊर्ध्वस्वचन तथावोकालाग्र प्रदेशप्रमाणप्राणुवचन एसर्व उपचारेजोटीये मुख्यगृन्तियेते पर्याप्तपञ्चकालज नूत्रनंमत्तरे, अनपत्र ॥ काजधेत्येके ॥ इद्धाण्पकवचनते नर्यनंमत्तवाजाद्युत्तरो ॥ १७ ॥

पर्यायिजेमनाप्योऽव्यन्तो ॥ न्यन्यास्त्रश्वपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकागणे ॥ तमच्छानुनानेग्नार ॥ ८८० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हृवे उपचारप्रकारज देखावेठे ॥ पर्याप्तश्वानि ॥ एमांगायुरानेश्वर्ये तेमर्यायिष्यन कालस्फूर्यने अप्रदेशताकलियेठेये, नषाकालपरमाणुपण बहावे, नेमोनेमार्यो दोनावायाप्रदेशग्रथ षुक्लाणुरेविषेज, थोगदाक्षनामेनामेनमां वासानो श्रावारामाये, केजाण्यो. मुख्यकालस्फूर्यपचारादिवाहीनाप्रदेशतारस्त्रवारनिवाहांपचाराग्निपद्धत्यर्थः ॥ अतएव मनुष्यहेत्रसाप्रतिष्ठाकालस्त्रविसम्मुख्यदेशप्रतिष्ठाकालादेशप्रतिष्ठाकालोवाक्षफूर्योपचारएवशास्त्रमितिद्वाप्रभेदतु ॥ १८ ॥

वर्णगंधरसपामामादिवस्तु ॥ द्विन्यिष्यमुद्गात्रलेद ॥ गदन
चेतनारेगुणवदीजाणिया ॥ जीर्णस्फूर्यस्त्रदेव ॥ ८८० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ रघेषुक्षत तथाजीवठाय त्वंस्त्रेवेठे उद्दार्त, गद, रस स्त्रांदिवान्ते युत्स्फूर्यनो अन्यद्वलपीजेदलमिये, तेषुक्षतठाय लान्डावद्वद्वद—ते स्त्रूत वेवतामान्ते तेलहाणेजमर्य अपेतनेत्रव्ययमी जिल्ले ते द्वद्वहारन्दद्वदी रस त्वद्वेदम्भिस्त्रांये अनेनिधयनपर्य ॥ रपतपादेवदरहिते उत्तर ॥ द्वद्वहारन्दद्वदा ३ श्वद्वेदपामाम-स्तर ॥ जाण्यमिगगत्तु जीवमार्दिवस्त्रंठाप ॥ १९ ॥ १९ ॥

एमपल्लांप्योरन्तरेस्तरी ॥ द्वद्वहाराप्तन्दद ॥ द्विन्यिष्येत्तर
णिश्रतपर्य ॥ सुजगदहारन्दद ॥ ८८० ॥ २० ॥

शर्व ॥ एराते द्वद्वहारन्दर्पी द्वद्वहारन्दे तेविन्द्राने श्वद्वेद द्विवेदमार्दी
त्वार्दते रेददादिलदवा द्वद्वहारन्दिवान्ते सुजगदहारन्ददे तेविन्द्राने ३
१ रेददादिलदवा द्विवेदमार्दी १ द्वर्द ।

रेददादिलदवा द्वर्द ॥ द्विवेदमार्ददिवेद, १ द्वद्वह
स्त्रांदिवान्ति ॥ द्वद्वहारन्ददिवेद ॥ द्वद्वहारन्दद

व्यत्प्रमाणे ॥ परिवेदजेरूपजी ॥ प्रमेयत्वञ्चा
णागमसुपीम ॥ अगुरुखद्युत्परूपजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ द्वेषगुणनाज्ञेद सामान्यतत्रप्रक्रियाये कहियेरेये निहा १ अस्तित्वगुणतेक
हिये के जेहथी सङ्गततानो व्यवहारथाय २ वस्तुत्वगुणतेकहियेके जेहथी जातिव्यक्ति
रूपणु जाणियें जेमधटतेहिज सामान्यथी जातिरूपठे अनेकशिरोपयी तद्वक्तिरू
पठे अतएव अवग्रहे सामान्यरूप सर्वत्रजासेठे, अपायें विशेषरूप जासेठे, पुण्योपयोगे
सपृष्टवस्तुभृष्टयायठे तथा ३ झव्यजावजे गुणपर्यायाधारतानिव्यग्यजातिविशेषते
झव्यत्वणजातिरूपठे माटेगुणनहोय एहवीनेयायिकादिवासनायें आशका करवीनही,
केमके ॥ सहजुबोगुणा कमजुव पर्याया ॥ एहवीजजेनजात्रनी व्यवस्थाठे ॥ झव्यत्वंचेनुण
स्याद्यादिवक्त्वपर्याप्तकर्पंजागिस्यादितिरुकुचोद्यमेकत्वादिसरत्याया परमतेपि व्यजिचा
रेण तथाद्याद्यजावादेवनिरसनीय ४ प्रमाणेपरिठेद्यजे रूपप्रमाण विषयत्व ते प्रमे-
यत्व गुणकहियें, तेपणकथचित् अनुगत सर्वत्राधारणगुणठे परपरासंवधे प्रमाणत्वज्ञाने-
पण प्रमेयत्व व्यवहारथायठे, तेमाटेजे प्रमेयत्वगुणते स्वरूपयीअनुगतठे ५ अगुरुखद्युत्परू
प ते सूक्ष्मायाज्ञाप्राहीरे ॥ सूक्ष्मजिनोदिततत्त्वं हेतुजि नेवहन्यते ॥ आज्ञासिझतुतद्व
प्राप्त नान्यथावादिनोजिना ॥ अगुरुखद्युपर्याया सूक्ष्मा अवाग्नोचरा ॥ २ ॥

प्रदेवत्वश्चविजागीपुजल ॥ खेत्रजावजेव्यापिउंजी ॥ चेत
नतात्रनुजूतिश्चेतन ॥ जावच्छननुजवथापिउंजी ॥ मूर
ततारूपादिकसगति ॥ अमूर्ततातदनावोजी ॥ दशसा
मान्यगुणाप्रत्येके ॥ आरआरएजावोजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ६ जेयविजागीपुजल यावत्तरेवेरहे तावत्तरेवव्यापीपणु तेप्रदेवत्वनामा
रहोगुणजाणवो ७ चेतन्यत्वयुण तेआत्मानो अनुजवरूप गुणकहिये जेसुखड
सादिचित्तपियें एव्यवहारथायठे, जेहथीजाति, शूद्र, जम, कृत, सरोद्धणादि जीवन
धर्महोपयठे ८ एथीविपरीत जेअचेतनत्वयुण तेअजीवमात्रनो गुणठे ९ मूर्ततागुणते
रूपादिक सन्त्रिवेशाजिव्यग्यपुजन्नवज्ञव्यमात्रवृत्तिरे १० अमूर्ततागुणमूर्तत्वजानन
मनिपत्तरे ॥ अचेतनत्वामूर्तत्वयोथेतनत्वमूर्ततराजापरूपत्वाद्यगुणत्वमितिनाशकनीयथ
चेतनामूर्तज्ञवृच्छिकापंजनकनापंडेदकत्वेनव्यवहारविशेषनियामकत्वेनवत्पोरपि ध-
यव्युषणत्वात् नन् पर्युदासार्थकत्वात् नन्नगर्जपदवाज्यतायाधानुषणाशीतस्पर्श इत्यादी
व्यजिचारेणपरेणपरेपामप्यजापत्वानियामकत्वज्ञावातरमन्नावोहिक्याचिनु व्यपेक्षये

झ्यगुणपर्यायनो रास वाकावोध सहित.

३६४
धीरानंद, १८८५

तिनयाथ्रयणेनदोपाजावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणरे. तेमां ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व ३ चे-
तनत्व ४ अचेतनत्व, एचारगुणते झ्यगुणेविषे परस्परपरिहारे वेवेगुणरहे, तेमाटे प्र-
त्येके एकएकझ्यगुणेविषे आरआरगुणपामिये, एमविचारीनेजावो ॥ ४ ॥

ज्ञानदृष्टिसुखवीर्यफरसरस ॥ गंधवर्णएजाणोजी ॥ गति
थितिअवगाहनावर्तना ॥ देतुजावमनआणोजी ॥ चेत
नादिचारेभेदा ॥ विशेषगुणएसोलेजी ॥ पट्पुजलच्छ्रात
मनेतिनह ॥ अन्यझ्यगुणेटोलेजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य, एचारआत्मानागुणरे. ३ स्पर्श ४ रस ३
गंध ४ वर्ण, एचारपुजलना विशेषगुण शुद्धझ्यगुणेअविकृतरूप अविशिष्टरहे, तेमाटेएगु-
णकहा, विकृतस्वरूपते पर्यायमांजिखे एविशेषजाणबु. २ गतिदेतुता ४ स्थितिदेतुताइ
अवगाहनादेतुता ४ वर्तनादेतुता. एचारगुणतेधर्मस्तिकाय, अधर्मस्तिकाय, अनेआ-
काशस्तिकाय. तथाकालझ्यगुणना प्रत्येकेप्रत्येकेविशेषगुण जाणवा. एरीतेचारगुणयथा,
तेमां ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणेजीये, तेवारें सोखविशेष-
गुणयथा; तेमध्ये पुजलझ्यगुणे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मूर्त्तत्व, अचेतनत्व, एठगुणहोय,
अनेआत्मझ्यगुणने झान, दर्शन, सुख, वीर्य, अमूर्त्तत्व, चेतनत्व, एठगुणहोय. वीजांसर्वझ्य-
गुणने टोलेकेण समुदाय त्रणगुणहोय; एकपोतानो अचेतनत्वगुण, वीजोअमूर्त्तत्व, ब्री-
जोगतिस्थित्यादि, एमफलावीनेधारबु ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति ॥ गुणसामान्यकहायजी ॥ वि
शेषगुणपरजातिअपेद्वा ॥ ग्रहताचित्तसुहायजी ॥ विशेष
गुणरेसूत्रेनाधिया ॥ बहुस्वज्ञावआधारोजी ॥ अर्थतेह
किमगणिच्छाजावे ॥ एहथूलझ्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकहा, अनेविशेषगुणमां
पणकहा, तेनुंकारणकहेरे चेतनत्वादिचारगुण स्वजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेरे, तेथी
सामान्यगुणकहिये, अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकझ्यगुणी
स्वाथ्रय व्याहृतिकरेरे, तेमाटे विशेषगुणएकहिये ॥ परापरसामान्यवत्सामान्यविशेषगुण
मेपामितज्ञावा ॥ तथाझान, दर्शन, सुख, वीर्य, एचारआत्मविशेषगुणअनेस्पर्श, रस, गंध, वर्ण,
एचार पुजलविशेषगुण एमजेकह्यु, तेस्यूलव्यवहारजाणवो. जेमके अष्टो
एकत्रिशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुजलाथ्रनंताः इत्यादि

विशेषगुण अनतीथाय, तेरद्वयम् केमगणीशके?॥ तम्माद्वर्मस्तिकायानं गतिम्बित्यनगाह-
नावर्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणारथा पडेवास्तित्वादय सामान्यगुणास्तुप्रिक्षयाथपरिमि-
ताश्चेवन्याय पण्णांखक्षणपता खक्षणानिपटेवेतिहिकोनश्रद्धाति ॥ नाणचदंसंचेव
चरित्तचतत्वोत्त्वा ॥ वीरियउवर्त्तगोय एवंजीप्रस्तररुपण ॥ १ ॥ सन्धथआरउज्जोय प-
न्नावायातहेवय ॥ वण्णरसगंधफासा पुगलाण तुखगदण ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वनामसङ्ग-
णयोरन्यो न्येनातरीयक्त्वप्रतिपादनायेत्यादिपक्षितेर्विचारणीय ॥ ४ ॥

धर्मच्छ्रेपेदायेऽहर्व्याप्त्यगा ॥ स्वनावगुणाथीनाप्याजी ॥

निजनिजरूपसुख्यतादेह ॥ स्वनावगुणमरीढाप्याजी ॥

अस्तिस्वनावतिहानिजरूपे ॥ नावरूपतादेखोजी ॥ परथ

नावपरेनिजनावेपण ॥ अरथअनुज्ञविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्तिव्याहृतिसंवर्धे धर्ममात्रनीभिवक्षाकरीने इहास्वनामनेगुणयकी अ-
खगा केऽजूदा पडितेन्नाप्यारे, तेरद्वयना निजनिजके० आपआपणारूपनी मुख्यतादेहेने,
अनुवृत्तिसवधमात्र अनुसरीने, जेस्वनावरे तेनेजगुणकरीने, दार्थाकेपटेखाडवारे माटे
गुणविज्ञागकहिने स्वनावविज्ञाग कहियेत्रैये तिहाधयम अस्तित्वनावते निजरूपे ए-
टदेस्वद्वय, स्वखेत्र, स्वकाल, स्वनाव स्वरूपे नावरूपतादेसो जेमपरनामे नास्तित्वनाम
अनुज्ञवियेत्रैये, तेमनिजनावे अस्तित्वनावपण अनुज्ञविये त्रैये तेमाटे अस्तित्वनाम
तेखेखेरे एप्रथम अस्तित्वनावकहो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यतादेव ॥ नास्तित्वनावपरनावेजी ॥

परनावेपणसत्ताकहेता ॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे

मअसत्तानफुरे ॥ व्यजकअमिलनवसथीजी ॥ ठतोसरा

वगधनवीनासे ॥ जेमविसुनीरफरशथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वनाव इव्यनेविपे नमानीयेतो, परनावपेक्षायें जेमनास्तिता,
तेमस्वनावपेक्षायेपण नास्तिताथाता, सर्वशून्यताथइजाय, तेमादेस्वद्वयायपेक्षायेथ
स्तिस्वनाव सर्वथामानबो, एप्रथमगुण अनेपरनावेकेऽपरद्वयायपेक्षायें नास्तिस्वना-
वकहियें परनावेपण सत्ता, अस्तिस्वनामकहेता सर्वस्वरूपे अस्तिथयु, तेवारे जगत्पक
रूपथाय, तेतोसर्वशाश्व व्यवहारविरुद्धरे, माटेपरापेक्षायें नास्तिस्वनाव रे जेसत्तातेस्व
नामे वस्तुमाहेजजणापरे, माटेसत्त्वरे, जे असत्तातेस्वज्ञाने परभुखनिरीक्षणकरेठे तेथी
कद्यना ज्ञानविपयपणे असत्यरे, एहु वौद्धमतरे, तेनेयमनेकहेठे, जेसत्तानीपरे त

त्काद श्रसत्ताजेनश्रीस्फुरति, तेव्यंजक श्रणभिद्यावश्थी जाणवी, पण शुन्यपणाथी, तुष्टपणाथीकीनहीं, जेमरतुं माटीतुं सरावकेऽ घटठे, तेहनोजेगंधते नीरकेऽ पाणीना स्पर्शविना जणायनहीं, एतावता असत्यनश्ची. केटलाएकवस्तुनागुण स्वन्नावेजजणायठे, अनेकेटलाक प्रतिनियत व्यंजननाव्यंग्यरे, एवस्तुमांवेचित्रयठे, पण एकेनीतुडताकहियें, तो घणोव्यवहार विकोपाय। उक्तंचास्मान्निर्नापारहस्यप्रकरणे, तेहुंतिपरावेक्षा वंजपमुहृदं-सिणोन्निष्यतुष्ठा ॥ दिष्टभिणंवेचित्तं सरावक्षुरांधाणंति॥ ६ ॥

निजनानापर्यायेतेहज ॥ ऋग्यएहएमकहियेंजी ॥ नित्यस्वन्ना
वच्चनित्यस्वन्नावें ॥ पञ्जायपरणतिलहियेंजी ॥ वर्तिवस्तुनेरु
पांतरथी ॥ नाशेद्विधान्नासेजी ॥ विशेषनेसामान्यरूपथी ॥
स्थूलअंतरनाशेजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ निजकेऽ पोतानाजे क्रमन्नावी नानाप्रकारनापर्याय श्यामस्त्व, रक्तत्वादिकते जेदकरेतेरतां पणएऽऋग्यतेहिज जेपूर्वेश्चनुच्छव्युह्तु, एवुंज्ञानजेहथीथायरेतेनित्यस्वन्नाव कहिये॥तज्ज्ञावाव्ययंनित्यमित्यसूत्रं॥प्रधंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वमित्यस्याप्यत्रैवपर्यवसानं केनचिद्गुरुपेणवत्त्वक्षणव्यवस्थितेः॥एनित्यस्वन्नावत्रीजोथयो. अने अनित्यस्वन्नावते पर्यायनीपरिणतिवेइयें, जेख्येऽत्पादव्ययरे, तेख्येश्चनित्यस्वन्नावरे. जेमरतिवस्तुतुं रुपां तरथीपर्यायविशेषथीनाशरे, तेथीकरीएढिधा, आरुपेणनित्य, आरुपेणअनित्यएवैचित्रयन्नासे रे, विशेषथ्रनेसामान्यरूपथी अनित्यता, जेमधटनाशें पणमृदुङ्ग्यानुवृत्ति तथासामान्ये मृदादिकने पण स्थूलार्थातर घटादिकनाशेंश्चनित्यतारे, नेघटरुपेणमृद्वष्टेतिप्रतीतेः॥७॥

जोनित्यतानवेतोअन्वय ॥ विनानकार्यहोवेजी ॥ कारज
कालेंअवतुंकारण ॥ परिणतिरूपविगोवेजी ॥ अनित्य
ताजोनहीसर्वथा ॥ अर्थक्रियातोनघेटेजी ॥ दलनीकारय
रूपपरिणति ॥ अनुत्पन्नतोविघटेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोनित्यता ऋग्यनेविषेनथी, अनेएकांतक्षणिकज स्वस्वक्षणरे, तोकारणना अन्वयविना कार्यनीपजेनहीं केमके कारणक्षण कार्यक्षणोत्पत्तिकाले निहेंतुक नाश अनुच्छवतो अरतोरे, तेकार्यक्षण परिणतिकेमकरे ? अरतोयेकारणक्षण कार्यक्षण एकरेतो चिरनष्टकारणथी अथवाश्चनुत्पन्नकारणथी कार्यनीपनुंजोइयें एमतोकार्य कारणन्नावनी विडवनाथाय. अव्यवहितजेकारणक्षण कार्यक्षणकरे, एमकहियेतो, रूपालोक मन-स्कारादिक्षण रूपादिकनेवियें उपादानथालोकादिकनेविये निमित्त ए व्यवस्थाकेम-

पिशेषगुण अनन्ताथाय, तेऽद्वास्थकेमगणीशके॥।। तस्माद्भास्तिकायाना गतिस्थित्यवगाह्
नार्चन्नाद्वैतुत्वोपयोगग्रहणारथा पडेवास्तित्वादय सामान्यगुणास्तुविवक्षयाथपरिमि
ताऽत्येवन्याय परेणाद्वक्षणवत्तं द्वक्षणनिपटेवेतिहिकोनथ्रदधाति ॥ नाणचदसण्वेव
चरित्तचतत्वोत्त्वा ॥ वीरियउवठंगोय एवंजीपस्सखरकण ॥ १ ॥ सदंधआरञ्ज्ञोय प
ज्ञावायातद्वेवय ॥ वएषरसगधफासा पुग्खाण तुखरदण ॥ २ ॥ इत्यादितुखज्ञावलद्व
णयोरन्यो न्येनातरीयकत्वप्रतिपादनायेत्यादिपमितीर्विचारणीय ॥ ४ ॥

धर्मअपेक्षायेऽहाअत्तगा ॥ स्वज्ञावगुणीज्ञाप्याजी ॥

निजनिजरूपमुख्यतादेह ॥ स्वज्ञावगुणकरीदाप्याजी ॥

अस्तिस्वज्ञावतिहानिजरूपे ॥ ज्ञावरूपतादेखोजी ॥ परथ

ज्ञावपरेनिजनावेपण ॥ अरथअनुज्ञविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्तिव्यापृत्तिसवर्णे धर्ममात्रनीपिवक्षाकरीने इहास्वज्ञावनेगुणयकी अ-
खगाकेऽज्ञदा पटितंज्ञाप्यारे, तेऽद्वयना निजनिजकेऽ आपआपणारूपनी मुख्यतादेहेने,
अनुवृत्तिसवर्णधमात्र अनुसरीने, जेस्वज्ञापरे तेनेजगुणकरीने, दारयाकेऽपेदसाड्यारे माटे
गुणपिज्ञागकहिने स्वज्ञावपिज्ञाग कहियेवैये तिहाप्रथम अस्तित्वज्ञावते निजरूपे ए-
टसेस्वद्वय, स्वखेत्र, स्वकाल, स्वज्ञाव स्वरूपे ज्ञावरूपतादेरसो जेमपरज्ञावे नास्तित्वज्ञाप
अनुनियेवैये, तेमनिजनारें अस्तित्वज्ञापण अनुज्ञवियें वैये तेमाटे अस्तित्वज्ञाप
तेमेरेरे एप्रथम अस्तित्वज्ञावकद्वा ॥ ५ ॥

नदीतोसकलवृन्ध्यतादेवे ॥ नास्तिस्वज्ञावपरज्ञावेजी ॥

परज्ञावेपणसत्ताकदेता ॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे

मध्यसत्तानफूरे ॥ व्यंजकअभिलनवसथीजी ॥ घतोसरा

वगवनवीज्ञासे ॥ जेमविष्णनीरकरश्यथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तित्वज्ञाप इत्यनेपिये नमानीयेतो, परज्ञापेक्षायें जेमनास्तिता,
तेमस्वज्ञावपेक्षायेपण नास्तितायाता, सर्वेशृन्ध्यतायद्वज्ञाप, तेमाटेस्वद्वयायपेक्षायेंथ
स्तिस्वज्ञाप सर्वधामानवो, एप्रथमगुण अनेपरज्ञापेकेऽपरद्वयायपेक्षायें नास्तिस्वज्ञा
वकहिये� परज्ञापेण सत्ता, अस्तिस्वज्ञापकदेता सर्वेस्वरूपे अस्तिथयु, तेमारें जगत्पक
रूपयाप, तेतोसर्वेशाश्र व्यग्धारपिछ्डवे, माटेपरापेक्षायें नास्तिस्वज्ञाप रे जेसत्तातेस्व
जारें वस्तुमाद्वैज्ञज्ञापयत्रे, माटेसत्यत्रे, जे असत्तातेस्वज्ञाने परमुत्तरनीक्षणकरेरे तेथी
क्षयना झानपिपयपणे असत्यत्रे, एद्वु योऽक्षमतत्रे, तेनेसम्भानेकहेरे, जेसत्तानीपरें त

त्काल असत्तजेनवीस्फुरति, रेव्यंजक अणमिद्यावशथ्री जाणवी, पण शुन्यपणावी, तु उद्गपणायकीनही, जेमरतुं माटीनुं सरावकेष घटरे, तेहनोजेगंधते नीरकेष पाणीना स्पर्शविना जणायनही, एतावता असत्यनश्ची. केटलाएकवस्तुनायुण स्वज्ञावेजजयायरे, अनेकेटलाक प्रतिनियत व्यंजननाव्यंग्यरे, एवस्तुमावेचित्र्यरे, पण एकेनीतु उत्ताकहिये, तो धणोव्यवहार विलोपाय ॥ उकंचास्मान्निर्जपारहस्यप्रकरणे, तेहुंतिपरावेरका वंजपमुहृदं-सिषोन्निषण्यतुष्ठा ॥ दिष्टमिण्वेचित्तं सरावकपूरगंधाण्ति ॥ ६ ॥

निजनानापर्यायेतेहज ॥ ऋग्यएहएमकहियेजी ॥ नित्यस्वज्ञा
वअनित्यस्वज्ञावें ॥ पञ्जायपरणतिवहियेजी ॥ वर्तिवस्तुनेरु
पांतरथी ॥ नाशेद्विधाज्ञासेजी ॥ विशेषनेसामान्यरूपथी ॥
स्थूलअंतरनाशेजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ निजकेष पोतानाजे क्रमज्ञावी नानाप्रकारनापर्याय इयामत्त, रक्तवादिकते नेदकरेतेरतां पणएङ्गव्यतेहिज जेपूवेश्वनव्युहृतु, एमुंडानजेहृथ्रीवायरेतेनित्यस्वज्ञाव कहियेऽतप्त्वाव्यव्यंनिलभितिसुत्रं। प्रध्वंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वमित्यस्यायव्रेवर्पयवसानं केनचिद्व्येषेणवत्पृष्ठाणव्यवस्थितेः॥। एनित्यस्वज्ञावत्रीजोथयो. अने अनित्यस्वज्ञावते पर्यायनीपरिणतिखेश्ये, जेरूपेउत्पादव्यव्यरे, तेरूपेश्वनित्यस्वज्ञावरे. जेमरतिवस्तुनुं रुपां तरथीपर्यायविशेषयनीनाश्वेतेरीकरीएद्विधा, आरूपेनित्य, आरूपेश्वनित्यएवेचित्र्यज्ञासे देवे. विशेषनेसामान्यरूपथी अनित्यता, जेमघटनाऽप्ने पणमृदुङ्गव्यानुवृत्ति तथासामान्ये मृदादिकने पण स्थूलाधार्थांतर घटादिकनाशेऽनित्यतादेवे, नेघटरूपेणमृद्गदेतिप्रतीतेः॥७॥

जोनित्यतानवेतोअन्वय ॥ विनानकार्यहोवेजी ॥ कारज
कादेंअठतुंकारण ॥ परिणतिरूपविगोवेजी ॥ अनित्य
ताजोनहीसर्वया ॥ अर्थक्रियातोनवेटेजी ॥ दखनीकारय
रूपपरिणति ॥ अनुत्पन्नतोविघटेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोनित्यता ऋग्यनेविषेनथी, अनेएकांतदणिकज व्यन्वत्पद्धाएरे, तोकारणना अन्वयविना कार्यनीपजेनही. केमके कारणद्वाण कार्यद्वाणोत्पत्तिकाळें निर्देतुक नाश अनुज्ञवतो अठतोरे, तेकार्यद्वाण परिपतिकेमकरे? अठनोयेसारणद्वाण कार्यद्वाण एकरेतो चिरनष्टकारणथी अथवाअनुत्पन्नकारणथी कार्यनीपनुंजोइये एमनोकार्य कारणनावनी विंदवनायाय. अव्यवहितजेकारणद्वाण कार्यद्वाणकरे, एमकहियेनो, स्पाखोर भन-स्कारादिक्षण स्पादिकनेविषें चपादानव्याखोकादिकनेविषे निमित्त ए व्यवस्थाकेम-

घटे ? केमके अन्वयविना शक्तिमार्गे उपादानता निमित्तमाहेपण कहि जकीयें, माटेजेउपादानते अन्वयीमानबु, अनेअन्वयीपणु तेहीज नित्यस्वज्ञावहोय हवेजोस विद्या नित्यस्वज्ञावज मानीयें, अनेअनित्यस्वज्ञाव सर्वथानमानियेंतो, अर्थकियाघटेनही, केमके दखनेकारणेऽथने कार्यरूपता परिणतिकथचित् उत्पन्नपणुजआव्यु, अनेसर्वथा अनुत्पन्नपणु विधीजाय, अनेजोएमकहियें, केजेकारण ते नित्यजरे, तथा तद्विकार्ये लेत्वनित्यजठे, तोकार्यकारणने अनेदसवधकेमघटे ? जेदसवधमाने तो तत्सवधातरादि गवेषणायें अनपस्थायाय तेमाटे कथचित् अनित्यस्वज्ञावपण मानवो॥७॥

स्वज्ञावनेएकाधारत्वे ॥ एकस्वज्ञावविदाशोजी ॥ अनेक
द्व्यप्रवाह्यएहने ॥ अनेकस्वज्ञावप्रकाशोजी ॥ विणएक
ताविगेपनविलहीयें ॥ सामान्यनेअज्ञावेजी ॥ अनेकल्प
विणसत्तानघटे ॥ तेमजविगेपद्वज्ञावेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सज्ञावकेऽ सहजावीधर्म, तेहनेआधारत्वे एकस्वज्ञाव जेमरूप,रस,गध,स्प
शंनो आधार घटादिष्ककहियें, तेमनानाप्रकारना धर्माधारत्वे एकस्वज्ञावता, नाना
हाणानुगतत्वे नित्यस्वज्ञावपता, एपिशेपजाणबो, एपाचमोएकस्वज्ञावजाणबो हवे मृदा
दिक्ख्यनो स्थास, कोस, कुश्लसादिक अनेकद्व्यप्रवाह्ये तेथीअनेकस्वज्ञाव प्रकाशि
यें, पर्यायपणेयादिष्ट द्व्यकरियें, तेवरे आकाशादिकद्व्यमापण घटाकाशादिकजेदे
एस्वज्ञाव झुर्सजनयाय, एउठो अनित्यस्वज्ञावकहो हवेएकस्वज्ञावविना सामान्यनो
अज्ञावयाय, माटेपिशेप नपामियें, माटेपिशेपज्ञामें अनेकस्वज्ञावविना मूलसत्तापण
घटेनही, तेमाटे एकानेक एवेहुस्वज्ञावमान्याजोइयें ॥ ९ ॥

गुणगुणीनेसज्ञासस्यादिक। जेदेजेदस्वज्ञावोजी ॥ अनेक
द्वृत्तिसुखदाणवारी ॥ होयेअनेदस्वज्ञावोजी ॥ जेद
विनाएकल्पमवने ॥ तेषेव्यवहारविरोधोजी ॥ विण
अनेदकेमनिराधारनो ॥ गुणपज्ञावनोधोजी ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुणगुणीने,पर्यायपर्यायीने, बारककारदीने, सज्ञा, सम्या, तयासद्व्यादिक
जेदेकरीनेसातमो पण जेदम्बनाव जाणबो, अने अनेदनीजेगृत्ति ते बहाणपतथा
रमो अनेदस्वनाव जाणबो हवेजोद्व्यनेविये जेदम्बनाव नमानीयेंतो, सर्वद्व्यगुण
पर्यायने पदपाणुयाय, तेथीकरी, “ इदद्व्य अयगुण अपपर्याय ” एव्यवहारनो पि
रोपयाय अने जो अनेदस्वनाव नव हियेतो, नि केगव निराधार गुणपर्यायनो धोधय-

बोजोइयेनही, केमके आधाराधेयनो अन्नेदविना वीजोसंवंध घटेजनही. अत्र प्रवचनसारोङ्कारनीगाया ॥ पवित्रत्तपदेश्च पुष्ट्यमितिसासांहितीरस्स ॥ अन्नत्तमत-
प्रावो एतप्रवंशवदिकथमेगति ॥ १० ॥

शक्तिअवस्थितनिजरूपांतर ॥ भवनेभव्यस्वभावोजी ॥

त्रिहुंकादेमित्तापरज्ञावें ॥ अन्नव्यनञ्चव्यस्वभावोजी ॥

शून्यभावपणञ्चव्यस्वभावें ॥ कूटकार्यनेयोगेंजी ॥ अन्न
व्यज्ञावेविणेऽव्यांतरता ॥ यायेऽव्यसंयोगेंजी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अनेककार्य—कारणशक्तिकजे अवस्थितझव्यरे, तेहने क्रमिकविशेषता आविज्ञावें अतिव्यंग्यते नवमोनव्यस्वभाव कहियें, त्रिहुंकादें परझव्यमांमित्तापण परस्वज्ञावें नपरिणम्बुं, तेदशमोअन्नव्यस्वभावकहियें ॥ अन्नोन्नपविसंता देताउगासमण मणस्स ॥ मेदंतावियणीचं सगसगज्ञावेणविजहंति ॥ ३ ॥ हवेनव्यस्वभावविना कूटकेण खोटाकार्यनेयोगें शून्यपणुंयाय. परज्ञावेनहोय अनेस्वभावेहोय तेवारेन व्यहोय, अनेतेजो परज्ञावेपणनहोय अने स्वभावेपणनहोय तेवारेहोयजनही, एवुंयगुं, तथाजोअन्नव्यस्वभाव नमानीयेतो, झव्यनेसंयोगें झव्यांतरपणुं युंजोइयें, केमके धर्मधर्मादिकने जीवपुङ्कलादिकने एकावगाहनावगाह कारणें कार्यसंकर अन्नव्यस्वभावेज नयाय, तत्तज्ञव्यनेतत्कार्यजननशक्तिर्व्यतातत्तसहकारिसमवधानेनतत्कारोपधाय-
कताशक्तिश्च तथानव्यतेति तथानव्यतयैवनातिप्रसंगइतितु हरिज्ञाचार्याः ॥ ३३ ॥

परमभावपरिणामिकभाव ॥ प्रधानेतायखीजेजी ॥ एवि

एमुख्यरूपकेमज्ज्यें ॥ प्रसिद्धरीतेंदीजेजी ॥ एसामान्यस्व

भावइग्यारह ॥ सकलज्ञव्यनेधारोजी ॥ आगमचर्य

विचारीनेजग ॥ सुजश्वादविस्तारोजी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ खबक्षणीचूत पारिणामिकभाव प्रधानतायें परमभावस्वभावकहियें, जेम-
ज्ञानस्वरूपआत्मा. एश्वारसोन्नेदथयो. जोपरमभाव स्वभावनकहियें, तोझव्यनेविषेप्र-
सिद्ध रूप केमदेवाय अनंतधर्मात्मिकवस्तुने एकधर्मपुरुषकारों घोषावियें, तेहीज परम-
भावनुं दक्षणरे. एश्वारसामान्यस्वभाव सर्वेऽव्यनेधारवा. एहवाआगमना अर्थविचारीने जगत्मां सुयशविस्तारो ॥ १८ ॥ हवे ल. ल. ल. ल. ल. इरे.

॥ दाव वारमी ॥

॥ जीहोसजवनामसोहामणोपदेशी ॥

जीहोचेतनज्ञावतेचेतना ॥ लालाउलटअचेतनज्ञाव ॥ जीहोचेननता

विणजीवने ॥ लालाथाएकर्मच्चज्ञाव ॥ चतुरनरधारोच्चर्यविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय, तेचेतनस्वज्ञाव, अनेतेथीउकटो तेथचेतनस्वज्ञाव जोजीवने चेतनस्वज्ञाव नकहियें, तोरागद्वेष चेतनारूपकारणपिना इनामावणा दिकर्मनो अज्ञावथाय, उक्तचा। स्नेहान्यक्तशरीरस्य रेणुनाभिष्पत्यतेयथा॥गावरा गढेपक्षिन्नस्य कर्मवधोज्ञवत्येव॥इति माटेहेचतुरपुरुषोएरीतं अर्थपिचारीनेधारो ॥१॥

जीहोजोचेतननतासर्वथा ॥ लालाविनाअचेतनज्ञाव ॥ जीहोध्यान ध्येयगुरुगिष्प्यनी ॥ लालासीखपश्चस्वज्ञाव ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वज्ञावजकहियें अनेथचेतनस्वज्ञावनकहिये तो अचेतनकर्मनो कर्मद्वयोपद्वेष जनितचेतनापिकारविना शुद्धसिद्धसद्वशपणुथाय, ते वारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्प्यनीशीखपतीपदे, एरीतेसर्वशास्त्रव्यवहार फोकट यह जाय, शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय ? तेमाटो॥अकरणायगमूरितिवत् ॥ अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतं कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तज्ञावमूर्तीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वज्ञाव ॥ जी होजोमूर्त्ततानजीवने ॥ लालातोससारअज्ञाव ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिकेऽरूप, रस, गध, स्पर्शादिसञ्जिवेशते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वज्ञावकहिये, अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वज्ञावजाणवो, जोजीवने कोइकरीतं मूर्त्ततास्वज्ञाव न-होयतो, शरीरादिसवधविना गत्यतरसकमविना ससारनो अज्ञापथाय ॥ ३ ॥

जीहोअमूर्त्तताविणसर्वथा ॥ लालामोक्षघटेनहीतास ॥ जीहो एकप्रदेशस्वज्ञावता ॥ लालाअखमूर्त्तधनिवास ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजो खोकहट्यवहारें मूर्त्तस्वज्ञावज आत्मानेमानीयें, तोमूर्त्ततेहेतुसह सेपण अमूर्त्तनहोय, तेथीमोक्षघटेनही। माटेमूर्त्तसचक्षितजीवनेपण अतरग अमूर्त्तस्व ज्ञावमानवो बदीएकप्रदेशस्वज्ञाव तेहनेकहियेंजे एकत्रपरिणाति अयमाकार वधकेऽसञ्जिवेश तेहनो निवासकेऽनाजनपणु तेएकप्रदेशस्वज्ञाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वज्ञावता ॥ लालान्निव्रप्रदेशस्वज्ञाव॥जीहो जोनहीएकप्रदेशता ॥ लालाजेदहुएवहुज्ञाव ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनेकप्रदेशस्वज्ञाव तेहनेकहिंये जेनिन्नप्रदेशयोगें तथा निन्नप्रदेश कहपनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपुण्यहोय. हवे जोएकप्रदेशस्वज्ञाव नहोयतो, असंख्याता प्रदेशादियोगें वहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायठे, तेसाटे एव्यवहारनहोयतो धर्मास्तिकायठे, इत्यादिक थवुंजोइये ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनिःकंपता ॥ लालाजोनच्चनेकप्रदेश ॥ जीहो
आणुसंगतिपणकेमघटे ? ॥ लालादेशसकलच्छ्रादेश ॥ च४ ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जो अनेकप्रदेशस्वज्ञाव ऋग्वेदनेकहिंयेतो घटादिक अवयवी देशश्रीसकंप तथादेशश्रीनि.कंप देखियेठेये तेकेमम्भे, अनेऽवयवकंपे पणश्चवयवीनि:कंप एमकहि-येतो चक्षितिएप्रयोग केमयाव? प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंवंधठे; तेमदेशवृत्ति कंपा-ज्ञावनोपण परंपरासंवंधठे, तेसादेशश्रीचक्षेरे अनेदेशश्री नयीचलतो, एशस्वलित-व्यवहारेऽनेकप्रदेशस्वज्ञाव मामवो. तथाऽनेकप्रदेशस्वज्ञाव नमानियेतो, आकाशादि-ऊर्ध्वे आणुसंगतिकेण परमाणुसंयोग केमघटे ? ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलभेदेंद्रिधा ॥ लालादीर्ठीजगमांवृत्ति ॥ जी
होप्रत्यक्षुपणतिहां ॥ लालावोलेसंमतिवृत्ति ॥ चतुर्ण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वदीएहिजयुक्ति विस्तारीदेशाजेरे. एकवृत्तिदेशश्रीरे; जेमकुंभकृष्णज्ञने; इहां-कुंभनो कानमांपदेश्यारे; तेकानतोइङ्ग्नो एकदेशरे. पणेंडुकहिंयोलायठे, तथावीजी वृत्ति सर्वश्रीरे. जेमसामान्यवस्थद्यनी एटलेजासो सर्वश्रींगमांपेश्योरे तेदेवदत्त ए स-र्वश्रीजाणवी. तिहांप्रत्येकेंद्रुपण संमतिग्रंयनी वृत्तिवोक्षेरे. परमाणुने आकाशादिके देशवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनिष्टतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां परमाणु आकाशादिप्रमाण यद्याय, तथाउभयाज्ञावेतो परमाणुने अवृत्तिपुण्याय; या-वहिंशेपाज्ञावस्यसामान्यज्ञावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

जीहोज्ञावस्वज्ञावह्यन्यथा ॥ लालारेविज्ञाववमृत्याधि ॥ जीहो
एविणनघटेजीवने ॥ लालाअनियतकर्मउपाधि ॥ चतुर्ण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्वज्ञावशी जेथन्यथाज्ञाव तेविज्ञावस्वज्ञावहिंये, तेमद्वाव्याधिरूपठे. ए वि-ज्ञावस्वज्ञाव मान्याविना जीवने अनियतकेण नानाप्रकारना देशकालादिविषाकी क-मोंपाधि नवागवाजोइये, उपाधिसंवंध योग्यतायें अनादिविज्ञास्वज्ञावः ॥ ८ ॥

जीहोशुभ्नावेकवदपण् ॥ लालाउपाधिकजञ्चशुभ् ॥ जीहोवि-
णशुभ्तानमुक्तिवे ॥ लालालेपनविगरञ्चशुभ् ॥ चतुर्ण ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ केवलपणुकेऽ उपाधिजापरहितांतरज्ञाव परिणमनते शुद्धस्वज्ञाव, अने जे उपाधिजनित वहिर्ज्ञाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वज्ञावठे जोशुद्धस्वज्ञाव नमा निये, तो सुक्षिधटेनही, अने जोथशुद्धस्वज्ञाव नमा निये, तो कर्मनोखेपवटेनही, इहाशुद्धस्वज्ञावनेकदापि अशुद्धनानहोय, अने अशुद्धस्वज्ञावने पठीपणशुद्धता नहोय, एवे दातादिक भतनेनिराकरी उज्ज्यस्वज्ञावमाने, जेथकीकोऽदूषणनहोय ॥ ८ ॥

जीहोनियमितएकस्वज्ञावजे ॥ लालाउपचरियेपरताण ॥ जीहोतेउ
पचरितस्वज्ञावठे ॥ लालाएविणकेमपरनाण ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधायोजे एकस्वज्ञाव अनेपरस्थानके उपचरिते तेउपचरित स्वज्ञावहोय, तेउपचरितस्वज्ञाव नमानियं, तो स्वपरव्यवसायी झानवतथा त्वा केसकहिये? जेमाटे झानने म्बविष्यत्व तो अनुपचरिते, पणपरविष्यत्व ते परा पेहायं प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित सवधपणेउपचरिते ॥ १० ॥

जीहोकर्मजसद्वजेनेदने ॥ लालामूर्त्तञ्चेतननज्ञाव ॥ जी
होप्रथमजीवनीसिघ्ने ॥ लालाअपरपरङ्गस्वज्ञाव ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेउपचरित स्वज्ञाव वेष्पकारे, एकर्मजनित, वीजोस्वज्ञावजनित, तिहापु फङ्गसप्तये जीवने मूर्त्तपण अनेअचेतनपणुजे कहियरेये, तिहागोऽन्तीक एरीतेउप चारे, तेकर्मजनितरे, माटेकर्मतेहीज उपचरितस्वज्ञावठे, हवेज। तने अपरकेऽग्नीजोने सद्वजउपचरित स्वज्ञाव तेसिझने परझपणु तिहाकोइ कर्मांपाधिरेनही तदुक्तमाचा रस्ते ॥ अकस्मसगवहारोणपिङ्गाइ कम्मुणाउगाहिजायतति ॥ ११ ॥

जीहोटशेविगेपस्वज्ञावए ॥ लालामवृण्डकवीममज्ञाल ॥ जी

होमविहुंपुग्नजीवने ॥ लालापन्नरजेदरेकाल ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एदगेविशेषस्वज्ञाव नियन्त्रव्यूतिमारे, एमध्ये पूर्णकड्यारा सामान्य स्वज्ञाव ज्ञेयिये, तेवारे सर्वमितिने एकवीस स्वज्ञावयाय तेपुन्नतशाजीवने एकवीस स्वज्ञावहोय तेएकवीसमाथी ठक्काहिये तेवारे कालज्ञव्यने पन्नरस्वज्ञावयाय, तेउभ्य शावनानाम आगखीगायामा कहेशो ॥ १२ ॥

जीहोपहुप्रदेशचित्मूर्त्तता ॥ लालाविज्ञावग्रहञ्चग्रह ॥ जीहो

टाडीआदिमसनृत्या ॥ लालामोक्षवर्ममुयवयुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ यदुप्रदेशकेऽ अनेक्षयदेशस्वज्ञाव २ चिन्तकेऽ चेतनस्वज्ञाव ३ मून्त्र स्वज्ञाव ४ विनावस्वज्ञाव ५ शुद्धस्वज्ञाव ६ अशुद्धस्वज्ञाव, एवस्वज्ञावकाढाय, तगा ॥

वाकी पन्नरस्वज्ञाव कालद्वयनेथाय, वदी १ धर्मस्तिकाय २ अधर्मस्तिकाय ३ आ-
काशस्तिकाय एत्रणदद्यने आदिमकेष पद्मेषो अनेकप्रदेशस्वज्ञाव तेषोसंयुक्तकरिये
अने वीजापांचटावियें तेवारेसोलख्ज्ञावथाय. ॥ एकविंशतिज्ञावाःस्यु, जीवपुञ्जबयोर्मे-
ताः, धर्मादीनांपोडशस्युः, कादेपंचदशास्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेऽधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वज्ञाव ॥ जीहोसुय
शविद्वृद्जिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुभज्ञाव ॥ चतुष् ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वज्ञावते प्रमाणनयने अधिगमेकेष ज्ञानेजाणीने सुयशकेष शो
ज्ञन अनुयोग परिज्ञान यशवेतत्जे विद्वुद्धकेष पंक्तिज्ञन तेहनीसंगतकरी सवैशंकादो-
पटादीचित्तसाहं शुभज्ञावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढाक तेरमी ॥

॥ वीराचंद्रवा ॥ ए देवी ॥

स्वद्व्यादिकग्राहकेरे ॥ अस्तिस्वज्ञाववस्थाण ॥ परद्व्यादि-
कग्राहकेरे ॥ नास्तिस्वज्ञावमनव्याप्तोरे ॥ चतुरविचारियें ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेस्वज्ञावनो अधिगम तेनयेकरीदेखाडेरे, १ जेश्वस्तित्वस्वज्ञाव डद्यनोरे,
तेत्तद्व्यादिग्राहक डद्यार्थिकनयें वद्वाणियें, अने जे २ नास्तिस्वज्ञावरे तेपरद्व्यादि-
ग्राहक डद्यार्थिकनयेंवद्वाणियें, उक्तंच ॥ सर्वमस्तित्वरूपेण पररूपेणान्तिच ॥ १ ॥
उत्पादद्व्ययगोणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्या-
यार्थिकेरे ॥ जाणोस्वज्ञावव्याप्तियोरे ॥ चतुष् ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादद्व्ययगोणत्वे अनेसत्ताग्राहक डद्यार्थिकनयें नित्यस्वज्ञावकहियें
तथा ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेकरी उत्पादद्व्यय ग्राहकदोय, तेषोकरीने डद्यने-
विये अनित्यस्वज्ञावजाणो ॥ १ ॥

जेदकद्यपनारहितयीरे ॥ धारोएकस्वज्ञाव ॥ अन्वय
दद्यार्थिकनयेरे ॥ अनेकद्व्यस्वज्ञावोरे ॥ चतुष् ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ५ जेदकद्यपनानी अपेक्षारहित शुद्धद्व्यार्थिकनयें एकस्वज्ञावजाणो तथा
६ अन्वयदद्यार्थिकनयेकरी अनेकस्वज्ञावजाणो, कालान्वयेसत्ताग्राहको देवान्वयेना-
न्वयग्राहकोनयः प्रवर्तते ॥ ३ ॥

समूतद्व्यवहारयीरे ॥ गुणगुणादिकजेद ॥ जेदक
द्यपनारहितयीरे ॥ जाणोतासअजेदोरे ॥ चतुष् ॥ ४ ॥

प्रकरणरकाकर ज्ञाग पहेलो

थर्थ ॥ ३ सङ्घनव्यवहारनयथी गुणगुणी, पर्याप्यर्थायीनो ज्ञेदस्वज्ञावजाणवो ए
ज्ञेदनीकद्वपनारहित शुद्धज्ञार्थिकनयथी अज्ञेदस्वज्ञावजाणवो, यत्रकद्वप्यमा-
तर्निंगीर्णत्वेनप्रहस्तैकेस्वज्ञावो यथाघटोपमिति अत्रपिपयविषयिषोर्विक्षयेन-
तत्राज्ञेदस्वज्ञावो यथानीकोघटइति सारोपासाध्यउसानयोर्निरुद्धत्वार्थमय प्रकार-
प्रयोजनत्वेतुतेयद्वानिमित्तकत्वेनस्वज्ञावज्ञेदसाधके ॥ इतिपरमार्थ ॥ ४ ॥

परमज्ञावप्राहकनेरे ॥ चत्वयच्छब्दपरिणाम ॥ शु

भ्यश्युर्खदतेहर्थीरे ॥ चेतनआतमरामोरे ॥ चतु० ॥ ५ ॥

पर्थ ॥ हवे ए नव्यस्वज्ञाव अने १० अन्नव्यस्वज्ञाव एवेस्वज्ञावते परमज्ञावप्राह-
क जाणगा चत्वयताते स्वज्ञावनिरुपितरे, अनेअन्नव्यता तेउत्पद्धस्वज्ञावनी तथाप-
नी साधारणरे, तेमाटेइहा अस्ति नास्ति स्वज्ञावनीपरे स्वपरज्ञादिक ग्राहक-
एवेप्रथनिनदोय शुद्धाशुद्धपण समुग्धजे परमज्ञाव ग्राहकनय तेणकरीने आ-
मने ११ चेतनस्वज्ञाव कहिये ॥ ५ ॥

असङ्गूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम

ज्ञावप्राहकनयरे ॥ तेद्यचेतनधर्मेरे ॥ चतु० ॥ ६ ॥

पर्थ ॥ असङ्गूतव्यवहारनयथी झानाररणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचनकाया-
हेनेचेतनारहिये चेतनसंयोगहृतपर्याप्तिहाने तेमाटे “श्वशरीरमायश्वक जाना-
दिव्यवहार अतप्रदर्शनति धूतदहतीतिगत्” अने परमज्ञावप्राहकनयें तेकर्म नो-
रे १२ अचेतनस्वज्ञावरहिये, जेम धृतथ्रुतुण्णस्वज्ञाव ॥ ६ ॥

अमङ्गूतव्यवहारथीरे ॥ जीभ्यचेतनधर्म ॥ परम

ज्ञावप्राहकनयरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मेरे ॥ चतु० ॥ ७ ॥

पर्थ ॥ अमङ्गूतव्यवहारनयथी जीझने १३ अचेतन स्वज्ञावकहिये अतण्ड “जहो
उननोपमित्यादि” व्यवद्वारे, “एतेनमाननानामीनिप्रतीत्या विषद्वाणाद्वानसिद्धि-
तिरामशम्ना सङ्गूतव्यवहारनयथाद्विषाचेतनस्वज्ञावेनेतद्वृपत्ते” परमस्वज्ञावमा-
रये कर्मनोइमने मूर्त्यस्वज्ञावकहिये ॥ ७ ॥

अमङ्गूतव्यवहारथीरे ॥ जीभ्यमूरतपणाहोय ॥ परम

नयेपुज्जवलिनारे ॥ उच्चयमूर्त्युंजोपरे ॥ चतु० ॥ ८ ॥

पर्थ ॥ अमङ्गूतव्यवहारनयथी जीझने १४ मूर्त्यस्वज्ञावपणारहिये अतण्डा अयमा-
हस्ते, अनुयामानस्वामि॥एन्यवद्वारे, एवज्ञावेने “रक्तोपद्यप्रतवासुदृग्यो”

इत्यादिवचनरे. तथापरमज्ञावप्राहकनयें पुञ्जखद्वयविना वीजांसर्वद्वयने १४ अमूर्तं स्वज्ञाव कहियें ॥ ८ ॥

उपचारेणपणपुञ्जलीरे ॥ नहींअमूर्तस्वज्ञाव ॥ उपचरि
येअनुगमवसरे ॥ व्यवहारेजेहज्ञावोरे ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकने विषे जेमचेतनत्व उपचरियेठेये, तेमश्रमूर्त्तुप-
चरतानथी, तेमादेश्वस्त्रव्यवहारथीपण पुञ्जखने अमूर्तस्वज्ञावनकहियें. प्रत्यासत्तिदोपे
अमूर्तत्व तिहांकेमउपचरिते उपचरित कहेरे. अनुगमवसे० एकसंवंधदोपे जेहज्ञावव्य-
वहरियें, तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय. तथाच आरोपेसतिनिभित्तानुसरणं
नतुनिभित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिज्ञावः ॥ ९ ॥

एज्ञावेसंमतिज्ञणिभरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविज्ञेनीयिरे ॥ यावत् अनंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एज्ञावेकेण एश्रजिप्रायें संमतिप्रथमांकद्वारे जे, अनुगतकेण अत्यंतसंवंध
अशेषकेण सर्वश्रथ जलपयजेमकेण खीरनीरनीपरें विज्ञेनही, पृथकहेनही किहाँ?
तोके अनंत्यविशेषतायें अनंत्यविशेषे शुद्धपुञ्जखजीवकद्वाणे विज्ञेनीयें ॥ यथा उदारिकादि
वर्गणानिष्पन्नाद्वारीरादेहानिघनासंख्येयप्रदेशश्रात्मानिज्ञइति अव्रगाया ॥ अनुनानुग-
याणं इमवतंवच्चिविज्ञयणमजुत्तं ॥ जह्नद्वयपुञ्जपाणियाणं जावत्तविशेषपञ्जाया ॥ १० ॥

अनज्ञिज्ञूतजिहांमूर्ततारे ॥ अमूर्ततातिहांनाहिं ॥ जिहांअ
जिज्ञूतअमूर्ततारे ॥ मूर्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेतांमूर्तता जोपुञ्जखद्वय विज्ञेजक अनंतविशेषरे, तोतेनोउपचार आ-
त्मद्वयें केमहोय, अनेजोते अनंतविशेषपनहीतो, अन्योन्यानुगमे अमूर्ततानो उपचार
पुञ्जखद्वये केमनहोय, एहवीशंका कोइकनेहोयरे, तेटाखवानेकहेरे; जिहांपुञ्जख द्वय-
मूर्तता अजिज्ञूतनथी. किनुउड्डनरे, तिहांअमूर्तता स्वज्ञावनहोय, तेमादेश्रमूर्तता
अपुञ्जखद्वयनो अनंत्यविशेष, अनेजिहांआत्मद्वय कर्मनहोय, तिहांअमूर्तता अजिज्ञू
तरे, तिहांमूर्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणभर्मस्तुपहोय. तथाचान्योन्यानुगमा
विशेषेपिकचिदेवकिंचित्केनचित्कथंचिदनिज्ञयतइतियथागमद्वयवहारमाश्रयणीय ॥११॥

पुञ्जखनेएकवीमसमोरे ॥ एमतोज्ञावेविकुत्त ॥ तेणांअसञ्जू
तहनयरे ॥ परोटाअणुअप्रमूर्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेणप अमूर्तस्वज्ञाव पुञ्जखनेनहोय एमकहेवाय, तो एकवीमसो जाव

खोपाय, तेवारे “एकविंशतिनावा स्युर्जीवपुज्ञस्योर्मता ” एवं चन्द्रनव्यवधात्यात्यी अपसिस्त्वां-
तगाय, तेटाउगानेथ्यें असञ्ज्ञनव्यवहारनये परोक्षते पुज्ञस्परमाणुते, तेनेथमूर्तकहियें
व्यवहारिकप्रलक्षागोचरत्वममूर्ततं परमाणो जाक्स्त्रीक्रियतश्त्यर्थ ॥ १२ ॥

काखपुज्ञवाणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वनाव ॥ परमनयेपर
उच्चनेरे ॥ नेदकृष्टपनाम्बनावोरे ॥ चतुर्थ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ काताणुने तथापुज्ञवाणुने परमनाम्बाहकनये १५ एकप्रदेशस्वनामकहियें,
एमनाम्बनयापुज्ञ एवेऽव्यटाक्षीने परद्वय जेमीजाचारद्वय तेहने नेदकृष्टपनामकहित
शुद्धज्यार्थिकनये एकप्रदेशस्वनामकहियें ॥ १३ ॥

नेदकृष्टपनाम्बुतनयेरे ॥ अनेकप्रदेशस्वनाव ॥ आणुविष
पुज्ञलज्याणुतणुरे ॥ उपचारेतेहनावोरे ॥ चतुर्थ ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अनेनेदकृष्टपनामी सापेदायें जेशुद्धद्वयार्थिकनये आणुकेऽपुकुटापरमा
मुषिगा सर्पद्वयने १६ अनेनेदकृष्टपनामकहियें, अने पुज्ञस्परमाणुनेपण अनेकप्रदेश
पशानीपोऽपतारे, तेमांटे उपगारे तेहनेपण अनेकप्रदेश स्वनामकहियें, तथाकाक्षाणुमा
ते उपचारकागदायी, तेमांटे तेहनेमर्यया एम्बनामयी ॥ १४ ॥

शुद्धगुद्धज्यार्थिनेरे ॥ जाणोपिनाम्बस्वनाव ॥ शुद्धेशुद्ध
म्बनाम्बरे ॥ अगुद्धेव्यगुद्धम्बनाम्बरे ॥ चतुर्थ ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ शुद्धगुद्धज्यार्थिनये १७ पिनाम्बनाम्बरे तथा शुद्धद्वयार्थिकन
ये १८ शुद्धम्बनाम्बनाम्बो अनेव्यगुद्धज्यार्थिनये १९ अगुद्धम्बनाम्बनाम्बयो ॥ १५ ॥

अमद्धन्यवदागदीरे ॥ वेतपचमिन्म्बनाम्ब ॥ एम्बनाम्ब
नययोजनारे ॥ कीनेमनपरीनाम्बरे ॥ चतुर्थ ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ अमद्धन्यवदागदीरे २० उपचरितम्बनाम्बरे पनाम्बचित्तमांघरीने स्व
धारनदनी योजनाम्बरिये ॥ १६ ॥

अनुपचमिन्निनाम्बनेरे ॥ तेनोगुणम्बदेगाय ॥ एकज्या
प्रितगुणाकद्यारे ॥ उपमाप्रितपडाउरे ॥ चतुर्थ ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ दिग्दर्शकद्याक्षिया दिक्षाक्षिद्वाम्बमयेगा उपमृतकीरे, एमाद्दीर्घित्यते,
हेतेस्तद्वेते. त्वद्वावने दुर्दांश्यर्थाविश्व नविवद्य, तेमांटे जेयनुपरातितनाम्ब तेणु
द्वज्ञाएरो, अनेवेटपचमिन्ते द्वयानननाम्बवो तेज ड्याप्रिततेगुण औरवया

ऋग्यगुणपर्यायिनो रास वालावोध सहित.

३७१

श्रिततेपर्यायकह्यारे. तथोक्तमुन्तराध्ययनेषु॥गुणालुमासउदवं एगदवस्तिस्यागुणा ॥लख-
पंपज्ञावाणंतु उच्चरंथस्तिस्याजवेति ॥ २ ॥ २७ ॥

स्वज्ञावनेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेनेद
पज्ञायनारे ॥ सुणयोसुयश्चन्मारोरे ॥ चतु० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ यदिवस्वद्व्यादिग्राहकेणास्तिस्वज्ञावः परद्व्यादिग्राहकेणनास्तिस्वज्ञाव
इत्युपगम्यते तदोचयोरपि ऋग्यार्थिकविपयत्वात्सप्तज्ञंयामायद्वितीयोजंगयोर्डव्या
र्थिकपर्यार्थिकाश्रयेण प्रक्रियान्त्यज्ञेतत्यायव्रव्युविचारणीयं ॥ स्वज्ञाव० एमएस्वज्ञा
वनेदसहितगुणना प्रकारकह्या. हवेआगलीदालमां पर्यायनानेदकहुंतुं. तेहनेसुयशना
जंडार एहवाश्रोतापुस्पो तमेसांजखो ॥ २८ ॥

॥ दाल चउदमो ॥

॥ रोडोसीमंधरसामीआ ॥ तेमुजमिदामिछुकर्नमी ॥ एदेशी ॥

सुणोनेदपज्ञायनारे ॥ तेदोयप्रकार ॥ व्यंजनअर्थवेनेद
थी ॥ सद्विपेसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायना नेदसांजखो. तेपर्यायनानेद संक्षेपथी वेप्रकारनारे एकठयं
जनपर्याय, वीजोअर्थपर्याय, एसद्विपेकह्या ॥ ३ ॥

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्तमानसु
पिमतिहां ॥ अत्थदपज्ञाय ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेजेहनो विकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोद्यंजन पर्यायकह्यें. जेमघटादिने सृ-
दादिपर्याय तेहमां सूक्ष्मवर्तमानकालवर्त्ति ते अर्थपर्यायरे. जेमघटनेतत्क्षणवर्त्तिपर्या-
यते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

ऋग्यगुणेविहुनेदथी ॥ वलीशु-द्व्यप्रशु-द ॥ शु-द्व्यव्यव्यं
जनतिहां ॥ चेतननेसि-द ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेप्रत्येके एकेकवेवेप्रकारे एकद्व्यपर्याय वीजोगुणपर्याय नेदथीजाणवा. त-
थातेवदी शुद्ध अनेश्वशुद्धनेदथी वेवेप्रकारेजाणवा. तेमांशुद्धद्व्यव्यव्यंजनपर्यायते चे-
तनद्व्यने केवलज्ञानना ज्ञावथी सिद्धपर्याय जाणवो ॥ ३ ॥

अशु-द्व्यव्यव्यंजनवहु ॥ मनुजादिकनेद ॥ गुणार्थीव्यं
जनएमद्विधा ॥ केवलमझेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेशशुद्धव्यव्यजनपर्याय तेमनुष्य, देवता, नारकी, तीर्थंचादिकवहुन्नेदे जाणवो, केमके तेऽव्यजेद पुञ्जसंयोग जनितरे एमज शुद्धयुणपर्यायिते केवलक्षाना दिरूप अने शुद्धयुणव्यजनपर्यायिते मतिज्ञानादिरूप जाणवा ॥ ४ ॥

ज्ञुसूत्रादेवेंकरी ॥ दणपरिणतएह ॥ कहोअर्थ
पञ्जायए ॥ अन्यंतरजेह ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमक्षुसूत्रादेशे क्षणपरिणतजे अन्यतरपर्याय तेशुद्धार्थपर्याय अने जेजे हथी अट्यकालवर्त्तिपर्याय तेतेहथीअट्यविवक्षाये शुद्ध अर्थपर्यायकहेवा ॥ ५ ॥

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यजनपर्याय ॥ सम
तिग्रथेअर्थयी ॥ वालादिकदाय ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहायुरूपवचन समतिग्रथदेखाहेठे, जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्मादि मरण-कालपर्यंत एकशुद्धतपर्याय तेपुरुषनोव्यजनपर्यायिकहियें, एसंमतिग्रथेकहुठे तथाग-लतरुणादि पर्यायिते अर्थपर्यायिकहारे एमसर्वत्रफलावीकेबु अत्रगाथा ॥ पुरिसमिपुरिससद्वी जन्मायमरणकालपञ्जातो ॥ तस्सत्तवालाईया पञ्जवजेयावहुपिगप्पा ॥ ६ ॥

पट्टयुणहाणीबुढ़ीयी ॥ जेमच्छुद्धसहुत्त ॥ पञ्जव
तेमद्विणजेदयी ॥ केवलपणेबुत्त ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेकेनक्षज्ञानादिकते शुद्धयुणव्यजनपर्यायहोय, तिहाअर्थपर्यायनथी, एहवी कोइक दिक्षपटानासनी शकाटादेरे “जे पट्टयुणहानिरुद्धिलक्षणागुरुसघुपर्याया सूक्ष्मा र्थपर्याया” एजेमकहुठे, तेमक्षणजेदयी केप्रक्षज्ञानपर्यायपण जिज्ञजिज्ञ देखाछ्यारे ॥ पटमसमयसयोगिजवृष्टकेप्रक्षनाणे ॥ अपहमसमयोगिजवृष्टकेप्रक्षनाणे ॥ इत्यादिवचनात् ॥ तेमाटेक्षज्ञुसूत्रादेदो शुद्धयुणनापण अर्थपर्यायिमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धव्यव्यजनच्छणु ॥ पुञ्जसंयोग ॥ अशुद्धयणु
कादिकशुणा ॥ निजयुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुञ्जसंयोग शुद्धव्यव्यजनपर्यायिते अणुकेठ परमाणुजाणवो, केमके तेपरमाणुनोकेवारे नाशनथी, तेमाटेतथा छवणुकादिकडव्यते पुञ्जसंयोग अशुद्ध-व्यव्यजनपर्याय सयोंगजनितरे, तेमाटे एमयुणाकेठ पुञ्जसंयोग शुद्धयुणव्यजनपर्याय तथाअशुद्धयुणव्यजनपर्यायिते पोतपोताना युणाश्रितजाणवा, जेपरमाणुयुण तेशुद्धयुण व्यजनपर्याय अनेहोप्रदेशादियुणते अशुद्धयुणव्यजनपर्याय ॥ ८ ॥

द्रव्यगुणपर्यायनो रास वालादोध सहित.

सूक्ष्मचर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम ॥ निजपरप्र
त्यययीक्षहो ॥ गंभिहठप्रेम ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्यायजरे, एहवोजे हठकरेरे, तेह
नेकहिच्ये, जे शुस्त्रादेशे क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरे ह
रागांडीने तिहापणकेमनवीमानता? ॥ ५ ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी ॥ व्यंजनरेशुद्ध ॥ दोकद्रव्य
संयोगवी ॥ तेमजाणीशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय, नहीतोपरमाण
पर्यंत विश्रामेषुकलद्रव्यपण नहोय, एहवें अनिप्रायेंकहेरे, लेधर्मास्तिकायादिकनी
आकृति दोकाकागमान संस्यानरूपते शुद्धद्रव्यव्यञ्जन पर्यायकहिच्ये, परनिरपेक्षप
णामाटे, तेमजदोकवर्चि द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्यायकहिच्ये, पणतोह
नोपरापिक्षपणे कहेताथका अनेकांतिकने विरोधनवी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरे ॥ पक्षायकहेवाय ॥ उत्तराध्य
वनेज्ञापिया ॥ ददणपक्षाय ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहो, अने संयोगपर्यायनहोय, एहवीआशंकाटाक्षेरे.
जे संयोगतेपण आकृतिनीपरे पर्यायकहेवायरे, केमके पर्यायनांखदण ज्ञेदरूप श्री
उत्तराध्ययनसूत्रे एरीतेकक्षांरे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवदी ॥ संख्यासंग्राण ॥ बबीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुंचाण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगतंचपुढुत्तंच संखासंग्रामेवय ॥ संयोगायविज्ञानाय पक्षावा
ण तुखर्खण ॥ १२ ॥ एगाथारुमनमांचाण, एमदिगंवरनयचक्रनाकत्तदिवसेननेकहेत्रे ॥ १२ ॥
उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असन्नूतम
तुजादिका ॥ तोनयशुद्धयोग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगरे, तेउपचरित
पर्यायकहिच्ये, पणश्रुद्धपर्यायनकहिच्ये, द्रव्यान्ययात्वहेतुनेविपेज अशुद्धत्व व्यवहाररे,
तेवतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकहो. असन्नूतव्यवहारनयग्राय माटे
असन्नूत कहो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपञ्चये ॥ विसमाश्वेषम् ॥ अथुद्धतात्र
विशेषयी ॥ जिअपुज्ञतजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ द्वितुकादिक पर्यायनीपर्यं एकल्पयनकथयवमधातनयेन अगुरुद्धर्मल्पयव्य
जनपर्यायपण्ज कहेता रुदुलागे “तस्मादपेक्षानपेक्षान्यागुरुद्धर्मनेकातव्यापकत्वमे
वश्रेय ” तेहिजदेखाडेरे धर्मादिकने परपर्यायं एटलेस्वपर्यायी पिपमायीकेऽपितक्षण
ताएमजाणवी, केमके परापेक्षायें जेमजीबद्धव्य पुज्ञलद्धव्यनेविषे अगुरुद्धतानो विशेषनयी
एमजसजातिविजातियी ॥ उद्धवेपञ्चाय ॥ गुणेस्व
जावविज्ञावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमाकहारे, तेदेशाडेरे एमज स्व
जातीयद्धव्यपर्याय, तथाविजातीयद्धव्यपर्याय, बलीस्वज्ञावगुणपर्याय, अनेविज्ञावगुणपर्याय
एरीतेचारनेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्यणुकमनुजेकेवलीवली ॥ मतिमुखदिठ्ठत ॥ एप्रायि
कजेणेद्धव्यथी ॥ अणुपञ्चवसंत ॥ श्रीजिन ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेशाडेरे द्विप्रदेशादिकस्त्रृपते स्वजातीय उद्धव्यपर्यायिकहियें
तथा उद्धव्यवेमितीएकउद्धव्यउपनु, तेमाटे मनुजादिपर्यायिते विजातीय उद्धव्यपर्याय कहियें,
केमके तेवेउद्धव्यमली परस्पर निज्ञजातीय उद्धव्यपर्यायउपनो, तेमाटे तथाकेवलज्ञान
ते कर्महितपणामाटे स्वज्ञावगुणपर्यायिकहियें अनेमतिज्ञानादिकते कर्मपरतत्रपणामाटे
विज्ञावगुणपर्यायजाणवा एरीते एचारनेदपण प्रायिकजाणवा केमके परमाणुरूप उद्धव्य
पर्यायते एचारमाहेन अतरनजवे पर्यायपणुतेहने विज्ञागजाति शाखेंकहुंरे तदुक स-
मतो ॥ अणुद्धुअणुएहिद्वे आरङ्केद्धुअणुअतिअणुतिववएसो ॥ तज्जोआपुणप्रिज्ञतोश्च
एचिजातिअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपञ्चवकही ॥ उद्धव्यादिकद्धत ॥ शुजा
ऐमनमाहेते ॥ देवसेनमद्धत ॥ श्रीजिन ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ “गुणप्रिकारा पर्याया ” एमकहीने तेहनाजेदनेअधिकारे तेपर्याय द्वित्तेद १
उद्धव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोयमो नयचक्रनोकर्ता जे देवसेनदिगधर ते
मनमाहेशुजाऐरे ॥ अर्थात् पूर्वपरिप्रिरोधज्ञापणयी काइज्ञाणतोनथी तेमाटे उद्धव्यपर्याय
जकहेना, पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थरे ॥ १७ ॥

इमउद्धव्यादिकपररखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ उवेखी
वहुतनुमति ॥ अवगणणीयअजाण श्री० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ऋग्युणपर्यायिते स्वरूपकक्षण ज्ञेदादिकेकरीने परस्या, गुरुआणकेऽ
गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिकेऽ तुष्टवृद्धिनाधणी तेहनेउवेखीने, अ-
जाणजेहरकदायही तेहनेअवगणी-निराकरीने ऋग्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १७ ॥

जेदिनदिनएमन्नावशे ॥ ऋग्यादिविचार ॥ तेलहेशेज

शसंपदा ॥ सुखसधदांसार ॥ श्रीजिन० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जे एश्र्वर्थदिनदिनप्रतें ऋग्युणपर्याय विचाररूपन्नावशे, तेप्राणी यशनीसं-
पदाप्रतें पामशे तथा सधदांसुखप्रतें सारकेऽ निश्चेपामशे, एयुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो
दोहा

गुरुश्रुतच्छ्रुतववलथकी ॥ कहोऋग्यच्छ्रुयोग ॥

एहसारजिनवचननो ॥ एहपरमपदज्ञोग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ युरुपदेश, श्रुतशास्त्राज्ञ्यास, श्रुतववलथ, अनेसामर्थ्ययोग तेहधीए ऋ-
ग्यानु योगकहो. एसर्वजिनराजनां वचननोसारठे. एजपरमपदकेऽ मोक्षतेहनोज्ञागरे,
केसके एडग्यादिकविचारे शुक्रध्यानसंपदाये मोक्षाभिये ॥ ३ ॥

मध्यमकिस्यारतहुए ॥ वालकमानेलिंग ॥

पोक्षकेज्ञाप्युधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एडग्यानुयोगमां ले रंगधरे, तेहनेजपंडितकहिये, एहबु श्रिनियुक्तसाखेसम
येठे. पोक्षकवचनंचेदं ॥ वालःपश्यतिलिंगं मध्यमवृद्धिविचारयतिवृत्तिं ॥ आगमत
त्वंहुधः परीक्षते सर्वयतेन ॥ ५ ॥

नाणरहितजेशुभ्रकिया ॥ क्रियारहितशुभ्रनाण ॥

योगदृष्टिसमुच्चयकहो ॥ अंतरखजुआज्ञाण ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुभ्रकिया अनेक्रियारहित जे शुभ्रज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चय
मां खजुआ अनेसूर्यजेटखो आंतरोकहोठे ॥ ६ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणज्ञाणसमजोय ॥

कलियुगएहपटंतरो ॥ विरखायुजेकोय ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तात्त्विकः पक्षपातश्च जावशून्याचयक्रिया ॥ अनयोरनंरंद्रेपं जालुखयोतयो-
रिच ॥ इत्यादिक्योगदृष्टिसमुच्चये कर्तुन्ते ॥ ८ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दहुरचुम्बसमान ॥

ग्यानकिर्तउपदेशपदे ॥ तामवगरसमजाण ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ मंसुकचुन्नकपो किइयाजाणिउर्कर्किलेसाण ॥ तद्दुरचुन्नकपो नाणकउ^१
तचश्चाणाए ॥ २ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसम्ब्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मध्यिति ॥ अप्रकरणनियमेनाप ॥

अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिर्गीथहसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजश्चावे तेपास्यापत्रि मिथ्यात्ममा आवे, तोपण
एककोडाकोडी सागरोपम “ उपरातकर्मवध जीउ नफरे घर्येणनवोलेयकयावितिवच
नात ” एथनिप्रायें नदियेणनेश्चिकारें महानिर्गीथे ज्ञानगुण अप्रतिपाति कह्योरे
उच्चराध्ययनेष्युक्त ॥ सूझजहासमुच्चा णणस्सईकयग्रमिपडिआपि ॥ इयजीबोविसमुक्तो-
णणस्सइगडविससारे ॥ १ ॥ ६ ॥

रघानवतद्वकेवली ॥ उच्यादिकअहिनाण ॥ वह

त्कट्टपनाज्ञाप्यमा ॥ सरिपाज्ञाप्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वृहत्सद्वगाथाचेयं ॥ किंगीयछोकेपली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ तु
स्वरागहेसे अणतकायसवज्ञणगा ॥ १ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणन्नवार्णवपोत ॥

मिथ्यामतितमन्नेद्वा ॥ नाणमहाउद्योत ॥ ८ ॥

॥ ढाख पद्मरसी ॥

॥ होमतवासेसाजना ॥ पदेशीरे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ कियाचतमहतोरे ॥ तेष्टगपतिजेमपायरिया ॥ तेहना
गुणनोनश्चतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेविये ॥ ३ ॥ एथाकणीरे ॥ वशनिरुपकमकर्मने ॥
जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमाकला ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ श्रीजिन०
॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहररातारे ॥ कपटकियाकरतायति ॥
नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेथापणो ॥ परनायुद्धते
सोखेरे ॥ गुणनिधि युरुथकीगाहेरा ॥ विरठनिजमुखेगोखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ वा
हिरवकपरेचाखता ॥ अतरथाकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहनखाफहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा
तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ वहुपिधायाकियाफरे ॥ ज्ञानरहितजेहटोखेरे ॥ शतजि
मथधेदेखता ॥ तेतोपडिथारेजोखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजठत्कर्पयीहरवि
या ॥ निजथरगुणनवीजाखेरे ॥ ज्ञानजखधीगुणथरगणी ॥ अवगुणपहुचापेरे ॥ श्री
जिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियथामेंथरुटता ॥ जेगुणथरपशोजापेरे ॥ तेपणथरगुणपरिणमे ॥
मायाशद्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेपद्वा ॥ जिनशासनधनचोरे ॥

केदशिष्यज्ञपर्यग्मिहन् ॥ गठाचारनेजोरने ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ एनवमीगायानोअर्थ ॥ गठा-
चारनवननेद ॥ अर्गीयवक्षुमांखिहिं मंगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुख्कमग्गस्समेविग्वं पहंमि-
तेषुर्गेजहाइति ॥ हानीवचनविषयस्मृते ॥ उखटीमूरन्ववार्णीरे ॥ आगमवचनएथादरी ॥
हानप्रदोन्नतिप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥ १०॥ अर्थ ॥ गीयवस्तवयणां विसंहावाहूखंपिवे
॥ अर्गीयवक्षुमयणां अमयविनुटा ॥ १ ॥ इत्यादिवचनशास्त्रें, तेमादे हेथर्मार्य
जन्मप्राणी हानपक्षटदथादरो, केमवहमणाडानपक्षनोटदाविकारं ॥ १० ॥ चरणक-
रणगुणहीणमा ॥ हानप्रधानश्चादरिच्यें ॥ एम किरयागुणअत्यन्ती ॥ उठायोगवीतरिये
रे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुभिठोऽमुनार्थस्यहानिसोपिष्मादिनः ॥ कावादिवि-
क्षायोग इनीश्वायोगवक्षणां ॥ खलितविस्तारादोप्रयं ॥ ११ ॥ चरणपतितवलीश्वावको ॥
तनुथर्माविलीजिदोरे ॥ तेदनेशानप्रधानते ॥ मुनिनेरेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥
आगद्यकमादेनापितु ॥ तेषेणहीऽहानप्रधानोरे ॥ आचरणापवचावतां ॥ वेइयेजश
घटमानोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अवश्वावश्यकगाया ॥ दंसणपरखोसावय च-
रित्तनठेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपरखो समष्टपरखोगकंखं मि ॥ १३ ॥

॥ दाल शोकमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी ॥ एदेशी ॥

आत्मथर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीवडेउक्षटश्चाणी ॥ मिव्याहृष्टिने-
एहमांमतिमुजाणी ॥ सम्ब्यृद्धीनेकागेसाकरवाणी ॥ २ ॥ गुरुषासेंगीखीअर्थएहना-
जाणी ॥ तेहनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ खधुनेनयदेताहोएथर्थनीहाणी ॥ योगह-
षिसमुख्यएहवीरितिवक्षाणी ॥ ३ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनव्रहाणी ॥ नदीपरेसंजा-
खोनत्वरयणनीखाणी ॥ एशुनगतिमाता, फुरमतिवेविक्षुपाणी ॥ एशिवसुखसुरतरुफक्ष-
रसस्वादनिगाणी ॥ ४ ॥ एहनेसुपसार्येउजाजोक्षीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पवि-
पाणी ॥ एथमियटटीशीजेहीनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउहृसेसुरुचिवेकी करमाणी ॥ ५ ॥
वहुजावएहनाजाणेकेवक्षनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखशीकहेवाणी ॥ एहशीसंजारीजि-
नगुणश्रेष्ठीउसुहाणी ॥ वचनानुष्ठानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ६ ॥ एहशीसवीजाएपापश्रे-
ष्ठीउजाणी ॥ गुणश्रेष्ठीचटतांखेमुक्तिपटराणी ॥ घनवातिकर्मनेपीढीवेजेमतेक्षणाणी ॥
निर्मलगुणएहश्रीपामियावहुनविप्राणी ॥ ७ ॥ खवजनजोएहमांझेपधरेश्चनिमानी ॥
तोपणसज्जनथीएहनीइत्यानिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगउत्तमगुणराणी ॥ जश-
दियेगुणीसज्जननेसंघथनंतकल्पाणी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ भनुमतुन्नकप्पो किश्याजापिर्वर्तकिदेसाण ॥ तद्दुरुचुन्नकप्पो नाणकर्त
तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिकर्मयिति ॥ अकरणनियमेज्ञाप ॥

अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजन्मावे तेपास्यापत्रि मिथ्यात्वमा आवे, तोपण
एककोडाकोडी सामग्रोपम “ उपरातकर्मवध जीवनकरे घणेणनवोदेयक्यावितिवच
नात् ” एत्यनिप्रायें नदिपेणनेश्रविकारे महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपाति कह्योरे
उत्तराध्ययनेष्युक्त ॥ सूक्षजहाससुत्ता णणस्सर्वक्यवरमिपडियापि ॥ इयजीविसमुत्तो-
णणस्सद्गार्वविससारे ॥ २ ॥ ६ ॥

ग्यानवतहकेवली ॥ उच्यादिकच्छ्रद्धिनाण ॥ वह

लक्खपनाज्ञाप्यमा ॥ सरिपाज्ञाप्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वृहत्सद्वगाथाचेय ॥ किंगीयदोकेवली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ तु
घ्वरागद्वेसे अणतकायसवज्ञाणा ॥ ३ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणज्ञवार्णवपोत ॥

मिथ्यामतितमन्नेदवा ॥ नाणमहाऽव्योत ॥ ८ ॥

॥ ढाख पन्नरमी ॥

॥ होमतवाखेसाजना ॥ एदेशीरे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ क्रियावतमहतोरे ॥ तेष्टगपतिजेमपायरिया ॥ तेहना
गुणनोनथतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेपिये ॥ १ ॥ एश्वाकणीरे ॥ वशनिरूपक्रमकर्मने ॥
जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमाकद्या ॥ ज्ञानीगुरुपदवीनारे ॥ श्रीजिन०
॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहररातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥
नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेथापणो ॥ परनायुहते
सोखेरे ॥ गुणनिधि गुरुथकीगाहेरा ॥ मिर्तनिजमुसेगेखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ वा
हिरपक्षपरेचाखता ॥ अतरथाकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहजखारहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा
तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ वहुपिधभाष्यक्रियाकरे ॥ ज्ञानरहितजेहटोखेरे ॥ शतजि
मथंधेदेसता ॥ तेतोपडिथारेचोखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजठत्कर्पंथीहरपि
या ॥ निजथरगुणनवीदासेरे ॥ ज्ञानजखभीगुणथगणी ॥ अग्नगुणग्रहनापेरे ॥ श्री
जिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियथागेंथ्रुटता ॥ जेगुणथरपशोजापेरे ॥ तेपणथगुणयरियमे ॥
मापाशङ्कमनरासेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेपहवा ॥ जिनशासनधनवोरेरे ॥

तेहैशिष्टवृपरंपरिहृष्ट ॥ गठाचारनेजोरे ॥ श्रीजिन०॥८ ॥ एनवसीगायानोश्वरी ॥ गत्रा-
चारवचनंचेदं ॥ अर्गीश्रवकुमारिद्विं मंगंतिविहृष्टेणवोसिरे ॥ मुख्यमगस्मिमेविग्यं पहूंभि-
तेणगोजहृष्टाइति ॥ द्वानीवचनविषयश्रमृतन्त्रे ॥ उत्तरीमूरव्यवार्णीरे ॥ आगमवचनएथादरी ॥
द्वानग्रहोनविप्रार्णीरे ॥ श्रीजिन०॥९०॥ अर्थ ॥ गीयहृष्टसवयणेष विसंहायाहृष्टंपित्रे
॥ अर्गीश्रवभस्तवयणेष अमयपिनुद्वग ॥ १ ॥ इत्यादिवचनग्राम्बोरे, तेमाते हैधर्मार्थी
जन्मयप्राणी द्वानपश्चाहृष्टश्चादरो, केमकेहृष्टमणाड्वानपश्चानोहृष्टाधिकारन्ते ॥ १० ॥ चरणक-
रणगुणहृष्टीणका ॥ द्वानप्रधानश्चादरियंते ॥ एम किरयागुणश्चयसी ॥ इत्यायोगश्चीतस्यि-
रे ॥ श्रीजिन०॥११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिठोऽश्रुतार्थस्यहृष्टानिनोपियमादिनः ॥ कालादिवि-
कलोयोग इत्तीत्रायोगलक्षणं ॥ खसितविस्तारादोयंये ॥ १२ ॥ चरणपतितवदीश्रावको ॥
तनुधर्मावदीजेद्वोरे ॥ तेहैनेद्वानप्रधानत्रे ॥ मुनिनेतेहैगुणगोहोरे ॥ श्रीजिन०॥१३ ॥
आवश्यकमांहैनापितु ॥ तेषेगद्विद्वानप्रधानतोरे ॥ आचरणापवचावतां ॥ वेश्वेजश
पहूमानोरे ॥ श्रीजिन०॥१४ ॥ अर्थ ॥ अवश्यावश्यकगाया ॥ दंसणपरखोसावय च-
रित्तनदेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्परखो समाप्तपरखोगकंखं भि ॥ १५ ॥

॥ दास शोलसी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी ॥ एदेशी ॥

शात्मश्चर्थिनेश्वर्यप्राकृतवाणी ॥ एमएमेकीधीहीयहैउलटश्चाणी ॥ मिद्याहृष्टिने-
एहमांमतिमुजाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेखागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरुपासेशीखीश्वर्यएहना-
जाणी ॥ तेहैनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ द्वघुनेमयदेताहैएश्वर्यनीहृष्टाणी ॥ योगहृ-
ष्टिसमुच्चयएहवीरितिवदाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनवह्याणी ॥ जबीपरेसंज्ञा-
लोतत्वरयणनीखाणी ॥ एशुनगतिमाता, ऊरमतिवेलिकुपाणी ॥ एजिवसुखसुरतरुफल-
रसस्वादनिगाणी ॥ ३ ॥ एहैनेसुपसायेभनाजोमीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पवि-
पाणी ॥ एश्रियहृष्टीश्रीजेहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहैउत्तसेसुरुचिवेदी करमाणी ॥ ४ ॥
वहुजावएहनाजाणेकेवदनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहैवाणी ॥ एहश्रीसंज्ञारीजि-
नगुणथेणीउमुद्वाणी ॥ वचनानुष्टानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहथीसवीजाएपापथे-
णीउजाणी ॥ गुणथेणीचटतांखहैमुक्तिपटराणी ॥ वनवातिकर्मनेपीकीयेजेमतेवधाणी ॥
निर्मवगुणएहथीपामियावहुनविप्राणी ॥ ६ ॥ खलजनजोएहमांद्वयथरेश्वनिमानी ॥
तोपणसक्लनर्थीएहनील्यानिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगलचमगुणराणी ॥ जश-
दियेगुणीसक्लननेसंघअनंतकव्याणी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ममुक्तुन्नकप्पो किश्याजापिर्भक्तिकिलेसाण ॥ तद्दुरचुन्नकप्पो नाणकउ^१
तचञ्चाणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थमयह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिकर्मथिति ॥ अकरणनियमेन्नाप ॥

अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेझानते सम्यग्दर्शनसहितजआवे तेपास्यापति मिथ्यात्ममा आवे, तोपण
एककोडाकोडी सागरोपम “ उपरातकर्मन्ध जीव नकरे घर्षेणनयोदेयकयावितिवच
नात् ” एथनिप्रायें नदिपेणनेअधिकारे महानिशीथे झानगुण अप्रतिपाति कद्योरे
उत्तराध्ययनेप्युक ॥ सूशजहाससुत्ता णणस्सर्कयपरमिपडिआपि ॥ इयजीगोविससुत्तो-
णणस्सइगडविससारे ॥ २ ॥ ६ ॥

ग्यानवतहकेबली ॥ द्वयादिकव्यहिनाए ॥ द्वह

त्कट्पनान्नाप्यमा ॥ सरिपान्नाप्याजाए ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ द्वहस्त्वपगाथाचेय ॥ किंगीयदोकेपली चउदिहेजाणणेयकहणेय ॥ तु
द्वरागदेसे अणतकायसवङ्गणवा ॥ ३ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणन्नवार्णवपोत ॥

मिथ्यामतितमन्नेदवा ॥ नाणमहाभद्रोत ॥ ८ ॥

॥ दाल पद्मरसी ॥

॥ होमतवालेसाजना ॥ एदेशीठे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ क्रियावतमहतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपायरिया ॥ तेहना
गुणनोनश्रंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेविये ॥ १ ॥ एथाकणीठे ॥ बशनिरुपकमकम्मने ॥
जेपणझानविहीनारे ॥ तेपणमारगमाकद्या ॥ झानीगुरुपदक्षीनारे ॥ श्रीजिन ॥
॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अझानजहररातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥
नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआणणो ॥ परनागुणते
खोखेरे ॥ गुणनिधि गुरुल्थकीधाद्वेरा ॥ बिरडनिजमुखेगोखेरे ॥ श्रीजिन ॥ ४ ॥ वा
हिरवकपरेचाखता ॥ अतरथाकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहजखाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा
तीरे ॥ श्रीजिन ॥ ५ ॥ द्वहुविधगाथक्रियाकरे ॥ झानरहितजेहटोलेरे ॥ शतजि
मश्यपदेखता ॥ तेतोषडिआठेजोखेरे ॥ श्रीजिन ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षयीहरवि
या ॥ निजथगुणनवीदाखेरे ॥ झानजखधीगुणथपगणी ॥ अवगुणरहुनापेरे ॥ श्री-
जिन ॥ ७ ॥ गुणप्रियथागेथदुटता ॥ जेगुणथपशोजापेरे ॥ तेपणथपगुणपरिणमे ॥
मायाशब्द्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन ॥ ८ ॥ झानरहितजेपहवा ॥ जिनशासनधनचोरेरे ॥

तेहशिथवपरंपरिहरु ॥ गद्याचारनेजोरे ॥ श्रीजिनमा ॥ ८ ॥ एनवसीगायानोअर्थ ॥ गद्याचारवचनंचेदं ॥ अगीश्रकुसीलेहिं संगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुखमग्सिसमेविग्यं पहंभितेणगेजहाइति ॥ ज्ञानीवचनविषयमृते ॥ उलटीमूरखवाणीरे ॥ आगमवचनएआदरी ॥ ज्ञानग्रहोजविप्राणीरे ॥ श्रीजिनमा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ गीयद्वस्सवयणेण विसंहालाहवंविपे ॥ अगीयद्वस्सवयणेण अमयंपिनघुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनशास्त्रे, तेमाटे हेधर्मार्थं चव्यप्राणी ज्ञानपक्षद्वादशादरो, केमकेहमणाज्ञानपक्षक्षोहडाविकारठे ॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणमा ॥ ज्ञानप्रधानश्चादरियेंरे ॥ एम किरयागुणअन्यसी ॥ इत्यायोगथीतरियेरे ॥ श्रीजिनमा ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुभिठोःशुतार्थस्यज्ञानिनोपिश्चमादिनः ॥ कालादिविकलोयोग इतीद्यायोगक्षणं ॥ लक्षितविस्तारादौग्रंये ॥ ११ ॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥ तनुधर्मावलीजेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधानरे ॥ मुनिनेरेणगेहोरे ॥ श्रीजिनमा ॥ १२ ॥ आवश्यकमाहेजापिठ ॥ तेणेगहीज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापथचालतां ॥ वेइयेजशबहुमानोरे ॥ श्रीजिनमा ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्रश्रावश्यकगाया ॥ दंसणपरखोसावयचरित्तनठेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपखो समणपरखोगकंखं मि ॥ १३ ॥

॥ दाल शोलमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी ॥ एदेशी ॥

आत्मश्रथिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेकीधीहीयदेउलटश्चाणी ॥ मिथ्याहटिनेएहमांमतिमुजाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेखागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ मुरुषासेंशीस्तीअर्थएहनाजाणी ॥ तेहनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ खबुनेनयदेताहोएअर्थनीहाणी ॥ योगहटिसमुच्चयएहवीरीतिवस्ताणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनव्रह्माणी ॥ जलीपरेसंजायोत्त्वरयणनीखाणी ॥ एत्तुजगनिमाता, छुरमतिवेविकृपाणी ॥ एतिवसुग्वसुरतहफखरसस्वादनिग्राणी ॥ ३ ॥ एहनेसुपमायेउजाजोर्मीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पविपाणी ॥ एथमियदृष्टीथीजेहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउत्त्वसेसुरचिवेदी करमाणी ॥ ४ ॥ बहुजावपहनाजाएकेवसनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखश्रीरहेवाणी ॥ एहवीसंतारीजिनगुणथ्रेणीउसुहाणी ॥ वचनानुष्टानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहवीमवीजाएपाप्त्रेणीउजाणी ॥ गुणथ्रेणीचततांवहेमुक्तिपटराणी ॥ घनवातिरुमनेपीलीयेजेमतेखयाणी ॥ निर्मलगुणएहवीपामियावहुनविप्राणी ॥ ६ ॥ खवजनजोएहमाहिपवरेथ्रनिमानी ॥ तोपणसज्जनवीएहनीस्त्यानिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगत्तमगुणवाणी ॥ जयदियेगुणीसज्जननेसंघथनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ममुक्तुन्नकप्पो किङ्याजाणिठकर्तुकिवेसाण ॥ तद्दुरचुन्नकप्पो नाणकउ
तचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंयह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिकर्मथिति ॥ अकरणनियमेन्नाप ॥

अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीयहसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजश्चावे तेपास्यापति मिथ्यात्वमा आवे, तोपण
एककोडाकोडी सागरोपम “ उपरातकर्मभ जीवनकरे घर्येषनबोक्षेयक्यावितिवच
नात् ” एथनिप्रायें नदिपेणनेष्वधिकारे महानिशीये झानगुण अप्रतिपाति कद्योरे
उत्तराध्ययनेष्वुक ॥ सूशजहाससुचा णणस्तर्षक्यपरमिष्टियापि ॥ इयजीगोविससुत्तो-
णणस्सश्गठविससारे ॥ २ ॥ ६ ॥

ग्यानवतहकेवली ॥ द्वयादिकञ्चहिनाण ॥ वह

त्कट्पनान्नाप्यमा ॥ सरिपान्नाप्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वहत्कट्पगाथाचेय ॥ किंगीयद्वोकेवली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ तु
घुरागहेसे अणतकायसपङ्क्ताणवा ॥ ३ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणन्नवार्णवपोत ॥

मिथ्यामतितमन्नेदवा ॥ नाणमहाभद्रोत ॥ ८ ॥

॥ दाख पद्मरसी ॥

॥ होमतवाक्षेसाजना ॥ एदेशीरे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ कियावतमहतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपासरिया ॥ तेहना
गुणनोनश्चतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेविये ॥ १ ॥ एथाकणीरे ॥ वशनिरुपकमकर्मने ॥
जेपणझानविहीनारे ॥ तेपणमारगमाकद्या ॥ झानीगुरुपदक्षीनारे ॥ श्रीजिन०
॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अझानजहररातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥
नहुयेनिजमतिभातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेश्वापणो ॥ परनायुद्धते
सोखेरे ॥ गुणनिवि गुरुत्थकीवाहेरा ॥ विरुद्धनिजमुखेगोखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ वा
हिरवकपरेचाखता ॥ अतरथाकरीमातीरे ॥ तेहनेजेहजखाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा
तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ वहुपिधवाहक्रियाकरे ॥ झानरहितजेहटोखेरे ॥ शतजि
मथधदेसता ॥ तेतोरदिथारेजोखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षथीहरवि
या ॥ निजथगुणनवीदाखेरे ॥ झानजखधीगुणथपगणी ॥ अवगुणरहुनापेरे ॥ श्री
जिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियथामेंथहुटता ॥ जेगुणथपशोजापेरे ॥ तेपणथगुणपरिणमे ॥
मायाशब्दमनरासेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ झानरहितजेपहवा ॥ जिनशासनधनचोरेरे ॥

तेहशिथलपरेपरिह्रु ॥ गद्याचारनेजोरे ॥ श्रीजिनना० ए ॥ एनवसीगाथानोश्वर्य ॥ गद्याचारवचनंचेदं ॥ अगीअठकुसीदेहिं संगंतिक्रिहेणवोसिरे ॥ मुखमगस्सिमेविगंधं पहंभितेष्णेजहाइति ॥ ज्ञानीवचनविषयश्रृतरे ॥ उलटीमूरखवाणीरे ॥ आगमवचनएआइरी ॥ ज्ञानव्यहोनविप्राणीरे ॥ श्रीजिनन० ॥ १० ॥ श्वर्य ॥ गीयठस्सवयणेण विसंहावाहलंपिवे ॥ अगीयवस्सवयणेण अमर्यपिनघुटए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनगाल्लेरे, तेमाटे हेधर्मार्थं ज्ञव्यप्राणी ज्ञानपक्षदृष्टयादरो, केमकेहमणाज्ञानपक्षनोडाविकाररे ॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणना ॥ ज्ञानप्रधानश्वादरियेरे ॥ एम किरयागुणश्वर्यसी ॥ इत्यायोगश्रीतरियेरे ॥ श्रीजिनन० ॥ ११ ॥ श्वर्य ॥ कर्तुमिठोःश्रुतार्थस्यज्ञानिनोपिष्मादिनः ॥ कालादिविकदोयोग इतीर्थायोगवक्षणं ॥ दक्षितविस्तारादोयंथे ॥ ११ ॥ चरणपतितवक्षीश्रावको ॥ तनुधर्मविदीनेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधानरे ॥ मुनिनेरेगुणेहोरे ॥ श्रीजिनन० ॥ १२ ॥ श्वावश्वकमांहेनापिर्त ॥ तेषेगहीज्ञानप्रधानोरे ॥ श्वावरणापयचालतां ॥ देहेजशबहुमानोरे ॥ श्रीजिनन० ॥ १३ ॥ श्वर्य ॥ अत्रश्वावश्वकगाया ॥ दंसणपरखोसावय चरित्तनठेयमंदधर्मेय ॥ दंसणचरित्तपरखो समणपरखोगकंखं मि ॥ १३ ॥

॥ ढाल शोखमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी ॥ एदेवी ॥

श्वामश्वर्थिनेश्वर्यप्राकृतवाणी ॥ एमएमेकीधीहीयहेउलटथाणी ॥ मिथ्याहृष्टिनेएहमांमतिमुजाणी ॥ सम्यग्घटीनेखागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरुपासेंगीखीश्वर्यपहनाजाणी ॥ तेहनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ खबुनेनयदेनाहोएश्वर्यनीहाणी ॥ योगहृषिसमुच्चयपहनीतिवज्ञाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनव्रह्माणी ॥ जदीपरेसंजालोत्तररयणीखाणी ॥ एजुनगनिमाता, छुरमतिवेदिकृपाणी ॥ एजिवसुम्बसुरनस्फस्तरस्सवादनिजाणी ॥ ३ ॥ एहनेसुपसायेउनाजोनीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पविपाणी ॥ एश्वियद्वीश्रीजिहेनीमतिनीचाणी ॥ तेमांहेउज्ज्वसेमुहचिवेदी करमाणी ॥ ४ ॥ बहुजावएहनाजाणेकेवज्ञानाणी ॥ संखेपेण्णोगुम्भुव्यथीरहेवाणी ॥ एहश्रीसंतारीजिनगुणध्रेणीउसुहाणी ॥ वज्ञानानुष्टनेसमाप्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहश्रीस्वीजाएपध्रेणीउज्जाणी ॥ गुणश्रेणीचदनांखदेमुक्तिपटराणी ॥ यनवातिकमीनेपीखीयेजेमतेवधाणी ॥ निर्मलगुणएहश्रीपामियावहृनविप्राणी ॥ ६ ॥ ग्वज्ञनजोएहमाद्विष्पवरेश्वनिमानी ॥ तोपणसज्जनधीएहनीश्वानिमचाणी ॥ गुणमणिरवयायरजगठनगुणग्राणी ॥ जगदियेयुणीसज्जननेसंघथननंतकल्पाणी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ मनुष्यचुम्बकप्पो किश्याजापिउरुचिकिलेसाण ॥ तद्दुरुचुम्बकप्पो नाणकउ^१
तवथाएण ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसग्रह ॥ ५ ॥

मिश्यात्वादिकर्मधिति ॥ अकरणनियमेज्ञाप ॥

अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ मदानिशीथद्वसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेहानते सम्पर्गदर्शनसहितजआवे तेपास्यापति मिथ्यात्मा आवे, तोपण
एकोडासोई सागरोपम “ उपरातकर्मभ जीव नकरे घेणबोलेयकायाप्रितिवच
नात् ” ाश्रनिप्राप्य नदिपेणनेश्चिकारे मदानिशीथे हानगुण अप्रतिपाति कहोठे
उत्तराध्ययनेषुक ॥ सूञ्जदासमुत्ता षणस्सर्वक्यपरमिपदिशापि ॥ इयजीरोपिससुतो-
पापम्भडगडपिसमारे ॥ २ ॥ ६ ॥

रथानमतद्वेषरखी ॥ उद्यादिकअद्विनाण ॥ वह
लद्धरनाजाप्यमा ॥ सरिपाजाप्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उद्धरहगायाचेय ॥ किंगीयठोकेपही चउविद्वेजाणेयकहणेय ॥ तु
हारामदेसे आणतरापरामङ्गणा ॥ १ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीरनो ॥ नाणनगर्णपतोत ॥
मित्यामनितमनेदवा ॥ नाणमदाउयोत ॥ ८ ॥

॥ दास पश्चरमी ॥

॥ दोमतराप्येसाजना ॥ पदेशीते ॥

नाणसदितजेद्वमुनीशरा ॥ क्षियायतमहृतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपापरिया ॥ तेहना
गुणोनथतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेनिय ॥ १ ॥ पश्चाप्तपति ॥ वशानिरुपकमम्भिने ॥
जेस्तद्वानविद्वीनारे ॥ उपेषमारगमाक्षा ॥ हानीगुणपदद्वीनारे ॥ श्रीजिन०
॥ २ ॥ नाहरहितदितपरिद्वी ॥ अद्वानजद्वगतारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥
नर्मयेनितमतिजानारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ पत्नायुद्धते
स्थाप्ते ॥ हुणतिरि गुण्यसीशद्वे ॥ विरुद्धनिजमुग्नेशोप्तेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ या
द्विग्रहश्चरेचाप्तना ॥ अनरथाक्षीकानीरे ॥ तेद्वनेनेद्वप्ताम्हृ ॥ मतिनशीजाणेतेजा
नीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ वदुविपशक्षक्षियाकरे ॥ हानरहितनेद्वांस्तेरे ॥ जनति
मध्यरेस्तना ॥ तेनोरहित्यावेनोस्तेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजवरसर्यीद्वपि
या ॥ निजच्छम्भुनवीकामेरे ॥ हानवज्ज्वरीगुणथरगणी ॥ अगुणपुनापेरे ॥ श्री-
जिन० ॥ ७ ॥ हुणप्रियद्वापेयवुटना ॥ जेगुणथरगोनापेरे ॥ सेपायथयगुणपरिणमे ॥
मासराम्भनवारेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ हानरहितनेपद्वा ॥ जिनशामनपनवोरे ॥

तेहैश्चिन्द्रकपरंपरिहरु ॥ गघाचारनेजोरेरे ॥ श्रीजिनण ॥ ८ ॥ एनवसीगायानोअर्थ ॥ गवा-
चारवचनंचेऽ ॥ अग्नीश्रुकुसीखेहिं संगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुखमग्नस्समेविग्नं पहंभि-
तेणगेजहाइति ॥ हानीवचनविपथसृतरे ॥ उखटीमूरखवार्णरे ॥ आगमवचनएआदरी ॥
हानग्रहोचविप्राणीरे ॥ श्रीजिनण ॥ १० ॥ अर्थ ॥ गीयद्वस्तवयणेण विसंहाकाहूलंपिवे
॥ अग्नीयष्टस्सवयणेण अमयपिनवुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनगाथ्येंठे, तेमाटे हेधर्मार्थ्य
चव्यप्राणी हानपद्धाटथादरो, केमकेहमणाहानपद्धनोद्वाधिकाररे ॥ १० ॥ चरणक-
रणगुणहीणका ॥ हानप्रधानथादरियेंरे ॥ एम किरयागुणअच्यसी ॥ इत्यायोगवीतरियें
रे ॥ श्रीजिनण ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिठोःश्रुतार्थस्यहानिनोपिग्रामादिनः ॥ कावाडिवि-
कल्पोयोग इत्तीत्रायोगलक्षणं ॥ लक्षितविस्तारादोग्रंथे ॥ ११ ॥ चरणपतितवलीश्वावको ॥
तनुधर्मावलीजेहोरे ॥ तेहनेहानप्रधानरे ॥ मुनिनेरेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिनण ॥ १२ ॥
आवद्यरुमांहेनापिठ ॥ तेणेगहीहानप्रधानोरे ॥ आचरणापयचालतां ॥ खेइयेजश
घहुमानोरे ॥ श्रीजिनण ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्रआवद्यकगाया ॥ दंसणपरखोसावय च-
रित्तनछेपमंदधर्मम्य ॥ दंसणचरित्तपरखोगकंखं मि ॥ १३ ॥

॥ ढाल शोखमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी ॥ एदेशी ॥

आत्मअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेकीधीहीयडेउलटआणी ॥ मिथ्याहिने-
एहमांसतिमुकाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेखागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरुपासेंगीखीअर्थएहना-
जाणी ॥ तेहनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएश्रव्यनीहाणी ॥ योगह-
टिसमुच्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनव्रहाणी ॥ नदीपरेसंजा-
लोतत्वरयणनीखाणी ॥ एद्युन्नगतिमाता, छुरमतिवेकिकृपाणी ॥ एशिवसुखसुरतरुफल-
रसस्वादनिशाणी ॥ ३ ॥ एहनेसुपसायेजनाजोमीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पवि-
पाणी ॥ एथमियहटीश्रीजेहनीमतिसीचाणी ॥ तेमाहेउख्सेमुखचिवेती करमाणी ॥ ४ ॥
बहुनावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवाणी ॥ एहश्रीसंजारीजि-
नगुणश्रेणीउसुहाणी ॥ वचनानुष्टानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहश्रीसंजारीजा-
नगुणश्रेणी ॥ गुणश्रेणीचहतांखहेमुक्तिपटराणी ॥ घनवातिकर्मनेपीढीयेजेमतेलघाणी ॥
निर्मलगुणएहथीपामियावहुन्नविप्राणी ॥ ६ ॥ खलजनजोएहमाद्वयधरेथजिमानी ॥
तोपणसक्ळानथीएहनीख्यानिमचाणी ॥ गुणमणिर्यणायरजगउत्तमगुणगराणी ॥ जश-
दियेगुणीसक्ळाननेसंघअनंतकद्याणी ॥ ७ ॥

॥ दाख सतरमी ॥
॥ देशीहमचडीनीरे ॥

तपगवनदनसुरुतरुप्रगटो ॥ हीरविजयसूरींदो ॥ सकलसूरिमाजेसोजागी ॥ जेम
तारामाचदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ ज्ञानरथएनोदरिठे ॥
शाहीसज्जामाजेयशपाम्यो ॥ विजयवत्युणजरिठे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजय-
देवसूरिसर ॥ महिमापतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिहसूरिसर ॥ सकलसूरिमाली-
होरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेयुरुनाउत्तमउथमयी ॥ गीतारथगुणगाध्यो ॥ तस हितशिख-
नाएथ्रनुसारे ॥ ज्ञानयोगगासाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउथमउत्तमसारगनो ॥ जखे
नागरीकहियें ॥ जसमहिमामहिमायेपिदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेरे ॥ हम० ॥ ५ ॥
श्रीराघ्यालविजयभरवाचक ॥ हीरविजययुहसीसो ॥ बदयाजशगुण संततिगावे ॥ सु
ररिष्वरनिसदीमोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीकानविजयवरपडित ॥ ताससीससोजागी ॥
श्राव्यासरणादिकषदुप्रयें ॥ नित्येंजशमतिकागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजय
तमसीसो ॥ महिमायतमर्तो ॥ श्रीनविजयपितुद्वगुरुद्वाता ॥ तासमहागुणतोरे
॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरुस्मरममयथन्यासे ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ सम्यदर्शनसुरु-
चिमुरनिता ॥ मुजमनिगुनगुणगासीरे ॥ हम० ॥ ९ ॥ जशसेनासुपसायेसहज ॥
चित्तामणीमेजहिठे ॥ तसगुणगादशकुरेमसदका ॥ गागानेगहगहिठे ॥ हम० ॥ १० ॥
तेयुरुनीजनियुनजसक्ति याणीष्ठप्रकाशी ॥ कवियशविजयजणेष्ठमजणयो ॥ विनदि-
नपहुथर्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कवश ॥

यमद्वययुहर्यायेष्ठरीजेन्द्रवाणीपिसरी॥गतपारयुहमंसारमारगतरणतारणवरनरी॥
तेष्ठद्वार्पीमुननमधुक्षर रमणमुग्नरपजरी॥श्रीनविजययुधचरणसेयक जशविजयबु-
धजपदरी॥१॥सर्वगाया२७५॥ इयमुचितपदायोग्यापनथन्यशोना वुभजनहितदेतुर्नां-
दनादुप्षशटी॥ अनुदिनमितयव्यानपुष्टेहदारेत्तरुचरणपूजा जेनपागदेवताया ॥

॥ इतिठशायायश्रीयशोविजयगणितुद्वयगुण
दर्शनोगमयावावयो रमन्तितममात ॥

॥ दाख सतरमी ॥

॥ देशीहमचडीनीरे ॥

तपगवनदनसुरुतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूर्णिदो ॥ सकलसूरिमाजेसोज्ञागी ॥ जेम
 तारामाचदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ झानरथणनोदरिठे ॥
 शाहीसज्ञामाजेयशपाम्यो ॥ पिजयवत्युणेज्ञरिठे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजय-
 देवसूरिसर ॥ महिमावतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिहसूरिसर ॥ सकलसूरिमादी-
 होरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेयुक्तनाभत्तमउथमथी ॥ गीतारथगुणगाध्यो ॥ तस हितशिख-
 तणेथनुसारे ॥ झानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउथमउत्तममारगनो ॥ जखे-
 नावधीक्षहिये ॥ जसमहिमामहिमायेपिदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेरे ॥ हम० ॥ ५ ॥
 श्रीरथ्याएपिजयवरवाचक ॥ हीरविजययुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण सततिगावे ॥ सु-
 रपित्तरनिसदीनोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ युरुशीक्षानविजयवरपित्त ॥ ताससीससोज्ञागी ॥
 श्रुनय्याकरणादिकथदुमध्ये ॥ नित्येजशमतिक्षागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजय-
 तमसीसो ॥ महिमापतमहतो ॥ श्रीनयपिजयविद्युद्गुरुत्राता ॥ तासमहागुणवतोरे
 ॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरुमपरसमयथज्यासे ॥ वढुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनमुरु-
 चिमुरनिता ॥ मुझमतिशुज्ञगुणगासीरे ॥ हम० ॥ ९ ॥ जशसेरासुपसायेसद्भजे ॥
 पितामलीमैखहिठे ॥ तसगुणगाइशकुकेमसघका ॥ गानानेगहृगहितरे ॥ हम० ॥ १० ॥
 सेषुहनीजक्षिशुज्ञशक्ति वाणीपद्धप्रकाशी ॥ कपियशपिजयज्ञणेएमज्ञणयो ॥ दिनदि
 नपहुयन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमझट्यगुणपर्यायेकरीजेह्वाणीपिस्तरी॥गतपारगुरुससारमारगतरणतारणरनरी॥
 तेपद्गापीमुज्जनमधुकर रमणसुरनरपजरी॥श्रीनयपिजयबुधचरणसेवक जशपिजयनु-
 पजपर्ती॥१॥संरेगापा०८७५॥ इयमुचितपदायोग्वापनथ्रथयशोत्रा बुधजनहितहेतुजन-
 वनापुष्पगाटी ॥ अनुदिनमितपदव्यानपुण्डेहांरवंतुचरणपूजा जेनगागदेवताया ॥

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ दाख सतरसी ॥

॥ देशीहमचडीनीरे ॥

तपगठनदनसुरुतरुप्रगटो ॥ हीरविजयसूर्णिदो ॥ सकलसूरिमाजेसोज्ञागी ॥ जेम
तारामाचदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ झानरयणनोदरिर्ति ॥
शाहीसज्ञामाजेयशपाम्बो ॥ विजयवत्तुषुणज्ञरिर्ति ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजय
देवसूरिसर ॥ महिमावतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिद्धसूरिसर ॥ सकलसूरिमाली-
दोरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुहनाउत्तमउद्यमधी ॥ गीतारथगुणगाधो ॥ तस हितशिख-
तणेघनुसारे ॥ झानयोगणसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममारगनो ॥ चखे-
जापथीलहिये ॥ जसमहिमामहिमायेपिदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेरे ॥ हम० ॥ ५ ॥
श्रीमहायात्रिविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण सततिगावे ॥ सु-
रित्तिरनिसदीसोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ युरुश्रीलाजविजयवरपडित ॥ ताससीससोज्ञागी ॥
श्रुतव्याकरणादिक्यहुप्रये ॥ नित्येंजशमतिक्षागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीयुरुजितविजय
तससीसो ॥ महिमापतमहतो ॥ श्रीनयविजयविमुद्धयुरुज्ञाता ॥ तासमहागुणतोरे
॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरुम्बरसमयअन्यासे ॥ वहुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनसुरु-
निमुरनिता ॥ मुझमतिगुजगुणगासीरे ॥ हम० ॥ ९ ॥ जशसेगासुपसायेसहजे ॥
चितामणीमेंझदिर्ति ॥ तसगुणगाइशकुकेमसघबा ॥ गागानेगहृगहिर्ति ॥ हम० ॥ १० ॥
सेगुरुनीजकिशुजशकि वाणीएहुप्रकाशी ॥ कवियशविजयजणेएमनणयो ॥ दिनदि-
नयदुर्यन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्वयगुणपर्यायेकरीजेहवाणीप्रिस्तरी ॥ गतपारगुरुससारमारगतरणतारणरनरी ॥
सेएहनापीमुजनमधुरर रमणमुरनरपजरी ॥ श्रीनयविजयुधधरणसेवक जशविजयु-
धज्ञरकरी ॥ १ ॥ सर्वगाया२०५ ॥ इयमुचितपदायोग्यापनश्रवयशोज्ञ बुधजनहितहेतुर्जा-
वनापुण्डरी ॥ अनुदिनमिनपदव्यानपुण्पेहुदार्दंगतुचरणपूजा जेनवाग्देवताया ॥

॥ इतिभवात्यायश्रीयशोविजयगणिहृतद्वयगुण
पर्यायनोगामयावापनोधमहितमामा ॥

